नर्मदातट के
ब्रह्मर्षि

Naresh Jha Shastri, ed.
Narmada tat ke maharshi.

ॐ

नर्मदा तट के ब्रह्मर्षि

(श्री १०११ ब्रह्मर्षि बाबा रामसनेही जी महाराज)

संकलनकर्ता

सरदार पं० रुद्रराज पाण्डे

प्राप्तावकाश उपकुलपति, त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल)

एवं

श्री उमाशंकर पण्ड्या, वाराणसी

संपादक

डा० नरेश झा शास्त्री, विद्यावारिधि (पी-एच० डी०)

साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, काव्यतीर्थ,

ज्येष्ठानुसन्धाता, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रथमावृत्ति १०००   वसन्त-पञ्चमी

सं० २०२८ (सन् १९७२ ई०)

प्रकाशक—

भक्तमंडल
भेड़ाघाट चौरस्ता,
भेड़ाघाट, जबलपुर।

मुद्रक—

रमाशंकर राय
राय प्रिंटिंग वर्क्स,
छोटी पियरी, वाराणसी।
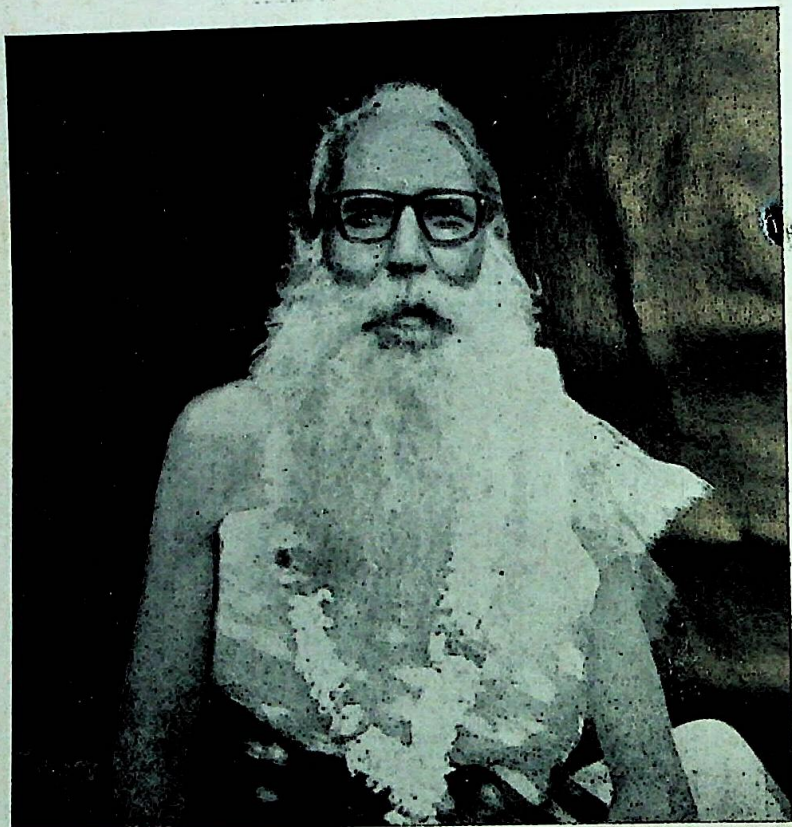
श्री बाबा

श्री १०११ ब्रह्मर्षि सत्गुरु महाराज

के

चरण कमलों में

सादर समर्पित

॥ श्रीः ॥

श्री ५ महाराजाधिराज महेन्द्र वीरविक्रम शाह देव, नेपाल

का

शुभकामना-सन्देश

यस पुस्तकलाई मैले पढ़ने मौका न पाएता पनि लेखक को आग्रह अनुसार दुई शब्द लेख्ने प्रयास गर्दछु।

सनातन हिन्दु धर्म र व्यवहारलाई जीवित र जागृत राख्नमा अनादि काल देखि नै हाम्रा पवित्र ऋषि, मुनि, साधु, सन्तहरूको देन सर्वोत्कृष्ट रहि आएको हो। आज एकातिर भौतिकवादको चम्कीलो उन्नति भई रहेको छ भने अर्कोतिर अनौठो नैराश्य र मानसिक अन्धकारले विश्वलाई ढाकेको पनि छ।

तर संसारमा यस्ता कैयौं कुराहरू हुन्छन् जस्को व्याख्या गरेर सकिदैन र अनुभव नै गर्न सक्नु पर्ने पनि हुन्छ। त्यसैले खुशीको कुरा हो, हाम्रो विचमा आज पनि यस्ता सन्त ब्रह्मर्षि श्री १०११ रामसनेही वाबा जस्ता महापुरुष पनि हुनुहुन्छ।

यस्ता महापुरुषको शिक्षा र अनुभव वारे हिन्दीमा एक पुस्तक निस्कन लागे छ, खुशी लाग्यो र यो पुस्तक नेपाली भाषामा भए अझै उत्तम हुंदो हो।

लेखकको उचित परिश्रम सफल हवस, सधन्यवाद यहि मेरो शुभेच्छा छ।

दो शब्द

परमपूज्य श्री सद्गुरु महाराज के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के तुल्य है। हम लोगों को जब भी श्री महाराज का स्मरण आता और उनका सान्निध्य मिलता तो मन में यही भाव उठता रहता कि इस धारा-प्रवाह अमृत का जो कि अमोघ रूप से निरन्तर श्री मुख से निकलता रहता है, उसे सर्वभक्तजनहिताय संग्रह किया जाय, जिससे संसार को मालूम हो कि, ऐसी उच्चतम आत्मा आज भी जीव-कल्याण में गुप्त रूप से लगी है। उनके सदियों के अनुभव, त्याग और तपस्या के रूप को प्रत्यक्ष पाकर जीव कृतकृत्य हो जाता है।

इस पुस्तक में यही प्रयास किया गया है कि, ज्यादा से ज्यादा उनकी वाणी, उन्हीं के शब्दों में रखी जाय, जो कुछ भी संग्रह हो सका है वह सब उन्हीं की प्रेरणा और शक्ति का फल है। इस संस्करण में श्री बाबा का सम्पूर्ण जीवन कथा-विवरण तो नहीं प्राप्त हो सका है, जो कुछ भी इधर उधर से इकट्ठा हो सका, जुटाया गया है। इससे इसमें धारा-प्रवाह रूप नहीं आ पाया है और न हीं काल, स्थान, समय का ठीक-ठीक पता लग सका है। किन्तु श्री बाबा के स्वरूप को देखने पर यही आभास होता है कि वे साक्षात् अवतारी पुरुष के रूप हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में श्री रमाशंकर जी का अमूल्य सहयोग रहा है, उनके हम विशेष आभारी हैं।

डा० नरेश झा शास्त्री ने प्रस्तुत पुस्तक का संपादन जिस योग्यता और लगन से किया है उसका प्रत्यक्ष अनुभव आप को इस पुस्तक को पढ़ने से लग ही जायगा।

अन्त में उन सब भक्त जनों को हार्दिक धन्यवाद है, जिनके सहयोग से यह दुर्गम कार्य पूर्ण हो सका।

वाराणसी।
वसन्त-पञ्चमी,
सं० २०२८ वै०

श्रीगुरुचरण-सेवक
रुद्रराज पाण्डे,
उमाशंकर पण्ड्या

सम्पादकीय आत्म-निवेदन

वैदिक वाङ्मय का यह बहुचर्चित उद्घोष है कि, अमृतत्व की प्राप्ति काम्य (यागादि) कर्मों के करने से, पुत्रोत्पादन से अथवा कर्मसाधन (धनोपार्जन) से नहीं होती, वह तो केवल त्यागवृत्ति से ही सम्भव है। इस विषय में अथर्ववेदीय उपनिषद् का स्पष्ट आदेश है कि—

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः।

—महानारायणोपनिषद् १०।५

अत एव कर्मों का सम्यक् न्यास (परित्याग) ही संन्यास कहा गया है। इसी त्यागवृत्ति के कारण सन्त, महात्मा अब तक पूजित होते आ रहे हैं। उनके प्रति श्रद्धा का उदय (आविर्भाव) तभी होता है जब उनमें त्याग की प्रधानता रहती है। यह अत्यन्त दु:साध्य है, गीतोक्त 'कश्चिद्यतति सिद्धये' वाली बात है, जैसे हजारों में से कोई एक ही वक्ता होता है उसी प्रकार त्यागी भी विरला ही (कोई कोई) होता है।

इस ग्रन्थ के लेखन, सम्पादन काल में पूज्य बाबा के तप, त्याग, दम आदि गुणों के विवरण एवम् देश के विशिष्ट विद्वानों के अनुभवों को पढ़कर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि, उनमें जो अद्भुत अमोघ शक्तियाँ हैं, उनका मूल उद्गम स्थान त्याग और तप ही है। इस ग्रन्थ में ऐसी अनेक गाथाएँ आयीं हैं, जिनसे प्राचीन ऋषि मुनियों का आदर्श सहसा स्मरण हो आता है। अपि च—नीतिशास्त्र में जो यह कहा गया है कि—

अपकारिषु यः साधुः सः साधुः सद्भिरुच्यते।

अर्थात् अपकार करनेवाले के प्रति जो साधुता प्रकट करें वस्तुतः वही साधु हैं, सन्त हैं, महात्मा हैं। उक्त प्रकार के गुण पूज्य बाबा में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। अतः उनके प्रति श्रद्धा का भाव स्वतः उदय होना स्वाभाविक है। पूज्य बाबा के प्रति मेरी श्रद्धा ही इस ग्रन्थ के संपादन में संबल है। यह श्रद्धा-सुमन उनके प्रति अर्पित है, इसके सुवास से भावुक भक्त जनता का कल्याण होगा, ऐसी आशा है।

प्रस्तुत यह ग्रन्थ पाँच खण्डों में विभक्त है—

प्रथम (जीवनी) खण्ड में पूज्य बाबा के आविर्भाव का संक्षिप्त परिचय तथा यात्रा के प्रकरण में उनकी तपस्याओं एवं अनुभवों का

उल्लेख है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बाबा ने पञ्चतत्त्वों से ही (पृथिव्यादि) शिक्षा ग्रहण की है, उन्हें ही वे गुरुकल्प मानते हैं। इस खण्ड में नैमिषारण्य तक की यात्रा वर्णित है।

दूसरा खण्ड उनके अनुभवों का है, जिसमें आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक रहस्यों का प्रतिपादन है।

तीसरे खण्ड में पूज्य बाबा के उन उपदेशों का संग्रह है, जिन्हें समय समय पर भक्त जनों के हितार्थ उन्होंने उपदेश दिया है। इसमें आध्यात्मिक और लौकिक उपदेश विशेष रूप से हैं।

चतुर्थ खण्ड में पूज्य बाबा की नेपाल यात्रा है। यह बड़ा ही रोचक एवम् उपदेशप्रद संकलन है। यहीं विशेष रूप से सन्त गोपाल बाबा का उल्लेख मिलता है।

पाँचवें खण्ड में देश के उन विशिष्ट लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों एवं अन्य भक्त जनों के संस्मरण हैं जिन्होंने श्री बाबा के दर्शन तथा उनके सम्पर्क में रहकर अनुभव प्राप्त किये हैं।

अन्तिम परिशिष्ट खण्ड में सत्संग निमित्त भजन, कीर्तन आरती आदि संकलित हैं।

इस ग्रंथ की सामग्री यत्र तत्र बिखरी हुई थी, भाषा भी व्याकरण-संमत नहीं थी, प्रयत्न करने पर भी कुछ त्रुटियाँ रह गईं हैं। पूज्य बाबा के प्रकृत शब्दों में ही उपदेशों का समावेश किया गया है।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्ड, नेपाल के प्राप्तावकाश उपकुलपति सरदार पं० श्री रुद्रराज पाण्डेय तथा श्री उमाशंकर पण्ड्या ने सम्पादन का भार देकर जो मुझे यह सुअवसर प्रदान किया तदर्थ मैं उनका आभारी हूँ।

इस पावन सन्त चरित्र के प्रकाशन से भक्त जनों का कल्याण होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। विज्ञेषु किमधिकम्।

मकर संक्रान्ति,
सं० २०२८ वै०
१४।१।७२ ई०

विदुषां वशंवदः
श्रीनरेश झा शास्त्री

ॐ श्रीसद्गुरवे नमः ।

श्रीगोपालनन्दनं वन्दे ।

पूज्य महर्षि सन्त श्री रामसनेही जी महाराज का
जीवन-परिचय एवं उपदेश

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्‌गणेभ्यः ॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ।

आध्यात्मिक सन्त की अद्भुत कथा

भारतवर्ष संत महात्माओं का देश है। अनादि काल से अब तक अनवरत और अखण्ड रूप में संतों की परंपरा इस देश में रही है और यही कारण है कि इस देश की अखण्ड संस्कृति एवं साधना का प्रह्लाद, नारद, पराशर, शुकदेव, व्यास, वाल्मीकि, विश्वामित्र आदि से लेकर यह भावगंगा अखण्ड भाव से इस पुण्य देश को सींचती रही है। संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, तुकाराम, नरसी मेहता, सूरदास, तुलसीदास, गुरु नानक, मीरा, दया, सहजो, आल्वार, नायनार आदि संतों को भगवान् ने हमारे कल्याण के लिए कृपा करके पृथ्वी पर भेजा।

विश्व में अनेक संस्कृतियों का उदय हुआ और वे असमय में ही लुप्त हो गईं किन्तु हमारी यह पवित्र भारतीय संस्कृति आज भी ज्यों की त्यों है, इसकी जड़ सन्तों की रहनी और गहनी पर स्थिर है, उनका तप-तेज इसको सम्हाल रहा है। उज्ज्वल बना रहा है। इसी प्रकार के महान् विभूतियों की परम्परा में एक महान् विभूति ब्रह्मनिष्ठ महात्मा श्री

१०११ महर्षि बाबा रामसनेही जी महाराज भी हैं, जिनका चरित्र-चिन्तन त्रिताप को दूर करनेवाला है। जिनके रोम-रोम से राम की प्रतिध्वनि निकलती रहती हैं।

पूज्य श्री महाराज का आविर्भाव लगभग २५० वर्ष पूर्व का संभावित है, तथा यह भी विश्वस्त सूत्र से कहा जाता है कि आप का जन्मस्थान उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिलान्तर्गत मड़ियाहू तहसील के बेलवा नामक ग्राम में है। श्री महाराज का जन्म यहीं एक सम्पन्न एवं सत्कुल परिवार में हुआ था।

जब श्री महाराज जी की आयु कुल ६-७ वर्ष की रही होगी उस समय एक दिन अकस्मात् कान में दर्द होने लगा, इस दर्द से परिवार के सभी लोग परेशान हो गये, अनेक उपचार करने पर भी कुछ लाभ नहीं हुआ। इस प्रकार कई दिन बीत गये। माता-पिता की परेशानी का फिर क्या कहना, वे कई रात से जगे होने के कारण थक गये थे, थकावट के कारण वे सो गये। इधर श्री महाराज जी को तीव्र वेदना के कारण अत्यधिक दर्द हो रहा था, उस समय पुकारने पर भी कोई नहीं बोला, उन्हें यह ज्ञात हो गया कि परिवार के सभी लोग थककर सो गये हैं। फिर इनके किये कुछ हो भी नहीं सका है, उन्हें यह भलीभाँति ज्ञान हो गया कि 'सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता' अर्थात् सुख और दुःख का कोई देने वाला नहीं होता है, यह तो संस्कारवश जीव को स्वयं भोगना पड़ता है, तथा यह भी ज्ञान हुआ कि माता-पिता के अतिरिक्त भी कोई सर्व सामर्थ्यवान् ईश्वर है। वही तत्काल कष्ट को हर सकता है। उन्होंने करुण स्वर में ईश्वर को हृदय से पुकारा, सर्वान्तर्यामी प्रभु ने उनकी पीड़ा को तत्काल हर लिया। पीड़ा शान्त हो गई, इस घटना से श्री महाराज जी को ईश्वर की विशिष्ट शक्ति का ज्ञान हुआ, और भगवत्कृपा में दृढ़ आस्था हुई।

स्वप्न में भविष्य-दर्शन

बाल्यावस्था में एक दिन श्रीमहाराज ने स्वप्न में देखा कि—उनके पिता का देहान्त हो गया है, उनको जलाने के लिये सब लोग स्मशान ले गये हैं, दाहक्रिया का समय उपस्थित है, इसी अवसर पर माता रोती हुई अपने पति को जलाने से सब को रोक रही है, सब लोगों ने सोचा

यह रोते रोते अन्ततोगत्वा थक जायगी, रोना तथा रोकना बन्द कर देगी तब हम लोग जला देंगे, यह कहकर वे लोग कुछ दूर चले गये। माता जी वहीं अकेली बैठी रहीं। रात्रि में ऊपर (आकाश में) उड़ते हुए एक सवारी में एक स्त्री और पुरुष वहाँ से गुजरे। जाते हुए उन लोगों ने जब देखा कि एक स्त्री अकेली श्मशान में बैठी रो रही है। वे लोग माता जी के पास आकर बोले कि--आप क्यों रो रही हैं? माता जी ने उत्तर दिया कि मेरे पतिदेव की मृत्यु हो गयी है, इसी कारण मैं रो रही हूँ। इस पर दोनों ने कहा कि--तुम्हारे पति की आयु पूरी हो गई है, अतः वह मर गया। अब व्यर्थ तुम क्यों रो रही हो। माता ने कहा कि--मैं यह चाहती हूँ कि मेरे पति जीवित हो जायँ। यह सुन कर उन दिव्य स्त्री-पुरुषों ने कहा कि--तुम्हारी आयु अभी ६० वर्ष और शेष है, अगर उसमें से तुम आधी आयु ३० वर्ष अपने पति को दे दो तो तुम्हारा पति जीवित हो सकता है। माता जी ने 'तथास्तु' कहा, इतना कहते ही श्रीमहाराज के पिता जी जीवित हो गये। पश्चात् महाराज को स्वप्न में ही ज्ञान हुआ कि उनके माता-पिता ३० वर्ष बीतने के पश्चात् मर जायँगे तथा उन्हें योग-साधना की प्राप्ति होगी। नियत समय पर श्रीमहाराज के माता-पिता का देहान्त हो गया, एक भाई की भी मृत्यु हो गई। परिवार से कोई मोह न रह जाने के कारण उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और वे सब का परित्याग कर योग-साधना के लिये चल पड़े।

संसार से उदासीनता और मन्त्र की प्राप्ति

घोर तपश्चर्या का जीवन

संसार से विरक्ति हो जाने के पश्चात् श्री महाराज परिभ्रमण करते हुए नैनी पहुँचे, नैनी से रीवाँ की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्होंने विचारा कि कपड़े पहने होने के कारण कोई चोर बदमाश न समझ ले और तंग न करे इसलिये वस्त्र उतार कर जला दिया, 'रहे बाँस न बाजे बसुली'। जले हुए उन्हीं वस्त्रों की विभूति लगा ली। संसार का रहा सहा बन्धन भी काट दिया। यात्रा के क्रम में दिन भर चलते, भूख लगने पर आम की पत्तियाँ तोड़कर चबा लेते थे, बस, यही आधार लेकर आत्मसन्तोष कर लेते थे। रात किसी पेड़ पर चढ़कर बिता देते थे। सदैव राम-नाम का सुमिरन करते हुए लकड़ियाँ इकट्ठी कर धूनी तापते रहते थे, यही उनके शीतनिवारण का उपाय था।

एक दिन रात्रि के समय आम के वृक्ष के नीचे धूनी लगाकर बैठे थे। चारों ओर सुनसान था, भूत-प्रेत-पिशाचों का भय व्याप्त था, उस समय राम राम का उच्चारण करने मात्र से भय दूर हो गया। भयरहित होने पर श्रीमहाराज का नाम में ध्यान लग गया और वे ध्यानस्थ हो गये। ध्यान में ही श्रीमहाराज ने देखा कि—पेड़ के ऊपर एक पुरुष कहीं से उड़कर आ बैठा है। वावा ध्यान में इतने तन्मय थे कि कभी इधर गिरते, कभी उधर गिरते, कभी मुँह के बल धूनी पर गिर जाते जिससे मुँह जल जाता। इस प्रकार सारी रात बीत गई। प्रातः काल सूर्योदय होने पर वृक्ष के ऊपर में स्थित वह पुरुष बोला कि—तुमको माला जपने के लिये देते हैं, यह सुनने पर श्रीमहाराज ने आँखे खोलीं और पूछा कि उस माला का मंत्र तो बतावें। इस पर पुरुष गुरु बोले कि माला का मन्त्र इस प्रकार है—

फ, म, ब, ल,

१. फ=माने=फना=अपने को उसकी याद में मिटा दो, समर्पण कर दो।

२. म=माने=मैं ही माता हूँ

३. ब=माने=बहुत=अगर इतना कर लिया तो बहुत कुछ कर लिया, कृतकार्य हो गये।

४. ल=माने=लय अपने को उसके नाम में लय कर दो।

इतना बताकर श्रीगुरु का अन्तर्धान हो गया।

तप का प्रभाव

यात्रा के समय श्री महाराज रास्ते में कहीं विश्राम लेते तो वहाँ लकड़ियाँ एकत्रित कर धूनी रमा लेते थे। फिर दूसरे दिन आगे बढ़ते, वे उसी रास्ते से चलते थे जिस रास्ते में लोगों का आवागमन कम होता हो और बीच में गाँव नहीं पड़ते हों। ठण्ढ, गर्मी और बरसात में विना वस्त्र के उघारे ही रहते थे। सुख दुःख सब उनके लिये बराबर था। इस प्रकार कहीं एक दिन कहीं दो दिन ठहरते, रुकते जाली बाजार होते हुए सुदागी पहाड़ की ओर तपस्या के लिये चले। रास्ते में एक नदी पड़ी, बाबा नदी में उतर गये, नदी के बीच में एक टापू था, उसी पर रहने का विचार करने लगे। निश्चय के अनन्तर वहाँ धूनी लगाने

का विचार कर ही रहे थे कि सन्ध्या हो गई। नदी के किनारे घूमने के लिये कुछ लोग पहुँचे, बीच नदी में टापू पर एक महात्मा को देखकर उन लोगों की उत्सुकता बढ़ी और वे लोग नदी में प्रवेश कर टापू पर पहुँच गये। वहाँ उन लोगों ने देखा कि—एक महात्मा बैठे हैं। प्रणाम करके वे लोग बाबा के पास बैठ गये। इसी क्षण ऊपर आकाश में कड़क हुई और आवाज आयी कि आप लोग छाँह में चले जाइये, अब बहुत तेज आँधी-पानी होगा। बाबा ने इस आकाशवाणी का स्पष्ट अनुभव किया, उन्होंने उन भक्तों से कहा कि—आप लोग धूनी के लिये कुछ लकड़ियाँ दे जाओ। बाबा की आज्ञा को शिरोधार्य कर भक्त गण घर आये और थोड़ीं ही देर में कुछ लकड़ियाँ लेकर फिर बाबा के पास पहुँच गये। बाबा लकड़ियों से धूनी लगाकर वहीं बैठ गये और उन भक्तों से कहा कि—अब आप लोग जाइये बहुत जोर पानी आने वाला है, बाबा की आज्ञानुसार वे लोग जब चले गये तब बाबा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि—आप कहते हैं छाँह में चले जाओ, सो आप को पाने के लिये ही तो मैंने घर-द्वार छोड़ा, छाया छप्पर छोड़ा, अब आप कहते हैं कि 'घर जाओ' यह कहते हुए बाबा बहुत दुःखी होकर सोचने लगे कि—यह ईश्वर की क्या लीला है? इतने दिन योगसाधना में बीते, इतनी तपस्या की, अब घर जाने की आज्ञा हो रही है!

सांसारिक कार्यों में लिप्त होने पर भी मरण निश्चित है, अतः क्यों न ईश्वर के नाम पर ही इस नश्वर (नाशवान्) शरीर का अन्त कर दें। इससे यह लाभ तो होगा कि अगले जन्म में मेरा कर्म ऊँचा होगा, ऐसा मन में सङ्कल्प (भावना) कर वहीं बैठने का निश्चय कर लिया। इसी समय आकाश से फिर आबाज आई कि—'आप मानोगे नहीं! और थोड़ी देर में धूआँधार पानी बरसने लगा। बाबा सिकुड़कर धूनी को पेट के नीचे करके बैठ गये, सिर को नीचा किये हुए थे। इन्द्र भगवान् का कोप हुआ, प्रलयकाल की तरह पानी बरस रहा था, यहाँ तक कि साँस (दम) लेना भी कठिन हो रहा था। जब बाबा को साँस लेने में कठिनाई होती तो वे कहते कि—ठहरो, यदि आपको जीवन लेना है तो शान्तिपूर्वक लीजिये, घबड़ाहट में क्यों प्राण ले रहे हैं, इतना कहने पर पानी कुछ थमा और बाबा कुछ स्वस्थ हुए।

इस प्रकार घनघोर वर्षा में भींगते बैठे सात दिन बीत गये इस अवधि

में बाबा राम नाम का आश्रय लिये हुए अग्नि-साक्षी करके बैठे रहे, आठवें दिन पानी बरसना कुछ कम हुआ। आसपास के गाँवों में यह समाचार फैल गया था कि एक महात्मा नदी के बीच में टापू पर ७ रोज से भींगते हुए बैठे हैं। यह सुनते ही वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई और सभी लोग बाबा से आग्रहपूर्वक कहने लगे कि 'आप नदी के पुल पर से पार उतरकर उस पार चलिये। यह सुनकर बाबा बोले कि—मैं मनुष्य के बनाये पुल पर से नदी नहीं पार करूँगा, मैं तो पानी में प्रवेश करके पार जाऊँगा। भक्तों ने कहा कि यदि आप ऐसा करेंगे तो हमलोग भी आप के पीछे पीछे चलेंगे, ऐसी ही भक्तों की इच्छा थी। बाबा ने विचार किया कि—यदि कहीं मैं जल में डूब गया तो ये लोग भी डूब जायँगे। ऐसी स्थिति में लोग यह सोचेंगे कि---यह कैसा पाखण्डी बाबा आया कि अपने तो डूबा ही साथ ही इतने लोगों को भी ले गया' ऐसा मन में विचार कर ईश्वर का स्मरण किया और प्रार्थना की कि---हे प्रभो! अब तो जा ही रहा हूँ, आप जैसा उचित समझें करें, यह कह कर बाबा पानी में उतर गये।

नदी में पूरा पानी आ गया था, परन्तु ईश्वर की कृपा से बाबा के पानी में उतरते ही पानी कमर बराबर हो गया, बाबा अपना बायाँ अंग ऊपर उठाकर दाहिने अंग से चल कर उस पार पहुँच गये। बाबा के पीछे-पीछे भीड़ जिसमें छोटे बड़े सभी थे पानी में चलकर नदी पार कर लिये। अथाह पानी घटकर घुटने भर हो गया, इस प्रकार का दैवी चमत्कार बाबा का लोगों ने प्रत्यक्ष देखा।

इन्द्र पर विजय और सुदागी पहाड़ पर घोर तपस्या

अनायास ही नदी पार करने के बाद उस पार पहुँचकर बाबा एक पुराने पेड़ की खोह में जाकर बैठ गये। लगातार कई दिनों तक भींगने से बाबा का शरीर काँप रहा था। यह देख वहाँ पर उपस्थित भक्तों ने पेड़ के पास लकड़ियाँ लाकर धूनी लगा दी, सात दिन तक बाबा वहीं रहे। पानी अभी बराबर बरस ही रहा था, फिर भी बाबा एक दिन चुपचाप वहाँ से उठकर बिना किसी को कुछ कहे आगे सुदागी पहाड़ की ओर चल पड़े।

कुछ दूर जाकर एक पुराने पेड़ को देखकर वहीं आसन जमाने का विचार करने लगे। उस पेड़ से प्रार्थना करने लगे कि—हे महाराज,

आप के नीचे बैठने का इरादा है, आप कितने महान् हो! कितने वर्षों से आप यहाँ खड़े हो, सब जीवों का उपकार कर रहे हो, कितने ही लोगों को फल देकर स्वयं धूप और शीत में खड़े हो, वस्तुतः आप परोपकारी हो, दूसरों के लिये ही आप का जीवन है। इस प्रकार आधीनता मानकर वहाँ जगह को साफ कर, भूमि को चूमकर अपना आसन जमाया तथा धूनी जलाकर बैठ गये। कुछ समय तक वहीं बैठे रहे फिर उठकर तथा वृक्षराज को प्रणाम कर सड़क के रास्ते चलने लगे। चलते-चलते जब सन्ध्या हुई तो एक जगह रुके। वहाँ थोड़ी देर के बाद जब कुछ लोग आये तो बाबा ने उनसे कहा—कि हम उघाड़े हैं, धूनी के लिये कुछ लकड़ी ले आओ। उन लोगों ने थोड़ी देर में तीन ३ लकड़ियाँ लाकर बाबा के पास रख दिये। बाबा ने धूनी लगा ली, और उसीको साक्षी करके भगवन्नाम के ध्यान में लग गये। दूसरे दिन भी यही क्रम चलता रहा। शाम को फिर पानी पड़ने लगा; बाबा पेड़ के नीचे धूनी कर कुकुड़ु मुकुड़ु होकर बैठ गये। आधी रात हो गई और पानी उसी तरह बराबर बरसता रहा—सिवाय ईश्वर के और कोई सहारा नहीं था—ऊपर आकाश में एकाएक खूब जोरों से बिजली चमकी, उस प्रकाश में ऐसा मालूम पड़ने लगा कि—एक विमान ऊपर आकाश में इधर से उधर दौड़ रहा है। और ऊपर से आवाज आयी कि 'देखो! 'मेरा जोगी अकेला भींग रहा है, उसका कोई सहारा नहीं है' बाबा ने यह सब प्रत्यक्ष देखा और सुना। यह सब देख-सुनकर बाबा ने अनुभव किया और समझ गये कि ईश्वर के खाते में अब मेरा नाम लिख गया है। इस प्रकार इन्द्र पर ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हुई।

सुबह वहाँ से उठकर 'सुदागी' पहाड़ पर पहुँचे और ऊपर चढ़ गये। वहाँ एक तपस्या योग्य स्थान देखकर जहाँ नीचे की ओर एक गुफा थी और गुफा के पास ही शंकर जी का स्थान एवं कुण्ड और कुण्ड के चारों ओर छायेदार घने वृक्षों की छतरी सी बनी हुई थी, बाबा आसन जमा कर बैठ गये। यह स्थान बहुत ही अच्छा और एकान्त था। उसके चारों ओर घनघोर जंगल था। वहीं रह कर बाबा ने ध्यान-भजन करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार जब बाबा ने वहाँ ५ वर्ष तक घोर तप किया तब एक दिन धूनी पर बैठे हुए सामने देखते हैं कि तीन देव (त्रिदेव) प्रगट हुए हैं। बाबा को देखकर वे खड़े हो गये और उनमें

से एक ने कहा कि 'ठीक है,' दूसरे देव ने कहा–'अच्छा है,' और तीसरे ने कहा कि—'ठीक ही है'। इस प्रकार तीनों देव 'ठीक है' अच्छा है आदि कह कर अन्तर्धान हो गये। उस समय बाबा को अनुभव हुआ कि मुझे यहाँ सफलता ही मिली है, हमारी तपस्या व्यर्थ नहीं गई।

बाबा एक दिन जब ध्यान में लीन थे नर्मदाजी प्रगट होकर बोलीं कि—'आप अमरकंटक जाओ' इसपर बाबा ने कहा कि 'जाऊँगा'। सुदागी पहाड़ पर तपस्या करने के बाद बाबा रीवाँ होते हुए अमरकंटक की ओर चल पड़े।

बाबा का अमरकंटक पहुंचना तथा नर्मदा जी के किनारे एक महात्मा से भेंट

रास्ते में स्थानों पर ठहरते, धूनी रमाते आगे बढ़ते, जहाँ कहीं जो कुछ भी भक्तों द्वारा अर्पण होता उसे धूनी में ही डाल देते थे, यदि शेष कुछ रह जाता तो चिड़ियों के निमित्त चुगने को डाल देते थे। सब कार्यों में अग्निदेव को साक्षी रखते थे, क्योंकि उन्हीं की कृपा से समय समय पर सब प्रबन्ध होता रहता था। कभी चीज की कमी नहीं हुई। जहाँ जाते दर्शनार्थ लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। भीड़ से घबड़ा कर वहाँ से चल देते थे। इस प्रकार घूमते-फिरते चलते चलते बाबा अमरकंटक पहुँच गये। वहाँ कुछ दिनों तक नागागिरि के स्थान पर रहे, कुछ दिन मार्कण्डेय के स्थान पर और कुछ काल ब्राह्मी के जमीन पर ठहरे। वहाँ केवल ब्राह्मी की पत्तियों का ही आधार रखते थे। वहीं पर छत्तीसगढ़ के एक भक्त मालगुजार ने बाबा को रहने के लिये एक कुटी बना दी। उस कुटी में बाबा ब्राह्मी की पत्तियों को खाकर ही भजन करते रहते थे। एक दिन बाबा के मन में विचार हुआ कि नर्मदा के किनारे घूमना चाहिये, बस क्या था बाबा कुटी से निकल गये। कहीं भी एक स्थान पर ज्यादा दिन नहीं ठहरते थे, बराबर घूमते रहते थे। रास्ते में 'सहस्त्र-धारा' पर थोड़ी देर विश्राम किया वहाँ एक महात्मा से भेंट हुई, दो दिनों तक उन्होंने बाबा से कुछ भी नहीं पूछा, तीसरे दिन जब देखा कि यह बाबा महान् जोगी है तब उनके हृदय में भोग-राग अर्पण करने की भावना हुई, मिश्री का भोग आया, मिश्री खाकर बाबाने पानी पीया और फिर भ्रमण के लिये प्रस्थान कर दिया। रास्ते में जहाँ लकड़ी

का साधन मिलता वहाँ शरीर को विश्राम देते हुए ही यात्रा करते थे। यात्रा में अधिक चलना ही उन्हें इष्ट नहीं था बल्कि भजन करने में विशेष ध्यान था। इस लिये आराम से जितना चल सकते थे उतना ही चलते तथा भजन करते रहते थे। विशेष रूप से नर्मदा के किनारे ही यात्रा करते थे। यात्रा में जल और धूनी की ही भरोसा रखते थे। इस प्रकार यात्रा करते हुए बाबा 'डिण्डोरी' पहुँचे, वहाँ नर्मदा के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे आसन जमाया और विश्राम किया। वहाँ कटारी कानूनगो ने महाराज की सेवा की।

नर्मदा तथा उनकी सहायक नदियों की परिक्रमा

श्रीमहाराज जी को कानूनगो आदरपूर्वक सत्कार के साथ जबलपुर ले आये तथा अपने लड़के के यहाँ ठहराया। वहाँ २-३ रोज विश्राम करने के पश्चात् फिर नर्मदा जी का किनारा पकड़ ग्वारीघाट पहुँचे। वहाँ कुटी बनायी और कुछ दिनों तक उन्हें वहाँ विश्राम मिला। पश्चात् वहाँ से भी चल दिये। नगर-कोलाहल एवं जन-जीवन से छुपकर ही यात्रा करने का एकमात्र उद्देश्य बाबा का था, तदनुसार आगे बढ़ते गये। उनका पड़ाव बस्ती से हमेशा दूर ही रहता था, धूनी का प्रबन्ध अपने आप ही होता रहता था। बाबा जहाँ कहीं भी बैठते भक्त मण्डली घेर लेती थी इससे बस्ती से दूर ही रहते थे। तथा प्रतिदिन धूनी में हवन करते, पृथ्वी को चूमते-चाटते, सब पेड़, पृथ्वी और वायु को साक्षी रखते, महात्माओं के स्थान पर प्रणाम करते, उनकी महिमा का आदर करते, एवं उनके किये हुए कर्मों का अपूर्व मान करते रहते थे। इसी प्रकार पुराने झाड़ वृक्षों का विशेष मान आदर करते-चूमते थे। वृक्षों को यह मान्यता देते कि आप कितने महान् हैं, सभी लोगों का आप पालन करते हैं, दूसरों के लिये ही आप का जीवन उत्सर्ग है। बाबा को उनकी भावना बनाकर तथा उनको राजी करते हुए यदि किसी भक्त ने आग्रह-पूर्वक कुटी बना दिया तो १०-५ रोज विश्राम कर लेते थे। परन्तु स्थायी रूप से कहीं भी विश्राम नहीं करते थे। हमेशा निर्लिप्त रहते थे। इसी क्रम से ५-६ साल बीत गये। तत्पश्चात् नर्मदा की ९९९ सहायक नदियाँ जो कि नर्मदाजी में आकर मिलती हैं, उनसे साक्षात्कार हुआ, कई नदियों की परिक्रमा की। इसके बाद फिर नर्मदा-किनारे की यात्रा

प्रारम्भ कर दी। इस यात्रा के क्रम में कई महात्माओं के दर्शन हुए जो ध्यानमग्न बैठे थे। उन महात्माओं की जिज्ञासा रखते, उनके स्थानों पर १, २ रोज विश्राम करते,—स्थान के महत्त्व को प्रणाम करते आगे बढ़ते जाते थे। उन महात्माओं को इस लीन अवस्था में देखकर मन में यह बोध होता था कि—ये कितने महान् हैं कि—परोपकार में ही तत्पर बैठे हैं—ईश्वर में ध्यान लगाये हुए हैं—यह ठीक ही है, क्योंकि नीतिशास्त्र में कहा है–'परोपकाराय सतां विभूतयः' अर्थात् परोपकार के लिये ही सज्जनों की (महात्माओं की)विभूतियाँ होती हैं।

श्रीमहाराज का द्वारकापुरी-गमन तथा आकाशवाणी द्वारा भगवान् का दर्शन

नर्मदा जी के किनारे-किनारे चलते हुए गुजरात के भड़ौच स्थान पर बाबा का आगमन हुआ। बाबा ने वहां नर्मदा नदी का किनारा छोड़ कर द्वारकापुरी की ओर प्रस्थान किया। बाबा द्वारकापुरी पहुंचे। वहां एक गृहस्थ के घर में जो कि रेल्वे स्टेशन के सामने ही है विश्राम किया। गृहस्थ के अच्छे व्यवहार से बाबा को वहीं कुछ दिन ठहरने की इच्छा हुई। तीन महीने तक उस स्थान पर निवास किया। वहाँ बाबा दिन-रात भजन में लगे रहते थे। एक दिन बाबा के मन में विचार आया कि यह द्वारकापुरी है, इसका स्थान सप्त मोक्ष-पुरियों में है यहाँ देव-दर्शन करना चाहिये। यह विचार कर बाबा मन्दिर पहुँचे, उस समय मन्दिर में बहुत भीड़ थी, मन में सोचा कि अभी दर्शन करना कठिन है। श्रीमान् लोग जो भगवान् के लिये चढ़ावा लाते हैं उनको तो तुरन्त दर्शन हो जाता है। बाबा ने मन में सोचा कि 'हम तो खाली हाथ हैं, उघाड़े हैं, कपड़े भी नहीं हैं हमको कौन दर्शन करायेगा। इस प्रकार विचार करके दुःखी होकर मन्दिर के एक ओर खड़े रहे। कुछ देर के बाद मुख्य (खास) मन्दिर को छोड़कर छोटे मन्दिरों में गये। वहाँ उन छोटे मन्दिरों को चूमते उनकी महानता को देखते-उनमें मस्तक लगाते जिससे प्रकाश हो जाय। यदि कहीं पानी गिरता तो उसे अमृत मान जिह्वा द्वारा पान कर जाते। रास्ते की धूल को, मोहरी की धूल को सिर पर चढ़ाते—ऐसी भावना रखते कि जो भी जती-सती ने यहाँ काम किया है उसका जो पुण्य है, तेज है, वह हममें आ जाय।

यह कोई जानता नही था और समझ भी नहीं सकता था। बाबा मुख्य (खास) मन्दिर का दर्शन नहीं होने के कारण दुःखी होकर अपने स्थान पर लौट आये। भगवान् के ध्यान-पूजन में लग गये। एक महीने के बाद फिर ख्याल आया कि द्वारकापुरी में आये और भगवान् का दर्शन नहीं मिला, हाथ में एक डण्डा लेकर दर्शनार्थ चल पड़े। द्वारकाधीश के फाटक पर पहुँचे, वहाँ एक मोटा-सा आदमी फाटक पर खड़ा मिला। श्रीमहाराज के पहुँचते ही वह बोला कि—चलो महाराज, आप को दर्शन करा दें। वहीं कुछ दूरी पर एक संतरी खड़ा था, उसने कहा कि—बाबा, डण्डा यहाँ रखकर दर्शन को जाइये। महाराज ने डण्डा वहाँ रख दिया और उस आदमी के साथ दर्शन को चल दिया। जब महाराज मन्दिर के अन्दर पहुँचे, साथ वाले आदमी ने आवाज दी कि—महाराज को दर्शन करने जाने दो। उस समय भीड़ में एक दरार पड़ गई और महाराज सीधे अन्दर पहुँच गये। महाराज की इतनी प्रगाढ़ भावना थी कि भगवान् के पास जाकर चूम-चाटकर आनन्दित हो गये। उस समय ऐसा उन्हें मालूम हुआ कि वे उस देव के साथ एकाकार हो जायँगे। एकाएक उनके मन में यह भावना जागृत हुई कि भगवान् को माला अर्पण करें, पीछे घूमकर देखा तो एक भक्त माला लेकर खड़ा है। उस भक्त से माला लेकर महाराज ने अर्पण कर दिया। इससे उनके मन में अत्यन्त आनन्द हुआ, उनकी आत्मा प्रसन्नता से भर गई। वे खुशी से कहने लगे कि—भगवान् ने जैसा कहा था, जैसी आकाशवाणी हुई थी वैसे ही हुआ। क्यों न हो भगवान् तो भक्तों के वश में ही रहते हैं। उनकी तो यही प्रतिज्ञा है कि—

नाहं वसामि वैकुण्ठे प्राणिनां हृदये न च।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

अर्थात्—हे देवर्षि नारद ! मैं वैकुण्ठ में ही नहीं रहता हूँ, प्राणियों के हृदय ही में मेरा वास नहीं है, मेरे भक्त मुझे जहाँ गान करते हैं, कीर्तन करते हैं, भजते हैं वहीं मैं निवास करता हूँ, अर्थात् भक्तों के वश में रहता हूँ।

द्वारकापुरी में महाराज को संसार की विचित्र गति का ज्ञान और वहाँ से प्रस्थान

दर्शन करने के बाद महाराज अपने स्थान पर वापस आये। जो नित्य-

कर्म चल रहा था उसी क्रम से चलने लगा। उस आश्रम में एक वृद्धा माता रहती थी, वही महाराज का प्रसाद बनाती थी। एक दिन वृद्धा ने चावल का भात बनाया, भोग के लिये महाराज के आगे रखा। महाराज उस समय ध्यानस्थ थे, उनका जब ध्यान टूटा तो देखते हैं कि चावल के दाने पिल्लू की तरह रेंग रहे हैं। उसके सिवाय और कुछ भी भोग प्रसाद वहाँ नहीं था, आत्मा को कैसे सन्तोष हो, आखिरकार उसी प्रसाद को ग्रहण किया। एक दिन महाराज ने वृद्धा को कहा कि भूख लगी है, रोटी लाओ। बुढ़िया के पास आँटा नहीं था, गेहूँ लेकर आटा पीसने लगी। बहुत देर हुई। महाराज ने सोचा कि बुढ़िया अभी तक रोटी नहीं लायी है। जब ध्यान लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि बुढ़िया गेहूँ पीस रही है, और गेहूँ रो रहा है कि मेरा सूखा ही प्राण जा रहा है। ऐसा ख्याल में आते ही महाराज का ध्यान जब टूटा तो वही प्रत्यक्ष देखते हैं। इस दृश्य से महाराज की ऐसी धारणा हुई कि हर चीज(वस्तु) में जीव है और जीव ही जीव का आधार है। कहा गया है—'जीवो जीवस्य जीवनम्'। यह भलीभाँति समझकर उन्होंने मन में सोचा कि इसके बिना कुछ नहीं हो सकता। जब बुढ़िया रोटी बनाकर लायी और महाराज ने भोग लगाया तब उन्हें कुछ देर के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि इन्द्रिय बहुत व्याकुल है। इन्द्रिय की व्याकुलता इतनी बढ़ी कि इन्द्रिय के ऊपर बैठकर भजन करने लगे, तब कुछ शान्ति हुई। इस घटना से महाराज को संसार का ज्ञान हुआ। मन में यह सोचने लगे कि ब्रह्मा, विष्णु, और महेश कितना आत्म-संयम करके किस प्रकार तपस्या किये होंगे। इसी समय महाराज ने देखा कि जमीन में एक छेद हो गया है, उसमें से एक लड़का निकला, पश्चात् दूसरा भी निकला और उसके बाद तीसरा भी निकल आया, इस प्रकार तीन लड़के क्रमशः निकले। जो वृद्धा महाराज का भोजन बनाती थी वह जवान रूप होकर उन तीनों लड़कों की सेवा करने लगी, उन्हें खिलाने पिलाने लगी, जब वे लोग कुछ बड़े हो गये तब एक दिन उस औरत ने उन लोगों को खाना (भोजन) खिलाया। भोजन के पश्चात् वे तीनों घूमने निकले। घूम कर जब वापस आ रहे थे तब उन तीनों ने रास्ते में विचार किया कि—चलो, जो हम लोगों को भोजन कराती है उसके साथ संभोग करें। इधर वह औरत (बुढ़िया) चौका-बर्तन करके एक स्थान पर बैठी थी। तीनों लड़के विचार करके चले, दो तो उनमें साथ ही चले तीसरा वहीं

रुक गया। किन्तु वे दोनों इसी विचार में रहे कि हम तीनों साथ ही हैं। वह औरत (बुढ़िया) सीढ़ी पर नीचे पैर करके बैठी थी। उन दोनों लड़कों में से एक ने बुढ़िया को दोनों टाँग पकड़ कर उलट दिया। औरत निवस्त्र (नंगी) हो गई। तब उन दोनों लड़कों ने देखा कि स्त्री के भोग के स्थान से खून और पीप वह रहा है। यह देखकर उनके मन में ध्यान आया कि जिस विषय-भोग के ख्याल से हम यहाँ आये हैं उसकी ऐसी दशा है, उनके मन में इस कार्य के प्रति घृणा हो गई और वे विषय-वासना से विरक्त हो गये। विचार में परिवर्तन हो गया। उन्हें सद्‌बुद्धि आ गई। महाराज यह सब सांसारिक लीला देखते-समझते रहे। उनको भी ज्ञान हो गया कि संसार की ऐसी ही गति है, इसी के लिये जीव व्याकुल रहता है। संसार की इस माया को देखकर महाराज को ज्ञान प्राप्त हुआ, इसके कुछ दिनों बाद ही महाराज द्वारकापुरी से हरषत (हर्षद) स्थान की ओर चल पड़े।

हर्षद में महाराज को देवी का वरदान—सुदामापुरी को प्रस्थान

रास्ते में महाराज ऐसे ही स्थानों में जहाँ की जगह भयावनी हो, जहाँ कोई नहीं बैठ सकता हो, उसी जगह को पवित्र और साधना-स्थल मानकर धूनी रमाते थे।

इस प्रकार यात्रा करते हुए बाबा हर्षद नामक स्थान पर पहुंच गये। यह स्थान मूलद्वारका के रास्ते में पड़ता है। मन्दिर का महन्त पुजारी मिले, बाबा के वेष को देखकर उसको बड़ी श्रद्धा हुई, बाबा को बहुत आदर पूर्वक घर ले गया। पुजारी का अपने प्रति सेवा-भाव देखकर बाबा वहाँ कुछ दिन ठहर गये।

यहीं हर्षद में एक देवी है, जो दिन में हर्षद में रहती है और रात में उज्जैन में रहती है। उस देवी से बाबा का साक्षात्कार हुआ। बाबा ने देवी से कहा कि—मैं जब उज्जैन जाऊँगा तो वहाँ मेरी इच्छा भंडारा करने की है, देवी ने भण्डारे की सामग्री देने का वचन दिया। बाबा प्रसन्न हो गये, उन्होंने कहा कि—मौका आने पर माँगेंगे।

वहाँ से बाबा ने आगे प्रस्थान किया। चलते-चलते मूल द्वारका पहुंचे। बहुत प्राचीन काल की अनेक मूर्तियाँ वहाँ पड़ीं थीं, मूर्तियों की सेवा में लगे एक पुजारी को भी बाबा ने देखा। पहले दिन तो पुजारी

ने बाबा को देखकर भी नहीं पूछा। फिर दूसरे दिन देखा तो उसके मन में कुछ श्रद्धा हुई और बाबा को प्रसाद भोग अर्पण किया। कुछ रोज वहाँ विश्राम कर बाबा वहाँ से भी सुदामापुरी की ओर रवाना हो गये।

सुदामापुरी पहुंचने पर बाबा को सब से अधिक यह चिन्ता हुई कि अब शहर में पहुंच गये हैं, धूनी के लिये लकड़ी वगैरह कहाँ से आयगी। बाबा अपने मन में यही सब विचार कर रहे थे कि रास्ता में एक मोटर का ड्राइवर मिला, बाबा को बड़ी श्रद्धा से अपने आफिस में लाकर ठहराया। ड्राइवर ने अपने मालिक राजा भाई को बाबा के चमत्कारी होने की बात कही तो उन्हें उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हुई। बाबा के भोग-प्रसाद की व्यवस्था वहीं होती थी। दिन में बाबा समुद्र के किनारे एक मन्दिर था उसमें ही रहते थे और समुद्र भगवान् का दर्शन करते थे। समुद्र के किनारे जाते समय रास्ते में एक मुसलमानों का कब्रस्तान था, वहाँ एक दरगाह है। बाबा वहाँ जाकर कब्रों को चूमते प्रणाम करते थे। बाबा वहाँ एकान्त में जाया करते थे। इनका रोज का यही नियम था। इस प्रकार सबको राजी रखते हुए बाबा ने कुछ दिनों तक राजा भाई के यहाँ विश्राम किया।

कुछ दिनों के पश्चात् बाबा वहाँ से जूनागढ़ की ओर रवाना हो गये। चलते चलते बाबा जूनागढ़ पहुंच गये। उस समय बाबा शरीर में कोई वस्त्र नहीं पहनते थे, नग्न ही रहते थे। जूनागढ़ में बाबा ने एक होटल देखा। वहीं उनको एक भास्कर नाम का लड़का मिला। वह जाति में नागर ब्राह्मण का लड़का था। उसने बाबा की बड़ी सेवा की। वह हमेशा समय पर बाबा को चाय आदि पहुँचाता था। उसे बराबर बाबा की चिन्ता लगी रहती थी, वह सेवा में रहता था। बाबाने एक दिन कहा कि—कोई अच्छी जगह बताओ, जहाँ बैठकर मैं भजन कर सकूँ। भास्कर ने कहा कि—गुप्तेश्वर नाम का एक सिद्ध जगह है, वहाँ कोई नहीं रहता है, निर्जन है। मैं आपको वहाँ ले चलता हूँ। बाबा को साथ लेकर वह गुप्तेश्वर पहुँचा, वहाँ पुल के नीचे (दामोदर कुण्ड के नीचे) राधा ढेवरी के बगल में बाबा को स्थान बताया। वहाँ बाबा को बिछाने के लिये एक टाट का टुकड़ा देकर भास्कर वापस चला गया। बाबा जहाँ पर थे उसके नीचे की ओर एक गुफा थी उसमें ही रहने लगे।

भास्कर कभी कभी वहाँ आता और धूनी के लिये लकड़ी आदि का प्रबन्ध (सेवा) कर जाता था। बाबा वहीं भजन में लीन हो गये। केवल हवा और पृथ्वी को साक्षी बनाकर रहने लगे। इसी बीच जूनागढ़ का एक दुल्ली सेठ बाबा की सेवा में आया। इस प्रकार भास्कर और दुल्ली सेठ ये दोनों बाबा की सेवा में आया करते थे। जिस गुफा में बाबा ने अपना आसन जमाया था उसी गुफा में शंकर भगवान् स्थापित थे। उन्हीं गुप्तेश्वर की सेवा पूजा में तथा राम राम के भजन में बाबा लीन हो गये। १ वर्ष तक पूजा और तपस्या चलती रही। पूजन के लिये १ औरत जिसके दो बच्चे थे फूल लाती थी। एक दिन पूजा के समय शंकर भगवान् प्रसन्न होकर बोले कि—आज जो फूल चढ़ायगा उसको वरदान मिलेगा। बाबा पूजा के लिये बैठे थे, पर फूल नहीं थे। उस दिन वह औरत फूल भी नहीं दे गई थी। उसी समय शक्ति भी सर्प के रूप में वहाँ प्रगट हो गईं। वह इस विचार में थी कि बाबा के पास तो फूल है नहीं। मैं शंकर जी को फूल चढ़ाकर विजय प्राप्त कर लूंगी। उनसे वरदान मिल जायगा। बाबा ने जब देखा कि वह जो औरत रोज फूल लाया करती थी आज वह भी फूल लेकर नहीं आयी है, अगर यहाँ से उठ जाते हैं और फूल इकट्ठा करने जाते हैं तो शक्ति जी फूल चढ़ाकर विजय प्राप्त कर लेंगी, और मेरी एक साल की पूजा-तपस्या ब्यर्थ हो जायेगी। परन्तु न जाने कहाँ से बाबा के हाथों में फूल आ गये। उस फूल को बाबा ने शंकर जी को चढ़ा दिया। यह सब लीला देखकर शक्ति जी बाबा के ऊपर नाराज हो गईं। बाबा की तो एक साल की तपस्या सफल हुई। उन्होंने शक्ति जी से प्रार्थना की कि—आप नाराज न हों, आपकी चरणपादुका मँगाकर मैं पूजन करूँगा। ऐसा कहने पर शक्ति प्रसन्न हो गईं। उसी दिन बाबा ने दुल्ली सेठ द्वारा मकराने से देवी जी की चरणपादुका मँगवाकर धूनी पर रख दिया। इस कार्य से बाबा दुल्ली सेठ पर बहुत प्रसन्न हुए। देवी जी की चरणपादुका की धूनी पर बहुत दिनों तक बराबर पूजा होती रही। इस प्रकार बाबा ने शक्ति जी को भी प्रसन्न कर लिया।

ब्रह्माजी से ब्रह्मास्त्र तथा उसकी शिक्षा-प्राप्ति

गुप्तेश्वर में बाबा ध्यानमग्न थे। एक दिन आकाशवाणी हुई, ब्रह्माजी प्रगट होकर बोले—तुम्हारी तपस्या से हम प्रसन्न हैं, तुम्हें एक ब्रह्मास्त्र देते

हैं। बाबा ने ब्रह्मा जी से कहा कि--हम एक ब्रह्मास्त्र लेकर क्या करेगें, हाँ एक ब्रह्मास्त्र से अगर लाखो ब्रह्मास्त्र हो जायँ तो हम ले सकते हैं। इसपर ब्रह्माजी ने कहा कि तब तो हमें आपको ब्रह्मास्त्र का हाल सिखाना होगा। यह कहकर ब्रह्माजी बताने लगे कि—दोनों दृष्टियों को हृदय की दृष्टि में डाल दो और अन्तर की दृष्टि दबाओ तथा ऊपर का ध्यान लगाओ। कुकुड़-मुकुड़ बैठ जाओ और बायाँ हाथ सिर पर रखो और दाहिना हाथ जितना ऊँचा उठ सके उठा लो, फिर बाण ऊपर से काटो और नीचे उतार कर रखो। इसी प्रकार काटते रखते चलो, महाराज ने इसी क्रिया को करके लाखों बाण तैयार कर लिये। ब्रह्मा जी ने आगे कहा कि—अब बायाँ हाथ सीधा रखो और दाहिने हाथ से बाण उठाकर बाँये हाथ पर रखो, बाबा ने वैसा ही किया। फिर ब्रह्माजी ने कहा कि अब जहाँ यह ब्रह्म-बाण भेजना हो, बाहर की आँख अन्तर की आँख में रखकर विचार करोगे, वहीं ब्रह्मबाण चला जायगा। ब्रह्माजी की शिक्षा के अनुसार बाबा एक एक बाण रखते गये और ऊपर के ध्यान में हो गये, पश्चात् क्रमशः प्रत्येक बाण ऊपर उठता गया इस प्रकार आकाश में बाण ही बाण छा गये। बाबा ने जब ऊपर देखा तो बहुत प्रसन्न हुए। ब्रह्माजी ने इन्हें जो सिखाया, महाराज ने बड़ी खुशी से स्वीकार किया और मन में उन्होंने सोचा कि संसार में इसकी कभी जरूरत पड़ेगी, यह विचार कर सेवा स्वीकार की। इसी ब्रह्माजी के दिये हुए वरदान से बाबा ने ब्रह्मास्त्र को सिद्ध किया है। इस सिद्धि के पश्चात् बाबा नाम-ध्यान में मग्न हो गये।

शक्ति का आविर्भाव

एक दिन बाबा शक्ति जी और शंकर जी की पूजा कर रहे थे साथ ही राम राम भी जप रहे थे। जब शक्ति जी की चरणपादुका में प्रेम से देखकर पूजन कर रहे थे कि एकदम प्रकाश की एक ज्योति उसमें से प्रगट हुई, उस ज्योति के प्रकाश से आँखें चकाचौंध हो गईं, प्रेम से ही देवी प्रगट हुईं। बाबा एकाएक उठकर वहाँ से चले और एक जैनी सेवक के घर के अन्धेरे कमरे में रहने लगे। धूनी का भी वहाँ प्रबंध हो गया। बाबा वहाँ १५ दिनों तक रहकर अन्यत्र चले गये।

रीवा में
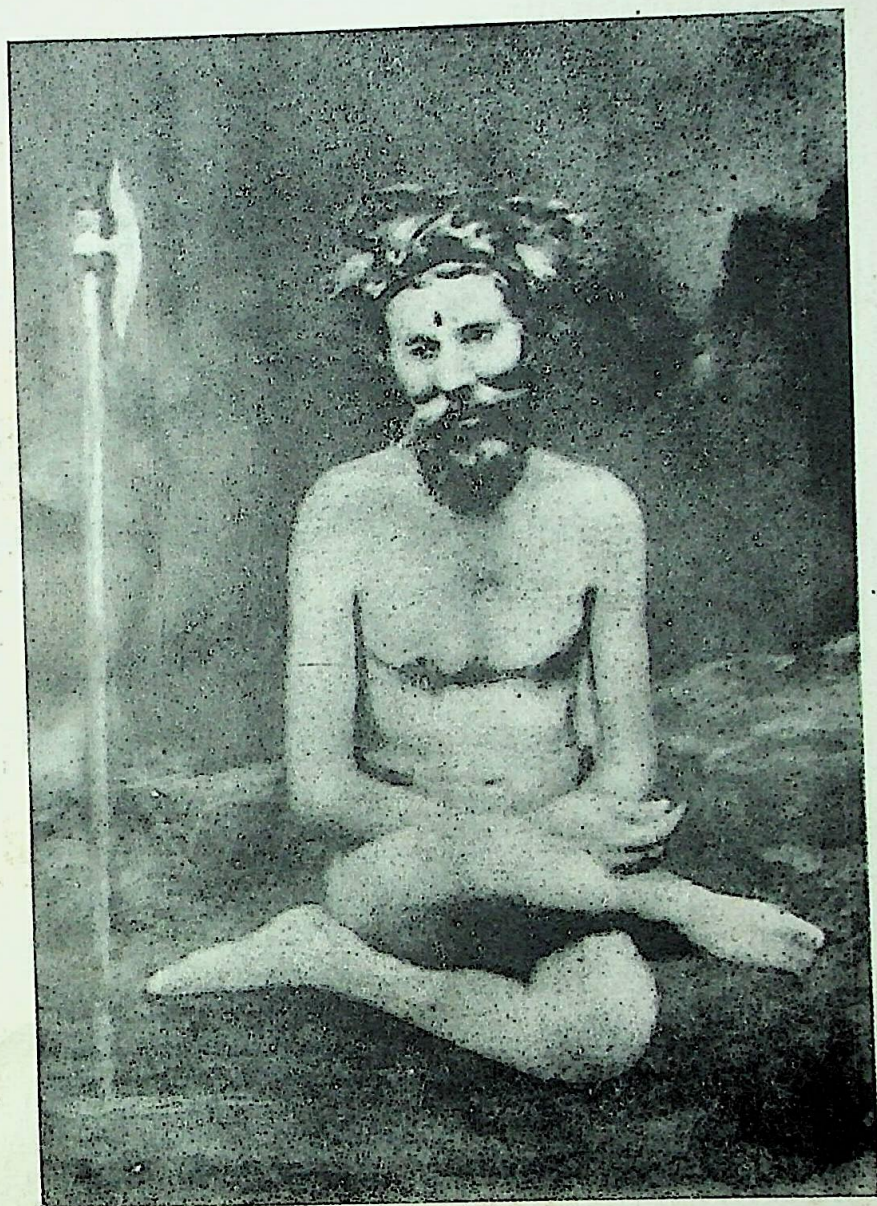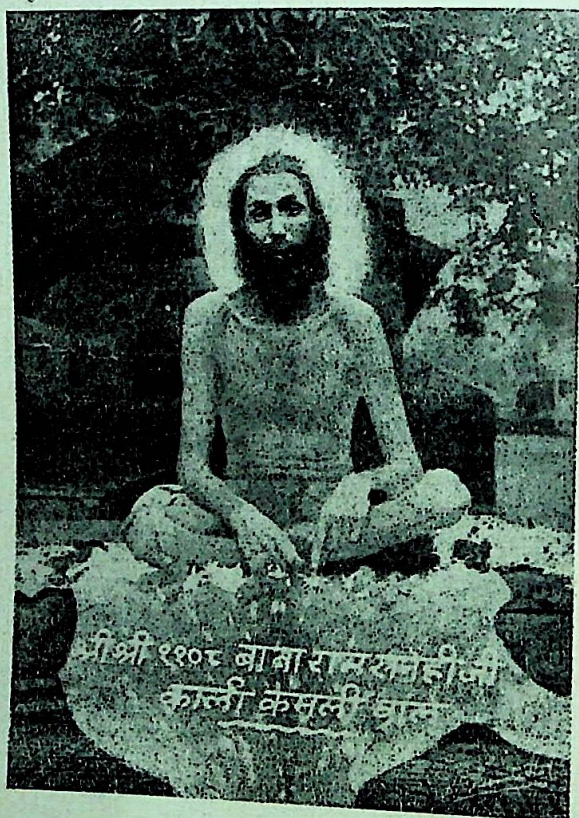
जूना गढ़ में

गोपाल बाबा का जूनागढ़ में आगमन तथा गुरु की आज्ञा से सर्वस्व दान

श्रीगोपाल बाबा नाम के एक महात्मा को एक समय ऐसी आकाशवाणी हुई थी कि, जूनागढ़ के पास एक महान् संत तपस्या लीन हैं, उनके पास जाओ, और गुरुमंत्र-दीक्षा लो। यह सुनकर गोपाल बाबा उस संत को खोजते खोजते गुप्तेश्वर में बाबा के पास पहुंचे। दो दिनों तक उनके पास रहे। तीसरे दिन बाबा गोपाल महाराज से बोले कि—तुम यहाँ से चले जाओ। गोपाल बाबा ने उत्तर दिया कि—मैं वैसे नहीं जाऊँगा, मैं आप को गुरु बनाऊँगा। बाबा ने कहा कि—मुझको गुरु बनाना बहुत कठिन है और तुम को चेला बनना भी बहुत कठिनहै। यह सुनकर गोपाल बाबा ने कहा कि—मैं आपको गुरु जरूर बनाऊँगा तथा आप की आज्ञा का पालन करूँगा। बाबा ने सोचा कि इसकी जाँच करनी चाहिये, बस क्या था बाबा ने कह ही तो दिया कि—यह शाल किसी गरीब को दे दो (गोपाल बाबा एक बहुत कीमती शाल ओढ़े थे) आज्ञा सुनते ही गोपाल बाबा ने शाल एक गरीब को दे दिया। गोपाल बाबा के पास बहुत-सी किताबें थीं, बाबा ने उन्हें आज्ञा दी कि—इन सब किताबों को जला दो! गोपाल बाबा ने किताबों को धूनी में डाल दिया, उनके पास पानी पीने का एक लोटा था वह भी बाबा ने एक भक्त को दिलवा दिया। इतना ही नहीं कपड़े जो गोपाल बाबा ने पहन रक्खे थे वे सब उतार कर किसी को दे देने के लिये तथा उनसे लँगोटी मात्र पहनने के लिये कहा। गोपाल बाबा ने वैसा ही किया। सन्ध्या हुई तो बाबा ने कहा कि कुछ दूर जंगल में जाकर बैठ जाओ। वहाँ साँप-बिच्छू आदि बहुत से भयानक जीव जन्तु थे, गोपाल बाबा वहीं जाकर बैठ गये और रात्रि उन्होंने निडर होकर बितायी। किसी का भय नहीं हुआ। अब बाबा समझ गये कि—इसकी भावना सही है, इसका ईश्वर और सद्गुरु पर अटूट विश्वास है। दिन भर गोपाल बाबा को अपने पास धूनी पर बैठाये रहे। बाबा तो दिन भर ध्यानमग्न रहते थे, शाम को उनको फिर उसी निर्जन स्थान में भेज देते थे, रात में अपने पास नहीं रखते थे। इस प्रकार गोपाल बाबा को निर्भयता प्राप्त हुई और ईश्वर भक्ति में दृढ़ता आयी।

गुरु की आज्ञा से गोपाल बाबा का सोमनाथ गमन

इसी प्रकार कुछ दिन चलता रहा, एक दिन बाबा के मन में विचार आया कि—दो आदमियों को एक स्थान पर रहने में अड़चन होती है। अतः बाबा ने गोपाल बाबा को आज्ञा दी कि—तुम यहाँ से सोमनाथ जहाँ बालि को श्रीकृष्ण भगवान् ने मारा था और जहाँ चारों कोने में चार गुमती हैं, वहीं चले जाओ। गोपाल बाबा ने पूछा कि—महाराज वहाँ खाने को क्या मिलेगा ? बाबा ने आज्ञा दी कि—तुम जाओ तुम्हें वहीं सब कुछ मिल जायगा। गोपाल बाबा दंडवत् करके गुरु ने जो उन्हें आज्ञा दी थी उसका पालन करने चल पड़े। गोपाल बाबा की आज्ञाकारिता देखकर बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई।

बाबा के आज्ञानुसार गोपाल बाबा उस स्थान पर पहुंच गये। एक दो दिन उनको वहाँ कुछ खाने को नहीं मिला। इधर गोपाल बाबा के जाने के बाद बाबा फिर ध्यान में मग्न हो गये। दो दिनों के बाद जब बाबा का ध्यान टूटा तो मन में विचार हुआ कि गोपाल को भेज तो दिया है पर उसके लिये वहाँ कुछ व्यवस्था नहीं की। इतना मन में विचार करके ईश्वर से प्रार्थना की कि— गोपाल को वहाँ भेजा है, आप ख्याल करें। बस, इसके बाद सोमनाथ में गोपाल बाबा के यहाँ एक प्रकार का मेला लगने लगा। भक्तों की बहुत भीड़ वहाँ इकट्ठी होने लगी, भक्त लोग गोपाल बाबा से पूछते कि आप कौन हैं ? आपके गुरु कौन हैं ? और आप का स्थान कहाँ है ? सब प्रश्नों का उत्तर देते हुए गोपाल बाबा ने कहा कि मेरे गुरुदेव जूनागढ़ में गुप्तेश्वर स्थान पर हैं। यह जानकर भक्त गण गोपाल बाबा से उनके दर्शन कराने का आग्रह करने लगे। गोपाल बाबा ने भक्तों से कहा कि मैं तुम लोगों को कभी अपने गुरु महाराज का दर्शन कराऊँगा। बाबा गुप्तेश्वर में ही तपस्या में लीन थे, वह स्थान जहाँ वे तपस्या कर रहे थे वीरान था, वहाँ बराबर सिंह बाबा के पास ही बैठा रहता था। जो कोई वहाँ दर्शनार्थ जाता दूर से ही सिंह को देखकर भाग जाता था। एक दिन गोपाल बाबा बहुत से भक्तों को साथ लेकर सोमनाथ से गुप्तेश्वर बाबा के पास पहुँचे। बाबा ध्यान लगाये हुए थे, जब उनका ध्यान टूटा तो गोपाल बाबा के साथ बड़ी भीड़ देखकर बहुत नाराज हुए और बोले कि तू इतनी भीड़ क्यों साथ में ले आया है। गोपाल बाबा ने बाबा से प्रार्थना की कि—ये भक्त हैं। इनको दर्शन दीजिये। बाबा ने कहा-ठीक है। तुम जाओ, हम

तुम्हें अब आठ वर्ष बाद उज्जैन के कुम्भ में मिलेंगे। और गोपाल बाबा को वहाँ से विदा किया। और बाबा फिर तपस्या में लीन हो गये।

कुछ समय के पश्चात् बाबा को एक दिन ध्यान में आया कि जूनागढ़ के ऊपरी भाग में दत्तात्रेय भगवान् की चरणपादुका और अम्बादेवी का स्थान है, दर्शन करना चाहिये। उन्होंने अम्बादेवी का ध्यान कर उनसे प्रार्थना की कि—मैं आपकी सेवा में आ रहा हूँ, आप मुझे दर्शन अवश्य दीजियेगा। इस प्रकार मन में सङ्कल्प करके बाबा जूनागढ़ की तरफ अम्बामाता के दर्शनार्थ चले। महाराज की उस तरफ की यह पहली ही यात्रा थी। रास्ता में भवनाथ जी का स्थान पड़ा, उसके आगे संत कबीर का स्थान मिला। इन दोनों स्थानों पर महाराज पहुँचे और प्रणाम किये। इस प्रकार के अनेकों स्थान रास्ते में मिले, महाराज ने सब को देखा। कुछ आगे जाने के पश्चात् बाबा दत्तात्रेय के स्थान पर पहुँचे। वहाँ फाटक के अन्दर धूनी लगाकर २-३ रोजतक ध्यान-पूजा करते रहे। वहाँ से चलकर रास्ते में जहाँ राजा भरथरी ने तपस्या की थी वह गुफा मिली। उस समय बाबा के साथ दो शिष्य थे, एक तो भास्कर तथा दूसरा एक और सेवक था। भरथरी के उस गुफा में बाबा ने सेवकों के साथ प्रवेश किया। गुफा अन्दर से खूब लम्बी-चौड़ी थी। कुछ टूट-फूट भी गई थी। बाबा ने दोनों सेवकों को आज्ञा दी कि तुम लोग गुफा के बाहर ही बैठ जाओ बाबा ने गुफा में प्रवेश किया। वहाँ बाबा के मन में ऐसी भावना हुईं कि मैं बहुत वर्षों से सोया नहीं हूँ, यहाँ निश्चिंत होकर सोऊँगा। बाबा इस विचार से लेटे ही थे कि गुफा के अन्दर एक देवी प्रगट होकर बोलीं कि—आप अभी सोये हैं! उठकर राम राम भजन करिये। यह सुनकर महाराज तुरन्त उठ गये और मन में सोचने लगे कि मैंने अन्तरात्मा से चोरी की थी, वह पकड़ी गई यह विचार कर भजन करने लगे। २-३ घंटे के बाद जब बाबा गुफा से निकलकर आगे बढ़े तो एक संत का आश्रम मिला। उस आश्रम पर रहनेवाले संत बाबा के दिव्य रूप को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बाबा को कुछ प्रसाद ग्रहण करने के लिए आग्रह करने लगे। किन्तु बाबा ने कुछ भी प्रसाद ग्रहण नहीं किया और उन्होंने कहा कि—सेवकों को प्रसाद दे दीजिये। यह कहकर बाबा जब कुछ आगे बढ़े तो उन्होंने अम्बा को एक गाय के रूप में देखा। उन्हें देखकर बाबा यह समझ गये कि यही अम्बा माता है। इस स्थान की मालिक यही है। जब अम्बा माता का दर्शन करके बाबा आगे बढ़े तो जैनियों का एक मंदिर मिला। वहाँ भक्तों ने बड़े आदर के साथ बाबा

का स्वागत किया और अन्दर ले गये। बाबा के दिव्य रूप से वे लोग बहुत प्रभावित हुए। कुछ देर वहाँ ठहरकर बाबा वहाँ से आगे बढ़े और अम्बादेवी के मंदिर में पहुंचे। वहाँ बहुत से महात्मा पुजारी थे। अन्दर में पहुँचकर बाबा ने अन्तरात्मा में विचार किया कि हमें मिश्री और केलेका प्रसाद मिलना चाहिये। इतना विचारते ही महात्मा-पुजारियों ने केला और मिश्री प्रसाद बाबा को दिया। बाबा प्रसाद ग्रहण करके बहुत प्रसन्न हुए। तथा मन में ऐसा सोचने लगे कि मैंने अन्तर में जो सोचा वही हो गया। स्थान सच्चा है, अतः इसकी महिमा सिद्ध है। यहाँ से बाबा आगे चले तो गोरखनाथ जी का आश्रम मिला। वहाँ एक साधु बैठे थे। वहाँ से बाबा जहाँ दत्तात्रेय भगवान् की चरण-पादुका थी वहाँ आये। दोनों सेवक भी बाबा के साथ ही थे। एक सेवक पात्र में पानी लिए हुए था और दूसरा अन्य सामग्री लेकर चल रहा था। जब दत्तात्रेय भगवान् के चरण-पादुका को बाबा ने देखा तो उन्होंने सच्चे रूप से उनको स्पर्श किया और अपने नेत्र लगाये। बाबा के मन में ऐसी भावना हुई और विचार करने लगे कि—यह चरण-पादुका किसके द्वारा निर्मित है। तब उसी क्षण यह देखने में आया कि एक स्वरूप कमर में पट्टा बाँधे और खाकी कपड़ा पहने अफसर के रूप में आया है, उसे देखकर बाबा ने समझ लिया कि यह रूप दत्तात्रेय भगवान् के सेवक का है। इसी ने यह चरण-पादुका बनवाकर स्थापित की है। बाबा को उस समय चाय पीने की इच्छा हुई। सेवकों ने चाय बना कर बाबा को पिलायी। उस स्थान पर आग जलाने की मनाही थी, परन्तु सेवकों ने बाबा की आज्ञा पालन कर आग जलायी, इस कार्य से बाबा बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ से चलकर बाबा नीचे उतरे जहाँ दत्तात्रेय का स्थान बना हुआ है। वहाँ एक महात्मा रहते थे, बाबा की उनसे भेंट हुई। वे सोचने लगे कि—बाबा कुछ पैसे दें तो सामान मँगाकर प्रसाद तैयार करावें। बाबा उनके अन्तर की बातें समझ गये और आज्ञा दी कि—आप के पास जो भी सामग्री है, उसी का प्रसाद बनाओ। वहाँ बाबा ने २-३ रोज विश्राम किया और तत्पश्चात् गुप्तेश्वर वापस लौट आये। लौटने के पश्चात् बाबा फिर पूजा-ध्यान में मग्न हो गये। जो कोई भी भक्त जूनागढ़ से बाबा के दर्शनार्थ आते वे उनके दर्शन के बाद भवनाथ के दर्शनार्थ अवश्य जाते थे। भवनाथ को बहुत से लोग दर्शन करने जाते हैं। वहाँ क्या है ? पत्थर की मूर्ति में कौन सी शक्ति है ? बाबा इस प्रकार सोचते हुए बहुत विचार करते थे। एक

दिन आधी रात को २ महात्मा बाबा की धूनी पर आये, वे अपने हाथ में मछली मारने की बंशी लिये हुए थे। बाबा ने विचार किया कि– ये लोग मछलियों को मार कर और उन्हें भून कर खा लेते हैं। वे मनुष्यों को दर्शन नहीं देते हैं। ऐसा मन में विचार कर बाबा उठे और एक संत के हाथ से बंशी ले लिये। वह संत कुछ भी नहीं बोला। थोड़ी देर बाद वे संत बोले कि चलिये घूमने के लिये। रात का समय था फिर भी बाबा ने कहा—चलिये। नाले के रास्ते लग्गी के सहारे बाबा उन संतों के साथ चल पड़े और भवनाथजी के स्थान पर पहुंच गये। बाबा जब संतों के साथ भवनाथ जी के स्थान पर पहुँचे तब वे सन्त बोले कि—महाराज अब शंकर भगवान् के दर्शन को चलिये। बाबा ने कहा कि चलिये। उस समय लगभग २ बजे रात्रि का समय था। बाबा अन्तरात्मा से बोले कि दर्शन जरूर करना चाहिये, यह कहकर दर्शन करने को मन्दिर में पहुँचे। जैसे ही बाबा दरबाजे पर पहुँचे, देखा कि एक महात्मा ध्यान लगाकर बैठे हुए हैं, और पास में मूर्ति है। बाबा ने पत्थर की मूर्ति को प्रणाम किया, सिर झुकाया तो उस मूर्ति में से राम राम की आवाज बाबा को सुनाई पड़ी। बाबा ने पीछे मुड़कर देखा तो जो सन्त लोग साथ में आये थे वे अदृश्य हो गये थे। बाबा इस रहस्य को समझ गये कि, यह जो ध्यान लगा कर बैठे हैं वह आत्मा है और यह जो पत्थर की मूर्ति है वह उनका शरीर है। इन्होंने भगवान् का भजन करके आत्मा को शरीर से अलग कर लिया है और आत्मा के संकल्पानुसार शरीर को पत्थर की मूर्ति बना दिया है, और यहाँ स्थापना कर दिया है। इस शरीर के मोह के कारण आत्मा आकर ध्यान करती है कि इस शरीर से बहुत काम किया गया है। पत्थर की मूर्ति में आकर्षण है, इसी से इतने लोग खिचकर दर्शन करने आते हैं। इस तरह बाबा को विश्वास हुआ कि—यही सत्य है—मैं भी ऐसा कर सकता हूँ, इस बात का बाबा को ज्ञान हुआ। अवसर आने पर ऐसा करूँगा।

देवी का प्राकट्य और कुशा का प्रभाव

एक दिन ध्यान में बाबा गुप्तेश्वर स्थान से ऊपर सड़क से जूनागढ़ की तरफ जा रहे थे। एक दूसरे महात्मा भी दूसरी पट्टी से जा रहे थे। सहसा एक देवी प्रगट होकर बोली कि—चलिये शंकर जी का दर्शन करावें, यह कहकर वह बाबा को नीचे ले गई। नीचे खूब भव्य स्थान बना था, बीच में मूर्ति थी। बाबा दर्शन करके ऊपर आ गये और सड़क

पर चलने लगे। वह देवी भी बाबा के साथ-साथ चल रही थी। सड़क की दूसरी पट्टी पर जो महात्मा चल रहे थे उनके हाथ में छोटा सा सोंटा था। उस महात्मा ने वह कुबड़ी सोंटा बाबा की तरफ फेंक दिया। वह कुबड़ी बाबा के पैरों में प्रणाम करके फिर उस महात्मा के हाथ में वापस चली गई। बाबा आश्चर्यपूर्वक सोचने लगे कि, यह कैसे सम्भव हुआ। यह रहस्य का विषय बना ही हुआ था कि बाबा ने देखा किकु बड़ी जहाँ से खींची गई उस जगह एक लम्बी कुशा पड़ी है, उन महात्मा जी ने कुवड़ी उसी कुशा से खींच ली है, वह जो देवी अभी तक बाबा के साथ साथ चल रही थी, उन महात्मा के साथ चली गई। कुशा की इस अद्भुत शक्ति को देखकर बाबा ध्यान-मुद्रा से सब कुछ समझ गये।

भगवान् दत्तात्रेय की कृपा से शेरों से भक्तों की रक्षा

बाबा का साधना-स्थल शहर से बाहर था। शहर के बहुत से लोग बाबा के दर्शनार्थ बराबर आते जाते रहते थे। शाम हो जाने पर दर्शनार्थियों को रास्ते में बहुत से शेर मिलते थे। उन लोगों ने बाबा से निवेदन किया कि महाराज! हम लोग जब दर्शन को आते हैं तो रास्ते में बहुत से शेर मिलते हैं, इस पर बाबा ने उन लोगों से कहा कि—तुम लोग डरो नहीं, मैं दत्तात्रेय भगवान् से इस सम्बन्ध में प्रार्थना करूँगा। बाबा ने दत्तात्रेय भगवान् से प्रार्थना की, दत्तात्रेय भगवान् वोले कि—आप जरा सामने तो देखिये, बाबा ने देखा तो हजारों शेर एक लाइन में खड़े हैं और सब के शिर पर डोरी ऐसी खिची हुई है कि खिचकर एक गुच्छा बन गया है। दत्तात्रेय भगवान् ने बाबा से कहा कि देखा बिना हुकुम के कोई शेर किसी से भी नहीं बोलेगा। यह देखकर बाबा को विश्वास हो गया कि ये शेर किसी का कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। इसके बाद बाबा ने उन सेवकों से जो दर्शन करने आते थे कहा कि मेरा नाम-ध्यान करके आओगे तो कोई शेर तुम लोगों से नहीं बोलेगा। ऐसा ही हुआ, उस दिन से भक्त लोग बाबा का नाम-स्मरण करके आने लगे।

अग्निदेव की जादूगरी

एक दिन बाबा धूनी पर बैठे थे, वे अग्निदेव भगवान् से बोले कि आप की क्या जादूगरी है? साधु महात्मा आप से अलग नहीं होते हैं इसमें क्या कारण है? आप की क्या लीला है। अग्निदेव बोले कि मेरी जादूगरी का कोई पार नहीं पा सकता। यह सुनकर बाबा कुछ भयभीत

हो गये, फिर भी हिम्मत करके आधीनता से प्रार्थना की कि हे महाराज ! आप की क्या जादूगरी है, तब अग्निदेव भगवान् बोले कि मेरी तो थोड़ी-सी जादूगरी है, यह सुनकर बाबा की हिम्मत बढ़ी और साहस से पूछा कि 'थोड़ी सी जादूगरी क्या है ? अग्निदेव ने कह दिया कि हम सब को भुला देते हैं यही जादूगरी है। बाबा को यह देख सुनकर विश्वास हुआ और फिर ध्यान में लग गये।

सदेह स्वर्ग कैसे जाया जाता है (सदेह स्वर्ग जाने का भेद)

एक दिन बाबा ने ध्यान में देखा कि एक बहुत बड़ी मछली धूनी के पास आकर गिर पड़ी है। बाबा ने जब देखा तो मालूम हुआ कि मछली के पेट में एक छाता ३ बन्धन से बँधा हुआ है। बाबा ने छाता का बन्धन खोलकर छाता अलग कर दिया और मछली को अलग कर दिया। बाबा फिर ध्यान में हो गये। जब ध्यान खुला तो बाबा को भूख लगी। वहाँ उस मरी हुई मछली के सिवाय कुछ नहीं था। बाबा ने मन में सोचा कि मछली को किस प्रकार काटें और भोग लगावें, कोई अस्त्र तो पास में है नहीं। इतना विचार करते ही जो छाता था वह हँसिया बन गया। बाबा वह हँसिया लेकर ज्यों ही मछली काटने को बढ़े वह हँसिया छूट कर जलता हुआ आकाश की ओर उड़ गया। अब बाबा बेवस हो गये कि अब कोई अस्त्र मछली काटने को नहीं रह गया। फिर बाबा ध्यान में लग गये। सारी रात बीत गई और सबेरा हुआ। सबेरा होते ही ऊपर आकाश से काच की झिलमिली धूनी पर गिरी। बाबा उसको देखने लगे। चारों ओर झिलमिली का परदा पड़ गया। वह बाबा को देखने में अच्छा लगा। कुछ ही देर में उस झिलमिली के अन्दर एक विमान आया, उस विमान में से एक आदमी ताज और नाचने का कपड़ा पहने हुए निकला। बाबा से बोला कि— विमान में बैठकर चलिये, जबरदस्ती बाबा को खींचने लगा। बाबा ने जब देखा कि यह मुझे जबरदस्ती ले जाना चाहता है, बाबा जाने को राजी नहीं हुए। बाबा को संसार देखने और भ्रमण करने की इच्छा थी। इच्छा बहुत बलवती होती है। यह देखकर वह पुरुष विमान में वापस बैठ गया और वह झिलमिली ऊपर उठकर आकाश में समा गयी। इससे यह अनुभव हुआ कि सशरीर लोग स्वर्ग कैसे जाते हैं। कहते हैं बुद्ध भगवान् इसी प्रकार सशरीर गये हैं। यह बाबा के तपस्या का अनुभव है।

बाबा का सोमनाथ पाटन पहुँचना और वहाँ उनके निकट समुद्र का आगमन

गुप्तेश्वर में कुछ दिनों तक तपस्या करने के बाद बाबा सोमनाथ पाटन की ओर चले गये। रास्ते में एक तालावाला गाँव मिला। तालावाला में 'हरिना' नाम की एक नदी है, उसी के किनारे बाबा ठहर गये। इसी ग्राम का एक भक्त बाबा की सेवा में गुप्तेश्वर में रहा करता था। उसके आग्रह से बाबा वहाँ ठहर गये। वहाँ ३ बड़ के पेड़ थे जो कि आपस में सटे हुए थे उन्हीं के नीचे बाबा ने स्थान ग्रहण किया। मैदान में एक टूटी हुई हनुमान् जी की मूर्ति पड़ी हुई थी। उनके तथा बाबा के दर्शनार्थं भक्तों की बड़ी भीड़ होती थी। कुछ भक्तों ने वहाँ बाबा के लिये एक कुटी बनाने का विचार किया जिससे बाबा वहीं ठहर जायँ। उन लोगों के आग्रह पर बाबा ने कुटी बनाने की आज्ञा दे दी। एक भक्त सेवक के नाम से वहाँ की जमीन बाबा ने करवा दी। जब कुटी बनकर तैयार हो गई तब बाबा एक दिन वहाँ से चुपचाप निकल पड़े और सोमनाथ की ओर चल पड़े। जब समुद्र के किनारे पहुँचे वहाँ कुछ दूर ही किनारे पर बैठ गये और समुद्र से प्रार्थना करने लगे कि—हे महाराज! आप यहीं आकर मुझे दर्शन दीजिये। इतने में एक बड़े जोर की लहर आयी, बाबा ने दोनों हाथों से लहर को स्पर्श करते हुए प्रणाम किया और प्रसन्न हो गये। उन्हें समुद्र के प्रति निष्ठा में पूर्ण विश्वास हो गया। वहाँ से बाबा स्मशान में पहुँचे जहाँ पानी में शंकर भगवान् की एक बहुत बड़ी मूर्ति पड़ी है, बाबा ने वहीं स्नान किया और पत्थर की मूर्ति की ओर दौड़े परन्तु समुद्र की लहर से पीछे हट गये। फिर एक बार दौड़कर समुद्र के पास गये फिर जब लहर पीछे हटी बाबा दौड़कर मूर्ति के पास पहुंच गये। उस मूर्ति को माथा टेक कर प्रणाम किया तथा उसे प्रेमपूर्वक सम्हाला। बाबा ने मूर्ति की विशालता देख कर विचार किया कि इतनी बड़ी मूर्ति पानी में क्यों पड़ी है? इसका क्या महत्त्व है? यह विचार करने लगे तो एक रहस्य सामने आया कि एक समय श्रीकृष्ण भगवान् का रूप प्रगट हुआ, फिर दूसरा रूप प्रगट हुआ, इतना ही नहीं तीसरा रूप भी प्रगट हुआ। उन तीनों रूपों के बाण बन गये, तथा चौथे रूप ने प्रगट होकर उन तीनों बाणों को धनुष में चढ़ा कर छोड़ दिया। वे तीनों बाण जाकर बालि के सिर में एक, दूसरा छाती में और तीसरा पैर के तालू में लगे। इस मूर्ति का यही रहस्य समझ में आया।

किसी भक्त ने इस पत्थर की मूर्ति में यह चिह्न बनाकर प्रतिष्ठित कर दिया है।

वहाँ किनारे पर पड़ी छोटी छोटी सीपों और शंखों को बीनने लगे। इसमें उनका आशय यह था कि संसार में चलेंगे तो माला बनाकर पहनेंगे। किसी ने नहीं देखा होगा तो वह दर्शन भी कर लेगा। इतने में देखते हैं कि समुद्र में से दो टोकरी अन्डे के माफिक बड़े-बड़े मोती बहते बाबा की ओर आ रहे हैं, साथ में यह आवाज भी आयी कि—यह लेलो, तब बाबा ने पूछा कि—यह किस चीज से बना हुआ है और क्या है ? इसके उत्तर में आवाज आयी कि यह मोती है और राम नाम से बना है। यह सुनकर बाबा जितना शंख बटोरे थे समुद्र में फेंक दिये। बाबा यह सोचने लगे कि जब राम राम की ऐसी अच्छी मोती मेरे पास है तब इस संसारी वस्तु को मैं क्या करूँगा। यह विचार करके बाबा सोमनाथ की ओर चल पड़े।

नाम और ध्यान का महत्त्व

बाबा सुदामापुरी से घूमते-फिरते भड़ौच में नर्मदा नदी के किनारे वापस पहुंचे। वहाँ ईश्वर का ध्यान और राम-नाम बराबर लेते रहते थे। राम राम कहते हुए राम राम का ही ध्यान हो जाता था। नाम से ध्यान होता है और जब ध्यान टूटता है तब फिर नाम चलने लगता है। नाम में चेतना होती है और ध्यान में लीन हो जाने पर अन्तरात्मा में प्रकाश हो जाता है। इन्हीं बातों को विचार करते हुए बाबा नर्मदा के किनारे-किनारे जा रहे हैं। इतना तन्मय हो गये कि बाबा को शरीर का कोई भी भान नहीं रहा। एक बार बाबा को नाम-जप छूट गया केवल ऊपर का ध्यान रह गया। बाबा ऊपर का ही ध्यान किये खड़े थे—अन्तरात्मा में विचार आया कि मुझे कोई भी इच्छा नहीं रही है, सिर्फ मेरे पास नाम था वह भी छूट गया। इसी समय आकाशवाणी हुई कि जो नाम है उसे पकड़ लो' यह शब्द बाबा के ध्यान में आते ही शरीर का ज्ञान आया। इससे बाबा ने समझा कि नाम से ही शरीर का ज्ञान रहता है अगर नाम ही छूट जायगा तो शरीर बेज्ञान हो जायगा।

ध्यान का भी कुछ कम महत्त्व नहीं है। यह भी बाबा का अनुभूत विषय है। बाबा जहाँ कहीं भी आसन जमाकर बैठते वहाँ साँप बिच्छू बहुत तंग करते और काट लेते थे। बाबा देखते कि काट लिया है और

विचार में भी आता था किन्तु ध्यान में लग जाने से उनका कुछ भी असर नहीं होता था, जब ध्यान टूटता था तब याद पड़ता था कि साँप या बिच्छू ने काटा है। किन्तु जब ईश्वर में ध्यान लगा रहता तो उसका कोई असर नहीं होता था। यह रहस्य जानकर बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई। वस्तुतः नाम और ध्यान का महत्त्व अत्यधिक है। शास्त्रों में इसकी बड़ी महिमा है।

बाबा का वनस्पति प्रेम—साधना में लीनता, गृहस्थाश्रम में प्रवेश का स्वप्न

बाबा अनेक वर्षों से विना सोये बराबर ध्यान और नामस्मरण में ही लगे रहते थे। यात्रा के समय रास्ते में पुराने झाड़-वृक्षों को चूमते, चाटते, राजो करते तथा उनकी आधीनता स्वीकार करते और १-२ रोज कहीं विश्राम करते चलते थे। उस समय झाड़ों से प्रार्थना करते कि आप कितने महान् हो! कितने वर्षों से खड़े हो, आप यहाँ के सब हाल को जानते हैं, आप के सामने इन गाँव-वासियों में कितने जन्मे और मरे होंगे। आप कितने ही दिनों से परोपकार में लगे हो, इस प्रकार गुणानुवाद करते थे। झाड़ों वृक्षों की प्रशंसा करते हुए बाबा उनके नीचे बैठ जाते तथा धूनी लगाते थे। पृथ्वी, हवा तथा वायु को मिला करके सत रूप से भजन करते थे। जो कुछ समय पर खाने को मिलता था वह झाड़ की जड़ों में डाल देते थे। उससे जो शेष बच जाता था उसे चिड़िया चुनुग को खिला देते तथा उनको राजी रखते थे। जब बाबा आगे चलते तो झाड़ों को प्रणाम करते, जीभ लगाते और आज्ञा माँगकर आगे चलते थे। इसी प्रकार करते बाबा चले जा रहे थे। वर्षा होती तो भी झाड़ों के नीचे ही बैठे रहते थे। एक दिन पानी बरसते समय मन में ऐसी भावना हुई कि—मैं दिन रात पानी में भींजता हूँ, इससे अच्छे तो संसारी आदमी हैं जो कि घर बनाकर आनन्द से रहते हैं, और मैं दिन रात दुःख उठाता हूँ फिर भी कोई नहीं सुनता है। ऐसा सोच कर मन में विचार उठा कि कहीं हम भी शादी करके घर बना लेते तो कितना अच्छा होता। इस प्रकार अपने मन में विचार कर ही रहे थे कि बाबा देखते हैं कि—अन्तर से गुप्त माता प्रगट हुई है और कहती है कि—लड़का ठीक कहता है, इसकी शादी होनी चाहिये' इतना कह कर वह अदृश्य हो गयी। बाबा समझ गये कि यह कहीं लड़की लाने

गयी है, मेरी शादी करने के लिये। १-२ दिन जब बाबा ने उस माता को नहीं देखा तब यह विचार किया कि—वह लड़की लेकर जरूर आयेगी। यह कहकर बाबा नाम-जप और ध्यान में लग गये।

बाबा जब ध्यान मग्न थे उसी समय वह माता एक लड़की लेकर आयी, उस लड़की के हाथ में एक गिलास पानी और २ रोटियाँ थीं। लड़की बाबा के सामने आकर बैठ गयीं। जब बाबा का ध्यान हटा और खाना (भोजन) सामने देखा तो विचार किया कि यह भगवान् लेकर आये हैं, रोटी खाकर पानी पीया, जब आत्मा सन्तुष्ट हुआ तब वह देवी बाबा से बोली कि—हमारी तुम से शादी हो गई है, तुम क्या इधर उधर देखते हो ! बाबा यह सुनकर प्रसन्न हुए और यह विचार करने लगे कि कहीं देवता लोग जाँच तो नहीं कर रहे हैं। ऐसा सोचकर बाबा इधर-उधर देखने लगे तो देखते हैं कि—जो माता अन्तर में से निकली थी पेड़ के नीचे छिपकर देख रही है—यह देखकर बाबा को ज्ञान हुआ कि यह माता मुझको फँसाना चाहती है। मेरी भावना से ही यह चीज निकली और मेरी भावना से ही मुझ को फँसाना चाहती है। बाबा इस रहस्यमय बात को समझ गये। उसको बोले कि तुम हमारी माता हो, ऐसा विचार कभी मत करना। भावना से ही आदमी बनता है, फँसता और बिगड़ता है'। ऐसा अनुभव हुआ 'यह कहकर बाबा फिर आगे चल पड़े।

परकाय प्रवेश (दूसरे के शरीर में प्रवेश करना)

एक दिन बाबा सुरपान की झाड़ी में जो वीरान स्थान था) पहुँचे। रात हो गई थी, कहाँ जायँ, धूनी के लिये लकड़ी भी नहीं थी। एक दो लकड़ी आसपास से बीनकर आग जलायी गयी। ठण्ड की रात थी, रात में शरीर एकदम ठण्डा हो गया, ठण्ड सहन नहीं हुई तो बाबाने शरीर को वहीं छोड़ दिया और सूक्ष्म रूप से शरीर से निकलकर ध्यान में ऐसी जगह पहुँचे जहाँ रात भर भगवान् की पूजा हो रही थी उसी जगह के कुटुम्ब के ही किसी आदमी का रूप धारण कर लिया। रात भर भगवान् के पूजन में अपना समय व्यतीत किया। सुबह होते ही अपनी सुरता और ख्याल से जहाँ पूर्व शरीर था उसी में जाकर प्रवेश किया। उसमें प्रवेश करते ही बहुत सर्दी और कँपकँपी होने लगी। धूप निकलने पर (काया) शरीर को सेका पश्चात् आगे बढ़े।

स्मरण और ध्यान-योग से संत लोग अनेक शरीरों में अथवा इधर उधर घूमते रहते हैं। जब स्वशरीर में प्रवेश करते हैं तब ज्ञान होता है कि मैंने कितने प्रकार के शरीरो में प्रवेश किया तथा कहाँ दिन और कहाँ रात्रि व्यतीत की है। क्या ज्ञात हुआ ? और क्या ज्ञेय है यह भी परकाय प्रवेश से ही मालूम पड़ता है। ये सब बातें योगशास्त्र के द्वारा ही जानी जा सकती है।

आत्म-सन्तोष मनुष्य का सबसे वड़ा खजाना है (आत्म सन्तोष का भेद)

पूज्य बाबा परकाय प्रवेश के पश्चात् जब वहाँ से चले तब एक गूलर के पेड़ के नीचे विश्राम करते हुए भजन करने लगे। भजन करने के पश्चात् जब ख्याल हटा तो उन्हें भूख लगी। गूलर पेड़ के ऊपर जब दृष्टिपात किया तो बिना मौसम के पाँच फलों को पेड़ पर देखा। बाबा ने प्रसन्नता-पूर्वक उन पाँचों फलों को तोड़कर खा लिया। खाने के बाद बाबा ने जब ऊपर की ओर देखा तो वे पाँचो गूलर पूर्ववत् वृक्ष में लगे हुए दिखाई दिये। बाबा इस अलौकिक लीला को देखकर अचरज में पड़ गये। उन्हें आश्चर्य इस बात का हुआ कि ऊपर के उन्हीं गूलरों को खाकर तो अभी अभी सन्तुष्टि प्राप्त की है और फिर वे ही गूलर उसी जगह जाकर लग गये हैं। इस उदाहरण से उन्होंने समझ लिया कि संसार में सन्तोष के लिए ही ये पदार्थ सब बने हुए हैं। कहते हैं ब्रह्मा जी भी इस गूलर वृक्ष के नीचे कभी बैठे थे और आत्म-सन्तोष प्राप्त किया था। भजन में ही लीन रह गये। भजन करनेवालों के लिए आत्म-सन्तोष से बढ़कर और कोई चीज श्रेयस्कर नहीं है। केवल पेट भरने वाला पेटू तो अपने पेट को भरने में ही व्यस्त रहेगा उसको आत्म-सन्तोष कैसे प्राप्त होगा ? और वह भजन क्या कर सकता है ? अत: आत्म-सन्तोष प्राप्त करके ही भगवद्भजन में लीन हो सकता है। बाबा को इस प्रकार का अनुभव दिव्य ज्ञान से प्राप्त हुआ।

सम्प्रदाय बालों की सिद्धि (जमात को श्री बाबाका अमोघ आशीर्वाद)

गूलर के पेड़ से आत्मसन्तोष ज्ञान का भेद जानकर बाबा जब आगे चले तो रास्ते में श्री गौरीशंकर महाराज की जमात (संगठन) नर्मदा किनारे मिली। जमात वहाँ विश्राम कर रही थी। श्री महाराज ने अपने मन में सोचा कि जमात की जाँच करनी चाहिये, इनके पास क्या वस्तु है। ये जमात का कैसे पालन पोषण करते हैं। श्री बाबा वहाँ

पहुँचे। महन्त जी ने प्रेम से बाबा को बैठने का आग्रह किया, बाबा बैठ गये। महन्त जी ने पूछा कि–आप कुछ खाये हो या नहीं ? बाबा बोले कि–हम भूखे हैं, दो रोटी और सब्जी हाथ में ही दे दो'। महन्त जी के भण्डारी ने रोटी सब्जी दे दिया। बाबा ने प्रेमपूर्वक खा लिया और हाथ के चुल्लू से पानी पी लिया। पेट तो भर गया परन्तु रुचि नहीं भरी। बाबा ने विचार किया कि अब महन्त जी को नमस्कार करके आगे बढ़ें। जाने के लिये जब खड़े हुए और आगे बढ़े तो देखते हैं कि–जिन दो रोटियों को बाबा ने खायीं थीं वे प्रत्यक्ष निकलकर भण्डार की ओर जा रही हैं। यह दृश्य देखकर आश्चर्य पूर्वक श्री बाबा महन्त जी से बोले कि–महाराज, आप बहुत उपकारी हैं, आने जाने वाले इतने मनुष्यों को आप प्रति दिन खिलाकर सन्तुष्ट करते हैं। आप धन्य हैं, भजन करनेवाले हैं। तब महन्त जी ने बाबा से पूछा कि–आप ने क्या देखा हैं जो कि आप इस प्रकार का विचार प्रकट कर रहे हैं। महाराज बोले कि—आप के यहाँ दो रोटियाँ खाने पर आत्म-सन्तोष तो हुआ परन्तु रुचि नहीं भरी। मैंने विचार किया कि आप को प्रणाम करें और आगे बढ़ें तो देखते क्या हैं कि खायीं हुई वे दोनों रोटियाँ आप के भण्डार में वापस जा रही हैं। महन्त जी इतनी बात सुनकर चिहुँक उठे कि—मालूम पड़ता है–ये बहुत बड़े सन्त हैं, ये हमारी बात को जान गये, अन्तर्यामी हैं। महाराज ने बाबा से कहा कि—यह हमारी जमात है, आप भी यहीं ठहरिये, परन्तु बाबा वहाँ नहीं ठहरे। बाबा आगे चलने लगे, महन्त जी साथ में पहुंचाने कुछ दूर गये। बाबा ने प्रसन्नता पूर्वक महन्त जी को आशीर्वाद दिया कि–आप की जमात सर्वदा ऐसी ही चलती रहेगी। आप पालन पोषण करते हैं। बाबा ने वहाँ प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया कि जितने आदमी वहाँ भोजन करते हैं उनका पेट तो भर जाता है किन्तु रुचि नहीं भरती है। इसलिये पुनः उनके भण्डार में जमा हो जाता है। यही कारण है कि लाखों आदमियों को भोजन कराते रहते हैं—कोई कमी नहीं होती है। इस बात को कोई संसारी मनुष्य जान नहीं सकता है। यही इस महन्त सन्त के पास अन्नपूर्णा की सेवा का चमत्कार है।

जगन्माता अन्नपूर्णा का रहस्य और उन्हें प्रसन्न करने की विधि

माता अन्नपूर्णा जी के रहस्य को संत लोग ही जानते हैं। उनकी सेवा किस प्रकार करनी चाहिये इसे बाबा ने स्पष्ट किया है। महन्त

सन्त ने स्वयं इसे चरितार्थ किया है। जैसे--जिस थाली में वे खाते हैं उस थाली को धोकर माथे में लगाते हैं। जितना खाते हैं उतना ही लेते हैं, नुक्सान नहीं करते हैं तथा खाने के पहले भोजन को नमस्कार करते हैं। कभी यदि अन्न लात के नीचे पड़ता है तो उसको उठा कर माथे से लगा लेते हैं। रोटी बनाते समय नीचे कपड़ा बिछा लेते हैं और जो आँटा उसमें गिरता है वह चींटियों-मकोड़ों को डाल देते हैं। थाली में जो आँटा बच जाय उसे धोकर गाय को डाल देना चाहिये अथवा दाल में डालकर खा जाय। रोटी बनावे तो तवा पर रोटी जलने नहीं पावे, आग में सेके तो रोटी जलने नहीं पावे। जो भी अन्न कहीं खाय, बड़े प्रेम से खूब महीन चबाकर आदर के साथ खाना चाहिये। इस प्रकार के आचरण से तथा सेवा से अन्नपूर्णा की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। बाबा ने यह स्वयं अनुभव करके भक्तों के हित के लिये बताया है। ऐसा जो भी करेगा उसको कभी कष्ट नहीं होगा। थोड़े ही अन्न में उसके घर बरक्कत रहेगी---वह सदा भरा-पूरा रहेगा।

पक्षियों द्वारा पूज्य बाबा को कर्त्तव्य का बोध

पूज्य बाबा जब कभी भजन करते हुए ईश्वर के स्वरूप को भूल जाते थे तो वृक्ष के ऊपर से चिड़िया सावधान करती हुई बोलती थी कि--'देख भूल मत' अर्थात् ईश्वर को भूल मत, इस प्रकार का ज्ञान बोध होता था---पश्चात् बाबा फिर मनन करने लगते थे। कोई चिड़िया कभी कहती कि 'अवसर पर भूल मत' इससे बाबा समझते थे कि 'हाँ मनुष्यदेह धारण किया है यही कर्त्तव्य करने का अवसर है। कभी यदि नामस्मरण छूट जाता था तो कोई चिड़िया कहती कि 'नाम चुन' 'नाम चुन' इस वाक्य से बाबा समझते थे कि नाम चुनना है अतः नाम चुन लेते थे। कोई चिड़िया कभी कहती कि--'देख, देख, इसको देख' इससे बाबा को बोध होता था कि 'ईश्वर को देख' चिड़िया कह रही है। उन पक्षियों में एक कुचकुचवा (कचवचिया) थी वह बोलती थी 'कुचकाच कुचकाच' बाबा इससे समझते कि अब यह स्थान छोड़ना है और तदनुसार वह स्थान छोड़ देते थे। कभी कोई चिड़िया बोलती थी कि 'नाम रट, नाम रट' तो बाबा समझते थे कि नाम रटने को बोलती है। एक बार किसी चिड़िया ने कहा कि 'इसको देख, इसको देख' यह सुनकर बाबा ईश्वर को देखने लगते। कोई चिड़िया कभी बोलती कि 'तुम्ही हो', 'तुम्ही हो', तो बाबा समझते कि जो कुछ इस संसार में

विद्यमान है वह ईश्वर ही है और जो कुछ है वह राम नाम ही है। कभी कोई चिड़िया बोलती कि 'गुनज्ञान गाओ' 'गुनज्ञान गाओ' बाबा समझते कि ईश्वर का गुण-ज्ञान गाने को कह रही है। ऐसे ही कभी कोई चिड़िया बोलती कि 'देख माया, देख माया' इसको बाबा समझते कि ईश्वर की ही सब माया है इसको देख। कोई चिड़िया कभी बोलती कि 'अपार है', 'अपार है।' बाबा इस प्रकार चिड़ियों की भाषा सुनकर चौकन्ने हो जायँ, अगर ख्याल (ध्यान) छूट जाय तो नाम हो जाय और यदि नाम छूट जाय तो ख्याल में हो जाय। चिड़ियाँ जो बोली बोलती थीं वह बहुत प्यारी लगती थी। इस प्रकार अनेक प्रकरा की बोलियों से जंगल में बाबा को ज्ञान और कर्त्तव्य का बोध होता था। इसके पश्चात् पूज्य बाबा 'अगम देश' की ओर प्रस्थान कर दिये।

अगम देश में बाबा को ब्रह्म तत्त्व की प्राप्ति

राम नाम का स्मरण करते हुए ध्यान में लीन होकर श्री बाबा ने अगम देश में प्रवेश किया। उस समय वैशाख-जेठ का महीना था। गर्मी खूब पड़ रही थी। एक स्थान पर बाबा ने देखा कि एक शंकर जी का मन्दिर है। मन्दिर का एक पुजारी, उसकी स्त्री और एक बच्चा उसके बगल में ही रहते थे एवं शंकर जी का पूजन करते थे। वहाँ पास ही में एक दूसरे सन्त पुजारी भी रहते थे। उनके घर में बाबा यह सोचकर बैठ गये कि यहाँ पर भजन और भोजन दोनों हो जायगा। वहाँ बाबा ध्यान में लग गये। पुजारी ने जब शंकर जी को भोग लगाया तब बड़े आदर से सन्त को भी भोजन करा दिया। उस पुजारी के द्वारा दिये गये भोजन को प्राप्त कर सन्त बहुत प्रसन्न हुए और ध्यान में मग्न हो गये। बाबा ने जब यह गति देखी तो स्वयं उस पुजारी का लड़का बन गये और उसके घर पर रहने लगे। इधर वे सन्त जो दिन भर ईश्वर के ध्यान में लीन थे सायंकाल होने पर ध्यान से उठकर शंकर जी के मन्दिर में दर्शन करने चले गये तथा बाबा भी जो कि पुजारी के बच्चे के रूप में थे मन्दिर में पहुंच गये, उन्हें सन्त ने पुजारी का बच्चा समझकर गोद में उठा लिया। बाबा सन्त की गोदी में पहुँचकर सोचने लगे कि यही समय है, और ऐसा विचार कर रोने मचलने लगे। तब वह सन्त उस बालक को हिलाने, डुलाने, चुप कराने और फुसलाने लगे। मन्दिर में इधर-उधर दिखाने लगे तो वहाँ देखा कि एक स्थान पर

दो चित्र टँगे थे—एक लाल और दूसरा सफेद। संत ने जब लाल चित्र दिखाया तो बाबा (बालक) ने नहीं लिया और सफेद चित्र उतार कर जब दिया तो ले लिया। यह देखकर सब ने सोचा कि उस लड़के को चित्र का भेद और करामात नहीं मालूम होगा। उसे तो केवल लुभाने और चुप कराने हेतु चित्र दिखाया गया है, किन्तु बात ऐसी नहीं थी। बालरूप बाबा सब कुछ समझते थे। वे उस छबि को नेत्र में लगाकर चले गये तथा वह सन्त भी मन्दिर के बाहर आ गये। सन्तों की लीला और छवियों का हाल कैसा अपार है। वह जो सन्त ध्यान करते थे शंकररूप थे।

उन्होंने तो चित्र पुजारी के भोजन कराने से प्रसन्न होकर उनका लड़का समझकर ही वह छबि दी थी। परन्तु लड़का रूप बाबा किस प्रकार छल करके वह छबि अगम देश को ले गये, कुछ दिनों में अगम देश का पद मिल गया और वैसा ही रूप भी बन गया। वह तेज सर्व-व्याप्त होकर अन्दर प्रकाशित करने लगा। जिस प्रकार बाबा को अगम देश का रास्ता मिला विरला ही संत कभी पाता है। ऊपर वर्णित लाल छबि शक्तियों की सिद्धियों का स्वरूप था और सफेद छवि अन्तर्यामी प्रकाशित वह ब्रह्मनिष्ठ सूक्ष्म स्वरूप था जिसको बाबा ने गौरवपूर्ण रूप से प्राप्त किया है। दत्तात्रेय की तरह बाबा ने प्रकृति के विभिन्न पदार्थों और जीवों से भगवद्भक्ति और ज्ञान का प्रकाश पाया।

सब को प्रसन्न रखना ही जीवन का मूल मन्त्र है। यहाँ तक कि चिड़ियों को, जीव-जन्तुओं को, अग्नि को, वायु को, आकाश को और कीड़ियों मकोड़ियों को भी प्रसन्न रखना चाहिये। झाड़-वृक्षों को भी प्रणाम करके प्रसन्न रक्खे। जल में फूल चढ़ाकर प्रसन्न करना चाहिये। मछलियों को दाना देकर, चींटियों को बढ़िया चीज बनाकर और किसी पात्र में अथवा भूमिपर डालकर प्रसन्न करना चाहिये। चल-अचल (चराचर) सब जीवों को स्वभावानुसार देकर प्रसन्न करे। पसन्दगी प्राप्त होनेपर आशीर्वाद तो स्वयं अपने आप ही मिल जाता है, जिससे आत्म-बल की प्राप्ति होती है।

भावना के अनुसार कार्य-सिद्धि

संसार में सबसे बड़ा विचार माना गया है। महात्माओं का कहना है कि विचार से भावना बनती है तथा भावना से मिलन होता है और

एकाकार होकर फिर अलग-अलग हो जाता है। सर्वत्र भगवद्भाव हो जाने पर सारा संसार प्रभु का रूप हो जाता है। इस विषय में बाबा का अनुभव इस प्रकार है—

भेड़ा घाट (नर्मदा तट) के दक्षिण तट पर ग्वारी गाँव में श्रीबाबा जब पधारे वहाँ बड़े-बड़े पत्थर पड़े हुए थे। उन पत्थरों पर बैठकर बाबा जब ध्यान में लीन हो जाते थे तब गोद में साँप आकर बैठ जाते थे। जब ध्यान टूटता था तो साँप गोद से निकलकर चले जाते थे। यह देखकर बाबा भयभीत हो जाते थे। बाबा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि—हम भजन करते हैं तो साँपों से बहुत डर लगता है, इनका क्या रूप है। इतने में ऊपर से आवाज आयी, तुम डरते हो क्या ? बोले— हाँ स्वरूप मालूम नहीं है। इतने में ऊपर की ओर देखते हैं तो आकाश में तमाम साँप ही साँप दिखाई देते हैं। तब बाबा साँपों को पकड़कर इकट्ठा करने लगे। बाबा ने उनसे प्रश्न किया कि—आप लोग जो काले-काले बनकर घूमते हैं, इसका क्या रहस्य है? तो ऊपर से आवाज आयी कि यह मेरा ही रूप है, हम को देखकर संसारी आदमी डर जाते हैं। हम को जो भगवान् का रूप समझता है उसको हम कभी नहीं सताते हैं, अगर देख भी लिया और मन में प्रार्थना किया तो हम चले जाते हैं। हम को जो काल समझता है उसे हम बराबर काट लेते हैं और कष्ट देते हैं। जो भगवान् का स्वरुप मानते हैं उनको कभी नहीं काटते। इस पर बाबा ने प्रश्न किया कि यदि आप को भगवान् समझ लिया जाय और आप ने काट लिया तो ? भगवत्स्वरूप सर्प ने कहा कि— मैं ऐसा कभी नहीं करता। बाबा के पुनः उनसे जिद्द करने पर उन्होंने कहा कि—यदि काट भी लें और वह यदि सोचे कि भगवान् ने काटा है तो उसे कुछ भी नहीं होता है और वह आदमी बच जाता है। इस रहस्य को जानकर बाबा को श्रद्धा हुई, विश्वास बन गया जिससे भय छूट गया। यही भावना का रहस्य है।

यथासमय पूज्य बाबा को अघोर-तत्त्व का ज्ञान भी प्रभु ने स्वयं करा दिया

एक समय श्री महाराज जी ग्वारी तट पर ध्यानमग्न बैठे थे। दिन में लगभग तीन बजे भेड़ाघाट की तरफ स्मशानघाट पर कुछ लोग एक मुर्दा को लेकर आये। दाह-क्रिया के बाद वे सब अपने अपने घर चले

गये। रात में लगभग ८-९ बजे अग्निदेव खूब प्रसन्न मालूम हुए। चिता खूब तेज जलने लगी। अग्नि के बीच में एक आदमी प्रगट हुआ और खूब जोर से खखारकर हँसने लगा और मुर्दे को निकालकर खाने लगा। बाबा ने ध्यान से देखा कि अग्निदेव प्रसन्न होकर मुर्दे को खा रहे हैं। उन्होंने ध्यान में यह भी देखा कि—सिद्ध अघोरी जो स्मशान-घाट पर पड़े रहते हैं, वे इसी अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं। जब अग्निदेव मुर्दे को खाने लगते हैं तो वे लोग भी खाने लगते हैं। वे भी उसी स्वरूप में हो जाते हैं। कहने का आशय वे भी तदाकार होकर कपाल-क्रिया के द्वारा मुर्दे का उपभोग करते हैं। इसी क्रिया से वे सिद्धि प्राप्त करते हैं। अघोरियों को यही सिद्धि रहती है। इसी को सिद्ध अघोरी माना गया है। बाबा को भी इस अघोरी तत्त्व का ज्ञान हुआ और अघोर मत को जानने-समझने लगे। यद्यपि यह अघोर-मार्ग बड़ा कठिन है, इसकी साधना भी बहुत कठिनाई से होती है, तथापि यह सिद्ध होने पर सिद्धि उसके करतलगत हो जाती है। वस्तुतः अघोर मार्ग बहुत दुर्गम है।

ईश्वर में तल्लीनता से तीनों देवों का प्रगट होना

श्री बाबा रामसनेही जी महाराज राम-नाम का दिन-रात स्मरण करते-करते राम-नाम का स्वरूप ही बन गये। बाबा उस समय भेड़ाघाट पर थे। एक बार राम-नाम के स्मरण में बेसुध रहते हुए नर्मदा तट पर जा पहुँचे और इस पार से उस पार जाने का विचार करने लगे। इतने ही में बाबा ने देखा कि–एक नाव मल्लाह सहित इस पार है और एक नाव मल्लाह सहित उस पार है। बाबा रामसनेही जी किनारे जाकर उस नाव पर बैठ गये। बहुत देर बीत जाने पर भी उस नाव पर दूसरा और कोई बैठने नहीं आया। नाव वाला भी बाबा जी को पार उतारने के लिये चला और उस पार जाकर उनको पार उतार कर इस पार वापस आ गया। परन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि—बाबा ने देखा कि हम को उस पार उतारा था किन्तु हम जहाँ के तहाँ इस पार खड़े हैं। नाव वाले ने फिर इसी प्रकार उतारा परन्तु बाबा ने अपने को फिर उसी स्थान पर खड़ा पाया। इस प्रकार सारा दिन व्यतीत हो गया। बाबा ने सोचा कि आज नाव वालों ने दिन भर पार उतारा परन्तु हम पार नहीं होते हैं और उस पार नहीं पहुंचते हैं। बाबा को ऐसा अनुभव हुआ कि कहीं किसी

जादूगरी में तो नहीं फँस गये हैं। क्योंकि दो ही मल्लाह हैं और दो ही नाव हैं। इस पार वाला उस पार और उस पार वाला इस पार आता है। इस प्रकार दिन भर वे लगे ही रहते हैं। बाबा को यह चिन्ता हुई कि हम कैसे पार हों, क्योंकि इस पार भी नाव देखते हैं और उस पार भी नाव देखते हैं और दो चलानेवाले भी देखते हैं। वैसे ही जल एवम् सब दृश्य पदार्थ भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। हम ख्याल रखते हुए जाते हैं फिर भी पार नहीं होते हैं। अतः अब जब नाव में पार होने के लिये पैर रखेंगे तो उसी समय निश्चय ही ख्याल करके सुरता (स्मरण) ईश्वर में लगा देंगे, जिससे अवश्य ही पार हो जायँगे। इस प्रकार दृष्टि लगाकर पार उतर गये और फिर जब किनारे-किनारे चले जाते थे तब देखा कि एक पुरुष जो कि नाव चला रहा था आगे हो गया और दूसरा नाव चलानेवाला पीछे हो गया। बीच में बाबा रामसनेही जी हो गये। आगे का तो द्रष्टा अर्थात् प्रबन्ध करनेवाला हुआ, बीच में बाबा रामसनेही जी बेफिक्र और बेपरवाह थे, पीछे वाला मस्त है। जो द्रष्टा है उस पुरुष के अन्दर स्त्री बन जाती है। बाबा रामसनेही जी बेपरवाह हैं। उनमें चित्तवृत्ति आत्मरूप रहती है जो कि बालक भाव होता है एवं अपने को देखनेवाला है। पीछे वाला जो मस्त रहता है वह तो अकेला रहता है। ये तीनों ही सत्, चित् और आनन्द हैं, अर्थात् आगे वाला द्रष्टा सत् है बीच की बेफिक्र चित्त् है और पीछे वाला मस्त आनन्द है। संसारी मनुष्यों का ध्यान परिवार, धन, सम्पत्ति और विषय-भोगों में रहता है और उनकी दृष्टि उसी में लगी रहती है जिसके कारण वे इस त्रिगुण से पार नहीं हो पाते हैं।

अगर वे लोग इन संसारी बातों को छोड़कर हृदय में केवल ईश्वर का ध्यान रखें तो अवश्य ही पार हो जायँगे।

श्री जगन्नाथ जी का अद्भुत माहात्म्य, श्री बाबा को चमत्कार का ज्ञान

एक समय बाबा रामसनेही जी नर्मदा के किनारे ध्यान में लगे हुए थे। ध्यानावस्था में ही एक बार विचार हुआ कि अब किसी दूसरे देश को चलना चाहिये। यह विचार कर ही रहे थे कि श्री नर्मदा जी प्रगट होकर कहने लगी कि—अन्यत्र जाना ही है तो अमरकंटक चलो, कुछ दिनों के बाद वहाँ से जगन्नाथ जी भेज दुँगी। बाबा के मन में यह विचार हुआ कि क्या जगन्नाथ जी में इनसे अधिक शक्ति है? नर्मदा

के किनारे-किनारे जब कुछ दूर गये तो मन में विचार हुआ कि जगन्नाथ जी जाकर उनकी शक्ति के विषय में पता लगाना चाहिये। उनका क्या माहात्म्य है? यह भी जानना चाहिये। ऐसा निश्चय कर जगन्नाथ जी के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए वहाँ पहुँच गए। वहाँ पहुँच कर सबसे पहले उन्होंने फाटक को ही प्रणाम किया, क्योंकि सबके चरणों की धूलि फाटक में ही रहती है। वहाँ मुँह लगाया, चूमा, जीभ लगाई और हाथ से वहाँ का धूल बटोरकर अपने हृदय और शरीर में लेप कर लिया। उस धूलके लगाने मात्र से उनका शरीर शुद्ध और प्रकाशवान् हो गया। बाबा ने मन में विचार किया कि मन्दिर में अभी बहुत भीड़ है, पण्डित, पुजारी पैसे वालों को ही आसानी से भीतर जाने देते हैं—मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। यह विचार कर मन्दिर के बाहर जो देवताओं की मूर्तियाँ थीं उन्हें प्रणाम किया, चूमा, सब को हृदय से लगाया तथा सबका भाव अन्तरात्मा से खींच लिया। संसार में सब के आगे छोटा बनकर सब कुछ काम कर लिया जा सकता है जैसा कि श्री बाबा ने किया, ऐसा कोई बिरला ही करेगा। मन्दिर के भीतर से मोड़ी द्वारा जो जल आता है उसी को पान किया शिर और आँखों मे लगाया। क्योंकि उसी में सब कुछ है, ऐसा चिन्तन किया।

श्रीमहाराज धूनी लगा कर तथा समुद्र को साक्षी देकर राम-नाम का सुमिरन करने लगे। दिन भर तो राम-नाम के सुमिरन में बेसुध रहते थे और रात्रि में धूनी के पास बाबा सो जाते थे। एक रात स्वप्न में देखा कि—जगन्नाथ जी के मन्दिर के भीतर पहुँच कर अच्छे अच्छे पदार्थ जिनका कि भोग लगाते हैं, खा रहे हैं। श्रीमहाराज इससे बहुत प्रसन्न हुए और सोचा कि मेरी आत्मा तो भूखी रही होगी, इसलिए मन्दिर में चली गयी और खा करके आ गयी।

प्रातः काल होने पर बाबा रामसनेही जी ने सोचा कि चलो मन्दिर में कुछ शरीर को भी मिल जायगा, ऐसा सोचकर महाराज मन्दिर के एक फाटक पर बैठ गये। इतने में एक पंडा आया और बाबा से पूछा—'कुछ खाओगे? महाराजने उत्तर दिया—अगर तुम्हारी इच्छा है तो कुछ ला दो। उसने खिचड़ी और साग ला दिया। बाबा भोजन करके बहुत प्रसन्न हुए और पूछा कि भोजन कैसे बनता है? उसने उत्तर दिया कि एक हँडिया पर तीन हँडिया रक्खी जाती हैं और फिर एक साथ ही भोजन चूल्हे पर बन जाता है क्योंकि वहाँ की पृथ्वी

सतो गुणी है और अग्नि जो पकाता है वह भी सत्त्व गुणी है तथा पकाने वाला भी सत्त्व गुणी है, इतना ही नहीं देखनेवाला भी सतोगुणी है। और बाबा का भाव भी सतो गुणी है, देखनेवाला भी सतो-गुणी है तथा दिखानेवाला भी सत् है। जब पक जाता है तब एक ही सँग भोग लगाया जाता है। बाबा को इससे उत्सुकता बढ़ी अतः उन्होंने पूछा कि---क्या दाल, चावल और पानी इकट्ठा ही रक्खा जाता है ? दुबारा देखना पड़ता है या नहीं ? पंडा ने जबाब दिया कि हाँ एक ही बार में रख दिया जाता है और नीचे चूल्हे में लकड़ी लगा दी जाती है। बाबा को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और विचार करने लगे कि एक हँडिया तो पक सकती है, पर तीनों इकठ्ठी कैसे पक जाती हैं। इस प्रकार विचार करते हुए समुद्र के किनारे आकर बैठ गये और राम राम का जप करने लगे एवं उनका ईश्वर में ध्यान हो गया। बाबा दिन भर ठंड में बैठ कर भजन करते थे और एकमात्र ईश्वर का भरोसा करते थे। एक बार रात्रि के समय ईश्वर में ध्यान लगे होने के कारण धूनी को अलग छोड़ कर बेसुध हो गए। रात्रि में उनको ऐसी गर्मी लगी कि मानो दुशाला ओढ़ कर किसी मकान में सोये हुए हों। बाबा का जब ध्यान टूटा तब उन्होंने देखा कि शरीर से पसीना बह रहा है, जाड़े के दिन हैं और वे समुद्र के किनारे सो रहे हैं। बाबा की जब आँखें खुलीं तो देखते हैं कि बाँई पसलियों पर एक मुहर के समान लाल ज्योति लगी हुई है। उसे देखकर बाबा को ख्याल हुआ कि क्या जगन्नाथ जी में जो खाना बनता है वह इसी ज्योति से बनता है ? तब ज्योति से आवाज आयी कि—हाँ, इसी से बनता है। बाबा रामसनेही जी ने सोचा कि इसकी परीक्षा अवश्य करनी चाहिये। तब ज्योति से पूछने लगे कि—जगन्नाथ जी में जो खाना ऊपर हँडिया में बनता है, वह क्या इसी से बनता है ? क्या ऊपर से ज्योति की अग्नि लगती है और नीचे लकड़ी की अग्नि लगती है ? नीचे जो आग लगती है उसका आधा भाग क्या ऊपर जा सकता है ?" इन सब प्रश्नों का उत्तर ज्योति से आवाज आयी कि हाँ ! बाबा जी को इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ, उन्होंने और आगे पूछा कि— नीचे चूल्हे में जो आँच लगती है उसकी आँच क्या ऊपर जा सकती है ? ज्योति से आवाज आयी कि हाँ !

बाबा रामसनेही जी इन प्रश्नोत्तरों से समझ गये कि यहाँ सत् का व्यवहार है और सत् की ही ज्योति है। इस कारण यहाँ तो बीस

हँडिया तक पक सकती हैं। वह ज्योति बाबा के पसलियों में लग गई और वह श्री महाराज को मिल गयी। बाबा ने विचार किया कि चलो बिना वस्त्र के भी समय कट सकता है। उस ज्योति के प्रभाव से सत् का ओढ़ना शरीर में हो जाता है। इसके हो जाने से किसी की चिन्ता नहीं रहती और वह निर्भय होकर दुनियाँ में घूमता है। यह शक्ति अमोघ एवं गुप्त है और किसी सन्त महात्मा को ही प्राप्त होती है। बाबा रामसनेही जी नर्मदा के किनारे से श्री जगन्नाथ जी के माहात्म्य का पता लगाने आये थे उसका पता लगा लिया। यह साक्षात्कारी है। और पूज्य बाबा का निजी अनुभव है।

मद्रास में-संन्यास योग-शक्ति का चमत्कार

श्री महाराज जगन्नाथ जी से रामेश्वर की ओर जा रहे थे। रास्ते में मद्रास शहर पहुँचे। वहाँ एक मन्दिर में बैठ गये। दो दिनों तक उस मन्दिर में बैठकर बाबा भजन करते रहे। किसी से न खाना माँगा और न किसी से कोई बात ही की। एक रात में एक संन्यासी और एक देवी जो गेरुआ वस्त्र धारण किये हुए थे प्रगट हुए। बाबा ने उनका प्रत्यक्ष दर्शन किया एवं उन लोगों ने भी बाबा का दर्शन किया। इसका चमत्कार यह हुआ कि दूसरे दिन से बाबा जो पदार्थ भोजन करने की इच्छा करते वही खाना मिल जाता था। बाबा बहुत प्रसन्न हुए और समझ गये कि अभी भी मद्रास में संन्यास योग की शक्ति विद्यमान है, व्याप्त है। इससे बाबा बहुत प्रभावित हुए। सब वस्तु की जाँच (परीक्षा) करके वहाँ से रामेश्वर की ओर प्रस्थान कर दिये।

श्रीरामेश्वर की यात्रा में बाबा को दिव्य दृष्टि की प्राप्ति

कुछ दिनों की यात्रा के पश्चात् श्री बाबा मद्रास से रामेश्वर पहुँच गये। वहाँ भूखे ही एक चबूतरे पर बैठकर ईश्वर के ध्यान में लीन हो गये। प्रातः काल होने पर इधर-उधर मंदिरों की ओर गये और जहाँ पर दान-पुण्य सदावर्त हो रहे थे, खड़े खड़े तमाशा देखते रहे। वहाँ पर भी जातिवाद और सम्प्रदाय वालों को ही भजोन कराते थे, श्रीमहाराज को किसी ने भोजन करने को नहीं कहा। इस प्रकार दो-चार स्थानों पर तमाशा देखते रहे और फिर एक स्थान पर बैठकर विचार करने लगे कि भोजन जैसे क्षुद्र कार्य के लिये इस प्रकार इधर-

उधर जाना-भटकना ठीक नहीं है। भोजन तो परमात्मा एक ही स्थान पर दे देगा। अटल विश्वास चाहिये। यह निश्चय करके साधना में लग गये। इस प्रकार उघाड़े देह साधना करते दो तीन दिन व्यतीत हो गये। चौथे दिन मन में संकल्प किया कि जहाँ हम बैठे हैं वहीं दाल-भात खायँगे। महात्माओं की इच्छा कभी विफल नहीं होती है। प्रातः काल होते ही एक मनुष्य आकर बोला कि—महाराज जी, आप क्या खायँगे ? बाबा ने कहा कि दाल-भात खाऊँगा और यहीं पर खाऊँगा। वह बाबा के आज्ञानुसार दाल-भात बनाकर वहीं पर दे गया। श्री महाराज ने भोजन किया, भोजन के पश्चात् ईश्वर के ध्यान में बैठे थे कि विचार हुआ कि तीन दिनों से धूनी के लिये लकड़ी नहीं मिलती है। इतने में ही अदृश्य रूप से आवाज आयी कि—समुद्र के किनारे चले जाओ ! और छोटी-छोटी लकड़ियाँ जो किनारे पर पड़ी हैं उन्हें बीनकर ले आओ और उनसे धूनी को जलाओ।

बावा रामसनेही जी उठकर समुद्र के किनारे-किनारे चले गए और धूनी के लिये छोटी-छोटी लकड़ियाँ बीनने लगे। बीनते समय देखा कि बहुत-सी मोटी लकड़ियां वेदी की तरह सजी हुईं पाताल तक रखी हुईं हैं।

श्रीमहाराज ने एक लकड़ी निकाली और दूसरी जब खींचने लगे तो देखा कि एक साँप उसमें बैठा हुआ है। उसकी लम्बाई अनुमान से चार-पांच सौ गज और मोटाई अंगूठे के बराबर थी। यह देखकर लकड़ी ढूँढना तो भूल गये और यह देखने लगे कि साँप क्या करामात करता है। देखने पर विदित हुआ कि जितने लोग यहां तीर्थयात्रा और दर्शन करने निमित्त आते हैं साँप उनके पैरों पर पूँछ से लिपट जाता है, परन्तु उन लोगों को इसका ज्ञान नहीं होता है कि साँप पैरों पर लिपटा है।

तब बाबा ने समझ लिया कि जो कोई दर्शन करने आता है, उसके पैरों मे यह भक्ति रूपी सांप लिपट जाता है। परन्तु दिव्य दृष्टि न होने से उन लोगों को उसका ज्ञान नहीं होता है। बिना दिव्य दृष्टि के यह कैसे दिखाई दे सकता है। संसारी जीवों को यह ज्ञान नहीं रहता है कि उन्होंने वहां जाकर क्या लाभ प्राप्त किया और क्या ज्ञान पाया। यह सब श्रीमहाराज ने अपनी ज्ञान-दृष्टि द्वारा देखा और समुद्र से कहा कि—यहां हमारी आत्मा को शान्ति नहीं है। महात्मा जी ने जब ऐसा

कहा तो समुद्र से एक टोकरी खाजा (मिठाई) किनारे पर आ गया और आज्ञा हुई कि यह खाकर भजन करें।

बाबा जी ने एक खाजा उठाकर खा लिया, वह बहुत मीठा था। बाबा जीं से मीठा खाकर भजन नहीं होता था क्योंकि वे तो कर्म के मीठे थे। इस कारण उनको मिठाई अच्छी नहीं लगती थी। इस प्रकार पूज्य बाबा ने रामेश्वर स्थान में दिव्यदृष्टि प्राप्त की। यहां जो कुछ वर्णन किया गया है वह सब बाबा के अनुभव का विषय है। बाबा ने इसे साक्षात्कार किया है।

उज्जैन में श्री गोपाल बाबा से पुनः भेंट और दोनों का अनुभव

गुप्तेश्वर में श्री बाबा ने गोपाल बाबा को कहा था कि अब आगे उज्जैन में कुम्भ के अवसर पर भेंट होगी। तथा बाबा के मन में श्री हर्षद देवी के वचन की जाँच की भी इच्छा थी। इन उपर्युक्त दोनों कार्यो की पूर्ति के लिये बाबा उज्जैन पहुँचे। बाबा जब उज्जैन पहुँचे तो उस समय उनके हाथ में एक डण्डा था। बाबा ने नदी किनारे पहुँच कर डण्डे को पानी में डुबो दिया, डुबोने के पश्चात् उस जल में से दो छोटी-छोटी कपड़े में बँधी पोटलियाँ आ गईं। उनको बाबा ने अपने डण्डे में बाँध लिया। ये रिद्धि-सिद्धि थीं। उनको साथ लेकर बाबा एकान्त में एक इमली के पेड़ के नीचे विराज गये।

बाबा का दिव्यरूप वहाँ देखकर एक भक्तराज को बड़ी श्रद्धा हुई, उसने छाया के लिये एक फूस की मड़ेया डलवा दी। बावा वहीं रहने लगे। रिद्धि-सिद्धि तो बाबा के साथ थीं ही वहाँ भक्तों की बड़ी भीड़ होने लगी। फल एवं प्रसाद का ढेर लगा रहता था।

बाबा के दर्शनों के लिये भीड़ को इकठ्ठी होती देखकर वहाँ उपस्थित सन्त महात्मा लोग जो कुम्भ के अवसर पर आये हुए थे वे बहुत जलने लगे। एक दिन उनमें से कुछ लोगोंने सोचा कि यदि उस बाबा को जो अपने को बड़ा महात्मा वनता है यहाँ से भगा दें तो लोग हम लोगों को ही पूजेंगे। यह विचार कर कुछ लोग आये और झोपड़ी उखाड़ने लगे। बाबा ने यह सब कुछ करते देखा परन्तु कुछ बोले नहीं, वहाँ से उठकर दूसरी ओर चल दिया। इधर जो लोग झोपड़ी उखाड़ने-फेंकने तोड़ने में लगे थे उनमें से एक की आँख में एक बाँस घुस गया, उसकी आँख फूट गयी। उसने अपने मन में सोचा कि साथ के दूसरे लोगों ने

जान बूझ कर मेरी आँख फोड़ दी है। बस क्या था आपस में वे लोग लड़ पड़े। अब वहाँ दो पार्टी वन गई और आपस में ही लड़ाई होने लगी। लड़ाई यहाँ तक वढ़ी कि पुलिस को भी दखल देना पड़ा। यह सब बाबा की ही लीला थी।

बाबा तो वहाँ से उठकर कुछ दूरी पर एक मुसलमान का बगीचा था वहाँ एकान्त स्थान देखकर वैठ गये। उस स्थान पर एक फकीर भी रहता था। बाबा ने वहीं अपना स्थान वनाया। इसी समय श्री गोपाल बाबा उनको खोजते-खोजते वहाँ पहुँच गये। तीन महीने तक बाबा और गोपाल बाबा वहाँ एक साथ रहे। प्रतिदिन हजारों आदमियों का भण्डारा हमेशा चलता रहा। हर्षद देवी ने अपना वचन पूरा किया।

तीन महीने उज्जैन में रहने के बाद श्री गोपाल बाबा ने एक दिन बाबा से प्रार्थना की कि---इस सेवक को कुछ धन दे दीजिये, और सट्टे का नम्बर बता दीजिये।' ऐसी उनकी भावना थी। गोपाल बाबा की इस बात पर बाबा बहुत नाराज हो गये और गोपाल बाबा से कहा कि---अब तुम को आठ बरस (वर्ष) बाद दर्शन मिल सकेगा अर्थात् तुम से भेंट हो सकेगी। इतना ही कहकर गोपाल बाबा को वहाँ से बिदा कर दिया और स्वयं तपस्या करने हेतु घोर जंगल में चले गये। बहुत दिनों तक बाबा जङ्गलों में भ्रमण करते रहे। १२ वर्ष के पश्चात् जब नासिक में कुम्भ लगा वहाँ पहुँचे। उस समय दिन-रात वर्षा हो रही थी---ऐसे ही दुर्दिन में बाबा वहाँ पहुँचे थे। वहाँ दो दिनों तक तो भींगते ही रहे, तीसरे दिन एक दालान में आश्रय लिया और रात बितायी। उस दिन भी धीमे-धीमे पानी बरस ही रहा था, फिर भी बाबा जहाँ साधु-महात्मा लोग ठहरे हुए थे उस स्थान का पता लगाने गये। बाबा उस तरफ एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक महात्मा छत्र लगा कर बैठे थे। वहाँ उस महात्मा ने बड़ी श्रद्धा से बाबा को भोजन कराया। भोजन करने के पश्चात् बाबा दूसरी ओर स्थान खोजने गये। वहाँ एक स्थान पर बाबा ने देखा कि तम्बू लगा है, उसकी छाया में अग्निदेव के सहारे बहुत से साधु लोग बैठे हैं औ ठण्ड से काँप रहे हैं। सात दिनों तक बराबर पानी पड़ता ही रहा। बाबा वहाँ कुछ देर रुक कर मृगछाला जो भींग गया था उसे सेंका और फिर वहाँ से एक ओर चले गये।

श्री बाबा को आत्म-भोग के विषय में आकाशवाणी

नासिक में स्थान खोजते हुए बस्ती में पहुँच गये। वहाँ एक मकान के नीचे दालान में आकर बैठ गये। अभी भी पानी का बरसना जारी था। बाबा ने ऊपर का ध्यान करके ईश्वर से प्रार्थना की कि आज सात रोज से पानी पड़ रहा है, आप साधु सन्तों को क्यों कष्ट दे रहे हैं ? इस पर ऊपर से आकाशवाणी हुई कि 'यह भोगती आत्मा हैं—ऊपर चढ़ रहे हैं ! बाबा समझ गये इसका आशय कि—जब तक साधु सन्त शुभा-शुभ कर्म भोगेंगे नहीं तब तक ऊपर ईश्वर के यहाँ पहुँचेंगे नहीं। बाबा को इस बात पर पूर्ण विश्वास हो गया कि—जब तक यह शरीर भोग नहीं करेगा ईश्वर से प्रेम नहीं हो सकता। यह सब देखकर बाबा नासिक के कुम्भ से बिदा होकर एक होटल में पहुँचे। उस समय बाबा को बहुत भूख लगी थी, होटल वाले ने बड़ी श्रद्धा से बाबा को चाय पिलायी, चाय पीकर वहाँ से पूना की ओर चल पड़े।

श्री बाबा का पूना पहुँचना, वहाँ त्रिफला के तीन मुण्डों का प्रगट होना

पूना पहुँच कर बाबा ग्वाल मुहल्ले में जहाँ पहलवान लोग रहते हैं, उसके पास एक शंकर जी के मन्दिर में जाकर बैठ गये। कुछ काल के अनन्तर श्री बाबा ध्यान में मग्न हो गये। उस समय पानी बरस रहा था। पानी बरसते दो दिन हो गये फिर भी बन्द होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता था। उस समय श्री बाबा को ध्यान आया कि यहां इतना पानी क्यों पड़ रहा है, यह कहकर ऊपर आकाश की ओर देखने लगे तथा यह कहने लगे कि यह किसका राज्य है ? क्यों ऐसा दुख हो रहा है ! इतने में आकाश में एक ही रूप के तीन मुण्ड प्रकट हुए। तीनों इकट्ठे थे। यह देखकर बाबा समझ गये कि पहले यहीं त्रिफला राक्षस का राज्य था। श्री बाबा ने राम-नाम का बाण छोड़कर त्रिफला राक्षस को नष्ट कर दिया। पुराणों के द्वारा जो यह सुना जाता है कि शंकर जी ने त्रिफला राक्षस का बध किया था वह यही है। यह लीला सब को दिखाकर बाबा ने पूना से प्रस्थान कर दिया।

श्री बाबा का बम्बई से राजस्थान के लिए प्रस्थान

पूना से बिदा होकर बाबा बम्बई पहुँचे। बम्बई में कान्दीवली में आकर ठहर गये। जहाँ एक भक्त रणछोड़ कापड़िया बाबा की सेवा

करता था। बाबा मैदान में ही पड़े रहते थे। वहां से चलकर बाबा बालकेश्वर में एक सेठ जो कि कपड़े का एजेन्ट था उसके घर में दो दिनों तक ठहर गये। तत्पश्चात् रेल में बैठकर बाबा राजस्थान जयपुर आ गये। यहां घाट दरबाजा के स्मशान पर पहुँचे। बाबा को वहां कुछ शान्ति मिली। स्मशान की एक छतरी पर रहने लगे। बाबा ने जमीन पर धूनी लगाया तो जमोन के अन्दर से दो सिपाही निकलकर कहने लगे कि--यह राज का धरम है, यहां धूना नहीं लगेगा' यह सुनकर महाराज डर गये और उन्हें कहने लगे कि 'हम जमीन में धूना नहीं लगायंगे, एक कुण्डी में हम आग रख लेते हैं उसी में भगवान् का पूजन-हवन करेंगे और जहां जायंगे अपने साथ कुण्डी ले जायंगे। इतना कहकर बाबा सोचने लगे कि राज का बहुत बड़ा धरम है और मेरे पास धरम नहीं है। जोग तो बहुत है, इसी से बेबस हो गये और कहना मानना पड़ा। उसी समय बाबा ने विचार किया कि---अब (धर्म) धरम की तरफ ख्याल करना चाहिये कि धरम (धर्म) कैसे कमाया जाय। इस प्रकार विचार कर थोड़ी सी जमीन को साफ करके उसे अपने हाथ से लीप लिया और पानी के लिए चारों कोने में चार गमला मंगाकर रख दिया। तथा बाजार से ज्वार, बाजरा, गेहूँ की दलिया, सूजी, चना और कुछ शक्कर मंगा लिया। सुबह जब उठते तो उनमें से थोड़ा-थोड़ा चारों कुण्डियों के पास छींटते और फिर आकर ध्यान में लग जाते थे। पहले दिन तो २-४ चिड़ियां ही आयीं, दूसरे दिन मोर, कबूतर तथा चिड़ियां ज्यादा आने लगीं। इस प्रकार रोज दाना डाल देते थे वहां बहुत से जीव-जन्तु आने लगे। बाबा केवल नाम-ध्यान करके यही काम करते थे। हजारों-लाखों पशु-पक्षी आते थे और दाना खाकर एवं पानी पीकर उड़ जाते थे। बाबा सोचते थे कि हम जो पूजन और यह काम करते हैं---उससे कैसे आशीर्वाद मिलेगा ?

ये तो दाना खाकर और पानी पीकर उड़ जाते हैं। इस रहस्य के विषय में बाबा ने अपने मन में विचार किया कि ये दाना खाते हैं तो इनकी भूख मिट जाती है वैसे ही पानी पीते हैं तो इनकी आत्मा सन्तुष्ट हो जाती है तो ऐसा क्यों न करें कि इस पानी की कुण्डी से ही जहां इनकी पसन्दगी रह जाती है पानी लेकर चरणामृत के रूप में पीवें तथा अपने नेत्रों में लगावें। इससे यह होगा कि इन पक्षियों का जो आत्म-सन्तोष है वह मेरे में आ जायगा। तथा इनकी सिद्धि भी आ जायगी। मुझे विश्वास है कि मेरा यह किया हुआ कार्य निष्फल नहीं होगा।

बाबा इसी प्रकार रोज कुण्डी में से चरणामृत लेते और कुण्डी धोकर फिर उसमें पानी भरकर रख देते थे।

इस प्रकार करते दो तीन महीने बीत गये। तब पृथ्वी से आवाज आयी कि आप का धर्म विजय हो गया। अब आप पृथ्वी में ही धूना लगा सकते हैं। यह सुनकर बाबा ने कुण्डी में से हटाकर जमीन में धूना बना लिया और उसी में हवन-पूजन करने लगे। अब तक बाबा का जोग तो बहुत बड़ा था परन्तु धर्म नहीं था सो अब धर्म इस प्रकार कमाना पड़ा, साथ ही बाबा को यह भी अनुभव हुआ कि जोग से बड़ा धर्म है।

श्री बाबा का इतना बड़ा जोग था कि जंगल में जहां वे रहते थे वहां से सब भयंकर जीव-जन्तु चले जाते थे। उनके तप के तेज से तमाम जलने लगता था। यहां तक कि जानवर जंगल को छोड़कर भाग जाते थे। इस प्रकार जोग भी धर्म के आगे तुच्छ हो गया और बाबा को धर्म कमाना पड़ा।

यज्ञ, तप, धरम ये तीन चीज जिसके पास हैं उसको कोई नहीं जीत सकता है। और यदि एक ही चीज हो तो भी वह बहुत कुछ कर सकता है।

श्री बाबा को पञ्चतत्त्व तथा संसार की अनित्यता का ज्ञान

अब तक श्री बाबा ने किसी को साक्षात् गुरु के रूप में नहीं माना था। पेड़ आदि स्थावर तत्त्वों को ही गुरु मानते हुए भजन में लीन रहते थे। एक दिन बाबा नर्मदा के किनारे जा रहे थे कि ऊपर से आवाज हुई कि भजन करते हुए आप कहाँ तक जाओगे ? बाबा ने आकाश की ओर देखा तो बहुत से संत महात्मा ऊपर चारों ओर विराजमान थे। उन्हें देखकर बाबा डर गये और मन में विचार करने लगे कि इनका कहना सत्य है कि गुरु को साक्षी रूप में रखना चाहिये। अग्नि तो साक्षी है ही, हवा भी साक्षी है, पृथ्वी तथा जल साक्षी है और आकाश भी है, इन पांचो तत्त्वों के सिवाय कहीं निकलने का स्थान नहीं है। इन्हीं की आधीनता में यह जीवन व्यतीत करना है और इन्हीं का सहारा लेकर चलना है। इस रहस्य को स्वीकार कर बाबा उन्हीं की आधीनता में जीवन व्यतीत करते रहे। साथ ही यह भी अनुभव बाबा ने किया कि यही करना है तथा इसी ख्याल में रहते थे कि अगर इसको छोड़ देंगे तो उसी में लय हो जायँगे। यही इसका तत्त्वज्ञान है।

संसार की अनित्यता

जयपुर में श्मशान पर धूनी लगाकर बाबा भजन ध्यान करते थे। दिन भर भजन करें और शाम को झाड़-वृक्षों को प्रणाम करते, माथा लगाते, चूमते, तथा यह विचार करते कि ये लोग बहुत दिनों से यहां खड़े हैं, यहां का सब हाल-चाल जानते हैं, केवल बोलते नहीं हैं ऐसा कहते हुए बाबा जाते थे। रास्ते में जितनी वहां छतरियाँ बनी थीं सब छतरियों में जाकर बाबा प्रणाम करते थे तथा मस्तक लगाते थे। सब झाड़ों, वृक्षों और फूलों को चूमते थे। स्मशान के चिताओं की भस्म उठाकर सिर में लगाते थे। जहां राख़ की ढेरियां लगी थीं वहां पर कुछ देर बैठते भी थे।

उस समय बाबा यह विचार करते कि हम को भी इसी में मिल जाना है। तथा संसार में लोग कितना भी शुभकर्म किये हों पर वे भी एक दिन मिट्टी में मिल गये हैं। हमें भी एक दिन मिट्टी या राख बनना है, इस प्रकार विचार करते हुए भस्म को सिर में लगाते थे। उस राख को बाबा पवित्र समझते थे क्योंकि वहाँ सब तत्त्व अलग-अलग हो जाते हैं। बाबा कभी-कभी राख की ढेरी पर दीपक भी जलाते थे। इसका तात्पर्य यह था कि इस प्रकाश के मिलने से जितने जीव होंगे मुक्त हो जायँगे। संसारी (गृहस्थ) आदमी वहाँ कभी भी दीपक नहीं जलाते थे और न कोई वहां जाता-आता ही था। वहां सिर्फ मुर्दा लेकर लोग जलाने ही आते थे। बाबा सब तत्त्वों को साक्षी रखकर कार्य करते थे। वे सत् रूप से ही ध्यान भजन करते थे तथा ध्यान मग्न रहते थे।

मायावी का ईश्वर साथ नहीं देता है

वहीं पर बाबा ने अपनी योग दृष्टि से देखा कि बड़े-बड़े साधु-सन्त-महात्मा भगवान् का भजन करते-करते भगवद् रूप बन गये हैं। उनके पास कभी-कभी संसारी लोग भी आ जाते थे। उनमें सट्टे करनेवाले भी लोग होते थे। वे सन्तों के यहां जब आते थे तो उन्हें प्रसन्न करने के लिये खूब मेवा लाते थे। वे सन्तों से प्रार्थना करते थे कि महाराज ! हमें एक सट्टे का नम्बर बताने की कृपा करें। इधर सन्त लोग जिनकी सेवा का भार उनके ऊपर पड़ता था उसे उतारने के लिये विवश होकर एक कोई नम्बर बता देते थे। वह सट्टेबाज जाकर उसी नम्बर को लगाता था, उसकी जीत हो जाती थी। जीत होने से उसको और

लोभ होता था कि महाराज के कहने से नम्बर आ गया है। महाराज फिर नम्बर बता दें। इसके लिये सट्टेबाजों ने दौड़ लगाना प्रारंभ कर दिया। साथ ही संतों की सेवा पूजा भी करने लगे। सेवा-पूजा करने का केवल यही आशय था कि वे सट्टे का नम्बर बताते, कोई श्रद्धा नहीं थी। फिर भी सन्त लोग कोई नम्बर बता देते थे। ईश्वर तो ये सब कर्त्तव्य देखते ही रहते थे। वे नाराज हो जाते थे। इधर सट्टेवाज को जो नम्बर बताया गया था उसे ले जाकर वह लगाता था और हार जाता था। वह आकर फिर उन सन्तों से प्रार्थना करता था कि--महाराज, हमारा सब कुछ चला गया, बालबच्चे भूखे मरेंगे, ऐसा सुनकर वे महात्मा लोग फिर दया के वशीभूत होकर कोई नम्बर बता देते थे और कहते थे कि----देखो यह दु:खी हो गया है, वे अपने रूप और भक्ति को देखते और गुस्सा होते हुए फिर कोई नम्बर बता देते थे। दैव संयोग से वह नम्बर भी हार जाता था, क्योंकि ईश्वर जो नाराज था।

इसी प्रकार पूज्य बाबा ने अपनी दिव्य-दृष्टि से देखा कि यहां हजारों गड़े पड़े हैं। उनका सब कुछ स्मशान पर ही शेष है। उनका स्वरूप बाबा को नजर नहीं आता है, क्योंकि—वे महात्मा लोग तो माया से रहित होकर भगवान् के रूप हो गये थे, किन्तु अन्त में माया के कारण ही उनका अन्त हुआ, यह अनुभव बाबा ने वहां किया और देखा। यही कारण है कि बाबा वहां किसी को आने नहीं देते थे। माया कितनी प्रबल होती है इसका यह प्रत्यक्ष उदाहरण है। दृष्टान्त में देखिये कि---ये महात्मा कितना भजन किये हुए थे---जिसके कारण महापुरुष होकर भजन में ही ईश्वर रूप हो गये थे। किन्तु उन्हें भी माया के कारण गड़ जाना पड़ा। बाबा उन समाधियों पर जाकर उनको नमस्कार करते और विचार करते हुए कहते कि--आप तो ईस्वर रूप होकर माया के चक्कर में पड़कर ऐसी गति को प्राप्त हो गये हैं। इस प्रकार कहते हुए उनके कर्म को प्रणाम करते तथा वहां दीपक रख देते थे।

तस्मै नम: कर्मणे।

जमात के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होने का रहस्य

एक दिन पूज्य बाबा ध्यानमग्न हो जब भजन कर रहे थे उसी समय महात्माओं की एक जमात उधर से जा रही थी। बाबा को देखकर

जमात उनके पास आयी। बाबा ने उन्हें देखकर विचार करके कहा कि--हमारे पास तो आप लोगों की सेवा के लिए कुछ भी नहीं है, आगे काली कमली वाले महाराज मोटी डुगरी पर हैं, सिद्ध पुरुष हैं, उनके सखी-सेवक लोग हैं, वे आप लोगों के खाने का प्रबन्ध कर सत्कार कर सकते हैं। जमात बाबा का संकल्प देखकर वहीं चली गयी। इधर बाबा अपने ध्यान में तल्लीन हो गये। एक सप्ताह के बाद जब बाबा को ख्याल आया कि जमात उधर गई है--लौटकर आयी है कि नहीं ? इतने में देखते हैं कि जमात लौटकर स्मशान के पास रुकी है और उनके महन्त एक पेड़ के नीचे खड़े हैं। उनके सिर पर एक ताज लगा है, अन्तर से ऊपर की ओर ध्यान-सुरता लगी है। ध्यान सुरता के ऊपर एक गोलाकार टंगा हुआ है। जहां महन्त अपनी जमात को बैठने का हुकुम देते प्रसन्न होकर बैठ जाते और वहां महन्त सिर के ऊपर जो सुरता और गोलाकार रहता उसे जमीन पर पटक देते थे। सुरता जमीन पर गिरने से टूट जाता और उसमें से चिनगारियां निकलकर चारों दिशाओं में फैल जाती थीं।

चिनगारियां चारों ओर के प्राणियों के अन्तर में पहुँचकर उनमें महन्त और जमात के प्रति भक्ति उत्पन्न करती थीं। जिससे उनमें सेवा की भावना जागृत होती थी। लोग चारों ओर से वहां पहुँच कर जमात की सेवा और सहायता करते थे। कुछ दिन वहां रहने के बाद जब लोग में जमात के प्रति भक्ति कम होती और जमात के लोगों को कष्ट होता तब महन्त फिर सुरता गोलाकार को जमीन पर से उठा लेते। इसी प्रकार क्रम चलता रहा। चलने के समय में ऊपर का ध्यान लगाकर फिर सुरता और गोला को सिर पर रख लेते तथा आगे चल देते थे। उस जमात में जितने लोग थे उनकी वृत्ति ठीक नहीं थी। वे एकद जानवरों, चीतों, कुत्तों, भेड़ों और बकरियों तथा बघेरों की तरह जीवन-व्यतीत करते थे। इस बात से बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई कि उन्हें एक चीज मिल गई। उन्हें एक शिक्षा मिली कि पुजवाने के लिए लोग नाना प्रकार के आडम्बर रचते हैं।

सम्प्रदाय कैसे बनाते हैं ? और क्यों

श्री बाबा ने एक दिन ध्यान में देखा कि---वे घूमते-घूमते एक गांव में पहुँचे हैं। वहां 'सीताराम-सीताराम' ही चारों ओर हो रहा है। बहुत से लोग रामनामी टीका लगा कर वहां उपस्थित थे। बाबा उस

समय मृगछाला पहने हुए थे। बाबा को देखकर उनमें से एक आदमी ने सोचा कि ये दूसरे सम्प्रदाय के हैं। बाबा ने उसके मनकी बात जान ली और जमीन से ३।४ हाथ ऊपर उठकर चलने लगे, यह देखकर उस आदमी ने सोचा कि ऐसा तो मैं भी कर सकता हूँ। बाबा फिर उसके मन की भावना को समझ गये और जमीन से बहुत ऊँचे होकर चलने लगे तब उस आदमी को मन में सच्चे रूप से समझ पड़ा कि ये बहुत बड़े सन्त हैं।

उसी बस्ती में एक शिव जी का मन्दिर था। वहाँ उनका पूजन करने को बहुत भारी भीड़ लगी थी। मन्दिर में रोज बहुत-सा चढ़ावा आता था। बाबा वहां पहुँच कर एक ओर खड़े हो गये जब वहां भीड़ कम हुई और कोई आदमी नहीं बचा सिर्फ पुजारी ही रह गया तब बाबा मन्दिर के पास पहुँच गये। वहां पुजारी को बाबा ने देखा कि वह खूब मोटा तगड़ा है और मस्तक में रामनामी लम्बा टीका लगाया हुआ है। बाबा वहाँ के दरबाजे पर पहुँचकर विचार करने लगे कि—यहां का भेद कैसे मिलेगा ?

इस प्रकार विचार करते हुए उन्होंने दरबाजे के नीचे की जमीन पर हाथ फेरकर लोगों के चरणों की धूल उठायी। क्योंकि सन्तों के चरण-धूलि में ही सब कुछ होता है। धूल उठाकर और समेट कर बाबा ने सिर पर चढ़ाया, हृदय में लगाया, पलकों में लगाया और प्रणाम करके मन्दिर के भीतर पहुँचे। फाटक से घुसते ही बायें तरफ साधु की पत्थर की दो मूर्तियां देखीं। बाबा ने विचार किया कि कहीं इन्हीं मूर्तियों में पारस न हो जो इतना आकर्षण करती है। ऐसा विचार करके मूर्ति में जीभ और मुंह लगाकर चूमने का विचार-भावना किया कि इसमें जो कुछ होगा मेरे अन्तर में आ जायगा। जैसे ही यह विचार करके चले और पास पहुँचे कि मूर्ति में से आवाज आयी कि—'ठहरो' और मूर्ति साधु के रूप में हो गई। बाबा वहीं बैठ गये। उन साधुओं के हाथ में चीलम आयी और वे चीलम पीने लगे। चीलम पीकर उन लोगों ने बाबा को भी चीलम पीने को दिया। बाबा ने चीलम पीकर उनको वापस कर दिया। वहाँ एक दूसरी मूर्ति भी साधु के रूप में हो गयी थी, पहली मूर्ति वाले साधु ने चीलम दूसरी मूर्तिवाले साधु को दे दी। उसने भी चीलम पी लिया। फिर वह साधु बाबा से बोले कि—बैठो ! प्रसाद लेकर जाना, इस पर बाबा बोले कि—हम बैठेंगे भी नहीं और प्रसाद भी नहीं लेंगे।

हम तो अब यहां से जायँगे। ऐसा कहकर बाबा ने वहां से प्रस्थान किया, परन्तु रास्ता का ख्याल ही भूल गये। वहां का आकर्षण बाबा की आंखों में छा गया। इसी प्रकार जो भी संसारी (गृहस्थ) आदमी वहां पहुँचता है, इसी मोह में अपना सब कुछ भूलकर वहां अर्पण कर देता है। तथा मतिभ्रष्ट हो जाता है। इससे संसारी (गृहस्थ) लोग जो वहां श्रद्धा-भक्ति से आते हैं उनको वहां कुछ भी लाभ नहीं मिलता है। जो भी लाभ होता है उन साधु-सन्तों को होता है। वे लोग खूब खाकर मोटे ताजे हो जाते हैं, तथा दुनियां का ख्याल भुला देते हैं। उनको यह सिद्धि होती है कि मनुष्य देह से वे पत्थर का देह बना लेते हैं। इसका भी भेद बाबा समझ गये।

इतना ही नहीं इस प्रकार के साधु लोग एकान्त में बैठ जाते हैं और दुनियाँ (संसार के लोगों) का ख्याल (विचार) भुला देते हैं तथा दृष्टि (नेत्र) को मन की दृष्टि में रख लेते हैं और बगुला की तरह ध्यान लगा लेते हैं, इस प्रकार धीरे धीरे शरीर पत्थर का हो जाता है। यह स्थिति ऊपर सिर तक हो जाती है तो सुरता ऊपर की ओर लगा लेते हैं। उनके सिर पर एक जोत (ज्योति) लटकी रहती है। जब एकान्त होता है तो फिर इसी विधि से मनुष्य देह बना लेते हैं तथा दृष्टि को मन की दृष्टि में से निकाल कर धीरे-धीरे शरीर को चेतन युक्त बना लेते हैं और ऊपर से ध्यान हटा लेते हैं। इस प्रकार शरीर पत्थर बना कर लोगों से पुजवाते हैं। पुजवाने के बाद शरीर को चेतन बनाकर छानते घोटते—आनन्द मौज करते हैं। इसे ही मिथ्याचार कहा गया है।

बन्दरों और कबूतरों का श्री बाबा द्वारा सत्कार

सूजीराम नाम का एक भक्त था। श्री बाबा ने बन्दरों को डालने के लिए उससे चना मँगाया। बाबा मन में विचार करते कि बन्दर आ जायँ तो उन्हें हलुआ-पूड़ी खिलायी जाय। ऐसा सोचते ही बन्दर वहाँ आ जाते थे। पूजा करके बाबा जब उठें तब चने डाल दिये जाते थे, सब बन्दर बीन बीन कर खाने लगते थे। दिन भर यही क्रम चलता था। बन्दरों को जब बाबा बुलाते थे तब वे आकर बाबा को घेरकर बैठ जाते थे। तब बाबा उनको पूड़ी पकौड़ी देते थे, वे सब बन्दर पूड़ियाँ खाने लगते थे। जब बाबा आज्ञा करते थे तभी वे खाते थे यही विशेषता थी। पूड़ी खाकर सब बन्दर चले जाते थे। उस भक्त को (जो चने

लाता था) बाबा का यह आदेश था कि महीने में १-२ बार बन्दरों को पूड़ी अवश्य खिलावे। मोरों एवं कबूतरों के लिये भी बाबा अपनी कुटी में दाना रखते थे। मोरों को खाना डालकर बाबा पूजा में लग जाते थे। श्री बाबा का प्रतिदिन का यहीं नियम चलता रहा। यह कार्य घाट दरबाजे के श्मशान पर भी होता रहा।

श्री बाबा को श्मशान निवास का आनन्द

रात में श्मशान पर केवल मुर्दे फूंकनेवाले ही आते थे। परन्तु बाबा वहाँ बीच श्मशान में अकेले ही पड़े रहते थे। सुनसान रात्रि में शेर बाघ भी वहाँ आया करते थे। परन्तु बाबा तो तप में लीन होकर ईश्वर रूप ही हो गये थे। कोई जीव उनसे बोलता नहीं था। श्मशान में रात्रि में चारों ओर अग्नि चिताएँ जलती रहती थीं, यह दृश्य बाबा को बहुत अच्छा लगता था। इस प्रकार बाबा ने कई वर्षों तक वहीं पर निवास किया। वहाँ रहते हुए कभी-कभी सेवकों से पूड़ी बनवा कर मंगवा लेते तथा कभी आपड़ की तरफ कभी गलता की ओर बन्दरों को खिलाने चले जाते थे।

गलता स्थान में महात्माओं के बाबा को अनुभव

गलता नामक स्थान में गलता ऋषि का आश्रम था। वहाँ एक ऐसे महात्मा रहते थे जो दाल, चावल और तरकारी एक ही पात्र में एक साथ पकने के लिये डाल देते थे और स्वयं ध्यान में मग्न हो जाते थे। जब खाना बन जाता तो भोजन कर लेते थे और बचा-खुचा चिड़िया-चुनुक को देकर हण्डिया को धोकर रख देते थे और फिर अपने ध्यान में लग जाते थे।

बाबा वहाँ कभी-कभी जाते तो अन्य महात्माओं के भी दर्शन होते थे। ये लोग ईश्वर में लीन रहते थे। आत्म-सन्तोष (भोजन) के लिये इनके पास आ जाता था। उसे पाकर वे भगवान् के काम में लगे रहते थे। श्री बाबा के पास जो सेवक लोग जाते थे उनसे बाबा कह देते थे कि इन महात्माओं की सेवा किया करो। वे लोग भी बाबा के आज्ञा-नुसार सेवा करते थे। बाबा के पास भी जो कुछ रहता उसे उनकी सेवा में दे देते थे। सब लोग उन महात्माओं को बीड़ी, सिगरेट, वगैरह या रुपया पैसा दे आते थे जिससे उनका काम चलता रहे।

गलता की ओर जाते हुए पूज्य बाबा ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक महात्मा ने अपना शरीर शेर को अर्पण कर दिया था। वह महात्मा हमेशा इसलिये दु:खी रहते थे कि मेरा शरीर शेर कब खायगा! एक दिन एक शेर आया और उस साधु के हाथ पाँव तोड़ दिये तथा मार डाला। सेवकों ने जब देखा कि शेर ने महात्मा को मार डाला है, उनका 'शव' बटोर कर वहाँ एक समाधि बनवा दी। श्री बाबा कभी-कभी उनकी समाधि पर जाते थे और विचार करते कि ये साधु कितने महान् थे कि शेर को प्राण अर्पण कर दिये।

गलता के साधु-सन्त उनको पाखण्डी समझने लगे थे, इससे वे (सन्त) दु:खी रहते थे। एक दिन की घटना है—एक दुकान पर दुकानदार नहीं था। गाय आकर उस दुकान की मिठाई खा गयी।

दुकानदार ने उन सन्त पर चोरी का आरोप लगाया। इससे वे सन्त बहुत दु:खी हो गये। इतने दु:खी हुए कि अपना शरीर तक शेर को देने का संकल्प कर दिया। वे ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि -कृपया आप शेर का स्वरूप धारण करके आइये और मेरे प्राण ले लीजिये। ऐसे त्यागी-तपस्वी वे महात्मा थे। अब इधर देखिये—जो गाय मिठाई खा गयी थी, वह गाय वहाँ आयी और सब के सामने उलटी की। उस उलटी में जो लड्डू खा गयी थी वे लड्डू निकल आये। तब क्या था लोगों को विश्वास हुआ कि—यह महात्मा सच्चे सन्त थे। इसी कारण से बाबा वहाँ जाते थे, उस स्थान को प्रणाम करते थे। बावड़ी का पानी आँखों में लगाते तथा वहाँ जो कुछ बनता था चिड़िया-चुनुक को खाने को डाल देते थे। वहाँ पृथ्वी और वायु को साक्षी रखते थे। यह कार्य पूरा करके बाबा अपने स्थान पर लौट आते थे।

कभी कभी बाबा-सूजी और चीनी को घी में, भूनकर पहाड़ों की ओर निकल जाते और जहाँ-जहाँ चीटियाँ और मकोड़े मिलते वहाँ-वहाँ डाल देते थे। बाबा का यही नियम बराबर चलता रहा। इस प्रकार बाबा भगवान् के भजन में तथा साधु-सन्तों के सत्कार में एवं जीव-जन्तुओं की रक्षा में अपना जीवन व्यतीत करते थे। शास्त्रों में यह ठीक ही कहा गया है कि—

परोपकाराय सतां विभूतयः।

सब मन्त्रों का मूल राम नाम (राम, सीताराम का माहात्म्य)

श्री बाबा रामसनेही जी राम-नाम को ही कलियुग में सब मन्त्रों का मूल मानते हैं। उसमें भी इस मन्त्र का कीर्तन तो सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि—'कलौ केवल कीर्तनात्।' सब नाम इसी राम-राम से सिद्ध होते हैं। कहने का तात्पर्य सकाम-निष्काम सभी वृत्तियां सिद्ध होती हैं।

श्री महाराज जी एक बार राम नाम कहते हुए भजन कर रहे थे तब ध्यानावस्था में एक महात्मा को देखा जो कि सीताराम के जप में सिद्ध-हस्त थे। श्री महाराज उनका आदर सत्कार करने के लिये प्रतीक्षा में बैठे रहे, परन्तु उनके आने में देर हो गई, इस कारण पूज्य बाबा जी अग्नि के पूजन में लग गए। तत्पश्चात् पूजन करते समय ही वह महात्मा जी भी आ गये और सीताराम कहा, परन्तु श्री महाराज ने पूजन में व्यस्त होने के कारण कोई उत्तर नहीं दिया। फिर वह महात्मा जी एक वृक्ष के नीचे बैठ गये और पृथ्वी के अन्दर से ही श्री महाराज जी की कुटी में रक्खे हुए फल और भोजन सामग्री को खींच लिया। श्री महराज जी जब पूजन करके उठे और उन्हें भूख लगी तो टोकरी के पास गये जिसमें फल आदि रक्खे थे। उसमें उन्हें वहां कुछ भी नहीं मिला। महाराज जी ने विचार किया कि ये रक्खे हुए फल कहां चले गये। फिर जब बाहर आकर देखा तो क्या देखते हैं कि एक महात्मा (सीताराम-वाले) वृक्ष के नीचे बैठे हैं और वे फल आदि उनके पास रक्खे हुए हैं, और जब बाबा रामसनेही जी ने उनकी ओर देखा तो उन्होंने कहा कि—सभी वस्तुएँ सीताराम की ही हैं। तब श्री बाबा ने पूछा कि—क्या राम और सीताराम अलग-अलग हैं, हम तो एक ही समझते हैं, जो सीताराम हैं वही राम हैं।

श्री महाराज के ऐसा कहते ही वे फल सीताराम वाले महात्मा के पास से श्री बाबा रामसनेही जी की कुटी में पहुँच गये, क्योंकि श्री बाबा की धारणा थी, कोई द्वैतबुद्धि नहीं थी। इसका रहस्य यह है कि जब एक ही राम हैं तो फिर एक ही को धारण करना चाहिये और अलग-अलग सम्प्रदाय और अलग-अलग वेष धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं है—अतः केवल राम नाम ही सब मंत्रों का मूल है। कहा है—

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥
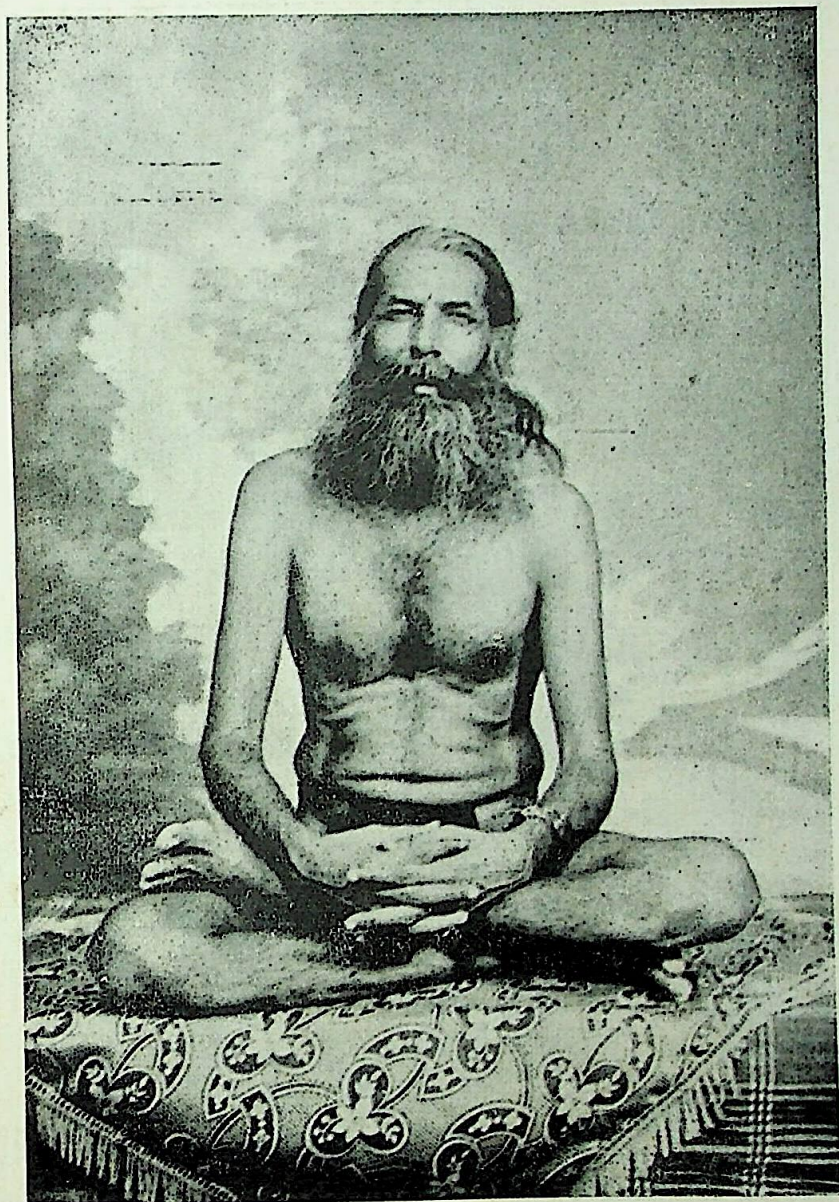
नागपुर में

जयपृर में

श्री बाबा द्वारा इन्द्रियों पर विजय, शक्ति के द्वारा परीक्षा

एक दिन बाबा के पास एक अत्यन्त सुन्दरी लड़की जैसे कि मेम हो वह और उसके साथ में एक साहब आये। बाप-बेटी अंग्रेज थे। साहब वहाँ आकर कुर्सी पर बैठ गया और लड़की घूमती हुई बाबा के पास पहुँची। वहाँ जाकर उनसे कहने लगी कि आप बहुत थक गये होंगे। बाबा ने कहा कि—मैं थका नहीं हूँ! फिर भी वह लड़की आग्रह करने लगी और बैठकर बाबा का पैर दबाने लगी। दबाते-दबाते इन्द्रिय पर हाथ लगा दिया। उस समय बाबा का ध्यान तो ईश्वर में लगा था। उस लड़की का रूप गुलाब की तरह था। बाबा ने उस लड़की से कहा कि—मेरा मन तो चलायमान नहीं हुआ; मैं तो संत हूँ, बाबा की बात सुनकर लड़की शरमा गई।

पश्चात् बाबा ने अपने मन में सोचा कि यह कोई शक्ति है, इसका आदर सत्कार करना चाहिये। बाबा उठकर उसके लिये कुछ लेने गये, जब लेकर लौटे तो देखा कि—साहब उठकर चला गया है और लड़की भी उठकर चली गई है।

बाबा मन में सोचने लगे कि यह कोई शक्ति थी जो मेरी जांच करने आयी थी—मेरी दृढ़ता देखकर चली गयी।

बाबा द्वारा वन्दरों की सन्तुष्टि और उनके आशीर्वाद की प्राप्ति

एक दिन बाबा पूजा और ध्यान से निवृत्त होकर बैठे हुए थे। इतने में एक बन्दर और बन्दरी वहाँ आ गये और दैव संयोग से एक आदमी भी गन्ने लेकर बाबा के पास आ गया। उसने बाबा के चरणों में गन्ने चढ़ा दिये। बाबा ने गन्ने उठा लिये और छील-छील कर बन्दरों को खिलाने लगे। गन्ना बन्दर वड़े चाव से खा रहे थे, उनको मजा आ रहा था। इस प्रकार खिलाते-खिलाते बाबा ने उनको २-३ गन्ने खिला दिये। तब बन्दर आपस में बात करने लगे कि कैसा छील-छील कर खिला रहे हैं, बहुत अच्छा लगता है। बाबा उनकी बात समझ गये कि ये लोग प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे रहे हैं।

पूज्य बाबा की उत्तराखण्ड की यात्रा एवं आत्म-साक्षात्कार

संसार की बहुत-सी बातों का अनुभव करने के पश्चात् बाबा ने उत्तराखण्ड की यात्रा करने का विचार किया। इसी क्रम में जयपुर से दिल्ली प्रस्थान किया। दिल्ली में जमुना के किनारे कुछ समय तक विश्राम करके

बाबा हरिद्वार पहुँचे। वहाँ तीन-दिनों तक घाट किनारे धूनी लगाकर बैठ गये और ध्यान-पूजन करने लगे। वहाँ पृथ्वी, वायु, गंगा जी और अग्नि को साक्षी रखकर भजन करते थे। ३ दिनों के विश्राम के बाद बाबा ऋषिकेश की ओर आगे बढ़े। ऋषिकेश में एक नागा जी के स्थान पर बाबा पहुँचे। वहाँ एक सन्त मिले, उनसे प्रेमपूर्वक मिले पश्चात् गंगा किनारे आकर भजन करने लगे। बाबा कहीं भी खाने की इच्छा नहीं रखते थे। जब कभी भूख लगती तो गंगा किनारे पहुंच-कर छोटे छोटे दाने की तरह कंकड़ बीन कर पानी के साथ ले लेते और आत्म-सन्तोष कर भजन ध्यान में लग जाते थे। भजन के प्रताप से कंकड़ पानी बनकर बह जाता था। ऐसा था बाबा के भजन का प्रभाव। यह चमत्कार ही कहा जायगा कि कंकड़ भी भोज्य बन जाय। भजन के प्रभाव से सब गलकर पानी हो जाता था। कभी कभी बाबा को वहाँ अयाचित भोजन भी मिल जाता था। ऋषिकेश में इस प्रकार बाबा तीन महीने रहे। पश्चात् ऊपर की भूमि में प्रस्थान करके स्वर्गाश्रम के पास एक उदासीन महात्मा की कुटिया में बाबा ने विश्राम किया। वहाँ केवल बेल के ही आधार पर बाबा रहे। रात में जो बेल पेड़ से गिरते थे उन्हें वे बटोर लेते थे। और उसी का आधार लेते थे। स्वर्गाश्रम वालों को जब पता चला कि एक सन्त यहाँ ठहरे हैं तब भण्डारे से बाबा का प्रबन्ध होने लगा। करीब २ महीने वहाँ ठहरने के बाद बाबा ऊपर की ओर बढ़े। बाबा उत्तराखण्ड की ओर लय होने की भावना से बढ़ रहे थे। लक्ष्मण झूले पर पहुँचकर बाबा ने ३ रोज का एक विश्राम घाट पर किया।

वहाँ से चलकर बाबा लक्ष्मण-मन्दिर पर आये, वहाँ भी तीन रोज तक विश्राम किया। पश्चात् उससे आगे २-३ माइल पर सड़क के किनारे एक ब्रह्मचारी जी की कुटी में जो कुछ गिर गयी थी थोड़ी बची थी, वहाँ स्थान देखकर बैठ गये। वहाँ बाबा ध्यान पूजा में मग्न हो गये। ध्यान पूजा में बाबा सब तत्त्वों एवं पहाड़ को साक्षी रखते थे। साथ ही यह विचार करते थे कि मुझे तो लय होना है, आत्मा में किसी प्रकार का कपट तो है नहीं, इससे निर्भय रहता हूँ। यह स्थान बाबा को अच्छा लगा। वहाँ बाबा एक-डेढ़ महीना रहे। वहाँ से जब आगे बढ़े तो बड़े-बड़े पहाड़ देखने में आये। बाबा ने अपने मन में विचार किया कि ये सब मेरे कर्त्तव्य के साक्षी हैं।

ये अमर हैं, इनका स्वरूप अमर है, यहाँ ये जड़ रूप में स्थित हैं। संसार में जितने भी साधु सन्त होते हैं वे जो कुछ कर्म करते हैं, लीन रहते हैं, ये सब कुछ जानते हैं। इन स्थावर पहाड़ों पर कितने ही झाड़ वृक्ष हैं, कितने ही जीव-जन्तु इन पर आश्रय लेते हैं, परन्तु ये जड़ बनकर सोये हैं। मन में ऐसा विचार हुआ कि ये कोई सन्त हैं, यह सोचकर बाबा उन्हें प्रणाम करते, चूमते, चाटते, जीभ लगाते, आधीनता स्वीकार करते आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में जो भी सन्तों की कुटिया-आश्रम मिलते उनकी भी महत्ता स्वीकार करते और प्रणाम करते विश्राम लेते आगे बढ़ रहे थे। मन में बाबा यह सोचते थे कि—ये महात्मा लोग कितने सत् रूप से भजन करके इन आश्रमों को बनाये हैं और ईश्वर का भजन करते-करते उन्हीं में लीन हो गये हैं।

इस प्रकार कुछ समय बाबा विश्राम करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में जो भी चीजें मिलतीं—जैसे भी पत्थर लाल, पीले, हरे या काले मिलते उनको उठाकर प्रेम से जीभ लगाते तथा आँखों के द्वारा देखकर यह सोचते कि इनमें जो गुण हैं वे मेरे अन्दर में आ जायँ। रास्ते में जो पुराने-पुराने झाड़ मिलते थे उनको प्रणाम करते तथा यह सोचते कि यहाँ से कितने ही सन्त योगी गुजरे होंगे। ईश्वर रूप में उनकी महिमा को देखते गुणगान करते आगे बढ़ते चले जा रहे थे। रास्ते में आत्मा को निर्मल बनाते चलते रहने की लगन लगी रहती थी। इस प्रकार बाबा देवप्रयाग पहुँचकर वहाँ बालगंगा में उतर गये। वहाँ पानी में बैठकर भजन करने लगे। कुछ दिनों तक बाबा वहीं ठहरे और निर्वाह के लिये तीनपतिया घास खाकर ही रहने लगे। खाने का प्रबन्ध रास्ते में कुछ न कुछ होता ही रहता था। जहाँ भी बाबा जाते थे उनका दिव्य रूप देखकर लोगों को श्रद्धा हो ही जाती थी, और सब प्रबन्ध हो जाता था।

इसी प्रकार बाबा वहाँ कुछ दिन रुककर आगे उत्तर-काशी की ओर बढ़े। वहाँ पहुँचकर बाबा अपने कर्म में लगे रहे तथा आगे भी बढ़ते गये। अब बाबा कर्णप्रयाग पहुँचे जहाँ मुक्तिनारायण का रास्ता आकर मिलता है, वहां से बाबा पातालगङ्गा पहुँच गये। दो तीन दिन वहां रहे। दो दिन तक तो कुछ खाना नहीं मिला तीसरे दिन पातालगङ्गा से खाना मिला। जब बाबा ने उत्तराखण्ड की यात्रा प्रारम्भ की थी

तब विचार किया था कि--पहले जो साधु सन्त इस ओर आते थे वे किस आधार पर आते थे ? वे क्या खाते थे ? इस प्रकार बाबा सोचने लगे। यदि वे लय होने को जाते थे तो किस विचार से जाते थे। इन सब विषयों पर बाबा ने विचार किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि—कुछ लोग मछली का सहारा लेकर जाते थे, कुछ लोग पत्तियों का आधार लेकर और कुछ गांव-गांव में भिक्षा करके जाते थे। तथा कुछ लोग जानवरों का रूप धरकर और जीव खाकर जाते और फिर अपने रूप में आ जाते थे। यह सब अनुभव करने के पश्चात् बाबा की जिज्ञासा शान्त हुई। इस प्रकार अनुभव करते हुए, रास्ता में आगे बढ़ते हुए बाबा बद्रिकाश्रम पहुँचे। वहां सब से अधिक रहने की समस्या हुई। कोई रहने का उपयुक्त स्थान नहीं दिखा, एकमात्र टीन का छप्पर दिखा जिसमें भेड़ें रहती थीं। टीन पर बरफ गिरा था, अतः टीन से पानी टपक रहा था। उसी के नीचे जाकर बाबा बैठ गये, बाबा वस्त्रहीन थे। वहां जो भेड़ बकरियों की लेंड़ियां पड़ीं थीं उन्हें बटोरकर आग जला लीं। फिर बाबा मन में यह विचार नदी किनारे बैठे हुए कर रहे थे कि—अब इसके आगे देखना चाहिए। मन में यह भी सोचने लगे कि इतना कष्ट उठाकर इतनी दूर आये हैं, यहां आने में क्या लाभ हुआ ? इस प्रकार विचार करते हुए इधर-उधर निश्वास छोड़ने लगे। तब जिधर बैठे थे उस तरफ के पहाड़ से बद्री की तरफ जो पहाड़ था वह पूछने लगा कि ये क़हां से आ रहे हैं ? इधर का पहाड़ बोला कि—ये महात्मा जयपुर से आ रहे हैं। तब बद्री की तरफ वाला पहाड़ बोला कि ये चण्डी रूप हैं। बाबा को वहां हड्डी देखने में आयी, वहां बाबा समझ गये कि यहां हमें चण्डी के रूप की पदवी मिली है। बाबा को कुछ दुःख हुआ, और मन में विचार हुआ कि--आगे जाकर देखा जाय, वहां बाबा को एक आम का पेड़ नजर आया। उसमें फल नहीं लगे थे। बाबा ने सोचा कि आगे जाने में कोई फल तो है नहीं सो आगे जाने से क्या फायदा ? इस प्रकार बाबा का विचार बदल गया। अब बाबा का यह विचार होने लगा कि—जब आगे जाने में कोई फल ही नहीं है तो फिर आगे क्यों जायँ, एक बार फिर संसार में लौटकर देखें। लौटते समय बाबा ने यह विचार किया कि जिस रास्ते से आये थे उस रास्ते से नहीं लौटना चाहिये। तब बाबा दूसरे रास्ते से लौटे। रास्ता में यही विचार करते थे कि महाराज ! अब हम लौट रहे हैं। आँख में इस लिए लगाते हैं कि मानसिक

पाप कभी न हो, नाक में इस लिये लगाते हैं कि हम से जो अपराध हो गया हो वह माफ हो। जीभ लगाते थे कि वाणी अमृत हो जायं। सिर में लगाते थे कि मस्तक में पारस ऐसा प्रकाश हो जाय। हृदय में इसलिये लगाते कि—इतना विशाल रूप है, हाथ जमीन में इस भावना से लगाते कि हाथ सिद्ध हो जायँ। जब हथेली जमीन में प्रणाम करने के लिये हथेली उठाते उस जगह चरणों का आकार बन जाता था। इस प्रकार बाबा सब जीव-जन्तुओं, पहाड़ों एवं वृक्षों की महानता-विशालता को प्रणाम करते, चूमते, आधीनता स्वीकार करते लौट रहे थे। बाबा इस प्रकार नैनीताल की तरफ पहुँच गये। रास्ते में बाबा ने अपने मन में सोचा कि इतने बड़े-बड़े पहाड़ों को चूमते, प्रणाम करते उनकी आधीनता को स्वीकार किया है, इनका क्या महत्त्व है? इतने बड़े-बड़े पहाड़ हैं उन पर आदमी नहीं रहते हैं, एकान्त में पड़े रहते हैं, राज करते हैं, मैंने जो उनकी आधीनता स्वीकार की सो मुझे क्या लाभ हुआ? तब बाबा ने देखा कि जब दोनों हाथ जमीन पर रखकर प्रणाम किया और उठे तो देखा कि एक बच्चे के रूप में सामने एक मूर्ति खड़ी है, उसको ताज लगा है। बाबा ने उसका ख्याल नहीं किया और उठकर चले गये, फिर दूसरी जगह पहाड़ को प्रणाम किया तो फिर वही रूप देखा। और आगे भी जहां कहीं बाबा प्रणाम करते तो वही रूप सामने आता और अन्तर्धान हो जाता। एक दिन बाबा को ख्याल आया कि जब पहाड़ों को हम प्रणाम करते हैं तो यह वही रूप सामने आता है, यदि यह अलग-अलग पहाड़ों का रूप होता तो अलग-अलग स्वरूप होता, किन्तु यह तो एक ही रूप बार-बार सामने आता है। यह देखना चाहिये कि यह कौन है? और कहां चला जाता है?

वैसे ही एक दिन बाबा ने पहाड़ को जब प्रणाम किया तो वही रूप फिर सामने आया और जब उठे तो वह रूप बाबा के बायीं ओर जाकर बाबा में प्रवेश कर गया। फिर जब प्रणाम करते तो वह रूप सामने आता और फिर प्रवेश कर जाता। इस प्रकार बाबा ने अनेक बार अनुभव किया।

इस अनुभव से बाबा को विश्वास हो गया कि भगवान् परम प्रभु हमारे अन्दर ही हैं। अबतक जो जप, ध्यान, नाम लिया है उसी के प्रभाव से। भगवान् अन्दर ही हैं, ऐसा विश्वास बाबा को है यह प्रगट हो गया।

'यही आत्मा से प्रत्यक्ष बात करना है।' यह चीज किसी विरले ही महात्मा को मिलती है। ऐसा घोर तप करने, जङ्गल में भ्रमण करने, तथा ऐसा ही प्रेम, भाव, और विचार रखने से ही यह रूप प्रगट होता है। यह आत्म-साक्षात्कार बाबा ने उत्तराखण्ड की यात्रा में प्राप्त किया।

वृक्षों की पूर्व कथा और उनकी उपकार दृष्टि

श्री बाबाने उत्तराखण्ड की यात्रा समाप्त कर काठगोदाम होते हुए मुरादाबाद के पास श्री रामगंगा के तट पर (जिसे परशुराम जी ने पृथ्वी पर शोभित किया था। कुछ दिनों तक विश्राम किया।

बाबा का झाड़ों-वृक्षों से बहुत-प्रेम था। जहाँ कहीं भी जाते वहाँ पुराने पुराने झाड़ों को खोजते, जितने पुराने झाड़ मिलते उनसे अधिक प्रेम करते थे। इस विषय में उनकी यह भावना रहती थी कि जब से कलियुग आया है तब से महात्मा संत लोग संकल्प करके वृक्षों का रूप ले लिये हैं, क्योंकि कलियुग में लोग उन्हें ज्यादा सतायँगे। आम, जामुन, ऊमर, महुआ, बड़, पीपल आदि जितने भी फल देने वाले वृक्ष थे, वे सब पूर्व जन्म में महात्मा ही थे। संत लोगों ने ही वनस्पति का रूप धारण कर लिया है। जहाँ उनलोगों ने संकल्प किया वहीं जड़ बनकर स्थान लेकर बैठ गये हैं। तथा समय-समय पर फल देकर जीवों जन्तुओं, कीड़ों, मकोड़ों, चिड़ियों एवम् चुनुगों को सन्तुष्ट करते हैं। वे भी सन्तोष को प्राप्त कर प्रसन्न हो जाते हैं। यद्यपि ये वृक्ष-झाड़ आदि जड़ रूप में रहते हैं परन्तु वे वहाँ का सब हाल जानते हैं। वहाँ कैसे-कैसे लोग रहते हैं और रह चुके हैं इसका पूरा ज्ञान उन्हें रहता है। यहाँ तक कि उस बस्ती के सब हाल समाचार के वे ज्ञाता होते हैं, सब पर उनका निरीक्षण रहता है। श्री बाबा का स्वभाव भी वैसा ही था, इस उपकारमय भावना को कोई मनुष्य जानता समझता नहीं था। उनका उपकार देखकर उनसे प्रेम करता था। जो कोई उन्हें श्रद्धा और विश्वास से उनको प्रणाम करता उनकी आत्मा एकाकार हो जाती है। वे समझ जाते हैं कि मेरे रूप और कर्मों को यही जानता है, उस पर बाबा प्रसन्न हो जाते थे। इस प्रकार की भावना से बाबा कर्त्तव्य में लगे रहते थे। सब की आधीनता स्वीकार करते थे। बाबा हर पुराने पेड़ों को खोज-खोज कर आशीर्वाद लेते रहते थे तथा भ्रमण करते रहते थे।

रामगंगा के तट पर बाबा का निवास, वहाँ दुष्टों का उपद्रव

श्री बाबा रामगंगा के किनारे एक स्थान पर धूनी रमाये बैठे थे। साथ ही यह विचार कर रहे थे कि संतों के मुख से मैंने यह सुना है कि—श्री परशुराम जी ने ही इस रामगंगा को यहाँ लाया है'। यह जानकर बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई कि एक सन्त ने बहुत परोपकार का काम किया है। संसार के लोगों के लिए अपने स्वार्थ को तिलांजलि दे दी है। आगे बाबा विचार करने लगे कि—कितनी ही नदियों और नालों का जल इसमें मिलता है। कितने ही झाड़—वृक्षों को पोछता हुआ यह जल आता है। कितने ही जीव-जन्तु, गाय-बछड़े, शेर बाघ, हिरण, चिड़ियाँ, चुनुग पानी पीते हैं। कितने ही लोग इसके पानी से खेती करते हैं, कितनों का उपकार होता है यह कहा नहीं जा सकता। इसमें कितने घाट बने हैं, इन घाटों पर कितने ही मनुष्य, जती, सती, महात्मा लोग स्नान करते हैं तथा उसके तट पर बैठ कर भजन करते हैं। यह सब परोपकार का कार्य देखकर बाबा को बहुत प्रेम हो गया। इस प्रकार उनके उपकार को ध्यान में रखकर जल को नेत्रों में लगाते थे तथा उससे निवृत्त होने पर भजन-पूजन में लग जाते थे।

इस प्रकार बाबा वहाँ ध्यानमग्न रहते थे। बाबा का यह कार्य कुछ बदमाशों को पसन्द नहीं था। वे वहाँ आकर उपद्रव करते तथा बाबा को तंग भी करते थे। घाट पर जो पुजारी था वह भी बाबा को हटाने की ही कोशिश में लगा रहता था। उसे यह सन्देह था कि ये हमारे स्थान पर कब्जा कर लेंगे। बहुत लोग दर्शन करने आते थे, बहुत भीड़ होती थी। इन बातों से जलकर बाबा को अनेक प्रकार से दु:ख देने लगा कि बाबा यहाँ से जल्दी चला जाय। बाबा की कुछ दिन वहाँ और ठहरने की इच्छा थी। सोचते यह थे कि—यहाँ पानी का किराना है, जगह अच्छो है। आत्मा भर जाती तब चले जाते, ऐसी बाबा की इच्छा थी।

परन्तु वहाँ के लोग बाबा को बहुत परेशान करते थे। एक दिन बाबा क्रोध में आ गये और ऐसा संकल्प किया कि—यहाँ पर ये सब दुष्ट हैं, इनको सजा मिलनी चाहिए। बस क्या था मन में हुआ कि—यह जो बाँध है उसे तोड़कर सब बहा दो! बाबा ने जैसा संकल्प किया तत्काल वैसा हो गया।

वृथा न होंहि देव-ऋषि वाणी।

श्री बाबा की नैमिषारण्य—यात्रा

मुरादाबाद की रामगंगा से प्रस्थान कर बाबा नैमिषारण्य की ओर चल पड़े। २-३ दिनों के पश्चात् नैमिषारण्य पहुँच गये। वहाँ बाबा ने दो कुण्ड और शंकर जी का एक स्थान देखा। वहीं पास में एकान्त देखकर बाबा बैठ गये। कुछ काल के बाद एक आदमी आया, उससे थोड़ी लकड़ी मँगा कर और धूनी रमा कर वहीं भजन ध्यान करने लगे। दूसरे दिन वहां एक आदमी शंकर जी की पूजा करने आया और बाबा को कुछ प्रसाद दे गया। बाबा उस प्रसाद को ग्रहण कर उसी से आत्म-सन्तोष प्राप्त करके फिर भजन ध्यान में लग गये। तीसरे दिन बाबा मन में विचार करने लगे कि हमें यहाँ आये ३ दिन हो गये, परन्तु यहां का कुछ पता नहीं लगा। तब अदृश्य रूप से आवाज आयी कि कुण्ड में जाकर स्नान कर लीजिये यही यहां सब कुछ है। यह सुनकर बाबा ने बड़े प्रेम से कुण्ड में जाकर स्नान किया और जब वापस धूनी पर आये तो वहां एक ब्राह्मण आया और बड़े प्रेम से बाबा को घर चलकर प्रसाद ग्रहण करने का आग्रह करने लगा। बाबा ने उसकी श्रद्धा-प्रेम को देखकर उसके घर जाकर प्रसाद ग्रहण किया। प्रसाद ग्रहण करने के बाद वहां से दक्षिण की तरफ कुछ दूरी पर एक कुण्ड और है उसके पास एक पुराना वट का वृक्ष है जो कि सिद्ध-स्थान माना जाता है वहां बाबा पहुँचे। वह वट वृक्ष बहुत पुराने जमाने का था। बाबा उस पेड़ को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उनको प्रणाम कर वहीं बैठ गये। वहां बाबा विचार करने लगे कि इन्हीं की वजह से यह स्थान सिद्ध है। कलियुग के प्रारम्भ में कोई पुराने सन्त हो गये हैं, उन्हीं का यह कुण्ड बनाया हुआ होगा। उन्हीं महात्मा के प्रकाश में यह स्थान सिद्ध है। बाबा ने उसी पेड़ के नीचे स्थान ग्रहण किया और धूनी को लगा दिया। बाबा उस सिद्धपीठ में तीन दिनों तक रुके। तीसरे दिन उनको प्रणाम किया, चूमा तथा जीभ लगाया। इस यात्रा के पश्चात् बाबा अज्ञातवास में रहे जिसका विवरण उपलब्ध नहीं है। कुछ वर्षों के बाद प्रयाग के महाकुम्भ से उनकी नेपाल की यात्रा प्रारम्भ होती है, जिसका विवरण इसी ग्रन्थ में अन्यत्र दिया गया है।

—❀—

महर्षि के अनुभव

दूषित अन्न का प्रभाव

इस प्रकरण में एक देवी से वरदान प्राप्त होने पर बाबा रामसनेही जी के श्री भगवान् के पास सहज एवम् सुलभ उपाय से जाने का वर्णन किया गया है।

एक समय किसी का ऐसा कदन्न श्री महाराज ने खा लिया, जिससे मन, बुद्धि, और इन्द्रियाँ सब भ्रष्ट होकर चित्त चलायमान हो गया, मन घबड़ा गया और इन्द्रिय की व्याकुलता में रात भर रहे क्योंकि ईश्वर में सुरता लगी थी। उस समय उनका बारह वर्ष का योग साधन था। इस प्रकार जब प्रातः काल हुआ तो एक देवी प्रगट हुई जिसका रूप साँवला था। वह नग्न थी। वह बोली कि आप का ध्यान किधर है। तब श्री महाराजने कहा कि मेरा ध्यान संसार की ओर जा रहा है, ख्याल भोगेन्द्रियों की ओर दौड़ रहा है। देवी ने कहा कि जिधर आप का ध्यान जा रहा है वे बहुत गन्दी वस्तुएँ हैं और आप का जोग चला जायगा, उधर ध्यान मत रखो। ऐसी धारणा करो कि जब मन स्त्री की ओर जाय तब मन के द्वारा उसकी जननेन्द्रिय में बालक रूप होकर बैठ जाओ, ऐसा करने से उस स्त्री के प्रति माता का भाव हो जायगा और मन शांत हो जायगा। अगर ऐसा ही अपना ध्यान बालक बन कर रखोगे तो भगवान् के यहां शीघ्र पहुँच जाओगे। इतनी बात सुनकर बाबा को सत् भावना हो गई और बोले कि हम इसी प्रकार ईश्वर के यहां चले जायँगे। इसके बाद ईश्वर में सदैव ध्यान रखने की प्रकृति बना ली। दूषित अन्न खाने से कैसी गति हुई! इस कारण खाने पीने के अन्न का अवश्य विचार रखे कि शुद्ध अन्न हो, शुद्ध कमाई हो।

दूषित अन्न के प्रभाव से मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ सब भ्रष्ट हो गईं, फिर दुःखी होकर सत् भावना हुई, उससे भगवान् का रास्ता मिला और भगवान् के यहां पहुँच गये। श्री बाबा कहते हैं कि यह साक्षात्कारी है।

कोई भी मनुष्य इस प्रकार के आचरण के द्वारा ऐसी दृष्टि, ध्यान बना ले तो वह भगवान् के यहां जा सकता है।

देव-प्राप्ति

एक बार बाबा राम-राम का स्मरण करते हुए निराधार होकर किसी अन्यलोक की ओर निकल पड़े। वे हर समय स्मरण की बेहोशी में रहते थे वहां किसी स्कूल के लड़के एक स्थान पर खेलते थे। उनको खेलते देखकर बाबा भी एक लड़के का रूप धारण कर खेलने लगे, इतने में वे देखते हैं कि एक साधु रूप चला आ रहा है, टाट का कपड़ा पहने हुए है, टाटम्बरी है। वह एक शंकर जी के मन्दिर में घुसा, जब वह शंकर जी के मन्दिर से निकल कर चलने लगा तो पुजारी ने रात भर मंदिर में टिकने की प्रार्थना की। तब वह महात्मा लौट कर उसी मंदिर में चला गया और थोड़ी देर बाद एक देवी का रूप बनाकर, पीला कपड़ा पहन कर शृंगार करके उस मंदिर से निकला और साक्षात् लक्ष्मी जैसा प्रतीत हुआ। बाबा वहीं लड़कों के साथ खेल रहे थे। परन्तु उनका ध्यान इधर ही था। वे विचार करने लगे कि—देखो, अभी यह साधु था, इस मन्दिर में जाने से स्त्री बन गया। इसका चरित्र देखना चाहिये कि यह कहां जाता है।

फिर देखा कि एक मन्दिर रामदेव जी का है। उसमें एक स्त्री पुजारी का काम करती थी। वहाँ पर यह देवी भी जाकर दरवाजे पर बैठ गई। उस समय तीन मनुष्य उस मन्दिर में दर्शन करने को आये तो वह देवी अपना कुछ चमत्कार उन मनुष्यों को दिखाने लगी। ऊपर से जब पञ्जा नीचे को उठा कर किया तो उसके हाथ के नीचे एक बकरी का बच्चा बन गया, इस प्रकार तीन बार हाथ ऊपर से नीचे किया और तीन बच्चे बन गये। उन बच्चों को देखकर वे दर्शन करने वाले तीनों मनुष्य बोलने लगे कि क्या यह सत्य है? बाबा ने भी कहा कि—सत्य ही है, उनका भी मन चला कि इस देवी से हम भी वर माँगेंगे, क्योंकि हम जङ्गल पहाड़ चलते-चलते थक जाते हैं, हम भी सहायता के लिये एक देव मागेंगे। इतने में देवी उस मन्दिर से उठी और बाबा की ओर चली। श्रीमहाराज भी उसे देखकर बच्चा रूप त्याग कर सन्त रूप बन गये और सामने खड़े हो गये जब देवी पास आ गई बाबा ने उसको प्रणाम किया।

चरणों पर माथा रखा, मुँह, नेत्र लगा कर चूमा, चूमते ही उस देवी को दया उत्पन्न हो गई, और दया होते ही बोली कि—आप को क्या

चाहिये। बाबा ने उत्तर दिया कि—उन्हें किसी चीज की इच्छा नहीं है है, और वे सदैव ईश्वर के ध्यान में रहते हैं। परन्तु जङ्गल पहाड़ में निराधार चलते-चलते जब हम थक जाते हैं तो यथास्थान पहुँचाने को एक देव की आवश्यकता होती है। ऐसा देव चाहते हैं। देवी ने उत्तर दिया कि—जैसा तुमने मांगा वैसा मिलेगा। बाबा यह देखने लगे कि देखें—यह कहां से देती है। वह द्वेवी एक दीवाल से सट गई, सट कर अपने शरीर की जो छाया थी उसी छाया में बुद-बुद कुछ बात की, वह देवी जब उस दीवाल से हटी तो उसकी छाया में से एक देव प्रगट हो गया और बोला 'आज्ञा'—देवी ने आज्ञा दी, महाराज जहां पहुँचाने को कहें वहाँ उनको पहुँचा दो। इतना कहकर वह देवी जब घूमी तो महाराज की दृष्टि उस पर पड़ी तो देखा कि वह स्त्री बहुत सुन्दरी और उसके गले में पत्थरों की मुण्डमाला पड़ी थी। वह मुण्डमाला बहुत सुन्दर लगती थी, क्योंकि उसके चेहरे सब अच्छे बने हुए थे। इसके पश्चात् देवी जंगल में चली गई। वह देव महाराज से आज्ञा मांगने लगा कि ज़हां आप चलें पहुंचा दें, महाराज ने कहा कि—अभी हम थके नहीं हैं, जब थक जायेंगे तब स्मरण करेंगे—उस समय गन्तव्य स्थान को पहुँचा देना। देव अदृश्य हो गया, देखो, कितने परिश्रम से इस चरित्र के अनुभव को श्री महराज जान सके।

ऐसी प्रतीत होता है कि अपनी परछाँई में ही अपना देव रहता है। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि जो उसका देव है उसकी परछाँई में ही है। क्या देवी क्या देवता क्या मनुष्य सबको अपनी छाया की साव-धानी रखनी चाहिये और उस छाया से जानना चाहिए कि शरीर मिट जाता है। यही छाया पवित्र देव है, और सबके पास रहती है।

श्री बाबा रामस्नेही जी कर्मयोगी हैं वे बालक बन गये और जो टाटंबरी सन्त आये थे, उनकी भी त्यांग वृत्ति थी, वह भी कर्मयोगी था। अपने कर्म से वह मंदिर में गया, पुजारी ले गया और एक दिन रखा। फिर कर्मयोग से ही स्त्री बन गया, माया का रूप बन गया, फिर स्त्री वहां पहुँची जहां रामदेव जी का मंदिर था, और जो स्त्री रामदेव की पूजा करती थी वह वहां आकर बैठ गई। उस माया ने जब ऊपर से नीचे को हाथ किया बकरी के तीन बच्चे बन गये, माया का रूप बताया। और जो मनुष्य दर्शन करने आये, वे ३ गुण सत् रज और तम थे। बकरी के तीन बच्चे उनके ही तीन भाव थे और उस

माया के उस कर्म को यानी वे बच्चे जो भाव द्वारा उत्पन्न हुए थे उन तीनों गुणों ने भी सत्य कहा और बाबा जी ने भी जो लड़कों के साथ खेलते थे सत् ही कहा। जब बाबा ने उस देवी को प्रणाम किया, सत् चरण चूमा, सत्य ही नम्रता की तब देवी ने महाराज को निराकार, निराधार और निष्काम देखा परंतु इच्छा जब उनकी देखी तो देवी को दया आ गयी और उसकी परछाँई से उसके कर्मयोग से देव निकल पड़ा क्योंकि कर्मजोग में परछांई में जो देव रहता है, सहायता को रहता है, जहां तहां काम देता है, सहायता करता रहता है, गुप्त प्रगट करता रहता है। यह योग की चीज है। कोई जोगी ही इसको समझ सकता है। यह साक्षात्कारी है, मनुष्य देख सकता है।

मानसिक सहायता

एक समय बाबा मृगछाला पहने हुए ईश्वर में सुरता तथा अन्तः-करण में उनका ख्याल रखते हुए खड़े थे। उसी समय वहां एक मनुष्य घमण्ड में आकर खड़ा हो गया। वह भी रामभक्त था, वह बाबा को गर्व तथा क्रोध से अपना रूप बतलाने लगा। बाबा ध्यान में लगे थे उसी अवस्था में कठपुतली की तरह नाचने कूदने लगे। नाचते समय बाबा को एक हाथी दिखाई दिया जिसके सात हाथ लम्बे पैर थे, बच्चा शरीर था। पहला शरीर रूप सा हाथी मानसिक रूप में दिखाई पड़ा। बाबा ने नाचते-नाचते उसकी सूंड़ पकड़ ली। जब वे सूंड़ पकड़कर नाचने लगे तब हाथी की लम्बाई और ऊँचाई भी बढ़ने लगी, क्योंकि वह हवा का मानसिक हाथी था। वह सूँड़ बढ़ाने लगा बाबा उसे हाथ में लपेटने लगे। फिर नाचते-नाचते संसार का ध्यान किया कि कोई देखता है या नहीं (कोई नहीं देखता था)। बाबा जब नाचते-नाचते तथा सूँड़ लपेटते-लपेटते थक गये तब कहीं बैठने की इच्छा उन्होंने व्यक्त की। एक दूकान की सीढ़ी पर जाकर बैठ गये, दूकान वालों ने कुछ ख्याल नहीं किया। बाबा ईश्वर के ख्याल में नाचने लगे और उसमें उनका जोग सिद्ध है। मन में विचार किया कि जोगी पुरुष को मानसिक सहारा श्रेष्ठ होता है, यही कारण है कि उनको मानसिक चीजें हर स्थान पर तैयार मिलती हैं। यह उत्तम जोग कहा गया है। बाबा अपने गुण को देखकर दूसरों के गुण को भी समझने लगे।

कोई साधु तिलक लगाता है, पूजन करता है, झूठी नकलें करता है तो अपने को उसी में सिद्ध समझता है। कोई भागवत कथा कहता है, भगवान् का सत् प्रचार करता है, इसी में अपने को सिद्ध मानता है। कोई बैठ कर माला फेरता है तो वह भी अपने को सिद्ध समझता है। कोई पूजा, हवन करता है, वेदमंत्र पढ़ता है वह अपने को उसी में सिद्ध समझता है। कोई स्नान भी नहीं करता, मलिन रहता है, हड्डी बटोरता है अपने को अघोरी कहता है वह भी अपने को सिद्ध समझता है। कोई गुरु करके चेला बन जाता है तो वह भी अपने को सिद्ध समझता है। कोई कण्ठी बाँध लेता है और कोई केवल दिखाने को तिलक लगा लेता है वह भी अपने को सिद्ध समझता है। कोई कपड़ा रंगा लेता है, सिर मुँडा लेता है, गप्प हाँकता है, वह भी अपने को सिद्ध समझता है। कोई प्रातः सायं नहाता है, नहाने धोने से और पवित्र विचार रखने से वह भी अपने को सिद्ध समझता है। इस प्रकार साधु संत जितने हैं सब अपने अपने अभिमान में सिद्ध बने घूमते हैं। वहाँ कोई मानसिक सहारा पवित्र नहीं मिलता है। इससे संसारी मनुष्य भी सिद्ध मालूम होते हैं। क्योंकि जो अपना व्यापार करते हैं वे व्यापार में ही सिद्ध होते हैं। कोई दूकान करता है तो उसकी सुरता उसी में लगी रहती है और उसको अपने काम के सिवाय दूसरा कुछ नहीं सूझता है। वह भी सिद्ध होता है। कोई धनवाला धन में और नौकर चाकर वाला नौकरी-चाकरी में सिद्ध है। कहाँ तक कहा जाय सभी लोग अपने कार्य में सिद्ध हैं।

बाबा कहते है कि ऐसे कौन सिद्ध हैं जो दिखाई नहीं पड़ते हैं? संसार भी अपने कर्त्तव्य में सिद्ध अवश्य है। यहाँ तक कि, झाड़, वृक्ष, पृथ्वी, कीड़े, मकोड़े, जल, सूर्य, चन्द्रमा आकाश, पहाड़ आदि संसार की समस्त वस्तुएँ जो दिखाई देती हैं, सिद्ध हैं, इन सब सिद्धियों को ज्ञानदृष्टि से देख कर अपने अंदर के तत्त्वों को विचार करके अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश जो हमारे शरीर में हैं, और यह शरीर पंचायती धर्मशाला है, इनको गुरु समझ कर, आधीन होकर इनके अनुकूल बन कर जो ऐसा समझता है और राम-राम के नाम का सुमिरन दिन रात करता रहता है, जब नाम सिद्ध होता है तो नाम छूट जाता है। तब केवल सुरता व यादगारी रहती है, केवल रूप रह जाता है। तब उसका मन ईश्वर में मस्त रहता है, ईश्वर में ही रीझता है, वही खोलता है, उसको वही अच्छा लगता है, संसार में और कुछ नहीं अच्छा लगता

है। ऐसे पुरुषों के पास मानसिक वस्तुएँ हर जगह हर समय रक्षा में रहती हैं। बाबा का कहना है कि यह ऊंची श्रेणी के सिद्ध पुरुष का जोग है। यह साक्षात्कारी है। समय पर अपने हृदय में अनुभव करते रहो।

बिना सद्भावना के कुछ भी फलदायक नहीं होता है

किसी भी कार्य के पूर्ण होने में उसके प्रति सद्भावना का होना नितान्त आवश्यक है। सद्भावना का तात्पर्य उस वस्तु के प्रति निष्ठा से है। गंगा जी के माहात्म्य की चर्चा ही यहाँ ध्यान विचार से सम्बन्धित है।

हिमालय के गंगोत्तरी नामक स्थान से निकला हुआ यह पवित्र जल; कैलास तथा आस-पास के स्थानों को धोकर आया हुआ जल, मुक्तेश्वर से पर्वतों को धोता हुआ, ब्रद्री की ओर से पहाड़ों का चरणामृत लेता हुआ, पाताल गंगा की ओर से बहकर आया हुआ पवित्र एवम् नौ लाख पर्वतों को को धोकर आनेवाला जल, सिद्ध स्थानों से बहता हुआ, बड़े-बड़े एवं पुराने-पुराने झाड़ वृक्षों को धोया हुआ, कितने ही चट्टानों, पत्थरों को मथता हुआ, जती-सती के चरणों को धोता हुआ, कितने ही जीव-जन्तुओं को तृप्त करता हुआ जल। चरणामृत को बटोरती हुई, रत्नों को मथन करती हुई, एकरस होकर बहने वाली गंगा, आप कितनों का उपकार करती है, कितने ही जीवों का आपके तट पर पालन होता है।

इस प्रकार लम्बा विचार कर एवं भावना बनाकर प्रेमपूर्वक स्नान करने से फल मिलता है।

गंगा-स्नान का बहुत ही महत्त्व है, किन्तु उसमें आवश्यकता है विचार और भावना की। बिना सद्भावना प्रेम के स्नान करना कुछ भी फलदायक नहीं होता है। लोगों की यह आम धारणा है कि गंगा स्नान से पाप कटता है, किन्तु यह अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि विना विचार, भावना और प्रेम के कुछ भी फलदायक नहीं होता है। इस बात का श्री बाबा ने साक्षात्कार करके अनुभव किया है।

आधीनता स्वीकार करने से सब कुछ मिलता है

सज्जनों के सत्संग मण्डल में श्री बाबा ने एक दिन प्रसंगवश कहा कि—एक बार तपस्या करने के निमित्त जंगलों-पहाड़ों में विचरण करते समय मैंने अनेक सम्प्रदायों को देखा। सम्प्रदाय के महन्त ऊंचे आसन पर छत्र धारण करके बैठे हैं, श्री बाबा के मन में उनको देखने की

इच्छा हुई। बाबा यदि वहाँ साधारण लोगों की तरह जाते तो वे लोग उनसे कुछ पूछते ही नहीं। इसलिये बाबा उड़कर वहाँ पहुँचे और महन्त के पास पहुँच कर उन्होंने प्रणाम किया। पश्चात् माथा लगाया, चूमा-आदर सत्कार किया। इतने बड़े महात्मा उड़कर आये हैं और प्रणाम किया है, तथा आधीनता से माथा टेका है, यह सब देखकर महन्त जी बहुत प्रसन्न हो गये। बाबा इस पक्ष की पसन्दगी को लेकर फिर दूसरे सम्प्रदाय के महन्त को प्रणाम करने पहुँच गये। पूर्व पक्ष की तरह उसी प्रकार बाबा ने आधीनता से प्रणाम किया, माथा लगाया, चूमा और उनका आदर किया। इस प्रकार उस आत्मा को प्रसन्न करके उसका सब कुछ ले लिया।सम्प्रदायों के महन्तों को बाबा द्वारा आधीनता पूर्वक प्रणाम करना, माथा लगाना, और उड़कर चला जाना ही प्रसन्नता का कारण हुआ। इसी प्रसन्नता से बाबा को सब कुछ मिल गया। आधीनता से ही उन महात्माओं का बाबा सब कुछ खींच सके। श्री बाबा ने नीतिशास्त्र के द्वारा ही यह कार्य किया है। ठीक ही कहा गया है—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशो बलम्॥

अर्थात्—जो व्यक्ति अपने से बड़ों को प्रणाम करता है तथा उनकी सेवा करता है, उस व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल ये चार अपने आप अनायास ही बढ़ते हैं।

हवन में एक महात्मा द्वारा गुड़ का ग्रहण

पूज्य बाबा के एक से एक अद्भुत अनुभव हैं। इन अनुभवों में 'हवन के समय में अग्नि में दिये गये गुड़ का एक महात्मा द्वारा ग्रहण हुआ है' यह भी एक चमत्कारिक घटना है। वह इस प्रकार है।

एक समय में एक आदमी बाबा के पास आया। वह बरोदा का बाबूलाल नाम का मालगुजार था। बाबा ने उसको आदेश दिया कि—तुम एक मन गुड़ का हवन कराओ, कल्याण होगा। आदेशानुसार भक्त गुड़ ले आया, बाबा ने जहाँ स्थान बताया वहाँ तीन गट्ठड़ लकड़ी लाकर धूनी लगा दी।

बाबा ने उसमें गुड़ का हवन किया। बाबा के मन में उस समय यह विचार उठा कि—हम गुड़ का हवन कर रहे हैं, यह जाता कहाँ है?

इस प्रकार का विचार उठते ही बाबा को दिखा कि अग्नि के मध्य में एक महात्मा जी हैं, वही अग्नि में दिये गये सब गुड़ खा रहे हैं। तब बाबा ने सोचा कि इनको कभी गुड़ खाने की इच्छा रही होगी। दूसरे दिन देखा कि जहाँ धूनी लगाकर हवन हुआ था वहाँ बहुत थोड़ी-सी भभूत पड़ी है, गुड़ तो सब महात्मा खा गये थे। राख जो पड़ी थी वह लकड़ी जलकर हुई थी। ऐसा चमत्कार बाबा करते रहते हैं जिससे भक्तों का कल्याण होता रहता है। महात्माओं के चरित्र को कौन जान सकता है! परदुःख कातरता उनका प्रधान गुण होता है।

चित्तवृत्ति

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि, जब चित्त में संसार के विषय, रूप, रंग आदि भर जाते हैं तब चित्तवृत्ति उन्हें मन के भीतर छोड़ देती है। फिर मन इन्द्रियों का ध्यान करता है, इन्द्रियाँ भी जाग जाती हैं और मन, इन्द्रिय, एवम् चित्त जागृत होकर तीनों एक साथ हो जाते हैं तथा तीनों मिलकर एक ओर ही दौड़ते हैं। इस स्थिति में बुद्धि वेचारी पागल हो जाती है और काम नहीं देती है।

चित्तवृत्ति शुद्ध हो जाय, सत् भाव आ जाय, हर वस्तु को भगवान् का ही रूप समझ कर निरखता रहे, और चरण-दर्शन की अभिलाषा अपने हृदय में बनाता रहे, बच्चा स्वभाव रखे, छोटा स्वभाव रखे। तब उसकी बुद्धि शुद्ध रहती है। चित्त के बगल में बुद्धि रहती है, ये दोनों उपर रहते हैं, मन और इन्द्रियाँ नीचे रहती हैं। उक्त प्रकार से रहने पर बुद्धि शुद्ध होने से आत्मा शुद्ध हो जाती है। उसे माया का बल रहता है, शक्ति प्रबल रहती है। वह सुखी रहता है उसमें तेज व बल रहता है, राजपाट सत्य एवं स्थिर रहता है। सब सिद्धियां आगे-पीछे घूमती रहती हैं। पालन-पोषण करने के जोग रहते हैं, यही अंत की गति है। क्योंकि राजा, महाराजा, मनुष्य आदि की इससे ही शक्ति कम हो जाती है। बुद्धि और दृष्टि का यही हाल है। श्री बाबा राम-स्नेही जी कहते हैं कि यह साक्षात्कारी है। अनुभवगम्य है।

—:❀:—

सन्त के उपदेश

(पूज्य बाबा के सदुपदेश)

एक बार पूज्य बाबा ने धूनी के पास भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि—किसी को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए, और अपने को मरा हुआ समझकर कर्म करना चाहिये। मनुष्य अभ्यासवश नकल करते हैं, नकल करते-करते जिस दिन उसकी (परमेश्वर की) पसंदगी हो जायगी उस दिन कल्याण होगा ही।

भगवान् के प्रति भक्त का यह विचार रहना चाहिये कि—मेरे पास कुछ नहीं है, केवल यह आत्मा है, जो संसार में फँसा हुआ है। संसार का भरोसा, हिम्मत आदि सब तेरे पास हैं, मेरे पास तो सिर्फ आधीनता है, मरा हुआ शरीर है, ईश्वर के कार्य में यह चोला लगा है, उसका कार्य करते हैं। ईश्वर को यह पसंदगी हो और आधीनता को स्वीकार कर ले तो बहुत अच्छा है। यहाँ आये हो, यह अच्छा ही है। साधु सन्त के पास आये हैं। अपना अभिमान छोड़कर, श्री सम्पत्ति को छोड़कर इतनी दूर आये, दर्शन मिला, क्या लिये हुए गये। यहाँ तो आधीनता और दीनता को लिये हुए आये, देखने गया तो फँस गया, शान्ति नहीं मिली।

संसार में यह अधिकांश रूप में देखा जाता है कि साधु संन्यासी जो बनते हैं, उनको कुछ नहीं मिलता है। वे आत्मा में बल देते रहे, पालन पोषण करते रहे, शक्ति देते रहे। यह ताकत सद् गुरु से मिलती है, पद भी सद् गुरु ही देते हैं। कर्म करके उठो, बढ़ो, संयम प्राप्त करो। चिड़िया, कौआ, मकोड़ा, जीव, जन्तु, कुत्ते आदि सब जीव जन्तु भगवत् स्वरूप हैं, इन सब को कुछ हिस्सा देकर भोग लगाओ, इससे उनकी पसंदगी (प्रसन्नता) होगी, आत्मा की पसंदगी होगी, ऐसा मन में विचार करे और भावना रखे तो अच्छा है। आत्मा भगवान् है यह कहीं बोलना नहीं पड़ता। ज्ञान पास में हो जाने से कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। अन्दर का ज्ञान सद् गुरु देते हैं।

पास ही खड़े होगे, सामने दिखाई देंगे, आशिर्वाद देगा और भीतर घुस जायगा। आत्मज्ञान से ब्रह्मज्ञान, और संसार ब्रह्म-स्वरूप, बस

सब की हालत जान गये। जीव-जन्तु, जड़-चैतन्य, चल-अचल, मिट्टी कंकड़ यही तो संसार है। सब का ज्ञान हो जाता है। कैसे ? सब से प्रेम रखने से, प्रणाम करने में भभूति लग जायगी, जमीन में नाक रगड़ने से बुरा भला चला जायेगा, जमीन चूमने से ताकत आयेगी, जीभ लगाने से अमृत मिलेगा। अतः ज्ञान के लिए प्रणाम करो, तासीर के लिए प्रणाम करो। हमारी मूर्ति इसमें आ जाय। इसी पृथ्वी की धूल में सब संत महात्माओं के सत्कर्म पड़े हैं। पंचतत्त्व व्यापक हैं, आधीनता से काम लेना चाहिये। सब में (पाँचो तत्त्वों में) रहना है। सब से अलग रहना है। हम ने पान खाया, सिगरेट भी पीया, सब अनुभव किया। एक छोड़ा, दूसरा पकड़ा, सब का कर्म समझना चाहिये सो समझा। अपनी प्रकृति को जाँचते रहना चाहिये। मन इन बातों में कैसे जाता है और कैसे भागना चाहता है, इस प्रकार विचार फैल जाता है और अनुभव होता जाता है।

बिना अनुभव के दूसरे को क्या बतावें, देखो अपने पास सब है, दूसरों का भरोसा मत रखो। शान्ति और सन्तोष से काम करने से अपने को अपने आप में मिलाता है। जो चाहोगे सब मिलेगा, आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों अवश्य मिलेगा। ईश्वर में भरोसा रखना और अपना कार्य करना, अपने को तो थोड़े में ही संतोष रखना है। दूसरों को सन्तुष्ट रखोगे तो स्वयं सन्तुष्टि मिलेगी। अपने त्याग से स्वयं को सन्तोष मिलेगा। जब जरूरत होगी तभी अपने को मिलेगा। कभी कर्तव्य कर्म का अभिमान नहीं करना।

संसारी (गृहस्थ) लोगों के पास यदि कोई खानेवाला आता है चाहे वह गृहस्थ हो या साधु-सन्त हों वह जल्दी चला जाय, बला टले यही इच्छा रहती है।

हम लोगों का व्यवहार ठीक उल्टा है, जितने भी खाने वाले आयें, साथ रहें, अच्छा लगता है। इससे कल्याण होते हैं। हम लोग यही कहते हैं कि त्याग करो। अपना कर्म ठीक रहना चाहिये। समाज के कर्त्तव्य का ज्ञान हो। परिवार में सब का अपना अपना कर्त्तव्य होता है। समाज में भी ऐसा होता है कि, प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्त्तव्य करे। अतः त्याग करो, कर्म करो, आसक्त मत हो, मोह से दूर होओ, लिप्त न होओ, मरने का डर मत करो, खुश रहो कि हम जा रहे हैं, स्वतन्त्र रहो, और प्रेम-भाव बनाये रहो---विशेष क्या कहा जाय—

'जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-दुख दोषानुदर्शनम्'

इन सब में दोष देखते रहना चाहिये ताकि दुष्कर्म न हो। सब लोग आते हैं, सेवा करना चाहते हैं, करते हैं परन्तु कामना रखकर, भीतर का दर्द नहीं समझ सकते। जब हमें दर्द होता है, वह तो कृष्ण ही समझ सकता है। मसान का ख्याल रखना है, अपना दर्द समझना है। परिवार में रहकर भी एकाध घण्टा कुटुम कबीला सब से दूर रहकर ध्यान कर लिया जाय। सब को पीछे रखकर आगे ईश्वर को रखना होगा। अरे भाई, एक दिन तो जाना ही है, जाना जरूरी है, किन्तु अन्तर का दर्द कोई नहीं समझता है और कोई साथ में जाता हुआ नहीं दिखाई देता, अधिक क्या कहा जाय यह शरीर भी साथ में जाता नहीं दिखाई देता है। यह शरीर स्वार्थी है भस्म होकर भस्म में ही मिल जायेगा। अतः ईश्वर से यही कहना है कि, हे ईश्वर! आप का ही भरोसा है, माता-पिता सब आप ही हैं क्योंकि—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

थोथी पुकार (केवल प्रदर्शन के लिये की गयी पुकार) से कुछ नहीं होगा, कल्पना में (कर्त्तव्य में) सचाई होनी चाहिये। आँखों में आँसू भर जाय, टप-टप चूने लगे, नाम में जान आ जाय, मगन होने लगे, जब अश्रु निकलने लगे तब जानना चाहिये कि प्रार्थना स्वीकार हो गयी। इस बात का किसी को भेद नहीं देना चाहिये। हम बचपन से ही तत्त्वों में रहते हैं। कर्म करते करते अपना स्वरूप जाना जाता है। नाम और ध्यान सब के पास में हैं, इन दोनों से ही प्रेम रखना चाहिये। यदि नाम छूट जाय तो ध्यान में लग जाय और यदि ध्यान छूट जाय तो नाम पकड़ लेना चाहिये।

प्रेमा-भक्ति का क्या स्वरूप है अर्थात् प्रेमा-भक्ति कैसे हो? कैसा प्रेम हो! एक प्रेम तो माता-पिता से होता है जो सहज प्रेम होता है। उनकी सेवा, उनके सुख में सुखी, उनके दुःख से दुखी होना यही स्वाभाविक है।

दूसरी भक्ति प्रेम पत्नी का पति के साथ है या पति का पत्नी के साथ है, उसने कमाया, पालन-पोषण किया, उसके साथ जो विशेष सम्बन्ध है वह भी प्रेम ही है, यह विशेष भक्ति है।

तीसरी भक्ति यह है कि तुम यहाँ तक क्यों आये ? तेरे यहाँ कैसे मैंने समय बिताया, कैसे-कैसे क्या-क्या किया, तुम्हारी पसंदगी कैसे हुई, इसका कैसे ध्यान था, यहाँ आये बच्चा बनकर, क्योंकि यहाँ बच्चे थे, यहाँ आकर उनके घर की सेवा कैसे होती है, उनका काम कैसे होता है, कैसी सचाई है। इस भाव को विचार कर बच्चों के भाव से ग्रहण कर ले। बचवों की तरह बनकर ध्यान करे, बच्चे बनकर जो किया जाता है वही श्रेष्ठ होता है अतः उस भाव को ग्रहण करे। नर्मदा-स्नान करते समय बच्चों के समान जल पी ले, बच्चे होकर जल चढ़ावे। बच्चों की भावना से ही कार्य करे ज्ञान तो अपने पास ही है। ईश्वर यही है वह अपनी करनी और भावना से मिलता है क्योंकि—

हगनी मुतनी का यह संसारा।
हगनी मुतनी से कौन है न्यारा ॥

बहुत दिनों तक हम भी स्त्री की तरह होकर रहे, दाढ़ी मूछ सब मुड़वाया, स्त्रीत्व धारण किया और इसी ख्याल मे रहकर सखी भाव से सेवा की, सब कुछ देखा।

बच्चा बनकर भक्ति करने से राम-नाम लेकर बढ़ते गये, भीतर जितने बच्चे पैदा हुए निकलते गये। पंचतत्त्व से बाल रूप बने और कार्य किया। वृक्षों, कीड़ों, मकोड़ों सब को प्रसन्न रखते हैं, यह सब करते-करते शरीर का बड़ा रूप हो जाता है। स्त्री बन जाती है, बच्चों का बेसी (ज्यादा) प्यार होता है, यह असली चीज है। भाव से बच्चे शुद्ध होते हैं।

एक दिन ध्यान करते समय बाबा के ध्यान में ऐसा आया कि कुदरत का काम करते रहते हैं, फिर भी इतनी तकलीफ और कष्ट हम को इस जीवन में है। इससे तो अच्छा विषयी लोगों का ही जीवन अच्छा है, जो चाहते हैं मिल जाता है। वे सुख से रहते हैं। इस प्रकार की भावना बन गयी। एक स्त्री मेरे शरीर से निकली और सामने आ गयी। फिर एक दिन मन में ऐसा विचार हुआ कि—शादी क्यों न हो जाय ? तब वह माता शरीर से निकली और बोली—ठीक है, शादी होनी चाहिये, उसमें ज्ञान नहीं था। दो तीन दिन बाद एक स्त्री और आयी, उसके हाथ में दो रोटी और एक लोटा जल था, वह बहुत सज-धज कर आयी थी, मेरा ध्यान ऊपर से टूटा, पहले तो मन ललचाया परन्तु फौरन यह विचार

आया कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। इतने में पेड़ की आड़ में एक माता दिखायी दी, मैंने अपनी होशियारी सम्हाल ली। यह तामसी माया है।

दया नहीं, पसंदगी

संसार में यह सर्वविदित है कि दया सब धर्मों का मूल है। हम ने यही सुना था, यही विचार किया था और ऐसा ही करते भी थे। एक दिन एक होटल में गये, वहाँ मुर्गियों को जाली के अन्दर देखा जो चोंच मार रही थीं, हमें बड़ी दया आयी और कहा कि—ये विचारे मारे जाते हैं, इनकी राप्ता (मुक्ति) होनी चाहिये। इसी बीच में एक मुर्गी इस जाली को ठोक कर यह कह रही थी कि दया मैं नहीं चाहती, मुझे तो इसी बात पर सन्तोष है कि मुझे लोग खावें और मैं दूसरों के काम आऊँ। मैं जानती हूँ मुझे होटल वाले मारते हैं और पैसे के लिये ही यह काम करते हैं परन्तु मारकर वे बड़े प्रेम से मेरी सफाई करते हैं और उसका अच्छा-अच्छा टुकड़ा बनाते हैं, अच्छी वस्तु बनाते हैं, खूब अच्छी तरह पकाते हैं और खिलाते हैं, सब लोगों की पसंदगी हो जाती है। इससे अधिक मुझे क्या चाहिये। उनकी आत्मा से जो आशिर्वाद निकलता है वह मुझे मिलता है। अतः सब से बड़ी बात पसंदगी है---दया नहीं। अत एव कहा जाता है----परोपकाराय सतां विभूतयः।

नाम-जप की क्रिया

साधक जब नाम का जप करे तब कण्ठ का संचालन न हो। जिह्वा हिले नहीं और मुँह से कहे राम। मेरा राम तो श्वास में चलता है। है। श्वास लिया और नाम अन्दर गया, श्वास निकाला नाम बाहर आया। नाम का ख्याल ही सब कुछ है। उसके सिपाही बने रहो, उसका पहरा लगाते रहो। योग्य पात्र मिलते ही हम लोग आशीर्वाद दे देते हैं। पात्र ठीक होने पर ही आशीर्वाद फलेगा और वह काम देगा। इस विषय पर यह जिकर करने पर कि—रामकृष्ण पंरमहंस ने भी नरेन्द्रनाथ को पात्र समझ कर आशिर्वाद दिया उसका फल यह हुआ कि वे पीछे विवेकानन्द के नाम से प्रख्यात हुए और उन्होंने जग कल्याण हेतु हिन्दू-धर्म का प्रचार किया' बाबा ने कहा ठीक यही बात है। सब कोई उपदेश देने वाले होते हैं और गुरु बनते हैं। यह ठीक ही कहा गया है कि---

परोपदेशे पाण्डित्यम् ।

परन्तु जब तक कुदरत इसे शक्ति देकर पात्र न बनावे तब तक कौन उसको सुनेगा और सुनने पर कौन उसका स्वागत करेगा । मेरे अन्दर तो सब देवता लोग नाचते रहते हैं, नाम ही एक मधुर शक्ति है, और सब काम राम नाम से ही होगा । नाम के सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं है । मैं एक गरीब संत हूँ । नाम से धुआँ उड़ाना, नाम से आग जलाना और नाम से सृजन या विनाश करना । तुम लोग भी यह देखते हो कि कैसे बाहर-भीतर राम है । शरीर को नाम से मोह हो गया है, क्योंकि इसी शरीर ने इतना काम किया है, कैसे एकाएक इस नाम को शरीर छोड़ सकेगा । मैं ऊपर की सरकार का नौकर हूँ, चौकीदार हूँ । मेरी पोशाक सब उसी सरकार का दिया हुआ है । हम लोगों का भेद या अन्तर जानना मुश्किल है, अथाह है । इसकी गहराई को मापने के लिए उसी हद तक पहुँचना पड़ता है, इसलिये जो कुछ जो कोई लेना चाहे ले सकता है । कर्म को देखो, क्या करते हैं, कैसे रहते हैं । रहनी करनी ठीक है कि नहीं ? अपना स्वार्थ कहाँ तक है ? यही मेरा सब कुछ है । लोग आते हैं देखते हैं । फिर बाबा ने हास्यपूर्ण शब्दों में कहा—तू भी नकल कर ले और देख ले । विशेष क्या कहा जाय ।

कलौ केवल कीर्तनात् । राम नामैव केवलम् ।।

कलियुग में केवल भगवान् का कीर्तन ही आधार है और उसमें भी राम-नाम का विशेष महत्त्व है ।

नर्मदा-माहात्म्य

संसार में सब से बड़ा विचार है । सद्विचार के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है । यह नर्मदा जिसकी पुण्य गाथा से शास्त्र-पुराण भरा पड़ा है । वह कितने ही वृक्षों झाड़ों को बहा लाती है । कितनी लताओं एवम् पत्तों को स्नान कराती है और उनके सार-तत्त्वों को खींच लाती है । कितनी जड़ी-बूटियों का जल लाती है । कितने ही पत्थर, लक्कड़ उसमें घुल जाते हैं । कितनी तरह के सत्त्वों की मिट्टी बहा लाती है । कितने जन्तु, कीट, मकोड़े पानी पीते हैं । पसंदगी (प्रसन्नता) होती है । उनकी पसंदगी जल के साथ में आ जाती है फिर जल में कितने ही जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं । उनका पालन-पोषण होता है । कितने ही यति, सती, साधु-सन्त, महात्मा अपने शरीर को इसमें धोते हैं, स्नान करते हैं व पावन तपस्या से भस्मीभूत शरीर इसमें स्वच्छ करते हैं । कितने ही सन्तों के द्वार से यह बहती

है। ऐसा ख्याल और विचार करके नर्मदा के जल से आचमन, अभिषेक, और स्नान करे और उसमें से एक अंजुलि जल लेकर पान करे। उसमें विचार का मेल होता है, विचार और प्रेम का सम्मिश्रण होता है। इस प्रकार के विचार से पानी लेकर पीने से अन्दर पूर्णता आ जाती है। मन में जो मैल होता है वह धुल जाता है, एक में एक मिल जाता है। जब स्नान करने के निमित्त जाना हो, दर्शन को जाना हो तो बच्चे भाव से जाना चाहिये। और बच्चे के भाव से ही नहाना भी चाहिये तथा बच्चे के भाव से ही जल उठाना चाहिये एवम् अंजुलि में लेकर उसी भावना से पीना चाहिये। इससे वहुत कल्याण होता है, यह सत्य है, तत्त्व है और (परोपकारी है)—परोपकारिणी है।

जय नर्मदे !

देवियों से ज्ञान प्राप्ति

देवियों ने मुझे बहुत ज्ञान दिया है। कभी किसी सुन्दरी देवी ने जब मुझे रिझाना चाहा तो मैं उसके चरणों को अपने हृदय में रख लेता था। काम की वासना प्रत्येक प्राणी में रहती है यहाँ तक कि एक बुढ्ढे के अन्दर भी कामवासना रहती है, उसे वश में करना चाहिये, यह वासना दूर होगी सद् विचारों से। कामवासना की तरह मानसिक पाप भी एक भयंकर दोष है। उसे भी त्याग करना चाहिये।

अहंमन्यता (घमण्ड) से कोई काम नहीं होता है

अयोध्यापुरी में एक व्यक्ति था जो एम. ए. तक शिक्षित था। शाम को टहलते समय वह अनपढ़ गवारों से अपनी तुलना किया करता था। वह बहुत ही घमंडी था। घमण्ड के कारण उसकी कहीं भी नौकरी नहीं लगी। एक दिन मेरे पास आया, मैंने उससे पूछा क्यों रे तेरी नौकरी नहीं लगती ? फिर कहा—तेरा घमण्ड ही तुझे नौकरी नहीं लगने दे रहा है। जब तक तू अपने 'अहम्' को नहीं फेंकता तब तक तेरी नौकरी नहीं लगेगी। इस बात को समझकर जब उसने घमण्ड का त्याग किया तब उसकी नौकरी लग गयी।

नारायण-अस्त्र तथा नाम का महत्त्व

श्री नारायण आदि पुरुष हैं। नारद आदि ऋषि-महर्षि इसी का ध्यान करते हैं और इन्हें ही जपते हैं। हमारे पास भी नारायण अस्त्र है। जब रामावतार कृष्णावतार हुए तो सामने दो नाम आये। क्रमशः आये

हुए नामों का ही यह सहस्रनाम है। राम और कृष्ण इन्हीं दो नामों को देवर्षि नारद जी ने भी अपनाया है जैसे--

'जग में हैं दो सुन्दर नाम।
चाहे कृष्ण कहो चाहे राम॥

निष्काम होकर जो साधना करेगा वह कभी नहीं रुकेगा। धीरे-धीरे चलता रहेगा। उसके रास्ते में दुःख आवेगा जरूर परन्तु नाम के प्रभाव से विघ्न टलता ही जायगा। वह अपने मंजिल तक तो पहुँचेगा ही। अभी नहीं तो कभी न कभी अर्थात् इस वक्त नहीं तो उस वक्त पहुँचेगां ही, उसका रास्ता सीधा हो ही जायगा, इसमें सन्देह नहीं, यही सिद्धि है।

सकाम की भावना

सकाम वाले अपने हृदय में भावना रखकर, ख्याल रखकर जब चलते हैं पहुँच तो वे भी जायँगे। उनमें जो ख्याल है वही पहुँचने का कारण है और यही उनमें सिद्धि है। सकाम वाले का जो कुछ विचार अन्दर रहता है वही समय पाकर प्रस्फुटित होगा, फलेगा, फूलेगा। सूक्ष्म दृष्टि से अन्तर्मुखी होकर जो कुछ देखेगा वह फौरन पता लगायेगा कि अमुक आदमी किस ख्याल से आया है। हाँ अन्तः करण की दृष्टि स्वच्छ= (निर्मल) होनी चाहिये। ऐसा करने पर सब कुछ दिखेगा परन्तु उसी में गन्दगी है तो क्या दिखेगा।

इसी लिये श्री बाबा का कहना है कि जो कोई भी किसी कामना से सन्तों के पास जाय वह बच्चा या बच्ची का स्वरूप (भावना) लेकर ही जाय। सद् गुरु तो साक्षी रूप में बैठे ही रहते हैं। चाहे स्त्री हो या पुरुष हो सब के आन्तरिक भावना को बाबा जान लेते हैं। साथ ही कह भी देते हैं कि—कुछ बनाना हो तो स्त्री बच्ची बनकर आवे तथा पुरुष बच्चा बनकर आवे। जब स्त्री-पुरुष आते हैं तो वे कहते हैं—स्त्री बच्ची बनकर प्रसादी ले। ऐसे ही पुरुष को बच्चा समझकर प्रसाद ग्रहण करना चाहिये। वह प्रसादी दोनों (स्त्री-पुरुष) दोनों ले ले और उसे ग्रहण कर ले। जिससे वह प्रसाद अन्तःकरण में चला जाय, अन्तः करण से इन्द्रियों में आ जाय। तब दोनों का बराबर काम होगा। उससे बच्चा-बच्ची पैदा होंगे।

दर्शन के निमित्त कहीं भी जाय तो वहाँ पहुंच करके वहाँ के धूल, मिट्टी और पानी को बच्चा बनकर ग्रहण तथा दण्डवत् करे। यती-सती के

चरणों का ध्यान करके नत हो जाय। मिट्टी को उनका चरणरज समझकर उठा ले और थोड़ा सा खा ले तो अन्दर की भावना की पूर्ति हो जाती है। कहीं जावे, कहीं से आवे, सही भाव से चलना चाहिये। अपने सही रास्ते से चलने पर वहाँ अवश्य पहुँचेगा जहाँ उसे जाना है।

ब्रह्माण्ड बहुत बड़ा है। अर्जुन ने देखा था, यशोदा ने देखा था, क्या, वही भगवान् का विराट् रूप। मुझे भी नाम के बल से नाम रूप बनकर दिखाई दिया है।

ऊपर को ख्याल करके शुद्ध भावना से जो वाणी आती है वह सही वाणी होती है। अतः सद् भाव से पृथ्वी की ओर देखे। जमीन से भी जो कोई आवाज आवे उसको सत्य मानना चाहिये। घर में भी दीवाल से यदि कोई आवाज आवे तो उसको भी सत्य मानो, रात को निपट सुनसान में कोई आवाज सुनने में आवे तो यह समझना कि यह कोई देववाणी है, पूछने पर उत्तर मिलेगा। कोई दुःखी है, बहुत तड़फड़ा रहा है, वेदना प्रकट करे तो आवाज आ जाती है। उस समय डरना नहीं चाहिये, भलाई कर देना चाहिये, इससे अपनी भी भलाई होगी। ऐसा ही विचार रखना चाहिये।

राम-नाम का महत्त्व
(राम नामेति गर्जनम्)

राम राम के नाम से ही जीव अपने को राम राम में लय कर देता है। उसी में (राम-नाम में) अपने जीवन को फना कर देना। ब माने=बह बह (ऊपर प्रकाश में बह बह होने लगे)। म माने=म ही (मैं ही=तमाम प्रकाश) राम राम में यह चीज कर देनी चाहिये। इसके सिवाय दूसरा कुछ नहीं रहना चाहिये, न कुछ याद ही दूसरा रहे। केवल नाम और नाम का ध्यान करता रहे। यही दोनों वस्तुएँ बड़ी चीज होती हैं। श्री पूज्य बाबा इन्हीं दोनों वस्तुओं की महिमा बता रहे हैं—जैसे नाम लेकर बहा है। वैसे ही नाम ही के आधार से सब कुछ खाना पीना रखना चाहिये। यदि दो वस्तुएँ पास में रहती हैं तो, इनकी महिमा फिर बताते हैं। यदि नाम लिया जाता है और छूट जाता है तो ऊपरी ध्यान रहता है। पागल हो जाता है और ऊपरी ध्यान करता देखता रहता है। केवल ऊपर का ही भान रहेगा और कोई भान नहीं रहेगा। अन्दर से कल्पना होती है कि किसी चीज की इच्छा कभी किये ही नहीं है, कोई इच्छा रहेगी ही नहीं। सिर्फ नाम

पास में था वह भी छूट गया। जब अन्दर से ऐसा विचार होता है तो ऊपर से आकाशवाणी होती है कि 'नाम पकड़ लो'। फिर नाम का ख्याल आ गया तो नाम पकड़ लिया, पश्चात् उससे ज्ञान हो गया। इसको लेकर फिर चलने लगा। इसी वस्तु से एक जगह रहता है। फिर नाम लेकर वह चला और फिर नाम ही का रूप बन गया। क्योंकि उसने नाम ही में जीवन-अर्पण कर दिया है। यह बाबा का अनुभव है—ऐसा ही बाबा बताते हैं।

नाम की महिमा

जब ५ इंच लम्बा और ३॥ इन्च चौड़ा हृदय राम राम करता है तो उस नाम से हीरा पैदा होता है, उसके प्रकाश से अन्दर में प्रकाशित होता है।

मणिमाला की महिमा

पूज्य महाराज अपने सदुपदेश में कहते हैं कि—जब यह मणि अपने अन्दर बन जाता है तब यह सोचना पड़ता है कि—इसमें क्या करामात है। (इसको पूज्य बाबा देखने लगे)। देखने से यह विदित हुआ कि इस मणि की कीमत कोई चुका नहीं सकता। पहले उन्होंने इस विषय पर सोचा कि इस मणि को यदि हम बेचें तो इसकी कीमत कोई चुका सकता है या नहीं, क्योंकि इस मणि में यह करामात है कि जो यह पाता है उसकी मृत्यु नहीं होती है, इसके प्रकाश के कारण से। (बाबा कल्पना करते हैं)। अमेरिका से इसका मूल्य चुकाने के लिये कहा गया तो उसने कहा कि—'हम इसकी कीमत चुका नहीं सकते हैं। हाँ खजाना खोल सकते हैं—जितना चाहे ले जा सकते हो।'' तब फिर पूज्य महाराज को ख्याल आया कि जो इस मणि को देगा उसकी मृत्यु हो जायगी। जो इसको पायेगा वह मौज करेगा। देनेवाले का शरीर छूट जायगा और जिन्दा नहीं रहेगा। भोग विलास तो उसको मिलेगा परन्तु मृत्यु के सामने झुकना पड़ेगा। इससे क्या फायदा ? यह विचार कर मणि किसी को नहीं दिया। फिर सोचने लगे कि ऐसी कीमती मणि को कहाँ रक्खें। तब एक मरा हुआ तोता दिखाई पड़ा; उसका पेट चीर कर उसमें रख दिया। फिर संकल्प किया कि तुम ऐसी जगह रहो जहाँ कोई आदमी न दिखाई पड़े। ऐसा कहकर उस तोता को उड़ा दिया।

अब फिर राम-राम का ख्याल आ गया और नाम को पकड़ लिया, अब उनका काम रहा राम नाम कहना। उसी का ध्यान रखना। अब

उसका रूप बनकर जा रहा है, ऊपर जहाँ प्रकाश है उसी लोक में। बाबा के पास भी प्रकाश है, वहाँ भी प्रकाश है। इनके पास भी मणि है वहाँ भी मणि है, जिनको निराकार बोलते हैं। वहाँ पहुँच गये। वहाँ उन्होंने विचार किया कि एक ब्रह्माण्ड से दूसरे ब्रह्माण्ड जा रहे हैं। प्रकाश और मणि के मिलन से रास्ता जाम हो गया था। और उसमें अपने को मिला देने से लय हो जाता और लौट कर नहीं आ सकता था। इसी से बगल का रास्ता पकड़ कर ऊपर गया और ऊपर से मणि के नीचे आ गया फिर अपना ध्यान लगा कर बैठ गया। मणि शिर पर ले लिया, जब ले लिया तो बावा ने देखा कि उनकी दाढ़ी के हरेक रोम से प्रकाश पैदा हो रहा है। हर जीवों को हर प्रकार से ज्योति मिलती है।

कीर्तन का महत्त्व तथा प्रकार (कलौ केवल कीर्तनात्)

पूज्य बड़े गुरु महाराज श्री रामसनेही जी कहते हैं कि कीर्तन भजन एक बड़ा भारी साधन है। परन्तु कीर्तन किस प्रकार करना चाहिये यह बहुत लोगों को ज्ञात नहीं है। इसलिये जैसा लाभ उठाना चाहिये उतना नहीं उठा पाते। जोरों से बाजा बजाने से और खूब चिल्ला-चिल्ला कर प्रभु का नाम, लेने से कीर्तन का आनन्द नहीं हो सकता है। इस अवसर पर ईश्वर के स्वरुप को किसी मूर्ति अथवा चित्र विशेष में केन्द्रित कर उसी को सब कुछ समझने से भी नहीं होता है। असल में चाहिये कि पहले नाम तब रूप का उच्चारण और चिन्तन। तव नाम रूप को खींचकर कण्ठ से नाभि में ले जावे फिर ऊपर उठा कर व्यापकता में जावे और व्यापकता का ख्याल करे। जैसे---

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

यह नाम रूप आया। उसके बाद कृष्ण को खींचकर नाभि में पहुँचाया और हरे हरे में ऊपर उठा के ले गया। आकाश में पहुँचाया और उनका व्यापक रूप से सुमिरन किया और हाथ जोड़ा। इस नाम रूप से सुमिरन किया और हाथ जोड़ा। इससे नाम रूप तो साथ-साथ चलता है। वहाँ से सर्वत्र फैल जाता है। सारे जगत् में व्याप्त होता है। यह जगत् ही ईश्वर है। ईश्वर पर ही चौदहों भुवन स्थित हैं। उसके रोम-रोम में ब्रह्माण्ड है। इधर संकल्प का रूप बनकर जो सनातन अविनाशी एक रस सच्चिदानन्द है वहाँ तक पहुँच जाता है। कीर्तन में अनुलोम, विलोम, लोम होना चाहिये। इस प्रकार प्रत्येक भजन में यही नियम रहे। तब भाव हो जायगा। भाव से प्रेम आवेगा। तव नाम लेने का भाव बनेगा। इसी तरह---

भजो राधे गोविन्द। गोपाल तेरा प्यारा नाम है।
गोपाल तेरा प्यारा नाम है। नन्दलाल तेरा प्यारा नाम है।

यहाँ भजो राधे गोविन्द में नाम रूप आ गया, गोपाल में बच्चा रूप का ध्यान हुआ। तेरा प्यारा नाम है इसमें नाम का विकास और व्यापकत्व हुआ।

(जब कीर्तन हो रहा था तो यह प्रत्यक्ष दिखाई देता था कि पूज्य बाबा कीर्तन भी कर रहे हैं, ईश्वर से नाम जोड़ भी रहे हैं, पहुँचा रहे हैं। ईश्वर की पसन्दगी अनुभव करते थे, हाथ जोड़ते थे, अगरबत्ती से आरती करते थे। अपने सेवक को उन्होंने बुलाकर बतला दिया कि कैसे कीर्तन करना चाहिये और आशीर्वाद दिया। साथ ही अग्निदेव की तरफ बीच बीच में देखते थे। जैसे कि उनसे (अग्नि से) बातचीत कर रहे हों। बाबा की आकृति से यह मालूम होता था कि अग्निदेव क्या कह रहे हैं और उसका प्रभाव उनके ऊपर क्या पड़ा। अग्नि साक्षी रूप में देखते थे और बता रहे थे।)

इस विषय में श्री पूज्य महर्षि बाबा रामसनेही जी महाराज कहते हैं कि अभी जो अग्नि में हवन-पूजन चल रहा है और जो युगों से चलता आ रहा है उन्हें मी अब करने का मन नहीं होता। उन्होंने अनुभव करके देखा है कि अपनीं आत्मा उस मूर्ति पर डालने से वह मूर्ति हिलने डुलने लगती है। बातें करती है। अपनी ही आत्मा तो है, जब आत्मा खिच गयी तो कुछ नहीं—बस वही जड़ता।

इसलिये सब से पहले अपने को जान जाय। अपना स्वरूप क्या है, अपने अन्दर कौन काम करता है, क्या क्या करता है। बाबा कहते हैं—अभी तक मैं भी अपना निरीक्षण करता हूँ। यदि खुद (स्वयम्) को जान जाय तो दूसरे सब को जान जायेगा। किसी का कुछ यदि जानना हो तो उसके स्वरूप का पहले ख्याल करे। अपनी आत्मा का प्रकाश उसमें डाले। उसके संकल्प विकल्प को अपने से मिला ले। अपने स्वरूप में आते ही सब बात का ज्ञान हो जायगा। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु की भी पूजा हो सकती है। असली पूजा यही है। राम-नाम लेता जाय, प्रकाश में आगे बढ़ता जाय। आत्म-बल होगा तो सब जगह पहुँच हो जायगी। ईश्वर की कृपा से कितनी बार हम लोग इसी तरह गये हैं। ईश्वर प्राप्ति का सही रास्ता यही है।

तत्त्वों की आधीनता से शक्ति की प्राप्ति

तत्त्वों की आधीनता स्वीकार कर उनकी पूजा-अर्चना करनी चाहिये। उनके समक्ष जो अपने को मुर्दा रूप समझते हैं, तत्त्वों में मिल जाते हैं, निराकार हो सेवा करते हैं, ऐसे लोगों की यदि कभी मृत्यु हो जाती है तो उन्हें उनका जो प्रकाश स्वरूप कर्म है वह फिर जिला देता है। उनमें जो तत्त्वों की आधीनता से प्राप्त शक्ति होती है उससे वह दूसरों को भी जिला सकता है। इस प्रकार का अनुभव श्री पूज्य बाबा ने भी किया है, और इसी प्रकार की तत्त्वों में मिली हुई आधीनता से मुर्दा रूप होकर निराकारी सेवा में स्वयम् भगवत्स्वरूप हैं।

मन को वश में करने का उपाय

श्री बाबा रामस्नेही जी महाराज का यह उपदेश है कि जो ब्रह्म ऊपर है उसी ब्रह्म का नीचे भी निवास है। ऊपर में स्थित परात्पर ब्रह्म कहलाता है और नीचे का वही ब्रह्म ब्रह्मनिष्ठ कहलाता है। क्योंकि भगवान् ने ठीक ही कहा है कि—

मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।

अर्थात्—हे नारद मेरे भक्त मुझे जहाँ गान करते हैं, स्मरण करते हैं वहीं मैं रहता हूँ।

आगे बाबा अत्यन्त चंचल इस मन को वश में करने का उपाय बतलाते हैं कि—संसारी जीवों को जो नाना प्रपञ्चों में लिप्त रहते हैं अपना मन किस प्रकार वश में करना चाहिये?

जो मनुष्य दिन रात चौबीसों घंटे राम-राम का स्मरण करता रहता है उसका मन भी एक दो घंटे के लिये संसार की ओर दौड़ता ही है, वश में नहीं रहता है। उस वेग के समय बलपूर्वक उसे रोकने से कोई लाभ नहीं होता है, उस समय तो मन पर नियन्त्रण करना चाहिये, मन से प्रार्थना करनी चाहिये, क्योंकि मन भगवान् है। मन से कहो कि हे भगवन्! मुझे सद्ज्ञान दो, सद्बुद्धि दो, सत् नाम दो, सुमार्ग में लगा दो, मुझे सत् नाम से मत छुड़ाओ। यहाँ आकर ऐसा काम करो कि जिसके द्वारा संसार में तुम्हारी महिमा हो, यश मिले, प्रतिष्ठा बने और नाम हो। इस प्रकार की प्रार्थना अन्तःकरण से करना चाहिये। बार-बार ऐसा करते रहने से मन शान्त हो जाता है। मन के द्वारा ही सब इन्द्रियों का संचालन होता है अतः यदि मन को वश

में कर लिया जाय, उसे जीत लिया जाय तो सभी इन्द्रियाँ अपने आप शान्त हो जाती हैं। गीता में भगवान् ने कहा है—

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

इसका यही बीज है। इसी मार्ग से सबको चलना चाहिये।

मन को वश में करने के अन्य साधन

नाम-जप ही सर्वोत्तम उपाय है

श्री बाबा रामसनेही जी महाराज अपने उपदेश में मन को वश में करने के लिए कहते हैं कि राम-नाम का सुमिरन मन और बुद्धि लगाकर करना चाहिये। नाम का जप हर समय चलते, फिरते, पल पल पर चलाते रहना चाहिये। कोई भी कार्य करे—चाहे भोजन कर रहा हो अथवा शौचादि के लिये जाता हो अथवा चलते फिरते हर समय बालक भाव से नाम का स्मरण करता रहे। फिर भी अगर मन वश में न रहे और इधर उधर विषयों की ओर दौड़े तो नम्र होकर मन से प्रार्थना करे कि—हे मन ! हे भगवन् ! अच्छी बुद्धि दो, अच्छा ज्ञान दो, अच्छा मार्ग बताओ। मेरी बुद्धि क्यों इधर-उधर करते हो, मुझे सत् मार्ग से क्यों छुड़ाते हो ! इस प्रकार दुःखी होकर जब अपनी आत्मा से प्रार्थना करने लगे तो वह मन डरने लगेगा और फिर विषयों की ओर भागना छोड़ देगा, कोई बाधा नहीं करेगा। यही मन की वास्तविक गति है। मन की गति वायु से भी अधिक तेज मानी गयी है। सब इन्द्रियों का अधिपति मन ही है, मन के द्वारा प्रेरित होने पर इन्द्रियाँ अपने कार्य में लगी रहती हैं। मन का निग्रह (निरोध = रोक) बड़ा दुष्कर कार्य है ! यह विरला ही व्यक्ति कर सकता है। सन्त-महात्माओं का तो यह प्रमुख कार्य ही है। इसमें कारण यह है कि वे दिन रात राम नाम के जप में लीन रहते हैं और यही मन को वश में करने का सर्वोत्तम उपाय है, साधन है। राम-नाम के जप से सद् बुद्धि उत्पन्न होगी, सद्बुद्धि से मन का वशीकरण होगा। अतःनाम (राम) जप में सब को ध्यान देना चाहिये।

भगवान् की महिमा अपरम्पार है

बड़े-छोटों की पहचान

श्री बाबा रामस्नेही जी ने एक बार भक्तों को उपदेश देते हुए कहा कि—जीव निरन्तर नाम-जप में लगा रहता है। साथ ही परमात्मा

से यह प्रार्थना करता रहता है कि हे प्रभो ! आप की महिमा अपार है, आप बहुत बड़े हैं, आपका बहुत विस्तार है, आप अनादि-अनन्त हैं, आपका कोई थाह नहीं पा सकता है। इस प्रकार जब भक्त ईश्वर के प्रति प्रार्थना करता है तो परमात्मा का यही उत्तर होता है कि—हम यदि बहुत बड़े हैं तो बहुत छोटे भी हैं। कोई बड़ा बनता है तो उसके आगे हम छोटे बन जाते हैं, और छोटे बनकर उसके अंदर घुसकर सब काम करते रहते हैं। इस रहस्य को कोई संसारी (गृहस्थ) जीव नहीं जानता है। यदि कोई छोटा बन जाता है तो हम उसके लिये बड़े बन जाते हैं। उपनिषदों में इसीलिये 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' कहा गया है। वस्तुतः मेरी महिमा का कोई पार नहीं पाता है।

जिस प्रकार भगवान् की महिमा का कोई पार नहीं है उसी प्रकार साधु-संतों की महिमा भी अपरंपार है। उनके आगे भी जो कोई छोटा बनता है उसके लिये वे बड़े बन जाते हैं। इस प्रकार उनकी महिमा का कोई अन्त नहीं है। और जो अहंकारी होता है, उसके अंदर यदि नम्र पुरुष प्रवेश करेगा तो उसे वह जीत लेगा। कहने का आशय यह है कि नम्रता के आगे घमण्डीपन दब जायगा। साथ ही जो स्वयं छोटा बन जाता है एवं किसी संत महात्मा को श्रेष्ठ मानता है, वह श्रद्धा और विश्वास से कल्याण को प्राप्त करता है।

एक बार बाबा रामस्नेही जी ने परब्रह्म परमात्मा से पूछा कि—आप बहुत बड़े हैं, आपकी महिमा का पार नहीं मिलता, आपके विराट् रूप की कोई सीमा नहीं है। आखिर आप कहाँ और कैसे रहते हैं ? यह प्रश्न करते ही बाबा ने देखा कि—बड़े वाला (परब्रह्म परमात्मा) नीचे आ गये हैं और (बाबा) स्वयं ऊपर चले गये। किन्तु यह होने पर भी स्वरूप और श्रेणी एक ही रही।

गङ्गास्नान और मुक्ति

शास्त्र का कहना है कि गङ्गा स्नान से मुक्ति होती है (गङ्गास्नाना न्मुक्तिः)। इस धार्मिक धारणा के अनुसार हजारों-लाखों प्राणी गंगा स्नान करते हैं, वे अपने मन में समझते हैं कि हम मुक्त हो जायँगे। एक दिन इसी जिज्ञासा की शान्ति के लिये इसको परखने की इच्छा हुई तो गङ्गाजी के किनारे गये। खूब देखा। एक तो देखते हैं कि—गङ्गा जी जो आते हैं वे अपने मन में नाना प्रकार के विचारों को लेकर

आते हैं, गङ्गाजी के पास ही बैठ कर सांसारिक विषयों का अण्टसण्ट बातें करते रहते हैं। विशेषतः स्त्रियाँ तो उसी समय आपस में मिलने पर बे सिर पैर की बेहूदी बातें करने लगती हैं। उनकी तो भावना ही नहीं बनती है। इसका कारण यह है कि अब तक सब लोग गङ्गा स्नान करते आये हैं और सब लोग करते जाते हैं इसलिये वे भी करते हैं। गङ्गास्नान के मर्म को समझते ही नहीं हैं, वे थोड़ा-सा भी इसके महत्त्व को समझ कर स्नान नहीं करते हैं और चाहते हैं कि मुझे मुक्ति मिले। वे भी जब स्नान करके लौटते हैं तो पैर पर गङ्गा की कीचड़ लग जाती है। वापस आने पर फिर उसी कीचड़ में फंसते हैं। जो कुछ भी थोड़ा बहुत फल मिला वह भी गँवा देते हैं। ऐसा क्यों होता है, यह टटोल कर देखना चाहा तो नहा के लौटने पर देखा कि वापस होने का रास्ता ही नहीं है। दरवाजे सब बन्द हैं और देखते हैं कि वैसे वे खुलते भी नहीं हैं। तब शिर से धक्का मारा, शिर को घुसाया तो देखा कि वहाँ स्त्रियाँ बैठी हुईं चुपड़ सुपड़ कर रही हैं। इसके पश्चात् गङ्गा जी की तरफ देखा। उस समय भूख लग गयी थी। गंगाजी को पुकारा तो एक गुड्डो- सी चीनो की पुतली हाथ में मिल गयी। पुतली के नीचे बड़ा छेद था। वहाँ से जो चाहे मिल जाय, उसी से भूख की तृप्ति करो, कुछ देर बाद उसको फेंक दिया।

फिर जोर से पुकारने पर एक लट्टा ऐसी वस्तु की मिली जो चित्र विचित्र तीन रंगों से बना था। उसको घुमाने से जिस रंग में मन बस जाय उसी रङ्ग की चीज मिल जाय। लोग जब कुछ कहते हैं तो उसी को घुमाते हैं। जैसा बोल देते हैं हो ही जाता है। एक तरह का वह चक्र मिल गया। परन्तु वह बात तो रह ही गयी, गंगास्नान से मुक्ति किसको मिलती है? एक तो किनार में रहनेवालों को, क्योंकि गंगास्नान के भाव निरन्तर उनके साथ रहते हैं, लौ लगी है तन्मयता आती है। अच्छी अच्छी भावना से मुक्ति हो ही जाती है। दूसरे उन लोगों को जो स्नान करके गंगा पैदल पार करते हैं अर्थात् गंगा जिसको रास्ता देती है। इनको और कुछ करने को शेष नहीं रहता। जो गंगा में जाकर भुक्ति और मुक्ति दोनों ही चाहते हैं। वे न इधर के रहते हैं और न उधर के रहते हैं। ईश्वर तो एका (कार) है। जब तक एक ही वस्तु में अड़ान नहीं होता है तब तक वे द्वन्द्व में फँसे रहते हैं, उन्हें ईश्वर कहाँ मिलते हैं? वेद (उपनिषद्) जो कहता है कि

'नेति नेति' वह नेति नेति जाननेवाला ईश्वर है। इससे तो 'अस्ति' कहे तो सर्वत्र ईश्वर ही ईश्वर दिखता है। और 'एक एव द्वितीयो नास्ति' जहाँ 'ईश्वर के सिवाय और कुछ नहीं' यह ख्याल रखना बेहतर (श्रेष्ठ) है।

अयोध्या के विषय में उन लोगों के पूछने पर बाबा ने कहा––सत् तो सरयू है और उसकी मिट्टी भी सत् है।

किस प्रकार के हवन से ईश्वर प्रसन्न होते हैं

आज कल सांसारिक होता लोग जो हवन करते हैं, उसमें ईश्वर की पसंदगी (प्रसन्नता) किस प्रकार होती है, इस विषय को लेकर बाबा ने कहा कि—

एक बार ऊपर से देखा—नाना प्रकार के यज्ञ-यागादि होते रहते हैं, देवता एवम् पितरों को तरह तरह की सामग्रियों से पूजते हैं। वे यह समझते हैं कि यह सब करने से ईश्वर प्रसन्न होता है। इस विषय में ईश्वर से पूछा तो उन्होंने कहा कि–ठीक है लोग नाना तरह के यज्ञ करते हैं। साथ ही वे बड़े विधि-विधान से सम्पन्न करते हैं, हजारों, लाखों रुपये उसमें लगाते हैं। अन्न और खाद्य पदार्थ अग्नि में 'स्वाहा' 'स्वधा' करते हैं। इन सब कार्यों से करनेवालों का प्रतिपालन होता है और कराने वालों की भावना बनती है। परन्तु बहुत से लोगों को ईश्वर में विश्वास और भरोसा रहता ही नहीं है। विधि और वस्तु के आडम्बर में जो असली चीज है वह भूल जाते हैं। ईश्वर तो एक है, चैतन्य है व्यापक है, आत्मज्योति है और प्रकाशक है। एक भी आत्मा की यज्ञ से सन्तुष्टि हुई तो ईश्वर की पसन्दगी हुई। इस लिए अच्छी-अच्छी चीजें पशु, पक्षी, कीट एवं पतङ्ग को खिलाने से उनकी अन्तरात्मा प्रसन्न होती है। वहाँ से आशिर्वाद निकलता है। वही करने वालों को काम देता है। ईश्वर को क्या कमी है, जो संसारी लोग उतना अन्न हवि आदि अग्नि में डाल देते हैं। हाँ यदि उन्हे संतुष्ट करना हो तो मेवा, मिष्टान्न डालो, प्रेम से, भाव से, आधीनता से अर्पण करो। ऐसा करने पर वे खुश हो जाते हैं। इसलिए दीन आत्मा की सेवा ही ईश्वर की पसंदगी का एक प्रमुख साधन है।

तत्त्वों के पूजन से ही ईश्वर-पूजन संभव है।

जैसे यह पञ्चतत्त्व व्यापक है वैसे ही ईश्वर व्यापक है। सारा जगत् इसी पञ्चतत्त्व में स्थित है। इसके विना जीव को बन नहीं सकता है।

इन तत्त्वों को भी शक्ति देने वाले वही ईश्वर हैं। उसी की सत्ता से ये सब काम करते हैं।

जब हम एक जगह पृथिवी का पूजन करते हैं तो सारे ब्रह्माण्ड भर की पृथिवी की पूजा हो जाती है। उसकी आधीनता स्वीकार कर जब हम उन्हें पुकारते हैं, वस्तु समर्पण करते हैं, दण्डवत् करते हैं, चूमते हैं, शिर में लगाते हैं तो समझना चाहिये कि हमने सारी पृथिवी की पूजा कर ली।

इसी प्रकार एक स्थान पर वायु की पूजा हुई, प्रार्थना की तो क्षण भर में वह सारे ब्रह्माण्ड में फैल गया। एक जगह अग्नि की पूजा हुई तो सारे ब्रह्माण्ड के अग्नि की तृप्ति हो गयी। आकाश का तो कहना ही क्या है। उसका शब्दतत्त्व तो सब जगह सुनाई देता ही है।

इसलिये इन तत्त्वों का ज्ञान, इनका पूजन बड़े महत्त्व का है। फिर इनको सम्हालना भी तो है। विचार पूर्वक इनसे मिलना होता है। देखो, हमारे शरीर में जल तत्त्व हैं, वही सर्वत्र है। एक ही रूप है, एक ही वस्तु है। इसी प्रकार और तत्त्वों को भी समझदारी से समझने से, करने से ईश्वर की पसंदगी (प्रसन्नता) हो जाती है।

[श्री बाबा के उपर्युक्त उपदेशों से निष्कर्ष यही निकला कि पृथिवी आदि तत्त्वों के पूजन से ही ईश्वर-पूजन पूर्ण हो सकता है। इसमें यह ध्यान रखना चाहिये कि—ईश्वर सर्वव्यापक है—वह सब तत्त्वों में प्रतिक्षण व्यापक है। तत्त्व इसी के पूरक हैं। सं.]

रामायण का रहस्य

एक दिन पूज्य बाबा ने रामायण के रहस्य के विषय में विचार किया कि इसमें क्या भेद है। तो देखा कि इस रामायण में दस तक की जादूगरी है।

राजा दसरथ के चार पुत्र थे, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। इनके नामकरण में क्या रहस्य है, यह विषय विचार करने पर ज्ञात हुआ कि—

दसों इन्द्रियों से जो भजन करे वह राजा होता है। राजा दसरथ दसों इन्द्रियों से भजन करते थे अतएव वे अयोध्या के राजा हुए और उन्हें राम जैसा पुत्र मिला। भगवान् का भजन करने से भगवान् मिले,

श्री राम उनके अन्तर में उनका अंश बन गये। लक्ष्मण माने लक्ष्य= लक्ष्य यही रहा कि भजन करना है। गुरु की आज्ञा में शिष्य रहता है तो गुरु का शिष्य पर कितना प्रेम भाव रहता है। लक्ष्मण भी राम की आज्ञाकारिता में रहे, और उनका लक्ष्य राम की आज्ञाकारिता ही रही इसी से लक्ष्मण हुए।

सत्रुघुन=सत्रुगुन माने हर कोई अपने गुण को जानता है अतएव जानना, देखना और जानते रहना। हर मनुष्य को यह ख्याल रखना चाहिए; इसी को सतुर गुन कहते हैं। इसी को राम जानते थे कि हमारे नाम और गुन को जानता है और हमारा भाई है। यह सोचकर प्रसन्न रहते थे।

भरत राम को पूज्य और बड़ा समझते थे, राम उनका नाम था, नाम को लेते रहते और अपने में भरते रहते थे। भरत को सद् विचार रहता था, और राम का ख्याल और नाम भरते रहते थे, इसी से राम के प्यारे थे। नाम का ही बल और शक्ति उनमें थी। इसी से राम को बहुत प्यारे लगते थे कि इस प्रकार नाम को भरने वाला कोई नहीं है।

ये चारो भाई राजा दशरथ के यहाँ जो पैदा हुए, उसका यही भेद है।

संसार की जादूगरी का रहस्य

एक बार अपने ध्यान में पूज्य बाबा ने ईश्वर से पूछा कि—हे भगवन्! संसार में आप की कितनी जादूगरी है। ईश्वर के संकेत के अनुसार श्री बाबा ने निम्नलिखित रहस्य का अनुमान लगाया—

एक—एक ही ईश्वर है, जो संसार में सर्वत्र व्याप्त है।

दो—आत्मा-परमात्मा दो भेद हैं। आत्मा नीचे है, ऊपर के परमात्मा का भजन करती है।

तीन—त्रिगुण=माया है, ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

चार—चार वेद हैं, चार दिशा भी इसको कहते हैं। इन्द्रिय, नाभि, हृदय और कण्ठ।

पाँच—पंच तत्त्व, इनसे शरीर उत्पन्न है।

छः—पंच तत्त्वों से जब यह शरीर उत्पन्न हुआ तो सिर पर लेकर भजन करता है—इसको निरंजन देव बोलते हैं, क्योंकि इसका निराकारी काम होता है।

सात—सतो गुन=सुरता उपर में लगाने पर सतोगुन में आ गया। इसी को सत्पुरुष बोलते हैं, सर्वत्र प्रकाशमय हो गया।

आठ—अष्ट कमल, सतोगुनी होने के बाद अष्टकमल में रहकर भजन करता है, और अष्टकमल वाला हो जाता है, इसके पास अष्ट-सिद्धियाँ रहतीं हैं। निरिच्छा रहती है।

नौ—नवधा भक्ति, नव नाड़ियों में रहकर भजन करता है—देवपुत्र हो जाता है, ईश्वर का ख्याल रहता है, मुक्त रहता है।

दस—दशरथ=दस+रथ अर्थात् दसो इद्रियों को वश में करके भजन करना—जिससे राजा की पदवी की प्राप्ति।

संसार में इतनी ही जादूगरी है, इस प्रकार का बाबा ने अनुमान लगाया है। किसी के मन में ११ वीं जादूगरी—ऋद्धि सिद्धि है अर्थात्—निरिच्छा, इसमें कोई इच्छा नहीं रहती। शंकर जी का नाम ११ में आता है।

शरीर की क्या गति है (शरीर का रहस्य)

इस तन को एक इञ्जन समझ लो,
इसी के चलने खातिर ये।
नेकी बदी दो लाइन बनीं हैं,
कभी चले धीरे कभी चले जोर॥
मन चलाने वाला है
पेट के अन्दर आतिशखाना।
तावा ऐसी अग्नि जलती है,
दाल भात रोटी खाना॥
याहि में कोयला पानी रहता है,
मुँह चिमनी और साँस है धुआँ।
रह रह यही निकलता है,
अंतड़ी को तुम पाइप समझ लो।
इसी में बिलकुल मोड़ा है,
हड्डी को तुम पुरजा समझ लो
एक एक पर जोड़ा है॥
खून को तुम तेल समझ लो
जगह जगह पर छोड़ा है,
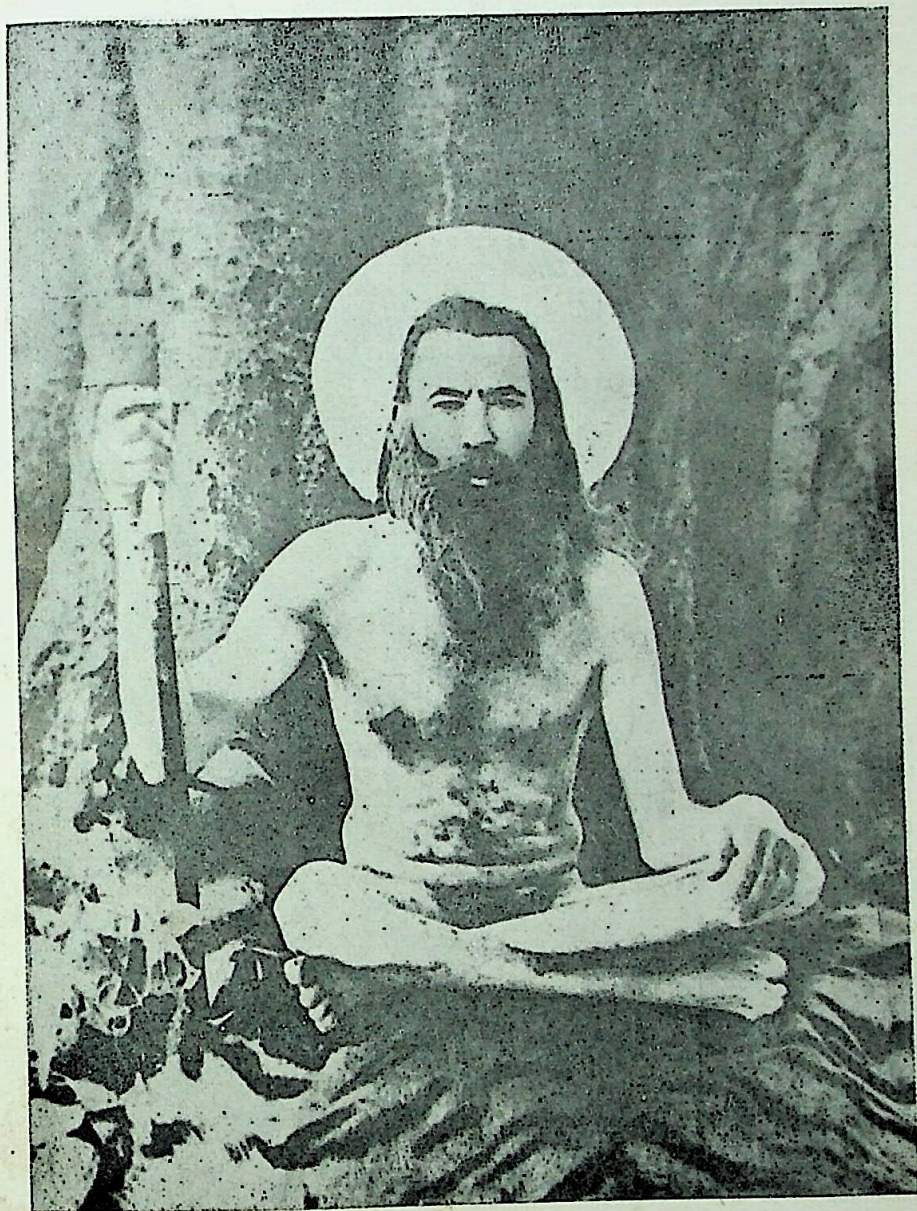
नर्मदा के तट पर (ग्वारीघाट)

सिवनी में

चमड़े को तुम पैकिंग समझ लो,
ऊपर से यह मोड़ा है।
नस को समझो टेलीफून का तार,
इस तन का कभी भरोसा न करना।
चलते चलते गया बिगड़,
बिगड़े को बीमार समझ लो,
अस्पताल है इञ्जन घर।

वहाँ बने खलासी कम्पोटर, बड़े डाक्टर कारीगर।
जो बना तो उसने बनाया, नहीं गया रद्दीखाने में।
चार जने मिल ठाठ उठावे, ले जा, दबा दे तहखाने में।

इस प्रकार की इस शरीर की गति है, ऐसा बाबा का कहना है, और यही इस शरीर का रहस्य है।

माया-तत्त्व

श्री बाबा रामस्नेही जी अपने उपदेश में कहते हैं कि—सबसे प्रबल और बड़ा तत्त्व पृथ्वी (माया) है, जिसके द्वारा समस्त जीवों का पालन पोषण होता है, अतएव इसे विश्वम्भरा कहा गया है। यह माता है, यह जीव-जंतु, कीड़ी-मकोड़ी, पशु-पक्षी सब का पालन-पोषण करती है। इस पर विजय प्राप्त करने के लिये हर समय राम का स्मरण करते रहना चाहिये तथा सरल बालक-भाव से इस पर रहना चाहिये। हवन-पूजन करता रहे, मुँह से पृथ्वी को चूमता रहे, मस्तक में हर समय मिट्टी और धूल लगाता रहे जिससे मस्तक में स्थिर प्रकाश हो। निर्मल शरीर करके हर स्थान पर दंडवत् करता रहे, पृथ्वी अगर हृदय से लगेगी तो पृथ्वी प्रेम करने लगेगी। जीवों को आशीर्वाद मिलता रहेगा। जितने भी काम यहाँ पर करे सब सत् भाव रखकर करे तो उसका रूप जानने लगेगा। सत् भावना के लिये संत् दृष्टि बहुत ही आवश्यक हैं। अतः सत् दृष्टि रखकर प्रत्येक क्षण सत् का ही साँस लेता रहे, बुरी भावनाओं को निकालते रहना चाहिये तथा अच्छे भाव उत्पन्न करते रहना चाहिये।

मंदिर में दर्शनार्थ लाखों मनुष्य जाते हैं और सत् नकल वहाँ करते रहते हैं। मन्दिर में जाकर ज्ञान और सत् भाव से दर्शन करना चाहिये। सत् भाव एवं प्रेमपूर्वक दण्डवत् करने से हृदय में प्रकाश आता है। यदि वहाँ पर मुँह लगावे (पृथ्वी चुम्बन) तो मुँह का असत्य घट जाता है

ओर सत्य आ जाता है। नाक रगड़ने से बुरे भले कर्मों की क्षमा मिल जाती है, और सत्य का निर्णय हो जाता है। नेत्र लगाने से दृष्टि निर्मल होकर माता का रूप आँखों में आ जाता है और मातृ भाव छूटकर सत् भाव बैठ जाते हैं। मस्तक लगाने से मस्तक में प्रकाश हो जाता है इसका कारण यह है कि उस स्थान पर अगणित संत, महात्मा, जोगी यती, सती आये और सब के वहाँ चरण पड़े हैं। वहाँ की धूलि मस्तक में लगाने से प्रकाश हो जाता है। यही-पृथ्वी और पृथ्वी-कोण के तत्त्वों का रहस्य है।

विषय-वासना की मलिनता (शक्तिहीन होने का कारण)

एक बार बाबा रामस्नेही जी जप-ध्यान मुद्रा में बैठे हुए राम राम कर रहे थे और राम राम की दृष्टि से ऊपर से देखने लगे। उन्होंने देखा कि स्त्री-पुरुष सब साफ एवं सफेद कपड़े पहने हैं, लेकिन उनके कपड़ों पर विषय-भोग के पानी (वीर्य) के दाग लगे हैं। इसका कारण यह है कि जब मनुष्य विषय-भोग करते हैं तब उससे निकला हुआ पानी (रज, वीर्य) सब कपड़ों में लग जाता है जो सफेद धब्बे के रूप में कपड़ों में दिखलाई पड़ता है, रंग पक्का होने से धोने पर भी नहीं छूटता है। जिनमें से धब्बे कभी नहीं छूटते ऐसे कपड़े सभी पहनते हैं और यही कारण है कि किसी में शक्ति-बल नहीं दिखाई पड़ता। सब को अन्य-मनस्क एवं अधीन देखा। बाबा ने अनुभव करके देखा कि संसारी लोगों के कपड़ों का पहनावा ऐसा ही है।

आशीर्वाद

श्री बाबा रामस्नेही जी संत लोगों के आशीर्वाद किस प्रकार फलीभूत होते हैं इस बिचार को प्रकट कर रहे हैं।

जिस मुँह से खाना खाते हैं, बातचीत करते हैं ऐसे मुँह का दिया हुआ आशीर्वाद नहीं फलता है। वह मुँह तो खाने-पीने और जिह्वा के स्वाद करने से झूठा है, कैसे फलेगा ? अगर फलता तो सारे संसार का कल्याण हो गया होता। झूठे मुँह से दिये गये आशीर्वाद पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

जब सन्तों की दृष्टि हृदय में लगी हो और वहाँ से मस्तिष्क में जाकर वहाँ की भी दृष्टि खुल जाय तब मस्तिष्क के मुँह से दिया गया

आशीर्वाद कल्याणकारी होता है। उपर्युक्त अवस्था में रहनेवाले सन्तों के मुँह से तथा नेत्रों से दिया हुआ आशीर्वाद भी तुरन्त कल्याणकारी होता है। यही आशीर्वाद प्राप्त करने का वास्तविक भेद है, रहस्य है। सत्य वाणी और सत्य दृष्टि ईश्वर के घर की है, यही ईश्वर दृष्टि है।

वैसे तो लेने देने से, पैसे-कौड़ी से भी आत्मा संतुष्ट होकर प्रसन्न हो जाती है। कुछ लोग छोटे बड़े रूप देख कर एवं प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे देते हैं। वे इन्द्रियों के चोर नहीं होते, मन के चोर नहीं होते हैं, ईश्वर के प्रति सच्चा विश्वास और भाव रखते हैं; इसी का ख्याल रखते हैं, इस प्रकार के लोगों के द्वारा दिया गया आशीर्वाद भी कुछ लग जाता है, परन्तु कम ही लगता है। इस भेद को संसारी मनुष्यों को जानते रहना चाहिये तथा समय पर इसका अनुभव करना चाहिये। बाबा का मत है कि यह साक्षात्कारी है।

श्री बाबा रामस्नेही जी इस विषय में और कहते हैं कि एक आशीर्वाद संसारी मनुष्यों का होता है। जब मनुष्य की आयु अधिक हो जाती है तब उसकी इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, परन्तु उसका मन शुद्ध नहीं होता है। वह सूरत देख कर और तृष्णा को बढ़ाकर मानसिक पाप करता रहता है।

जब उसको कोई छोटा बनकर प्रणाम करता है, बालक भाव से करता है तो वह मोह का आशीर्वाद दे देता है। यह आशीर्वाद भी ग्रहण करनेवाले को कम ही लगता है, फलीभूत होता है। इसका कारण यह है कि मानसिक पाप करते रहने के कारण उसकी शक्तियों का क्षय होता रहता है और अंत में वह दुःखभोगी होता है। यह प्रत्यक्ष ही देखने में आता है। एक समान के पुत्र और पुत्री हैं जो, माता-पिता को प्रणाम करते रहते हैं और माता पिता भी उनको चूमते रहते हैं। उनसे आयु में जो बड़े होते हैं उन्हें बड़ा समझकर प्रणाम करते रहते हैं, नम्र बने रहते हैं। उनको छोटे बनने की सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वे बलवान् बने रहते हैं। इस प्रकार करने से पृथ्वी नमस्कार भी हो जाता है, साँस की हवा की शुद्धि रहती है और उसकी आत्मा शक्तिशाली हो जाती है।

बीज-महिमा

श्री बाबा रामस्नेही जी का उपदेश है कि—राम का सुमिरन करते रहो, मन को उसी में लगाये रहो तो मन उसी काम में लगा रहेगा,

उसे किसी वस्तु की इच्छा नहीं रहती है, केवल नाम में ही मन लगा रहता है। परन्तु इन्द्रियाँ कभी कभी रस से भर जाती हैं, उनमें पानी भर जाता है। जब सुरता के साथ मन और मन के साथ सुरता लगी रहती है तो उन इन्द्रियों को भोग नहीं मिलता है। क्योंकि सुरता तो ईश्वर के सत् काम में लगा रहता है। यह होने पर भी इन्द्रियाँ समय समय पर उत्तेजित होकर बोलती रहती हैं, शब्द देती रहती हैं। उनके शब्द सुनकर जोगी लोग संसार का पालन-पोषण किया करते हैं तो वह सत्य होता है। उसके वाद में शब्द होता रहता है, अपने आप से बात करता रहता है। उनके विचार पवित्र रहते हैं और पवित्र बालक रूप बने रहते हैं।

माताएँ दो प्रकार की होती हैं, एक माता तो इस संसार की होती हैं जिसने कि पैदा किया है। इसके अतिरिक्त दूसरी एक पवित्र माता उसकी और होती है। जो वालक रूप होकर जोग करता है। वह लड़का जोग करते हुए, ईश्वर में सुरता व मन लगाये हुए, नाम का जप करते हुए, जहाँ जहाँ जाता है, वहाँ वहाँ यह पवित्र माता भी साथ में ही जाती है। वह कभी प्रगट रहती है और कभी गुप्त रहती है। उसका स्थान हृदय के भीतर में जहाँ मन रहता है वहाँ ही उसकी माता भी रहती है। जब माता मन की पवित्र होती है तो लड़का भी पवित्र होता है, उसे और इन्द्रियों का ख्याल नहीं रहता है। मन नाम की सुरता में लगा रहता है। इस कारण वह जहाँ भी लड़का बनकर जाता है वहाँ माता भी साथ में ही रहती है। जिस प्रकार संसारी मनुष्यों को कभी कभी स्वप्नदोष हो जाता है उस प्रकार योगियों को नहीं होता है। जब वहाँ बहुत भर जाता है, तब वहाँ से शब्द होता है कि माता आ रही है। इस प्रकार वे जोगी पुरुष सावधान हो जाते हैं और चैतन्य होकर देखने लगते हैं कि माता कहाँ से आ रही है, साथ ही यह भी देखते हैं कि उसके कुछ देर बाद उनका अपना बीज गिरता है। तब वे समझ जाते हैं कि यह बीज ही माता है। देखो ? कितने ही दिनों में इसमें कैसी कैसी गति बनी और कैसी बिगड़ी, संसारी मनुष्य इस बात को न जानने के कारण अपने बीजों की कीमत नहीं समझते हैं। यही बीज शरीर में अन्न, जल, दूध, घी, फल और फूल आदि के प्रभाव से बनता है। जो कि बहुत ही कीमती होता है। इसकी महिमा को अल्पज्ञ लोग नहीं समझते हैं।

श्री महाराज इसके सम्बन्ध में आगे बताते हैं कि—फिर वही बीज कहीं भोग का अनुभव करने के बाद नाम के प्रभाव से निकल पड़े और भोग बन्द कर दिया तो वह बीज इन्द्रिय के भीतर से गिर जाता है। पश्चात् वह बोलता है कि—मैं बच्चा हूँ, आ रहा हूँ।

देखो! इस बीज की महिमा कैसी है, जिसे जोगी पुरुष ही अनुभव करते हैं। संसारी मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। जितनी बार वह नाम लेते हुए, राम राम कहते हुए चला जाता है, उतना ही उसका जोग बनता जाता है, आगे जाकर कभी देखता है कि वह बीज फिर कभी गिर जाता है, और एक लड़की तथा उसकी मां दिखायी देती है, बाबा रामस्नेही जी से वह कहती है कि हम तुम्हारी बहिन हैं। देखो, नाम की महिमा यह है कि, बाबा रामस्नेही जी ने नाम को पहले अन्तः-करण में कैसे रटा? और इन्द्रिय किस प्रकार मनुष्य की तरह बोली एवं उसे सुनकर बाबा संसार का पालन उसके शब्दों से उसे भगवान् समझ कर तथा विश्वास करके करते थे, फिर बाबा पवित्र बालक बन गये। वही इन्द्रिय जोग पुरुष के हृदय में माता बनकर रहने लगी। जो पहले भगवान् था वही अब माता बन गई। बालक की सहायता करने लग गई और जहाँ भोजन की, दूध की कमी हो सब देती थी। पालन-पोषण करती थी। वह कभी गुप्त और कभी प्रगट रूप में साथ साथ रहती है। कहीं फँस जाने से और भोग करने से वह माता रूप में गुप्त हो जाता है, फिर राम राम को रटता है, राम नाम नहीं छोड़ता है, गुरु के आश्रय में रहता है, तत्त्वों का काम करता है; नाम की महिमा प्रकट करता रहता है। गुरु के तत्त्वों का साखी देकर राम नाम रटा, जोगी हो गये, लँगोटी को पक्का कर लिया, फिर कभी वह बीज गिर गया, तब भीतर से आवाज देकर चला और बच्चा बन गया। दूसरे समय गिरने से वह लड़की और माता बाबा को फिर दिखाई दिये। फिर वह कहने लगी कि—संसार की उत्पत्ति इन्द्रिय के बीजों से ही है। क्योंकि वह बहिन, माता, लड़की, लड़का और पति समयानुसार बन जाता है।

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि देखो, यही बीजों की महिमा है।

मानसिक पाप

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि—देखो, एक स्त्री की भावना से एक कन्या पैदा हुई और उस स्त्री ने उसका पालन पोषण करके बड़ा

बनाया। उस कन्या को देख देख कर पिता का भाव बिगड़ता रहता है, मन दूषित होता रहता है और वह अपनी इच्छा दौड़ाता रहता है। परन्तु (पिता) संसार के भय से कुकर्म से बचा रहता है।

इसी प्रकार पिता की भावना से पुत्र उत्पन्न हो जाता है और बड़ा होने पर उस पुत्र का भाव भी बहिन को देखकर दूषित होता रहता है, और उसके भोग की इच्छा बलवती होती रहती है। परन्तु वह भी भय और बुराई से डरकर संसार में कुकर्म से बचा रहता है। इस प्रकार का मानसिक पाप सारा संसार करता रहता है। माता, पिता, पुत्र, पुत्री सभी शरीर के द्वारा कुकर्म न करते हुए भी मानसिक पाप में फँसे रहते हैं। वृद्धावस्था के कारण जिनकी इन्द्रियाँ भोग करने में असमर्थ होती हैं उनका मन भी रूप देख देखकर अंदर ही अंदर चलता रहता है और उनसे भी मानसिक पाप कराता रहता है। देवियाँ नेत्र से देख कर दृष्टि के द्वारा अंदर भावना दूषित करके मन के चंचलतावश मानसिक पाप करती हैं।

इन मानसिक पापों से अनेक प्रकार के रोग मनुष्य के शरीर में उत्पन्न हो जाया करते हैं, और इस प्रकार उसे अपने कर्म का फल स्वयं ही भोगना पड़ता है। वह जैसा मानसिक पाप करता है उसी प्रकार के रोग उसके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अनेक प्रकार के मानसिक पापों से शरीर में दर्द, पीड़ाएँ उत्पन्न होती हैं। जीव को जब उन पीड़ाओं से अत्यधिक कष्ट पहुँचता है तब वह दुःखी होकर माता, पिता, पुत्र और मित्र को पुकारता है। किन्तु उसके दर्द का उसके अतिरिक्त और कोई भोगने वाला नहीं होता है। मनुष्य को निरंतर इस प्रकार के अनुभव होते रहते हैं, फिर भी मायावश उस रोग की भयंकर पीड़ा को भूलकर पूर्ववत् वैसी ही भावनाएँ बनाकर मानसिक पापों में लिप्त हो जाता है।

मानसिक पाप जीव को स्वयं भोगना होता है, उसमें कोई भागीदार नहीं होता है, परंतु भाव शुद्धि होने से सहनशक्ति बढ़ जाती है। इसलिये भाव जितना शुद्ध होगा उतना ही मनुष्य को शान्ति और सुख मिलेगा। अतः यदि आर्य भाव से हृदय में ईश्वर को स्मरण करे तथा किये गये दुष्कर्मों के लिये पश्चात्ताप करे तो परम दयालु ईश्वर उसके सब अपराधों को क्षमा कर देते हैं। श्री बाबा का कहना है कि यह साक्षात्कारी है, समय पर संसारी जीव अपने शरीर में देखता रहे, भूले नहीं, यही बचने का सहज उपाय है। _

मणि

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि मनुष्य को सदैव राम राम का जप करते रहना चाहिये। मन तथा शरीर से जो ध्याता ध्यान और ध्येय को एक बनाकर भजन करता है, निःस्वार्थ, निष्काम और इच्छा रहित नाम लेता रहता है, सबका पालन-पोषण करता रहता है, पशु पक्षी, जीव-जन्तु, पृथ्वी, आकाश, वृक्ष आदि सब को ईश्वर का स्वरूप मानकर सबसे मिलते हुए जाता है, राम राम का स्मरण निराधार, निराकार निष्काम और निर्बल अथवा अहंकार रहित करता है, कम भोजन करता है तथा आलस्य और निद्रा का त्याग कर देता है वह मणि को प्राप्त करने का अधिकारी होता है।

उक्त प्रकार का व्यक्ति अन्तःकरण से मन लगाकर आठ साल तक एक साथ दिन और रात जप करता है, क्योंकि जब राम-नाम का भजन दिन-रात चौबीस घंटे लगातार करता है तो एक महीने के बराबर फल देता है, इस प्रकार एक मास करने से ढाई साल की गिनती होती है। इस प्रकार के आठ बर्ष २४० बर्ष तपस्या के हो जायँगे। इस प्रकार २४ घण्टे राम राम का भजन करते रहना बहुत कठिन होता है।

अगर कोई पुरुष इस प्रकार ध्याता, ध्यान और ध्येय को एक करके निष्काम भजन करता है तो आठ साल की तपस्या में ही उसके अंदर से एक मणि हृदय में से तीन इंच मोटी और आठ इन्च लम्बी निकल पड़ती है। इतने परिश्रम से जो मणि प्राप्त हुई है, देखिये उसका क्या मूल्य है? और इसमें क्या करामात है? ऐसी जिज्ञासा होने पर पता लगा कि अगर कोई भी जीव, मनुष्य, पशु, पक्षी मर गया हो तो उस मणि का प्रकाश लग जाने से जीवित हो जाता है, तुरन्त ही उठ कर खड़ा हो जाता है।

अगर भोग करने की इच्छा हो तो उस मणि को बेच भी सकता है। अगर नहीं बेचे तो उसका मरण कभी नहीं हो सकता है। क्योंकि अगर उस मणि को संसार की माया के हाथ राजपाट भोग-विलास करने के लिये बेच देता है तो भोग विलास राजपाट करके विषयों को तो खूब भोग लेता है, परन्तु विषयों के भोग से वह मिट जाता है और उसका जीवन नहीं होता है, उसका कहीं पता भी नहीं लगता है। वह मनुष्य योनि में भी नहीं आता है और चौरासी लाख योनियों में भटकता रहता है। अगर भोगी की इच्छा राजपाट, स्त्री, धन, जायदाद एवम् सन्तान की

ओर नहीं रहे तो कभी वह मर ही नहीं सकता, सदैव के लिये सशरीर अमर हो जायगा। साथ ही काया भी अमर हो जायगी। राम राम की यही महिमा है। राम राम जपने से ही यह मणि प्राप्त होती है। वह मणि निकाल लेता है और किसी लोक में किसी स्थान पर रख देता है, जिसको कि मनुष्य नहीं पावे।

श्री बाबा रामस्नेही जी ने भी जब वह मणि पाया तो एक मरे हुए तोते में रख दिया और उस तोते को संकल्प के द्वारा सात समुद्र पार टापू पर जहाँ मनुष्य न देख सके, छोड़ दिया। तोता जिस स्थान का संकल्प था वहाँ पहुँच गया, और बाबा फिर अपने राम राम स्मरण के काम में लग गये। राम राम रटते रटते फिर राम का रूप ही हो गये। राम सारे शरीर में ही रम गया। राम राम हीं उनका लेना देना, खाना, पीना, चलना, फिरना, बोलना, सुनना, रहना सब कुछ हो गया। राम नाम की सुरता लगी रहती है, और मस्तक ऊपर खिचा रहता है। राम राम का ही ख्याल रहता है। उनके मुख की बोली इसी से सिद्ध होती है। देखो, राम राम की महिमा तो बहुत भारी है, क्या कोई नर पावेगा। जो गावेगा वही पावेगा, सोई गुण गावेगा सोई बतलावेगा। वह मारे मरता नहीं है, काटे कटता नहीं है, जलाये जलता नहीं है, डुबाये डूबता नहीं है, उड़ता रहता है। कोई योगी ही उस गति को राम राम के गुण गाकर निष्पक्ष, निःस्वार्थ और निरिच्छा विषय और माया से रहित होकर जानेगा, वही इसकी महिमा कह सकेगा। योग (जोग) प्रकृत्ति अमर है, इसकी आत्मा अमर है।

भजन का उपाय

श्री बाबा रामस्नेही जी का कथन हैं कि, सब मनुष्य भजन की नकल ही करते रहते हैं, वे अपने मन में ऐसा समझते हैं कि हम ठीक ही कर रहे हैं। परन्तु उसको असत्य का कोई ज्ञान ही नहीं है कि असल कैसा होता है। कोई माला फेरता है, कोई मुख से नाम लेता है, कोई हृदय में ध्यान करता है, कोई ऊपर से हाथ जोड़ता है और ऊपर की ही नकल करता है। कोई ऊपर से ही चिल्ला-चिल्ला कर सुनाता है और दिखाता है। कोई वेदों के स्वाध्याय का अभिमान रखते हैं कि हम बहुत पढ़े हैं, और यह कि हम नहाते हैं, धोते हैं, पूजन करते है, बहुत छूआछूत करते हैं और मानते हैं। ये सभी बातें नकल हैं। देखना

चाहिये कि इस नकल से क्या होता है, असली होता है या झूठे ही नकल में फँस गया है। अगर हृदय में सत् का ध्यान और शरीर में चैतन्य रखता रहे तो झूठी नकल करते-करते असल अवश्य हो जाता है। असली रूप में भी जो करता है, (यद्यपि वह अन्तःकरण से सब असली ही करता रहता है) परन्तु बाहर से जो अनेक प्रकार के कर्म, पूजा आदि वे भी संसार की दृष्टि में नकली ही दिखाई देती है, और संसारी मनुष्यों को भ्रम के कारण उसके सत् कर्म में कोई प्रेम भावना नहीं होती है। सत् भाव वाला तो सत् भाव से अपना कर्म करता रहता है और अपने कर्म से वह जीवन्मुक्त हो जाता है।

उसके शरीर की रक्षा होती रहती है। जीव का कल्याण हो जाता हैं। शरीर में प्रकाश रहता है, सदैव सत्कर्म की प्रकृति बनी रहती है, अधीनता रहती है, सब तत्वों से मिला रहता है। पशु, पक्षी, कीड़ी, मकोड़ी सब से मिल कर सब का अपना ही स्वरूप हो जाता है। और जिसको जहाँ याद करो वहाँ पर वह सहायता करता है। यह साक्षात्कारी है।

ध्याता, ध्यान और ध्येय

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि राम राम कहता रहे, राम राम करता रहे, ध्याता, ध्यान और ध्येय जब तीनों एक बने रहे और निराधार, निराकार और निष्पक्ष रहे, अन्तरात्मा में सदैव सत्य को धारण किये रहे, उसके बाद जितने भी पदार्थ संसार में हैं सब मनुष्य को लुभाते रहते हैं। कभी तो नाम का रस होकर मिठाई बन जाती है जिसमें जीव लोभ में पड़ जाता है, परंतु जीव देखता है कि यह नाम की ही मिठाई है ऐसा अन्तःकरण में समझकर आँसू गिराता रहता है। क्योंकि अनेक फल-फूल पदार्थ राम नाम बन कर लोभ युक्त करते रहते हैं। गद्दी, तकिया, सुन्दर बिछौने उसी नाम के रूप दिखाई देते हैं। सवारी, घोड़ा आदि अनेक प्रकार की भोग-सामग्री एवम् रूप, रंग, सौन्दर्य सब उसी नाम के स्वरूप होकर ललचाते रहते हैं और इस प्रकार जीव को गिराने का निरन्तर प्रयत्न करते रहते हैं।

किन्तु यह सब होने पर भी बाबा रामस्नेही जी कभी लोभ को प्राप्त नहीं हुए और बारह वर्ष तक इसी प्रकार रोते रहे क्योंकि वे समझते थे कि यह नाम का ही रूप है। निर्मल आत्मा होकर सदैव

बहुत रोते रहते थे। यह देखकर परब्रह्म को बहुत दया उत्पन्न हुई क्योंकि बाबा कहीं भी लोभ को प्राप्त नहीं हुए थे। इस कारण अपने साक्षात्कार में उठाकर रख लिया और माया में न फँसने के कारण उनकी ब्रह्मदृष्टि हो गई। यह योग की ऊँची श्रेणी है और साक्षात्कारी है। कोई भी समय पर देख सकता है।

मन के ही द्वारा मुक्ति है

(मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः)

श्री बाबा रामस्नेही जी अपने उपदेश में कहते हैं कि मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है, यह तो ठीक है किन्तु किस मन के द्वारा जीव बँध जाता है और किसके द्वारा मुक्त रहता है, यही यहाँ विचारणीय है।

बाबा हर समय राम के नाम में लगे रहते थे, सत् का काम, सत् का ध्यान, भीतर बाहर दोनों का त्याग भी सत् ही था। पवन साखी था, नाम के रूप में राम राम का ही काम रखते थे, अग्निदेव का पूजन करते थे, अपने काम में मस्त रहते थे, केवल अपने कर्म की ही आशा रखते थे। सत् का टुकड़ा उनके पास सदैव तैयार रहता था, क्योंकि जहाँ सत् कर्म है, वहाँ निर्भय और निष्काम भी है। इसी धारणा के अनुसार एक दिन बाबा अग्निदेव का पूजन कर रहे थे कि एक माता जो कि माया ही थी, कौन माता ? वही जो संसार में पुत्र पैदा करती है और जो लड़कों से माया और ममता बहुत रखती है। वह ५६ प्रकार के भोजन तैयार करके अपने बेटे मन को साथ लेकर बाबा के पास आयी। बाबा उस समय पूजन कर रहे थे, ईश्वर में ध्यान था। मन की माता ने अपने लड़के मन को भेजा कि महाराज को बुला लो मन ने बहुत पुकारा। श्री महाराज उस समय पूजा में लगे थे। कुछ शब्द तो कान में आये, किन्तु ईश्वर की पूजा में लगे रहने के कारण मन की बात नहीं सुनी। इस कारण मन क्रोधित होकर चला गया, क्योंकि मन भी भगवान् है। उसके पास धन, दौलत, मकान हैं और शरीर भोग विलास करता है, निर्वंचन रहता है, परंतु मन की माता वहीं पर खड़ी रही और भोजन की थाली हाथ में लिये रही। इतने में बाबा पूजा समाप्त करके बाहर निकले तो देखा कि--मन की माता हाथ में थाली लिये खड़ी है। श्री महाराज विचार करने लगे कि यह भोजन की थाली अगर हम दिल से प्रसन्न होकर ले लेते हैं तो यह हम से सिद्धि पा जाती है।

इसके पास धन दौलत तो है ही। हम अगर भोजन ले लेते हैं तो यह और अधिक पा जाती है, अगर नहीं लेते हैं तो लौट जाती है, तथा दिल से दुःखी हो जाती है। ऐसा विचार कर बाबा ने सोचा कि अगर हम इस थाली को वेमन से ले लें क्योंकि मन तो क्रोधित होकर चला गया है, वह जीव-जंतु कीड़ी और मकोड़ी के काम में लग जायगा। जब उनमें डाल देंगे तो उनकी आत्मा संतुष्ट होने पर उधर से आशीर्वाद मिल जायगा। यह सोचकर श्री महाराज ने थाली मन की माता से ले ली, वह चली गयी। उनकी सुरता हर समय लगी रहती है और आकाश में खिची रहती है। नाम का रूप रटता है, ख्याल हृदय में रहता है। यही बाबा का लक्षण है और यही रूप है।

आत्मा का उत्तर

एक बार श्री बाबा रामस्नेही जी ने परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना की कि 'हम पढ़े लिखे नहीं हैं, और हर समय आप का नाम लेते रहते हैं, ऐसी अवस्था में यदि कोई ऋषि, मुनि, महात्मा, विद्वान् पुरुष कोई बात पूछेगा तो हम कोई उत्तर नहीं दे सकेंगे। इस पर परब्रह्म परमात्मा ने उत्तर दिया कि जो भी कोई जो बात पूछेगा, उस प्रश्न का उत्तर तुम्हारे अंतर (हृदय) से मैं दूँगा। बाबा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और यह कहने लगे कि यदि आप सदैव अंदर से उत्तर देंगे तो मेरी सुरता सदैव आप में ही लगी रहेगी। बाबा के अन्दर परमात्मा सदैव ज्ञान का मार्ग दिखाते रहते हैं। यह साक्षात्कारी है।

ईश्वर-दृष्टि

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि राम राम की पढ़ाई पढ़ने से अर्थात् निष्काम, निरासक्त रहने से मनुष्य में दैवी शक्तियों का वास रहता है और ईश्वर-भक्ति प्राप्त होती है। इसकी दृष्टि जोग दृष्टि है, ऊपर की दृष्टि साखी दृष्टि है, देखता हुआ है, बिना कान के सुनता है। सम है। सब का विचार, सब की धारणा एक है। अपना सब एका समझता है, सब में अपना ही समझता है, राम ही समझता है। ऊपर का ही सुनता है, वही ख्याल रखता है, किसी में लिप्त नहीं रहता है कर्त्ता, धर्ता, लेता, देता सब से अलग रहता है। करनेवाला करानेवाला अपने आप होता है। उसके ऊपर और कोई नहीं होता है, एका ही रहता है, तत्त्वों से भी वह मिला रहता है। तत्त्व को ही सत्

समझता है। इसी से एका रहता है, यह तो ईश्वर की दृष्टि, ईश्वर का जोग है।

संसारी-दृष्टि

संसारी दृष्टि में अहंभाव रहता है, नीचे की दृष्टि रहती है, नीचे का ख्याल रहता है, नीचे को ही देखता है, नीचे का ही सुनता है, कान का सुनता है। बुरा भला का ख्याल रखता है। मानसिक पाप करता रहता है। धन, सम्पत्ति का अभिमान तथा पढ़ने लिखने का अहंकार रखता है। अपनेपन का गर्व तथा लोभ लालच रखता है। तत्त्वों का ज्ञान नहीं रखता है। जल के स्वरूप को नहीं समझता है। अग्नि का रूप न जानने के कारण क्रोध- अभिमान, अहंकार को धारण किये रहता है। वायु से अनभिज्ञ होने से जिधर दृष्टि पड़ती है साँस बदलती रहती है। भावके रहस्य को न समझने के कारण सत् का त्याग और असत् को धारण किये रहता है और तत्त्वों की मानसिक हवा अंदर में रखे रहता है, इसी कारण भोगता रहता है, पृथ्वी को प्रणाम नहीं करता, चूमता नहीं, ईश्वर पर विश्वास नहीं करता है, मोह में बँधा रहता है। इस कारण ही उसे ईश्वर का ज्ञान नहीं होता है। ईश्वर के ज्ञान में यही सब वस्तुएं बाधा डालती हैं। उसका ध्यान नहीं करने देता, जो पूजा और नकल भी करते हैं ऊपर से ही करते हैं, माला फेरते समय भी ध्यान नहीं लगता है, सब काम में जल्दी ही लगी रहती है। इस कारण संसारी जीव का ईश्वर सम्बन्धी कोई भी काम असली नहीं होता है, सत् नहीं होता है।

अगर मनुष्य संसार की मोह-ममता छोड़ कर, विषयों से ध्यान हटाकर पाँच मिनट भी ईश्वरका सच्चा काम करे और अपनी पीड़ा दुःख दर्द देखकर कातर भावसे अश्रुपात करते हुए रो रो कर कहता है कि हे प्रभो। तुम ही सब कुछ हो, ऐसा समझ कर जो हृदय से प्रार्थना करता है उसका चित्त निर्मल होकर शुद्ध हो जाता है और उसको ज्ञान हो जाता है। संसारी जीवों की ऐसी ही दशा है। अपना आत्म-निरीक्षण करके दोषों को दूर करने का प्रयत्न तो नहीं करते हैं। किन्तु जोगी लोगों से तर्क करते रहते हैं।

अहं ब्रह्माऽस्मि

श्री बाबा ने कहा कि किस प्रकार जीव ब्रह्म हो जाते हैं, और ब्रह्मलोक में आत्मा बनकर वास करते हैं इसका रहस्य जानना चाहिये।

एक समय का बाबा का अनुभव है कि—वे दिन-रात राम राम का सुमिरन करते हुए केवल नाम का ही काम करते थे और नाम का ही ख्याल रखते थे। झाड़, वृक्ष, पृथ्वी जहाँ भी बैठते थे उसे चूमते थे, नेत्र लगाते थे, मस्तक लगाते थे, पशु-पक्षी आदि सब जीव-जन्तुओं को राम का ही रूप समझते थे, दुखी होकर ईश्वर में ही लगे रहते थे और विचार करते थे कि संसार में 'अहं ब्रह्म' का अहंकार बहुत बढ़ गया है, ऐसा विचार होते ही एक मनुष्य आकर सामने खड़ा हो गया। उसके हाथ में सूत का गोल पिंडा था। फिर वह अदृश्य हो गया और थोड़ी देर बाद ऊपर से एक सूत की डोरी बाबा रामस्नेही के पास आकर गिरी तो बाबा ने सोचा कि एक मनुष्य सूत का पिंडा हाथ में लिये खड़ा था, संभव है उसने ही फेंका हो, ऐसा विचार करते ही सूत से आवाज आयी कि 'जो तुम विचार करते हो, हम वही हैं, अब तुम मेरे सूत की ओर देखो। बाबा ने देखा कि सीधी डोरी सफेद रंग की थी, जिसमें हरे रंग का सूत आड़ा लगा हुआ था। ये सब रंग संसारी विषय भोगों के थे। बाबा उसे देखकर बीच की सफेद डोरी पकड़ कर दोनों ओर पैर रख कर ऊपर चढ़ गये, ऊपर पहुँचने पर देखा कि—वहाँ एक गद्दी लगी है, उस पर एक छत्र नीले रंग का है, जिसमें मोतियों का काम है गद्दी को खाली देखकर बाबा उस पर बैठ गये। तब उनको वहाँ 'अहं ब्रह्मास्मि' का ख्याल हुआ, तब ऊपर से आकाश-वाणी हुई कि आप खड़े होकर देखो, जब खड़े हुए और गद्दी से उतर कर थोड़ी दूर गये तो वहाँ जमीन के बराबर जगह देखने में आयी, वहाँ देखा कि एक संत बैठे हुए हैं तथा उनका ध्यान ऊपर का ही है। बाबा भी उनके पास ही जाकर बैठ गये और मन में विचार किया कि—संत जी हम से कुछ बात करेंगे। किन्तु बाबा ने देखा कि—वे नेत्र बंद किये हुए हैं और उनको ऊपर का ही ख्याल है, संसार का कोई ध्यान नहीं है। बाबा ने विचार किया कि—इनको भोजन कराने कोई अवश्य आवेगा। किन्तु कुछ देर बीत जाने पर भी कोई भोजन देने नहीं आया। तब बाबा ने जब उनके मुँह की ओर देखा तो देखते हैं कि उनके मुँह में मकड़ी के तार की तरह एक अमृत की धार लगी है। यह देख कर बाबा ने विचार किया कि इनकी सेवा कोई नहीं करता है क्योंकि अमृत की धार मुँह में लगी रहने से इनकी आत्मा संतुष्ट है। बाबा ने सोचा कि अगर यह बोलते तो हम भी यहीं रह जाते। परन्तु उन्होंने देखा कि कोई किसी से बोलता नहीं है, सब अपने अपने ध्यान में बैठे हुए

हैं। कोई ठीक नहीं इनका ध्यान कब टूटे। अतः जी (मन) न लगने के कारण जिस गद्दी से उठकर गये थे उसी गद्दी पर आकर बैठ गये और जिस रास्ते से ऊपर चढ़ कर गये थे उसी रास्ते से लौट आये। जब नीचे आ गये और संसार में ख्याल हुआ तो विचार करने लगे कि अब हम ब्रह्म आत्मा हो गये क्योंकि जाने आने का मार्ग देख लिया। अब जब यहाँ पर कोई कहेगा कि हम ब्रह्म आत्मा हैं तो उनकी बात का कैसे विश्वास करेंगे।

बाबा ने देखा कि जो सीधी सफेद डोरी होती है वह तो साक्षात् ब्रह्म की ही थी, और अनेक रंग की जो आड़ी तिरछी डोरी होती है, उनमें अहं की लाल रंग की डोरी होती है और तमो गुण की कत्थई रंग की होती है। इस प्रकार सभी जीव किसी न किसी रंग में रंगे हुए दिखाई देते हैं। कोई कण्ठीमाला में मस्त है, कोई कमण्डल में है, कोई सिर घुटाने में घमंड करता है, कोई ध्यान के गर्व में है, किसी को भजन करने का अभिमान है, कोई रंगे कपड़ों के और कोई पूजा-पाठ के गर्व में डूबा है, कोई गीता और वेदशास्त्र के अभिमान में है। कोई मंदिर आश्रम के स्वामी होने के अभिमान में फँसा है। कोई पंथ और सम्प्रदाय का अभिमान लिये बैठा है, कोई वेष की श्रेष्ठता का गर्व करता है। बाबा का कहना है कि ईश्वर तो एक ही है यानी परब्रह्म की डोरी तो एक ही है और शेष अभिमान की डोरियाँ हैं। ब्रह्म की डोरी तो कोई बिरले ही संत होते हैं।

शुद्ध ब्रह्म कैसे जीव हुआ

श्री बाबा शुद्ध ब्रह्म के विषय में बता रहे हैं कि राम राम के नाम का जब रूप हो जाता है, नाम का ही काम रखता है, तत्त्वों की साखी रखता है, नाम को उड़ाता रहता है। इस प्रकार नाम का रूप बन जाने पर केवल ध्यान ही रहता है। यही सहजावस्था कहलाती है। जब ऐसी सहजावस्था प्राप्त हो जाती है तब श्री महाराज कहते हैं कि वह स्वयं ही ब्रह्म का स्वरूप हो जाता है। बाबा का ध्यान जब खुला तो देखते हैं कि एक चौराहा है, यह चौरास्ता चार वेदों का हो या चार दिशाओं का हो अथवा चार प्रबल इन्द्रियों भोगेन्द्रिय, नाभि, हृदय और मुंह का ही हो। उस चौरास्ते पर एक सुन्दर स्त्री चारों मार्ग पर दौड़ती हुई दिखायी दी जो छाती पीट पीट कर रो रही थी और कह रही थी कि—हाय मेरा पति चला गया अब कौन रोटी खाने को

देगा। इस प्रकार विलाप करती हुई, तथा हाय हाय करती हुई स्त्री को बाबा अपनी ब्रह्मस्थिति से देखने लगे तो ज्ञात हुआ कि यह माया रूपी स्त्री है। बाबा वहाँ पहुँचकर उसको डाँटने लगे कि क्यों इधर-उधर दौड़ती है तो उसने उत्तर दिया कि, मेरा पति चला गया, अब कौन मुझे रोटी खाने को देगा। यह बात सुनकर बाबा को बहुत दया उत्पन्न हो गयी और दया के कारण बोले कि हम तेरे पति हैं और तुझे खाने को रोटी देंगे। बाबा के इस अहं भाव से ही जीव की उत्पत्ति हुई। आगे जब वह स्त्री बाबा के साथ साथ चलने लगी तो बाबा को भय हुआ कि कहीं यह किसी दूसरे की स्त्री हो और वह आकर मारने लगे, क्योंकि वे पति बनने का वचन दे चुके थे,। इस कारण मन में भयभीत हो गये, फिर भी रूप के लोभ से साहस किया कि बचन दे चुके हैं, अब जैसा होगा सह लेंगे। इस विचार से जो ममता हुई वही मोह का कारण बनी। आगे आगे वह स्त्री और पीछे पीछे बाबा चलने लगे और कुछ दूर जाकर वह स्त्री एक मकान में घुस गई, बाबा मकान के बाहर से ही लौट गये और जहाँ से चले थे वहीं पर एक रास्ता, दो रास्ते, तीन व चार रास्तों पर चल कर जहाँ पहले ध्यान करते थे वहीं आ गये। फिर उस स्थान से ध्यान द्वारा देखा कि उस वचन का क्या हुआ, तो देखते हैं कि उस स्त्री के अंदर बीज हो गया है और वह स्त्री रूपी माया गर्भवती हो गई है, फिर कुछ दिनों बाद बाबा ने ध्यान द्वारा देखा कि उस स्त्री को एक पुत्र हो गया है, वह खेल रहा है। फिर दूसरी बार उस स्त्री की रचना को ध्यान द्वारा देखने लगे तो देखा कि वही स्त्री स्वयं लड़के के बराबर की लड़की बन गयी है और अपने पुत्र की सेवा की थी, इस कारण जो मोह उत्पन्न हुआ उस मोह में जो स्त्री की वृत्ति फँस गई सो उस कारण अपनी शक्ति से वह स्त्री उस लड़के के बराबर की लड़की बन गई और वही उस लड़के की चित्तवृत्ति बन गयी। बाबा ने देखा कि कि इस प्रकार से एक जोड़ा ब्रह्म और माया से तैयार हो गया और फिर दोनों ही वहाँ से एक साथ ही अदृश्य हो गये। सृष्टि रचना का यही क्रम दिखाई दिया। बाबा का कथन है कि यह प्रयोग साक्षात्कारी है, कोई जोगी ही इसको देख सकता है।

कुछ ही काल में इच्छा-सृष्टि

बाबा ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि वे एक समय राम राम का भजन करते हुए ईश्वर के ध्यान में मग्न रहा करते थे, उस समय

अनजान अवस्था हो गई थी, तब प्रकाश के दर्शन हुए और कुछ सुध-बुध नहीं रही। बाबा प्रकाश से मिल करके एक समुद्र के ऊपर चले गये। जब सूर्य के प्रकाश से दृष्टि हटी तो देखा कि नीचे समुद्र है, सोचने लगे कि प्रकाश से मैं समुद्र पर आ गया और अपने को जल के ऊपर बैठे देखा, ऊपर आकाश में धुधकाल अर्थात् ऊपर का एक लोक दिखाई दिया और वहाँ पर अपने अतिरिक्त किसी और को नहीं पाया, केवल स्वयं ही पानी पर बैठे हैं और पानी के ऊपर एक कोने में प्रकाश है। वहाँ पर संसार नहीं दिखाई देता है।

बाबा विचार करने लगे कि जब संसार में था तब वहाँ सब कुछ था और यहाँ तो कुछ भी नहीं है। यहाँ पर जब कुछ जी बहलाने की इच्छा हुई और आकाश की ओर सुरता की तो ऊपर धुधकाल से इच्छानुसार गोला बनने लगा। इच्छा से गोला बन गया और सुरता से उसमें चमक आयी क्योंकि बाबा की इच्छा सिद्ध थी। इस कारण उनका मन वहाँ लगने लगा। चलते फिरते उसको देखते हुए जी बहलाते रहे। जब देखते देखते जी भर गया तो फिर उसी प्रकाश में अपना मुँह लगा दिया और अनजान हो करके उसी देश में आ गये जहाँ पहले थे। इस प्रकार संसारी मनुष्य भी बाबा ने जिस रूप से देखा उसी रूप से देखते हैं। संसार के पशु, पक्षी, झाड़, वृक्ष, मनुष्य आदि देखकर इनकी मोह माया में उनका जी बहलता रहता है, और अगर इन वस्तुओं को देखना छोड़कर ईश्वर के प्रकाश में लग जाये तो ईश्वरीय प्रकाश हो जाता है और उसे किसी वस्तु का ज्ञान नहीं रहता है, वह ईश्वर के लोक में पहुँच जाता है। और फिर संसार की हवा लगने से वह संसार में आ जाता है।

बाबा का कहना है कि—यह साक्षात्कारी है। जब मनुष्य का जी इच्छा भोगते भोगते मर जाता है तब फिर वह प्रकाश में ईश्वर भक्ति में अनजान होता है, जब तक संसार की वस्तुओं को, स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब को देखता रहता है, जी लगा रहता है, और अगर ये नहीं रहे तो जी फिर उठकर ईश्वर के प्रकाश में लग जाता है और वहाँ उसे संसार की सुध नहीं रहती है। जब दूसरे लोक में पहुँचता है तो वहाँ भी ऐसी इच्छा होती है। इस कारण जिस लोक में अथवा जिस योनि में भी वह जाता है वहाँ भी कुछ न कुछ देखकर उसका जी बहलता रहता है। जब तक प्रकाश में मुँह लगाये रहता है, किसी वस्तु को देखने

की इच्छा नहीं रहती है और न सुध बुध ही रहती है। प्रकाश से हटते ही देखने की इच्छा होती है और जब वहाँ देखते देखते जी भर जाता है तो फिर उसी प्रकाश में लौटकर आ जाता है और उस लोक में पहुँचने पर फिर इच्छा हो जाती है। इस प्रकार घूम फिर कर लोक परलोक में आता रहता है।

ज्योति-दर्शन अर्थात् घृणा पर विजय

श्री बाबा एक बार गुफा में बैठे हुए राम राम का स्मरण कर रहे थे। वहाँ एक घी की ज्योति भीतर गुफा में जलती थी। बाबा उसको साखी रखकर अपना भज़न किया करते थे। दिन-रात अपने भजन में लगे रहते थे, ईश्वर का डर रखते थे, और साक्षी रूप रखते थे।

एक दिन बाबा ने देखा कि उस ज्योति में से एक स्त्री लाल वस्त्र पहनी हुई और एक हाथ में गोश्त का टुकड़ा लिये हुई थी जिसमें से टप-टप रक्त टपक रहा था, वह धीरे-धीरे बाबा के सामने परीक्षा करने इस आशय से आया करती थी कि अगर इनको घृणा लग जाय तो इनका जोग हम ले लें। बाबा का जब ईश्वर का ध्यान टूटता था तब उसे रोज देखते थे। उस दिन बाबा को पहले से ही भूख लगी हुई थी और उसके गोश्त को देखकर विचारा कि—अगर यह कुछ आगे आ जाय तो उसका गोश्त छीनकर और भूनकर खा जायँ। ऐसा विचार जब अन्तःकरण में हुआ, उस स्त्री ने बाबा के विचार को मालूम कर लिया और समझ गयी कि—मेरे गोश्त से मेरी चीज से इनको घृणा नहीं हुई। इस कारण वह पीछे को हट गयी और धीरे-धीरे जाकर उसी दीपक में अदृश्य हो गई। इस घटना से बाबा को ऐसा अनुभव हुआ कि जितने ऋषि-मुनि तपस्या और ध्यान करते हैं, उन सब की यह परीक्षा लेती रहती है और अगर किसी को घृणा हो जाती है तो उसका जोग यह ले लेती है।

छूआछूत माननेवाले कर्मकाण्डी पुरुषों की शक्ति यह ज्योति लेती रहती है। जो घृणा नहीं करता है वह पास हो जाता है और जो घृणा करता है उसका जोग पूरा नहीं हो पाता है।

बाबा कहते हैं कि यह ज्योति शक्ति है, यह जिसके पास हो जाती है, उसको भीतर बाहर की ज्योति का ज्ञान हो जाता है। यह साक्षात्कारी है। ध्यान करने पर भी कोई बिरला सन्त ही इस भेद को जान सकता है।

आधार राम से योग—ईश्वर भरोसा (ईश्वर पर अटल विश्वास)

श्री बाबा ने अपने योग मार्ग का जो उपदेश दिया है; उसे भक्त जनों के हित के लिये यहाँ दिया जा रहा है।

बाबा राम-राम का नाम लेते हुए, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश को तथा ईश्वर की बनाई सृष्टि को साखी रखते हुए संसारी ख्याल छोड़कर भजन करते रहते थे। संसारी मनुष्य दर्शन करने के लिये आते थे, वे साथ में बाबा के लिये खाने-पीने की वस्तुएं लाते थे, उन वस्तुओं को बाबा पशु, पक्षी, जीव, जन्तु सब को भगवान् का रूप समझकर खिलाया करते थे और वे स्वयं निराहार रहते थे। जो काम पालन पोषण का बाबा यहाँ करते थे, परब्रह्म पंरमात्मा ने भी वही काम (पालन पोषण का) दिया और उनको आज्ञा दी कि तुम सब को भोजन दिया करो क्योंकि बाबा हमेशा धर्म किया करते थे। इस कारण उनको वही काम वहाँ भी मिला। परन्तु बाबा को चिन्ता हो गई कि मैं कैसे सारे संसार को भोजन खिलाने दौड़ता फिरूँगा, क्योंकि राम-राम करते हुए नाम गुण गान में मग्न रहते थे और एकमात्र उसका ही ख्याल रखते थे। परब्रह्म परमात्मा उनको अपने साथ ले गये और बोले कि चलो हम बताते हैं कि किस प्रकार भोजन पहुँचाया करोगे। उसने एक चुटकी भर पत्थर का सफेद रंग का आटा बाबा के हाथ में दिया और एक स्थान पर ले जाकर एक गोल छेदा बतलाया जो कि रुपये के बराबर था और कहा कि इस छेदे में आटा डाल दो। बाबा ने वह आटा उसमें डाल दिया और परमात्मा से पूछा कि क्या सब को भोजन पहुँच गया, तो उत्तर मिला कि—हाँ, तुम रोज इस छेद में डाल दिया करो। तब इस प्रकार डालने से सब को भोजन पहुँच गया, परन्तु बाबा को विश्वास नहीं हुआ। इस प्रकार यह अविश्वास अन्तःकरण में रह गया। एक दिन आँटा डाला, फिर दूसरे दिन भी डाला, परन्तु राम नाम में मग्न रहने के कारण यह काम भार मालूम हुआ। मन में अविश्वास था ही, परमात्मा से कहा कि हम आप के नाम-स्मरण में हर समय बेसुध रहते हैं। इस कारण हम से यह नौकरी नहीं होगी। क्योंकि आँटा नहीं डाल सके तो सारा विश्व भूखा रह जायगा और हम पाप के भागी होंगे। अगर आप पाप के भागी हों तो हम यह नौकरी करते हैं। उत्तर न पाने पर बाबा वहाँ से चलकर इस बात की परीक्षा लेने को एक पहाड़ के नीचे बैठ गये और वहाँ राम राम के ध्यान में

मस्त हो गये। जब ध्यान टूटा तब उनको भूख लगी और एक मकड़ी के तार जैसा प्रकाश पहाड़ को फोड़कर श्री महाराज के पास पहुँचा और उसी प्रकाश के उजाले में देखा कि खाने को बना रखा है। इस प्रकार देखने पर बाबा को अविश्वास नष्ट होकर विश्वास उत्पन्न हुआ और परब्रह्म की गति देखकर अटल विश्वास हो गया कि परमात्मा के यहाँ से सबको भोजन मिलता है। यह समझकर बाबा निर्भय हो गये और स्वयं साक्षात्कार कर लिया। यदि किसी को इस बात में संशय हो तो किसी जीव को डिब्बा में बन्द करके बारह बजे बाद छिपाकर रख ले उसके पास भी भोजन पहुँच जायगा।

परमात्मा सब को खाने को देता है। यह संसारी जीव जो चिन्ता करते हैं कि कैसे खाना मिलेगा, उनको विश्वास रखना चाहिये कि दिन में एक बार अवश्य भोजन मिलेगा। इस कारण घबड़ाना नहीं चाहिये और ईश्वर का भरोसा रखना चाहिये। शंका और अविश्वास के कारण बाबा को वह लोक छोड़कर इस लोक में आना पड़ा।

नीचे की बात. निराकार की ज्योति

श्री बाबा अपने योगमार्ग सम्बन्धी जो अनुभव भक्तों के हितार्थ कह रहे हैं। उसे यहाँ दिया जा रहा है—

बाबा राम राम का नाम लेते हुए पाँच तत्त्वों को और ईश्वर की बनाई सृष्टि को साखी रखते हुए संसारी विचार छोड़कर केवल ऊपर का ही ध्यान रखते थे। संसार में निराधार होकर निराकार रहते थे। निराकार के मार्ग से बाबा निराकार में चले गये। वहाँ देखते हैं कि एक बड़ी ज्योति फैली हुई है जो कि एक मणि की ज्योति है। उन्होंने सोचा कि अगर इस ज्योति में हम अपने को मिला दें तो हम को ज्ञान नहीं रहता है। ऐसा सोचकर ज्योति के बगल से उसी को पकड़ कर बिना लाग के ही ऊपर चढ़ गये। फिर विचार करने लगे कि इसके ऊपर से ही दूसरे लोक में चले चलें। परन्तु वहाँ जाकर देखा कि वहाँ से निकलने का मार्ग ही नहीं है। फिर सोचा कि अपने को इस ज्योति से मिलाकर प्रकाश के मार्ग से निकलें, परन्तु उसमें मिलते ही ज्ञान नहीं रहेगा। ऐसा विचार कर अपने को उसमें नहीं मिलाया और धीरे-धीरे नीचे उतर गये। और उस ज्योति के नीचे बैठकर सामने दृष्टिरूप की ज्योति में सिर से सुरता लगाकर ध्यान करने लगे। सामने दृष्टि

रखकर देखने पर वहाँ केवल अपने को और आकाश मण्डल को देखा और उस ज्योति को भी देखा। वहाँ से निकलने का मार्ग नहीं मिला। इस कारण वे थककर और सोचकर वहीं बैठ गये। यह निराकार की बात है, बाबा कहते हैं कि जिस निराकार से कीड़ी, मकोड़ी, जीव, जन्तु सब को खाने को तार से आता है उसी का आकार सब ओर नीचे की ओर दिखाई दिया। यह साक्षात्कारी है। कोई बिरले ही सन्त इसको जानेंगे।

सर्वात्मभाव

बाबा सर्वात्मभाव कैसे बनता है इस विषय को समझाते हुए कहते हैं कि—

राम राम कहते हुए, झाड़, वृक्ष आदि सब को ईश्वर का रूप समझते हुए, समस्त विश्व को राममय जानते हुए, और उनका ही रूप समझते हुए, पाँच तत्त्वों को भी रामरूप समझते हुए, पृथ्वी को राम रूप समझ कर चूमते हुए, अग्नि को गुरु रूप समझते हुए, समस्त आत्मा को भगवान् का रूप समझते हुए तथा अपने को भी वही आत्मा मानते हुए, अपने ध्यान में लगे हुए थे। उस समय उस स्थिति में बाबा ने देखा कि आत्मा के अतिरिक्त कोई दिखायी नहीं देता है। जंगल पहाड़ में भी कोई-कोई आत्मा पहुँच जाती थी। हर समय नाम-स्मरण की सुरता लगाये रहते थे, संसार में जितने भी प्राणी हैं सब को एक ही आत्मा समझते थे। एक दिन बाबा ने ऊपर देखा कि बिना कान के सुनाई देता है, बिना आँख के दिखाई देता है। अपना रूप जब देखने लगे तो ज्ञात हुआ कि न हाथ है, न पैर है, न शरीर ही है। एक बड़ा तिरछा प्रकाश दिखाई दिया और बाबा को उस दिन से विश्वास हो गया कि जो ऊपर है वही नीचे भी सब आत्माओं में व्यापक है और नीचे भी वही है। प्रकाशित आत्मा का यही अन्त का ज्ञान है।

जोगसिद्ध-महात्मा

श्री बाबा कहते हैं कि—जोग का अन्त कहाँ होता है, और इसमें कौन-कौन सी शक्तियाँ मिलती हैं। राम राम के स्मरण से हानि लाभ, जीवन-मरण, यश अपयश को उन्होंने अपने हाथ में कर लिया है। गुरु का शब्द सुनकर चले हैं जोग किया है तो अपना शब्द वहाँ पाया है। स्वयं अपने आप जो करते हैं वही संसार करता है। इतना

बाबा ने स्वयं देखा है। जो शब्द है वह भी सत्य है, जो जोगमार्ग से देता है वह भी सत् है। जो जोगमार्ग से दृष्टि देखकर कह देता है वह भी सत् है, जो निज करके बाबा कह देते हैं वह भी सत् है। इतने तक ही इसमें शक्ति और रूप बना रहता है जो संसार में दिन में रहते हैं। यह तो संसार की सृष्टि है, इसमें आवागमन लगा रहता है, क्योंकि वह मोह माया में पड़ा है।

दूसरी सृष्टि रात्रि सृष्टि है संसार में जिससे साधु-सन्त रात को निकलते हैं। सायंकाल से प्रातः काल ६ बजे तक रहकर पहाड़ के नीचे चले जाते हैं।

जैसे संसारी को दिन में सृष्टि दिखाई देती है, वैसे ही उनको रात्रि-सृष्टि दिखाई देती है। वे लोग यदि सूर्य देख लें तो सूर्य के प्रकाश में खिंच कर आप रूप हो जाते हैं और आवागमन में पड़ जाते हैं, इसी कारण दिन को नहीं निकलते हैं और जीवन-मरण से रहित रहते हैं। बराबर ईश्वर का ध्यान किया करते हैं। बाबा का कथन है कि यह साक्षात्कारी है।

अमृतधारा-ब्रह्मसृष्टि

इसी प्रकार बाबा दूसरी ब्रह्मसृष्टि का हाल बतलाते हैं कि ब्रह्मसृष्टि कैसी होती है। ब्रह्मसृष्टि में केवल ब्रह्म का ही चिंतन होता रहता है। ऊपर का ही ध्यान रहता है। संसारी विचार छूट जाते हैं। वहाँ सब ब्रह्म ही ब्रह्म हैं और निराकार के ध्यान में बैठे हैं। उनके मुँह में अमृत की धारा लगी रहती है, उन्हें पूर्ण शान्ति रहती है, श्री बाबा कहते हैं कि जिस अमृत की धारा को पीकर वे सब संतुष्ट होकर बैठे रहते हैं। वह अमृत की धारा कहाँ से आती है, इसका पता नहीं लगता है। पारब्रह्म की गति का पार नहीं मिलता है। जहाँ तक बाबा की गति थी वहाँ तक खोजा, परन्तु इस भेद का पता नहीं लगा।

सृष्टि-विचार

श्री बाबा का कहना है कि एक तीसरा ब्रह्माण्ड भी है, जिसमें मणि रूप से प्रकाश रहता है, उस प्रकाश में मुंह लगा कर बाबा समुद्र में चले जाते हैं और जब उस प्रकाश से मुंह हटाते हैं तो नीचे समुद्र दिखाई देता है। जहाँ पर स्वयम् बैठे हैं, ऊपर धुधकाल है, वहाँ इच्छा प्रमाण चीज बनती रहती है और जब जी भर जाता है तब उसी प्रकाश में

मुँह लगाकर मृत्युलोक में आ जाते हैं। परंतु संसार को देखकर बाबा घबराये रहते हैं, और विचार करते रहते हैं कि किस लोक में चलना चाहिये, कौन स्थान देखना चाहिये क्योंकि परब्रह्म परमात्मा का कोई अन्त बाबा ने नहीं पाया। जैसे सच्चे कर्म किये थे, ईश्वर के घर चोरी नहीं की थी, साँसा सच्चा रखा, सच्चा कर्म किया, सच्चा त्याग रखा, वैसी ही शक्तियाँ मिल गईं, इतने भेद भी खुले, परन्तु आगे का अन्त नहीं मिला। केवल इस आकाश तक का अन्त मिल जाता है और आगे के भेद का पता नहीं लगता है। इस कारण ईश्वर में सुरता रखकर सोचते रहते हैं कि कर्म का फल तो निष्फल नहीं जायगा, परन्तु इस मृत्युलोक से जी भर गया है क्योंकि इसमें बड़े बड़े तूफान लगे रहते हैं। काम, क्रोध, लोभ मोह रूपी कच्छ-मच्छ इस भव-सागर में जीव को निगलने को घूमते रहते हैं।

सत् की महिमा

यहाँ बाबा सत् लोक की बात बता रहे हैं। जो सत् में राम का भजन करते हैं, तत्त्वों से मिलकर सत् में ही मिट जाते हैं, सत् में ही शरीर त्याग देते हैं। जैसे हिमालय ठंडा होता है। वैसे ही अपने शरीर को तपा कर सत् में छोड़ देते हैं, और जब वह शरीर छूट जाता है और हृदय में सत् का ख्याल रखते हुए सत् में मिट जाते हैं, तब उसका एक प्रकाश रूप बन जाता है। वैसा ही शरीर बन जाता है। वह खिसकता हुआ संसार में आ जाता है। द्रष्टारूप हो जाता है, सत् का द्रष्टा हो जाता है और वह ऊपर प्रकाश में कायम रहता है। उसे सब देखते रहते हैं, सब मालूम करते रहते हैं।

सत् असत् की प्रकृति का मूल श्वास

श्री बाबा रामसनेही जी सिर्फ राम राम से काम रखते हैं, दूसरे से वास्ता नहीं रखते हैं। राम राम को पकड़कर चलते हैं, दुनियाँ का संकल्प विकल्प नहीं रहता, ख्याल सिर्फ राम का ही रहता है। यह जो राम वाले हैं वह अपने राम से काम रखते हैं, ऊपर का ध्यान; अपने काम से काम और गुरु शब्द का ख्याल रखते हैं, क्योंकि नीचे वह छोटे बन कर रहते हैं, और ऊपर गुरु रहते हैं, जो शब्द गुरु से मिलता है वही-वाणी है और गुरु शब्द है। जिसका ऐसा शब्द और ऐसी वाणी होती है उनकी दृष्टि भी ईश्वर के कामों में, सत् के कामों में रहती है और उसमें सत् ही भरा होता है। इस प्रकार जिनकी सत् दृष्टि हो

जाती है, उनके कार्य भी सत् ही होते हैं और विचार भी सत् ही होते हैं। जिस पर दृष्टि पड़ जाती है उसका तुरन्त ही कल्याण हो जाता है। उनकी सत् प्रकृति अगर किसी मनुष्य के भाव में बैठ जावे तो दृष्टि से ही उनका काम बन जाता है, बोलने का काम नहीं पड़ता है अर्थात् मुँह से आशीर्वाद देने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती क्योंकि ईश्वर में नाम के प्रभाव से दृष्टि ढकी हुई होने के कारण उनकी दृष्टि निर्मल और सत् हो जाती है। श्री बाबा कहते हैं कि यह साक्षात्कारी है।

तन द्वारा सेवा-सिद्धि

श्री बाबा अपने उपदेश में कहते हैं कि एक और सहज धर्म उन लोगों के लिये है जिनके पास धन नहीं है। ऐसे लोगों को चाहिये कि अपने तन को धर्म में लगावें। पशु-पक्षी आदि को पानी पिलाते रहें, जीव मात्र पर दया करते रहें, झाड़-वृक्षों को पानी देते रहें। उनके नीचे झाड़ू लगाकर सफाई करते रहें, उनको प्रेम करते रहें, चूमते तथा नेत्र लगाते रहें, प्राणीमात्र से मीठा वचन बोलते रहें, परनिंदा और हिंसा से बचते रहें, सत्य को धारण करते रहें। और साधु-संत बड़े-बूढ़े गुरुजनों की सेवा सत्कार करते रहें। ऐसी साधना करते रहें तो उन्हें सेवा-सिद्धि प्राप्त हो जायगी और वे इसी से मुक्त हो जायंगे।

सर्वात्मभाव से सेवा

श्री बाबा एक और सेवा का भेद बतलाते हैं—अपनी पीड़ा का ख्याल रखकर रोगी और दुःखी प्राणियों की सेवा शुश्रूषा, सहायता निष्काम भाव से करके दया भाव को बनाते रहें। सेवा करते समय भगवत् बुद्धि रखते हुए सबको अपनी ही आत्मा समझें। ऐसा करने से द्वैत भाव मिटकर हृदय में प्रेम-भाव बढ़ेगा और आनन्द की वृद्धि होगी।

संत-सेवा

श्री बाबा एक और धर्म का अनुभव बता रहे हैं—जो ईश्वर का कार्य करनेवाले सत्पुरुष होते हैं, जिनमें लोभ, लालच, तृष्णा, ईर्ष्या, रागद्वेष नहीं होते हैं, जिनकी समदृष्टि होती है। ऐसे सत्पुरुषों की सेवा जो तन, मन, धन, से निष्काम होकर करता है। उसके विषय में बाबा का कहना है कि उसकी वह सेवा निष्फल नहीं होती और इससे ही उसके लोक परलोक बन जाते हैं। बगैर माँगे ही उसको सब कुछ मिल जाता

है। श्री बाबा कहते हैं कि उनको सदैव उन कर्मों के द्वारा सहायता मिलती रहती है। सन्तों का आशीर्वाद उनको रहता है।

धन द्वारा सेवा

श्री बाबा एक और धर्म उन लोगों के लिये बतलाते हैं। जो पैसे से धनवान् हैं। ऐसे लोगों को ध्यान रखना चाहिये कि कहीं कोई आत्मा भूख से तो नहीं तड़प रही है। ऐसो भूखी आत्मा को अगर वह भोजन देकर तृप्त करता रहे तो उन सब आत्माओं के आशीर्वाद से उसके बड़े से बड़े पाप भी कट जाते हैं और हृदय की कठोरता नष्ट होकर, हृदय कोमल होकर प्रेम भाव बन जाता है और उसको आनन्द की प्राप्ति होती है। दूसरे कुछ लोग जो अपने खाने भर का ही कमा पाते हैं उनको चाहिये कि अपने भोजन का, जो वह खाते हैं, एक भाग किसी भूखी आत्मा को खिला दें तो बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि उनकी उसी में आत्मा तृप्त सिद्धि हो जाती है और ऐसे मनुष्य को रोटी की कमी कभी भी नहीं पड़ती है। श्री बाबा का कहना है कि यह साक्षात्कारी है।

आत्म-समर्पण भाव

श्री बाबा कहते हैं कि मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण यह है कि वह सब जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, मनुष्य, झाड़, वृक्ष सबको परमात्मा का ही स्वरूप और उसी का अंश समझकर सत्कार करता रहे। धन-सम्पत्ति, कुटुम्ब-परिवार सब उसी का समझता रहे और सब की सेवा करता रहे तो उसकी द्वैतबुद्धि मिटकर उसके अन्दर शरणागति भाव (आत्मसमर्पण भाव) पैदा होकर उसकी सब ममता छूटकर उसका अहंकार गल जाएगा। बाबा कहते हैं कि अपना कार्य कराने के लिये परमात्मा ऐसे सत्पुरुष को रखते हैं और उससे बहुत प्रेम करते हैं, क्योंकि वह परमात्मा के घर को अपना ही घर समझ के सब काम करता है। श्री बाबा कहते है कि यह साक्षात्कारी है।

निष्काम सेवा

श्री बाबा कहते हैं कि यति-सती दोनों ईश्वर का काम निष्काम होकर करते हैं। दोनों का कर्म अगले जन्म तक रहता है, वे संसार के कार्य भी निष्काम भाव से करते हैं और भजन-पूजन, जप-तप, हवन इत्यादि भी जो मन और शरीर दोनों के द्वारा करते हैं उनका फल उनको अपने आप प्राप्त होता है। उनका वह पुण्य संचित रहता है और उनके घर में बरक्कत रहती है। श्री बाबा कहते हैं कि यह सबसे अच्छी और ऊँची श्रेणी की सेवा है।

गुप्त दान

श्री बाबा कहते हैं कि एक और धर्म गुप्त दान का होता है। कुछ लोग गुप्त दान से पुण्य करते रहते हैं, जिसको वे ही जानते हैं और दान लेनेवाला नहीं जानता है कि किसने दिया है। इसका दाता यश के अहंकार के पाप से मुक्त रहता है। दूसरा गुप्त दान वह होता है जिसको केवल देनेवाला और लेनेवाला ही जानता है, वह संसार की निंदा स्तुति से बचा रहता है। इस प्रकार उसका भाव शुद्ध रहता है। बाबा का कथन है कि यह ऊँची श्रेणी का दान है। लेनेवाला जैसा पात्र हो उसको वैसा समझकर देता रहे, जितना उसने दिया है उसका फल उसको घर के अन्दर में ही मिल जाता है।

योगी पुरुष द्वारा भलाई

श्री बाबा कहते हैं कि---जो योगी पुरुष परमात्मा से मिले हुए रहते हैं, नाम को पकड़े रहते हैं, सत् में रहते हैं, उन योगी पुरुषों से जीव की भलाई ही होती है, क्योंकि राम राम के नाम के द्वारा उनकी वाणी, शरीर और दृष्टि तपी रहती है, इसी कारण ऐसे पुरुषों के द्वारा सब की भलाई ही होती है। अपने मुख की वाणी से जो आशीर्वाद आदि देते हैं वह पूरा होता है, चाहे जल्दी हो अथवा देर से। बाबा कहते हैं कि वे लोग संसार में अपनी यादगारी चाहते हैं, क्योंकि भक्तों के द्वारा ही परमात्मा को लोग संसार में याद करते हैं।

योग का सार

श्री बाबा कायिक तप की व्याख्या कर रहे हैं कि, किस प्रकार कायिक तप करने से आत्मा काया से मुक्त होती है, अर्थात् उसकी देह बुद्धि नष्ट हो जाती है। थोड़ा भोजन करे, काया से खूब काम लेता रहे, जिस आसन से बैठे उसी से जप करता रहे, काया की ओर से ध्यान को हटावे, खड़े-खड़े जप-तप का अभ्यास करता हुआ देह का ज्ञान भुलाता रहे। माला फेरते समय अगर हाथ में दर्द हो तो दर्द की ओर ध्यान न दे, ईश्वर का काम समझकर उस काम में अर्थात् राम राम में ही उस दर्द को मिला दे। पानी में खड़े होकर जप करता हो, पानी का तप सिद्ध करता हो और मछली आदि उसके पैरों को नोचकर खाती रहे तो यह समझे कि ईश्वर ही खा रहा है, और अपना हृदय पक्का करे,

८

ईश्वर में भरोसा रखे। जो इस प्रकार ईश्वर के कार्य में अपनी काया को लगाता है तो, बाबा कहते हैं कि उसकी काया सिद्ध हो जाती है और उसे जल-सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार काया को जाड़ा लगे तो ईश्वर का ख्याल रखकर शरीर पर खूब शीत सहन करना चाहिये क्योंकि जितनी ठण्ढी काया को लगेगी काया के सब विकार दूर होकर, मानसिक रोग दूर हो जायँगे और वह मनुष्य खूब सुखी हो जायगा, क्योंकि राम नाम का सुख उसको मिल जायेगा। अगर धूप में सूर्य के सम्मुख बैठा हो तो अपने भाव के द्वारा चेहरे (मुख) को सूर्य के प्रकाश से मिला ले और शरीर को तपने दे। इस प्रकार तपने से शरीर से पसीना निकलेगा और हृदय निर्मल हो जायगा। अगर अग्नि के सामने बैठे तो उसकी आँच को शरीर से सहन करे, अग्नि को शंकर रूप समझे, क्योंकि शंकर जी का तप सब से कठिन है और वह शक्ति का रूप है। श्री बाबा कहते हैं कि यह असली योग का मार्ग है और सब योगों का सार वस्तु है।

काया-तप

श्री बाबा कहते हैं कि अगर कोई किसी झाड़-वृक्ष के नीचे बैठे और वहाँ पर कीड़े, मकोड़े, जीव-जन्तु शरीर को काटते रहें, सताते रहें तो उनको काटने दिया, सहन किया और ईश्वर में ख्याल रखा, तो इसी को काया तप कहते हैं। बाबा कहते हैं कि इससे देहाभिमान नहीं रहता, क्योंकि मन वहाँ नहीं रहता है और काया में ही लय हो जाता है। देखो मन किस प्रकार तप के द्वारा काया में ही लय हो गया। उसकी वाणी और दृष्टि शुद्ध और सत् हो जाती है। यह सारवस्तु योगमार्ग की है, जिसे संत महात्मा अनुभव करते हैं।

आत्मा परमात्मा का अभेद

श्री बाबा कहते हैं कि भक्ति के द्वारा काया के भीतर आत्मा बोलती है कि जहाँ हम हैं, वहीं तुम हो, क्योंकि आत्मा उसी की होती है, एक है, जहाँ तू है, तेरा प्रकाश है वहीं मैं हूँ, अर्थात् जब शरीर में चोट लगती है, उसको पीड़ा होती है तब तेरी ही याद आती है और जहाँ किसी साँप, बिच्छू जीव जन्तु ने काटा तो शरीर ने आत्मा से तुमको याद किया और इस प्रकार भाव बनाया कि हे ईश्वर! काटने वाला भी तू ही है और तेरे सिवाय कोई नहीं है। इस प्रकार निर्मल हृदय से

सच्चे भाव से प्रार्थना करते ही उसका असर नहीं होता और वह बच जाता है। बाबा कहते हैं कि यह साक्षात्कारी है। इस काया के ऊपर तेरा ही ख्याल करने से इसकी रक्षा होती है।

प्रणाम का महत्त्व

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि सत्पुरुष सत्य में ही रहते हैं, सत्य को ही धारण किये रहते हैं, तत्त्वों को ही पकड़ कर रहते हैं, उनको सत् समझकर उनके सहारे रहते हैं।, बाबा समझते हैं कि हम सत् हैं, परन्तु तत्त्वों में ही मिल जावेंगे इस कारण अपना और तत्त्वों का एक ही रूप समझते हैं। संसारी मनुष्य जो बाबा के दर्शन को आते हैं, उनके शरीर को और चरणों को छूने का प्रयत्न करते हैं, जो कि उनको बहुत बुरा मालूम पड़ता है क्योंकि पृथ्वीतल का ज्ञान दर्शनार्थियों को नहीं होता है। बाबा समझते हैं कि जिस मनुष्य ने पृथ्वी को प्रणाम किया और श्री महाराज ने उसको द्रष्टा रूप से देखा कि यह सत् में मिल गया है और इसने सत् में ही प्रणाम किया है, उसको इसमें सिद्धि प्राप्त हो जाती है और श्री महाराज उस पर प्रसन्न हो जाते हैं कि उसने मेरे ही रूप को प्रणाम कर लिया, क्योंकि उनको भी एक दिन इसी पृथ्वी में मिट जाना है, उनमें और पृथ्वी में कोई भेद नहीं है, वे एक-रूप हैं, श्री बाबा कहते हैं—यह साक्षात्कारी है।

प्रणाम का अधिकारी

श्री बाबा को एक बार एक भक्त ने प्रणाम किया तब उन्होंने पूछा कि—उसने उनको क्या समझकर और क्यों प्रणाम किया। तुमने हमारी प्रकृति, रहनी और स्वभाव देखा तब तुम्हारा कैसा भाव बना जिसकी वजंह से तुमने प्रणाम किया, तो वह बोला कि उसने आपके भीतर बाहर का त्याग देखा, आपको निराकार देखा, निराधार देखा और सद्वृत्ति देखी, आत्मा का प्रभाव देखा, इसलिये प्रणाम किया।

आत्मा का सर्वव्यापक रूप

एक समय एक आदमी ने बाबा रामस्नेही जी से पूछा कि 'आप सब जगह शरीर से जाते हैं या आत्मा से? बाबा ने कहा—सब जगह शरीर है— सब जगह मेरा ही शरीर नजर आता है, जिसका आत्मा रूपी शरीर हो गया है, वह शरीर को धारण करने का अधिकारी है।

अपने योग शरीर का ज्ञान हम को सब जगह अपने ही करते नजर आता है, प्रत्येक्र शरीर के भीतर मेरा अपना ही योग ज्ञान का रूप रहता है। समय पर तो वहाँ प्रत्यक्ष रहता है और वैसे सबसे अलग रहता है, क्योंकि सुरता एक रहती है।"

यही साधु का गूढ़ रहस्य है। अपने करने धरने का यही रहस्य है। बाबा कहते हैं कि जिसकी सत्यभावना रहती है और विश्वासी भावना रहती है वह जहाँ हमको याद करता है वहाँ पर हम उसको देख लेते हैं, और हमको वह देख लेता है, हमारी परछाईं रूप स्वप्न अवस्था में भी वह जान लेता है। इसी लिये संसारी मनुष्यों का कुछ योग नहीं चलता। जिसकी सत् भावना नहीं होती, प्रेम नहीं रहता वह हमको नहीं जान सकता। जो हृदय में ख्याल करते हुए भाषण करता है, हृदय से वह काम भी पूरा हो जाता है, क्योंकि वह सत् गुरु का रूप होता है, अतः सत्गुरु का रूप ही बन जाता है। श्री महाराज जी कहते हैं कि हम ईश्वर के गुप्तचर बन जाते हैं, सब आत्माओं की परीक्षा करते हैं, निरखते हैं, हर प्रकार का रूप बना लेते हैं, गृहस्थ के लिये गृहस्थ, साधु के वास्ते साधु, अफसर के वास्ते अफसर, बच्चे के लिये बच्चे, संकल्प द्वारा सब बन जाते हैं और जब किसी आत्मा के बारे में जानना चाहते हैं, जब तक जरूरत होती है तब तक उसके अन्दर प्रवेश करके सब हाल मालूम कर लेते हैं। अपने आप का ज्ञान करते रहते हैं। श्री बाबा कहते हैं कि योग का यह गूढ़ रहस्य है, इसीलिये संसारी मनुष्यों का कुछ योग नहीं चलता क्योंकि जिसके हृदय में सत् भावना और प्रेम नहीं रहता है और न बनता ही है वह इसको नहीं जान सकता है। जैसे कोई अफसर अपने से छोटे नौकर इत्यादि को अन्याय-पूर्वक अहंकार से कहे कि वह उसको निकाल देगा तो उस अवस्था में जब वह नौकर ईश्वर को पुकारे कि वह (नौकर) बालबच्चों का पालन कैसे करेगा और फिर उसे ईश्वर पर विश्वास हो जाय कि तू ही बचानेवाला है तो उस (नौकर) की दुःखी आत्मा से अहंकारी अन्यायी अफसर लय हो जायगा और आत्मा को शान्ति मिलेगी। श्री बाबा कहते हैं यह साक्षात्कारी है, संसार में ऐसी घटना देखने में आती है।

शून्य का शब्द

श्री बाबा कहते हैं कि राम राम में मग्न रहना, एकान्त वास करना, ईश्वर का ध्यान करते हुए शून्य में कान लगाना, इस प्रकार जो

शून्य में कान लगाये रहता है, उसको शब्दब्रह्म सुनाई देता है। इस शब्दब्रह्म का वचन सत्य होता है। शब्दब्रह्म की आवाज सब दिशाओं से भी होती है और ऊपर से भी आकाशवाणी होती है, उसको ईश्वर शब्द, ईश्वरी सहायता कहते हैं और जो शून्य से शब्द आता है वह गुरु शब्द है। जो पृथ्वी से शब्द आता है वह तत्त्वों से आता है और आकाश के द्वारा भी आता है। मनुष्य का कान संसार में; शून्य में और ऊपर तीनों स्थानों पर लगा रहता है। जहाँ से भी शब्द मिलता है वह सत् ही समझ लेता है और सत् ही पकड़ लेता है तथा सत् ही बना लेता है। बाबा कहते हैं कि ध्यान अवस्था का यही सरल उपाय है। संसार का शब्द वही सत् होता है जहाँ पर मनुष्यों का शब्द सुनाई नहीं देता है और मनुष्य भी दिखाई नहीं देते हैं। योगी जो शून्य में ध्यान लगाये रहते हैं, वे उन शब्दों को सुनते हैं और उन्हीं के अनुसार वचन देते हैं, कहते हैं और उनके द्वारा ही संसार का पालन करते हैं। वह शब्द ही सत् होता है। उसी शून्य में रहते हुए वह मुक्त रहता है और प्राण छोड़ने पर मोक्ष पा लेता है। श्री बाबा कहते हैं कि यह योग का गूढ़ तत्त्व है और ध्यान का सार है।

ईश्वर के राज का कानून

श्री बाबा रामस्नेही जी राजनीति के बारे में एक ईश्वरीय कानून बनाते हैं कि ज़ज, मजिस्ट्रेट, कप्तान, अफसर, कलक्टर, मंत्री आदि इन सब की दृष्टि में धन दौलत ही सब कुछ होता है जिसके पास धन दौलत नहीं है वह जीवात्मा जब उनके सामने पड़ता है तो वे लोग अपनी दृष्टि से देखते हैं कि उसको कितना अहंकार, दैन्य भाव और शान्ति है, डाँट-डाँट कर बात करते हैं, प्रश्न करते हैं तो उसकी शान्ति, नम्रता और अधीनता के भाव का पता लग जाता है। उस समय परब्रह्म परमात्मा की आत्मा उसमें बैठकर उसी माफिक दया उत्पन्न करता है और उसी के अनुसार वह उसे छोड़ देता है, और अगर किसी के शरीर में उस (आदमी) की दृष्टि से अहंकार दिखाई देता है, जैसे किसी को धन का अहंकार होता है, किसी को कानून की योग्यता का अहंकार होता है, किसी को संसार की बड़ाई का अहंकार होता है, जिसको मान की चिन्ता होती है उसकी दृष्टि से ही उसके मान का फैसला करते हैं, जिसके पास धन होता है उसको धन का फैसला अर्थात् धन लेकर प्रसन्न हो जाते हैं, पक्षपात करके छोड़ देते हैं। जिसको केवल गर्व होताहै

उसको परब्रह्म-दृष्टि में (न्यायाधीश की दृष्टि में) देखकर दुःख देता है, उसके काया को कष्ट देता है अर्थात् कमजोर कर देता है। बाबा कहते हैं कि आज कल राज-कानून इसी प्रकार चलता है। ऐसा देखने में आ रहा है। परब्रह्म परमात्मा इसी प्रकार कराता रहता है। यही गति सब साधु-सन्त और जीवों की भी है। वे भो इसी प्रकार एक दूसरे का भाव देखकर फैसला करके तदनुसार आचरण और व्यवहार करते रहते हैं।

राम धन ही सच्चा धन है

श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि—संसार में इतनी तृष्णा करके भी मनुष्यों में कोई सच्चा धनवान् देखा नहीं गया जो ईश्वर की ओर से अधीनता रखता हो। बड़े बड़े बंगले, मकान, कोठियाँ, राज-पाट, तृष्णावाले और हूकूमतवाले हो गये, परन्तु इनमें से वही ईश्वर का धनवान् निष्पक्ष धनवान्, निस्वार्थ और शांत धनवान्, उस पर भरोसा रखनेवाला, वही धनवान् कहलाता है जो अपने कर्मो द्वारा ईश्वर का डर रखते हुए ऐसी राजनीति चलाता है, वह बड़ा धनवान् कहलाता है और उसी का राजपाट अखंड रूप से चलता है। आज कल संसार में जो देश बड़ाई करते हैं, उन्नति करते हैं, उनमें ईश्वरीय उन्नति कोई बिरला ही करता है। कोई ही ऐसा होता है जो निष्पक्ष होकर काम करता है, इसी से संसार के सब दुःखी हैं। निष्पक्ष न होने के कारण ही सब दुःख है। राजपाट और बादशाही करनेवाले भी दुःखी हैं, पर वे अपने को सुखी समझते हैं। इस प्रकार बाबा संसार के लिये निष्पक्ष राजनीति का उपदेश देते हैं।

निराधार रहने का आधार देना

परमात्मा तो सबको आधार देता है, वह तो सर्वाधार है, परन्तु संसार में भी कुछ लोग दूसरे को आधार देकर उनकी आत्मा तृप्त करते हैं और स्वयं प्रसन्न होते हैं। स्वयम् दूसरे के आधार का भरोसा नहीं करते। जिस प्रकार परमात्मा सब को आधार देता है और स्वयम् निराधार रहता है उसी प्रकार जो मनुष्य दूसरों को आधार देकर स्वयम् निराधार रहते हैं उन पर परमात्मा प्रसन्न रहते हैं। वह मनुष्य केवल अपने कर्म का ही आधार रखता है। परमात्मा भी जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही आधार देता हैं। यह साक्षात्कारी है।

इसी प्रकार राजनीतिज्ञों को भी चाहिये कि स्वयम् निराधार रहकर देश में सबको आधार देते रहें। निष्पक्ष और निष्काम भाव से पालन पोषण करते रहें तो उनका राज्य अमर रहता है।

सब बोलियों का ज्ञान

श्री बाबा अपने प्रवचन में कहते हैं कि—मनुष्य किस प्रकार सब पशु-पक्षियों एवम् जीव-जन्तुओं की बोली समझने में समर्थ होगा इसका उपाय निम्नलिखित है—

एकान्त स्थान में पशु-पक्षियों के लिये जल भर कर एक पात्र रख दे और उसमें सदैव जल डालता रहे एवम् वहाँ शक्ति के अनुसार कुछ अन्न के दाने तथा कुछ भोजन भी डालता रहे तो पशु-पक्षी, जीव-जन्तु उस जल को पीकर और भोजन करके जब उनकी आत्मा तृप्त हो जायगी तो उन भूखी प्यासी आत्माओं का आशीर्वाद उस जल के पात्र में ही रह जायगा। इस प्रकार अगर कोई मनुष्य उस पानी को बिना फेंके हुए उसमें सदैव और पानी भरता रहे तो वह सिद्ध जल जब बालक का जन्म होता है और उसकी जब छठी होती है, उस दिन वह जल अगर बालक के मुँह में डाल दे तो उसकी बुद्धि शुद्ध हो जाती है, और उसको बड़ा होने पर ब्रह्मज्ञान हो जाता है, और जिन-जिन पशु-पक्षियों के द्वारा उसमें से जल पीया गया है उनकी बोली वह समझ लेगा। श्री बाबा का कथन है कि यह गूढ़ रहस्य है क्योंकि बालकपन में जैसा उसका कर्म बन गया वह बड़ेपन में भी उसके काम आता है।

निरक्षर व अक्षर ब्रह्म की खोज

श्री बाबा को एक बार राम राम जपते हुए जब हृदय में भाव हुआ कि वह ईश्वर का नाम तो लेते रहते हैं, परन्तु पढ़े लिखे नहीं हैं और न पढ़े लिखे का अर्थात् अक्षर का ही हाल जानते हैं। दुःखी होकर जब उनका ऐसा संकल्प हुआ—श्री बाबा के मुख पर श्वेत प्रकाश था तो परब्रह्म परमात्मा ने एक सफेद कागज दिखलाया। उस कागज को देखकर वे समझ गये कि परमात्मा प्रकाशित और निरक्षर है। इस कारण ध्यान भी निरक्षर का ही करना चाहिये। निरक्षर से ही शक्ति प्राप्त होकर भरोसा मिलता है और साधक बलवान् होता रहता है। बाबा को ज्ञान-दृष्टि से ऐसा प्रतीत हुआ, क्योंकि वे राम राम का स्मरण करते थे और राम राम का ही अक्षर पकड़े हुए थे। इसी से परब्रह्म

परमात्मा ने एक कागज अक्षर का उनको लिखा हुआ दिखलाया । बाबा को ऐसा प्रतीत हुआ कि हम अक्षर का नाम लेते हैं, इसी कारण अक्षर का कागज दिखाकर उन्हें संकेत किया गया कि नाम लेते हुए जो भी दृष्टि में आवे और अपने पर बीते उन सब दुःख कष्टों को सहन करता रहे । राम राम लेते हुए जहाँ तहाँ चला जाय, जैसा तैसा रूप बन जाय, परन्तु यह सब देखते हुए ख्याल रखना चाहिये कि नाम के द्वारा जैसा जो अनुभव होगा तत्त्वों का और संसार का वैसा ही अक्षर बनता चला जाय जायेगा । नाम के द्वारा नाम पकड़ने से अक्षर होता है । अक्षरवाले नाम जप के द्वारा स्वयम् साकार रूप बन जाते हैं और संकल्प की मूर्ति बना लेते हैं और उसके द्वारा संसार को बोध कराकर ज्ञान देते रहते हैं और निरक्षरवाले भी साकार में आकर फिर साकार मूर्ति बनकर बोध कराते हैं । वे लोग भी आवागमन के द्वारा ही साकार में आते हैं । बाबा कहते हैं कि संसार में जो साधु-सन्त नाम लेते हैं वे उसी नाम के द्वारा स्वयम् अनुभव करके संसार के कल्याण के लिये उसे लिख करके सुनाते हैं, और जो अक्षर का नाम लेते हैं, जैसे कोई ॐ का नाम लेते हैं और ॐ कार रूप होकर उसका अक्षर बना करके सब को ज्ञान देते हैं, और कोई नारायण के अक्षर का जाप करते हैं तब उससे ज्ञान मिल जाता है और वे नारायण रूप का अक्षर बनाकर सब को संसार में बोध कराते हैं । जो सीताराम के अक्षर का नाम जपते हैं तो वे सीताराम का अक्षर बनाकर लिखकर बोध देते हैं, कोई शिव का नाम लेकर शिव रूप का अनुभव करते हैं और फिर अक्षर बनाकर संसार को बोध देते हैं । कोई कृष्ण का नाम लेते हैं उनको कृष्ण के रूप का अनुभव होता है, तो वे उसी के नाम का अक्षर बनाकर बोध कराते हैं । इस प्रकार संसार में अक्षर जप करके उन लोगों ने संसार को अक्षरों में फाँस दिया है, परन्तु परमात्मा तो निरक्षर ही है । इस कारण उसका निरन्तर ध्यान और उसका प्रकाश निरन्तर आत्मा के ऊपर रखना चाहिये और सदैव उसी का विचार रहे, उसी में दृष्टि रहे और निरन्तर उसी का भाव रहे, उसका ही आधार रहे, संसार में निराधार रहे, निराकार होकर अपने शिर पर सुरता का ध्यान करे इस प्रकार अपने को शुद्ध रखना चाहिये । बाबा कहते हैं—उसमें अक्षर नहीं है, परन्तु जब नाम पकड़ते हैं तो अक्षर बनाकर अपना मान बढ़ाने के लिये अपना नाम बनाते हैं और अपने यश की स्मृति रखना चाहते हैं और उस बड़ाई का सबको बोध कराने के लिये और देने के लिये ऐसा करते ही

कितने मिट जाते हैं कितने ही चले जाते हैं और उनका पता नहीं चलता कि कहाँ से आये थे और कहाँ चले गये। इस प्रकार जो अक्षर को बनाते हैं वे लय हो जाते हैं, मिट जाते हैं, परन्तु जो निरक्षर रहता है उसका लय नहीं होता क्योंकि वह अक्षर नहीं बनाता है और अपने ध्यान से ही काम रखता है, प्रकाश से ही काम रखता है; निराधार और निराकार का काम रखता है, निष्पक्ष ध्यान और कर्म करता है। वही सब से श्रेष्ठ और अमर है।

श्री बाबा कहते हैं राम राम के द्वारा वह अक्षर पकड़कर चले हैं और फिर जब अक्षर का अनुभव हुआ तो नाम छूट गया। इस प्रकार अक्षर और निरक्षर दोनों का ही अनुभव किया। बाबा ने संसार को चेतावनी देने के लिये यह लिखवा दिया है।

ईश्वर-भोग

श्री बाबा ईश्वर भोग के विषय में कहते हैं कि, राम राम कहते हुए उनकी आत्मा ईश्वर में ही तृप्त रहती है और उन्हें ईश्वर का ही सहारा रहता है। अपने शरीर के पोषण के लिये और उससे काम लेने के लिये थोड़े भोजन से ही उनकी आत्मा तृप्त रहती है, क्योंकि उनको नाम की तृप्ति रहती है और सदैव ऊपर का ही ख्याल रहता है। आत्म-प्राप्ति का और शरीर को संतोष देने का ही ख्याल रहता है, सदैव ऊपर की दृष्टि रहती है और वे निराधार रहते हैं, ईश्वर का भय रखते हैं। इस कारण वे निर्मल और सूक्ष्म हो जाते हैं। उनकी आत्मा शक्तिशाली और वाणी सत् होती है। ऐसी आत्मा ही प्रबल होती है और उसको ईश्वर में लय होने का हमेशा भय रहता है। उसको संसार में रोकने के लिये वे सूरत मूरत का ध्यान करते हैं जिससे शुद्ध विषय की दृष्टि बन जाती है। इसी का प्रेम और भाव लेते रहते हैं, करते रहते हैं और रखे रहते हैं। इसके द्वारा ही अपने को रोके हुए हैं और जी बहलाते रहते हैं। इसी कारण संसार में विचर कर संसार में ही मिलते रहते हैं और मनुष्यों से सेवा भाव सत् ही लेते हैं, सत् ही व्यवहार करते हैं और सत् दृष्टि से उसे पूरा करते हैं। केवल उनकी दृष्टि से ही काम पूरा हो जाता है। ईश्वर की बनायी हुई प्रकृति अर्थात् झाड़, वृक्ष, पर्वत-पहाड़, एकान्त इत्यादि स्थानों पर वे ईश्वर का ही ख्याल रखते हैं और उसे ही साक्षी रखते हैं। ईश्वर भी उनका ख्याल

रखता है। ईश्वर अत्यन्त प्रसन्न रहता है, क्योंकि वे उसके खेल में लगे रहते हैं। कभी जब सूरत मूरत देखकर संसार में विषय करने की दृष्टि हो जाती है, इच्छा हो जाती है, तब भीतर ही भीतर उस विषय इच्छा को तप के द्वारा नाम की अग्नि से उस प्रकृति को योग से जलाते रहते हैं और इस प्रकार फिर वे शुद्ध के शुद्ध हो जाते हैं। अनुभव करने के लिये वे विषय तो कर लेते हैं, परन्तु उसमें लिप्त नहीं होते हैं निरासक्त रहते हैं, परमात्मा से कहते हैं तुम्हीं करनेवाले और करानेवाले हो, मैंने कुछ नहीं किया। परन्तु ईश्वर जानता रहता है और उनको कुछ कहता नहीं। दूसरों का भाव देखकर भाव और प्रेम बढ़ाने के लिए अपने शरीर से और परकाया-प्रवेश द्वारा दूसरों के शरीर से भी विषयों को ग्रहण करते रहते हैं। ईश्वर में हर समय सुरता लगी रहने के कारण लय होने से बचने के लिए, संसार के कल्याण के लिए, कार्य करने के लिए, संसारी विषयों के आसरे से द्वैत बुद्धि को बनाये रखते हैं और दूसरा मन बना लेते हैं, क्योंकि मन उत्पन्न करने की शक्ति उनको प्राप्त रहती है, उसको नाम द्वारा सुरता से जलाने की शक्ति भी उनके पास रहती है, मन को नौकर रखते हैं। आवश्यकता पर बुलाते छोड़ते रहते हैं।

यद्यपि विषयों के सब अनुभव उनके अन्दर ही रहते हैं, परन्तु अनजान होने के कारण बिना याद कराये पिछली स्मृति नहीं होती है और नवीन अनुभवों के द्वारा पिछली स्मृतियाँ भी जाग्रत हो जाती हैं। श्री बाबा कहते हैं कि यह गुप्त रहस्य है।

चौरासी लाख योनि

एक बार बाबा ने ईश्वर से पूछा कि चौरासी क्या है और मुक्त किसे कहते हैं। तब परमात्मा ने चौरासी का कागज निकाला उसमें श्री महाराज ने देखा कि एक गोला बना है जिसके भीतर चार खाने हैं और बाहर चौरासी लाख योनियाँ हैं, इसके केन्द्र में एका है, जिनमें कि यह जीव एक दूसरे की आत्मा तृप्त करते हुए अपने शरीर का आधार दूसरे को देकर दूसरी योनि पकड़ता है और बनता बिगड़ता रहता है। क्योंकि वह अपनी आत्मा को संसार की वासनाओं से तृप्त करना चाहता है परन्तु भोगों के द्वारा सदैव ही अतृप्त रहता है और दूसरों की आत्म-तृप्ति का आधार बनता रहता है। यह चौरासी का फेरा है। इसी

कारण इसको चौरासी कहते हैं। इसी कारण इन योनियों में भटकते-भटकते युग बीत जाते हैं, शरीर धारण करते, तृप्ति करते-करते लाखों वर्ष हो जाते हैं, परन्तु चौरासी से निकल नहीं पाता है। जितना ही वह आत्मा को भोग से तृप्त करना चाहता है, उतनी ही वासना की भूख बढ़ती चली जाती है, तृप्ति करते-करते जब थक कर निराश हो जाता है तब ईश्वर का ख्याल होता है और जब उसे ऊपर का ध्यान हो जाता है, ऊपर की योनि में, चार खानों में मनुष्य की योनि में आ जाता है। इन चार खानों को ही संसारी मनुष्य चार वेद कहते हैं। उनको ही उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चार दिशाएँ भी कहते हैं। चार तत्त्वों के भी यही खाने हैं। पहला इन्द्रिय वेद अर्थात् भोग इन्द्रिय जिसके द्वारा जीव गर्भ में आता है और बन जाता है और कितनी ही योनियों में इस इन्द्रिय भोग की तृप्ति के लिये इस विषय के नशे में घूमता रहता है। दूसरा नाभि वेद, वही भेष वेद भी है पेट भरने की तृप्ति में ही उस जीव को को युग बीत जाते हैं परन्तु उसके चक्कर से वह निकल नहीं पाता और वहीं भटकता रहता है। तीसरा वेद हृदय कमल होता है जिससे कि प्रकाश बढ़ता है। प्रेम और प्रकाश वेद उसको कहते हैं जिसमें कि भाव बनता और बिगड़ता रहता है। इसमें बढ़ते रहने से आत्मा का प्रकाश बढ़ जायगा। सभी वासनाओं का स्थान हृदय में ही और हर मनुष्य के हृदय में हजारों की वासनाएँ हैं, और एक वासना की तृप्ति के लिए लाखों योनियों में जीव भटकता रहता है। सब वासनाओं के समाप्त होने पर ही हृदय का कपाट खुलता है, इसके बाद मुंह वेद होता है, जिससे मनुष्य, पृथ्वी, झाड़-वृक्ष को चूमते हैं, झूठ भी बोलते हैं, बुरे बचन भी बोलते हैं, जिस मुंह से संसार को बोध कराते हैं उसी मुख में जिह्वा भी निवास करती है। जिस जिह्वा रस की आसक्ति में जीव अनेक योनियों में भटक कर जिह्वा के स्वाद को लेता रहता है, परन्तु कभी तृप्त नहीं होता। यह चार वेद तो संसार में सभी के पास होते हैं और संसारी मनुष्य इसी का बोध करते हैं, रस लेते रहते हैं और फिर इसी में फंसे रहते हैं। पाँचवाँ वेद त्रिकुटी में होता है। यह योगियों के पास होता है। इसी से उनके मस्तक में प्रकाश रहता है। चार वेदों से जो निकलता है वह पाँचवें वेद के प्रकाश में होकर छठवें वेद में पहुँच जाता है और निराधार व निराकार होकर मस्तक से सुरता लगा देता है और ईश्वर में मिल जाता है।

देखो ! कितने परिश्रम से युगों तक चौरासी में भटक भटक कर जीव का परमात्मा से एका हुआ। चार वेदों में कितने युग तक भटकता रहा और जब वेदों से मुक्त हुआ और त्रिकुटी में प्रकाश ईश्वर की याद से हुआ तो फिर उस प्रकाश के ज्ञान से उसका ब्रह्माण्ड खुला और उसकी ईश्वर में लौ लग. गई। तब जाकर वह ईश्वर में मिल पाया। बाबा ने यह अनुभव करके एवम् परमात्मा से ज्ञान लेकर राम राम के द्वारा रस के भेद को पाया है। यह साक्षात्कारी है।

घोड़ा-योनि

एक बार बाबा ईश्वर का भजन करते हुए घूम रहे थे कि दस बीघा के लगभग जमीन गोल दिखाई दी। उसमें एक द्वार बना हुआ था। सन्त भजन करते राम राम में सुरता रखते हुए उस द्वार से घुस गए। वहाँ उनको एक गोल पोखर दिखाई दी, जिसमें दूब-घास उगी हुई थी। श्री महाराज ने खड़े होकर देखा कि लाखों घोड़े चर रहे हैं और बैठे हैं, वे चाहे चरें या न चरें, उठें या बैठें, दोड़ें या खड़े रहें, उनको कोई बोलने वाला, कहने वाला नहीं। वहाँ कुछ घोड़े सुस्त होकर बैठे दिखाई दिये। श्री महाराज को ऐसा प्रतीत हुआ कि संसारी मनुष्य दूब चरें या न चरें, बैठे रहें या चलें फिरें सुस्त रहें या उसी दस बीस बीघा में ही घूमते रहें परन्तु उनको वहाँ से बाहर निकलने का कोई स्थान नहीं मिलता। साधु, सन्त, मनुष्य सब इसी चक्कर में पड़े रहते हैं और इसी दस बीघा जमीन में अर्थात् दस इन्द्रियों के मैदान में विषय रूपी घास चरते रहते हैं, और जिस समय घास नहीं चरते हैं उस समय भी उनको ईश्वर का कोई ख्याल नहीं रहता है। उन पर ईश्वर की दया नहीं है, क्योंकि वह घोड़ा रूपी जीव सब चीजें लादे लादे घूमते हैं। उन्होंने अपना बोझा अर्थात् कर्मों का भार लाद रखा है और अपने जीव के लिये अर्थात् देह-बुद्धि के द्वारा इस शरीर के लिये ही परिश्रम करते रहते हैं। ईश्वर को न तो याद करते हैं और न अपने को ही ईश्वर का जीव समझते हैं और उन्हें उसका कोई ज्ञान नहीं है। इसी कारण ईश्वर उनका कोई ख्याल नहीं करता है। बाबा यह देखकर जिस द्वार से घुसे थे उसी द्वार से निकलने लगे तो आकाशवाणी हुई कि लाखों घोड़ों में से एक घोड़ा निकल कर जा रहा है।

बाबा भी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि देखा कि उस मैदान में किसी जीव की सुनवाई नहीं होती अर्थात् यहाँ से किसी का छुटकारा

नहीं होता, परन्तु बाबा जब उस मैदान में घुसे थे तो निरन्तर राम राम ही पकड़े रहे और सब खेल राम राम करते हुए ही देखते रहे और फिर राम राम कहकर ही निकल आये और न उस मैदान में बैठे ही और न वहाँ प्रेम किया। अपनी मनोवृत्ति संसार में नहीं लगाया और न संसार में आसक्त हुए। निर्लिप्त भाव से देखकर बाहर आ गये।

बाबा कहते हैं जो मनुष्य संसार में रहकर राम राम का स्मरण करता रहेगा, वह कहीं भी चला जाय, उसमें लिप्त न हो, उसको केवल देखता रहे और प्रेम न करे तो अन्त समय में जब उसको निकलने का समय आता है और राम राम के स्मरण के कारण ही ऊपर से पारब्रह्म की ओर से उसे सहायता मिल जाती है।

देखो, बाबा रामसनेही जी महाराज किस प्रकार राम राम के प्रताप से वहाँ से निकल आये और यह साक्षात्कार किया।

मूर्ति-पूजन का रहस्य

एक मनुष्य बाबा रामसनेही जी से पूछता है कि जो लोग जड़ बुद्धि से जड़-मूर्ति को भगवान् समझ कर पूजते हैं वह मूर्ति उनसे किस प्रकार बोलेगी। श्री महाराज ने बतालाया कि जिसकी आत्मा शुद्ध रहेगी, निर्मल रहेगी और वह निराकार में ख्याल रखेगा, उस मूर्ति को भगवान् समझकर ही प्रणाम करेगा, चरण चूमेगा, नेत्र लगायेगा और जब इस प्रकार करते करते उसका हृदय शुद्ध होकर निर्मल हो जायगा तो उसकी भावना सत् बन जायगी और फिर उस मनुष्य के अन्दर से ही उसकी आत्मा भाव के द्वारा निकल कर प्रवेश कर जायगी और फिर वह मूर्ति उसकी भावना के अनुसार ही बोलने लगेगी। पर वह मनुष्य यह नहीं समझ पायेगा कि उसकी आत्मा ही भावना के द्वारा उस मूर्ति में प्रवेश कर गयी है।

मार्ग बताकर आशीर्वाद की प्राप्ति

एक सेवा श्री बाबा रामसनेही जी और बतलाते हैं कि अगर कोई सत्पुरुष मार्ग चलते हुए मार्ग भूल जाय और कोई उसे ठीक मार्ग बता दे तो ठीक मार्ग बताने के आशीर्वाद को साधु पुरुष दे देते हैं, क्योंकि वह साधु अपने निश्चित स्थान पर पहुँच जाता है और उसे ख्याल रहता है कि उन्हें एक मनुष्य ने ठीक मार्ग बतलाया था। यह बात मार्ग

बतानेवाले आदमी को नहीं मालूम पड़ती, परन्तु मार्ग बताने में ही उसका कल्याण हो जाता है।

मीठी वाणी से आशीर्वाद

श्री बाबा कहते हैं कि कोई पुरुष उनसे रास्ता चलते हुए प्रेम भावना से अधीनता से बात करे तो उसकी बातें सुनकर बाबा की आत्मा प्रसन्न हो जाती है और दृष्टि उस पर पड़ जाती है, उस मनुष्य को इतने में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है, क्योंकि मीठी वाणी मोहनी रूप होती है। चूँकि वह मीठा बोला, अतः दृष्टि में और मन में अधीनता दिखाई पड़ी इसलिये उस मनुष्य को बगैर जाने ही सफलता हो जाती है।

भोजन द्वारा आशीर्वाद

श्री बाबा रामसनेही जी कहते हैं कि एक धर्म और यह है कि सर्वदा जो निराधार निराकार और निर्मल पुरुष होते हैं ईश्वर में ही रमण करते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी का ख्याल नहीं रखते, त्यागवृत्ति रखते हैं। ऐसी आत्मा कहीं पहुँच जाये और वहाँ उसे भूख लगे और भूख मिटाने की कोई चीज दे दे और उससे उसकी आत्मा तृप्त हो जाय तो उस देनेवाले को आत्मा तृप्ति की सिद्धि हो जाती है। भूखी आत्मा कोई भी क्यों न हो, उससे उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

बाबा कहते हैं कि यह साक्षात्कार्य है। किसी समय पर यह आशीर्वाद मिलता है। ऐसी आत्मा जब भीतर से माँग ले और देनेवाला तुरन्त दे दे तो उसे तुरन्त ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। यह साक्षात्कारी है।

नरक और स्वर्ग

श्री बाबा रामसनेही जी बतलाते हैं कि—नरक और स्वर्ग किसको कहते हैं। संसार में मल और मूत्र को ही नरक समझते हैं। और घृणा करते रहते हैं कि दोनों ही वस्तुएँ दुर्गन्ध उपस्थित करती हैं। परन्तु कामी मनुष्य भोगासक्ति के कारण हर समय मल-मूत्र का ही चिन्तन करते रहते हैं। जो इस प्रकार के भोगों में लिप्त रहनेवाले पुरुष होते हैं वे इसी के मिथ्या काल्पनिक आनन्द में डूबे रहते हैं और इसी को स्वर्ग का आनन्द समझते हैं। इस प्रकार के मनुष्य दूसरी योनि में मूत्र के कीटाणु बनते हैं और मनुष्य योनि में मूत्रद्वार का निरन्तर चिन्तन

करते रहने के कारण उनका वह भाव उनको इस मूत्र में ले जाता है एवं वह मूत्र ही उनको वहाँ अच्छा लगता है तथा वह ही उनको वहाँ पीने और खाने के लिये मिलता है और उनका जीवन उसी में व्यतीत होता है। उसी प्रकार की वासनाओं में डूबे रहनेवाले पुरुष विष्ठा के कीड़े बनकर, उत्पन्न होकर विष्ठा में ही निवास करते हैं और उनको वहाँ की दुर्गन्धि अच्छी लगती है और वहाँ पर वे अपने को सुखी और प्रसन्न समझते रहते हैं। जो मनुष्य ईश्वर का ख्याल रखता है और सत् कर्म में रहता है, ईश्वरीय रूप से उसको देखता है, उसका ध्यान कामेन्द्रियों पर भोग-दृष्टि से नहीं जाता है एवं रूप सौन्दर्य देखकर वह आसक्त नहीं होता है। केवल सत् दर्शन के निमित्त में प्रेम-भाव रखता है और इस प्रकार जी बहलाता रहता है यथा कभी जिस प्रकार कि गौ और कुत्ते वर्ष में एक बार भोग करते हैं, उसी प्रकार जो मनुष्य वर्ष में एक बार स्त्री-प्रसङ्ग करता है तो वह अवश्य वैकुण्ठ प्राप्त करता है। और इस प्रकार के पुरुषों के द्वारा ही संसार में दूसरे प्राणी तरते रहते हैं। एवं संसार में इस प्रकार भोग करनेवाला ही ईश्वर में मिलने में समर्थ होता है। वही ईश्वर का काम और ध्यान करके ईश्वर में मन लगा सकता है, सत् ज्ञान कर सकता है, ऐसे पुरुष का कल्याण अवश्य होगा।

पाप और पुण्य

यह प्रश्न उपस्थित होने पर कि पाप और पुण्य किसको कहते हैं ? श्री बाबा कहते हैं कि—मनुष्य जो भी कर्म करता रहता है, उसकी आत्मा जानती रहती है कि यह कर्म अच्छा है या बुरा है, और बुरे कर्म को करने से इसकी आत्मा उसे रोकती है, परन्तु मनुष्य काम, क्रोध, लोभ और मोह के आशय से जब अपनी मन बुद्धि को दूषित कर लेता है तो वह आत्मा के निर्णय को न मान कर पाप कर्म में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये लग जाता है। बुरे कर्म का निरंतर चिंतन करते रहने के कारण उस कर्म में जो उसका राग हो जाता है, उसी मोह की आसक्ति के कारण उसे उस विषय का नशा हो जाता है, और अच्छे बुरे का ज्ञान नष्ट होकर उसका मन, बुद्धि दूषित हो जाती है और उसकी दृष्टि असत् और दूषित बन जाती है, परन्तु बुद्धि दृष्टि के दूषित हो जाने पर भी आत्मा दूषित नहीं होती है, उस समय अगर मनुष्य मन और बुद्धि के दोषों को विवेक दृष्टि से देख कर मन और बुद्धि के अनुसार आचरण न

करके अगर आत्मा के निर्णय के अनुसार आचरण करे तो वह पाप कर्म से बच जाता है। इस कारण मनुष्य को पाप से बचने के लिये अपनी आत्मा के निर्णय के अनुसार ही कार्य करते रहना चाहिए।

श्री महाराज कहते हैं कि मनुष्य दृष्टि होते ही वह मानसिक पाप करने लगता है; और दूसरे की वस्तु चुराकर भोगने की इच्छा करता है उसके लिये झूठ बोलता है, विश्वासघात करता है, मित्रद्रोह करता है, ईर्ष्या करता है, हिंसा करता है, परनिंदा करते दोष दर्शन करता है, अपने अवगुण न देखकर सदैव पराये दोष देखकर स्वयं अवगुण रूप हो जाता है, धर्म कार्य करनेवाले के कर्म में बाधा डालता है और सत्संग में दूसरों को जाने से रोक कर बैकुण्ठ जाने वाले को भी नरक में भेज देता है। संसार में इस प्रकार के ही कर्म बहुत होते हैं और जीव दृष्टि के कारण इस प्रकार के सारे कर्म उसके लिये असत् ही रहते हैं, क्योंकि कर्म करते समय वह स्वयं इन कर्मों को असत् ही समझता है, उस मनुष्य में बल नहीं रहता है और उसको कहीं से कोई सहायता भी नहीं मिलती है। इस कारण वह दुःखी रहता है। इसी प्रकार बाबा पुण्य का भी विवेचन करते हैं---

वेदों का सत्संग करना, नम्रता से रहना, दैन्य भाव को धारण किये रखना, मीठा बचन बोलना, निश्छल और निष्कपट रहना, विश्वासघात नहीं करना, सत्य भाषण करना अपने सत्कर्म से ही काम रखना, बुरे कर्म के चिंतन से बचना, जहाँ बुरा कर्म हो रहा हो वहाँ से उठ जाना, दृष्टि का भाव सत् रखना, मानसिक धारणा सत् रखना, चोरी का विचार न रखना, क्योंकि जो आत्मा चोरी करता है वही आत्मा शाह बनकर उसे पकड़ा भी देता है। किसी का आधार काटकर अपना पेट नहीं भरना चाहिये। दूसरों को दुखी करके स्वयं सुखी होने का विचार न करे। फलासक्ति त्याग कर ईश्वर पर भरोसा रखे कि जो शुभ कर्म हैं वे निष्फल नहीं जाएँगे। परनिंदा न करे और सत् विचार से कर्म करता रहे, जो मनुष्य इस प्रकार के कर्म करता रहेगा उसमें सत् असत् की भेद बुद्धि नहीं रहती और उसके द्वारा अगर कोई संसार की दृष्टि में असत् कर्म भी हो जाता है तो भी वह कर्म उस मनुष्य के लिए तो सत् ही रहता है। श्री बाबा रामस्नेही जी कहते हैं कि इस प्रकार से जो मनुष्य पाप कर्मों से बच कर पुण्य कर्म करता रहे तो वह अवश्य सुखी रहेगा और मुक्त हो जायगा। यह साक्षात्करी है।

'मैं' कौन हूँ

श्री बाबा अपने मन से प्रश्न करते हैं कि मैं कौन हूँ ? कैसे उत्पन्न हो जाता हूँ ? और फिर कैसे बन जाता हूँ ? मेरा कैसा रूप हो जाता है ? और मैं उसे कैसे बदल लेता हूँ। मैं अपने में कैसा ज्ञान रखता हूँ ? किस ज्ञान से दूसरों को देखता हूँ और फिर परकाय प्रवेश कैसे होता है ? श्री महाराज कहते हैं कि शरीर में जो जीवात्मा रहता है, वह सूक्ष्म शरीर धारण किये रहता है, और वासनाओं के कारण बदलता रहता है। मनुष्य की जब सारी वासनाएँ भस्म हो जाती हैं तो उसका वासनामय सूक्ष्म शरीर समाप्त होकर शुद्ध आत्मस्वरूप में स्थित रहता है, और शरीर को संसार में रोकने के लिये स्वयं मोह को पकड़े रहता है एवं कभी वह मोह का त्याग करके परकाय प्रवेश द्वारा वहाँ काम करता रहता है और स्वयं सब जानता है, परन्तु जिसके यहाँ वह काम करता है वह नहीं जानता है।

इस प्रकार यह आत्मा हर स्थान पर प्रत्येक मनुष्य के यहाँ रहता है और इसकी गति को कोई नहीं जानता है और न तो कोई संसारी मनुष्य समझ ही सकता है, परन्तु वह सब को देखता रहता है, ज्ञान करता रहता है, एवं ज्ञान भी रखता है और सब की परीक्षा करता है तथा निरन्तर घूमा करता है।

श्री बाबा रामसनेही जी कहते हैं कि इस प्रकार कर्त्तव्य एवं खेल करते हुए यह आत्मा संसार में रुका रहता है और इसका भेद कोई नहीं जानता है। किन्तु यह सब की गति को जानता रहता है। जब तक वह कर्म करता रहता है और इस कर्म का करनेवाला 'मैं' हूँ ऐसा ज्ञान रखता है तब तक वहाँ अपने अतिरिक्त किसी दूसरे को नहीं देखता है और अपनी दृष्टि से देखता रहता है, करता रहता है, नम्रता से रहता है; स्वयं छोटा बनकर रहता है, जीव आत्मा को बड़ा बनाकर उसी की हुकूमत से रहता है और छोटा बनकर ही वह जीव आत्मा पर अधिकार करने में समर्थ रहता है। उसकी हुकूमत का भय रखता है, और ऐसा प्रतीत होता है कि यही 'मैं' हूँ। और मोह से जो अलग रहता है, मोह का आश्रय नहीं लेता है, और निराकार रहता है, माया से अलग रहता है, किसी में लिप्त नहीं रहता, सब वस्तुओं का अन्दर बाहर का त्याग रखता है। तत्त्वों को साथ रखता है, छोटा बनाये रखता है, निरहंकार रहता है, बोलता है। जो कुछ है 'तू' ही है तेरे अतिरिक्त कोई नहीं है,

ऐसा ज्ञान रखता है। इस ज्ञान द्वारा अपनी रक्षा किये रहता है और मैं हूँ ऐसा कोई ज्ञान नहीं रखता है, और यह भावना रखता है कि जो कुछ कर्म करता हूँ तेरा ही करता हूँ, और जब ऐसा बड़ा वह परमात्मा को किये रहता है, तब वह जान सकता है कि यह 'मैं हूँ' और वह 'तू' है। जब हमारे में कुछ नहीं है तब 'तू' है और जब अपने का ज्ञान रखनेवाला रहता है तब 'मैं हूँ' इस प्रकार से जो ब्रह्म भाव को प्राप्त कर लेता है उसे ही परकाय-प्रवेश की शक्ति होती है। श्री बाबा का कथन है कि यह साक्षात्कारी है।

जनेऊ और माला की शक्ति

श्री बाबा ने एक मनुष्य को गले में माला पहने देखा। उसके शरीर पर जनेऊ था। वह मनुष्य विषय भोग किया करता था। बाबा ने देखा कि उसकी माला और जनेऊ दोनों गिर गये। यह क्यों गिर गये, विषय करने से। अब इसका उपाय सोचना चाहिये कि किस प्रकार ऐसे मनुष्य का जनेऊ और शरीर पवित्र हो सकता है। बाबा ने देखा कि यह जनेऊ यदि ब्रह्म ऋषि पहन लें और पहनकर दे दे तो इसकी माला और जनेऊ में तुरन्त ही शक्ति आ जावे। श्री महाराज जी का ऐसा विचार है कि जो मनुष्य माला और जनेऊ पहन कर भोग कर लेते हैं तो उस माला एवं जनेऊ में कुछ शक्ति नहीं रह जाती है। ब्रह्म ऋषि बिना वह शुद्ध नहीं हो सकता। यह साक्षात्कारी है। जो माला या जनेऊ धारण करे तो वह भोग विलास कभी न करे। उसकी माला व जनेऊ में शक्ति व प्रकाश रहेगा क्योंकि यही तत्त्व है। जो राम रूप रहते हैं और जिन्हें नारायण की याद हो जाती है तो उन्हें दाहिने कन्धे से जनेऊ पड़ जाता है। वह भीतर की होने पर उसकी बाहर आवश्यकता नहीं पड़ती। नारद जी ब्रह्मचारी थे, भीतर जनेऊ था इसी कारण बाहर पहनते थे। अतः ब्रह्मचारी को ही जनेऊ पहनना चाहिये। श्री बाबा ने इसका अनुभव किया है। फिर भी बिना गुरु के कोई मुक्त नहीं हो सकता है, जो कुछ है गुरु ही है। गुरु के अतिरिक्त कोई नहीं है। घटाने बढ़ाने वाला गुरु ही है। जनेऊ शरीर से गिर जाना अशुभ है।

मन रूप बन्दर कैसे बँधे

श्री बाबा ने एक बार ध्यान में (जाग्रत अवस्था में) देखा कि जब एक बन्दर को पकड़ा तो वह हाथों से पृथ्वी को पकड़े रहा। एक आदमी और आ पहुँचा, फिर बाबा जो कि ब्रह्म आत्मा द्रष्टा रूप थे, दोनों ने उसे

उठाकर समुद्र में खेल देखने के लिये फेंक दिया जिससे कि इसकी चंचल वृत्ति दूर हो जाये। बाबा ने द्रष्टा रूप होने के कारण देखा कि फेंकते ही समुद्र की लहरों ने उस बन्दर को बाहर फेंक दिया जो कि बाहर निकलते ही कुत्ता हो गया, जिसका कि मुँह केवल बन्दर के समान था और शरीर कुत्ते का था। जिस समय जीव की योनि में परिवर्तन होता है कुछ चिन्ह पिछली योनि का रह जाता है जिसके द्वारा उसे ज्ञान रहता है, अपनी पिछली योनि का दूसरा मनुष्य जो बाबा के साथ था, उसको इस योनि परिवर्तन का कोई ज्ञान नहीं हुआ। कुत्ते को ज्ञान हुआ किं वह पहले बन्दर था और फिर जब वह कुत्ता हो गया तो छिपकर एक स्थान पर शान्त होकर बैठ गया। श्री बाबा ने उसको जब शान्ति से बैठा देखा तो दूर से देखने के बाद उनके हृदय में दया हुई और वे उसको खाना देने गये। यह विचार हुआ कि खाना देकर इसको खाना सिखा दें, जिससे इसको कुत्ता योनि का ज्ञान हो जाय और यह शरीर के पोषण और आत्म-संतुष्टि का मार्ग जान ले।

बाबा कहते हैं कि ऐसा देखने में आता है कि जीव का या मनुष्य का मन ही बन्दर के समान है।

ब्रह्म आत्मा आवश्यकता पड़ने पर जीव की सहायता से इस मन रूप बन्दर को सत्संग रूप समुद्र में डाल देता है तो वहाँ सत्त्वगुण के प्रभाव से उसका रूप बदल कर बन्दर से कुत्ते का हो जाता है अर्थात् उसकी चञ्चलता नष्ट होकर उसकी प्रकृति में शान्ति आ जाती है। उसकी तृष्णा समाप्त होकर मोह माया नष्ट हो जाती है। और फिर उसे खाने को टुकड़ा मिले, मान मिले उसको इसकी चिन्ता नहीं रहती है। वह केवल द्रष्टा की दया पर निर्भर होकर रहने लगता है। द्रष्टा उसको फिर सिखा कर और मार्ग दिखा कर छोड़ देता है, क्योंकि ब्रह्म आत्मा को द्रष्टा होने के कारण सब ज्ञान रहता है, परन्तु जीव आत्मा न अपने कर्म का ख्याल ही रखता है और न दृष्टि ही। इस प्रकार जब वह कुत्ता योनि को प्राप्त कर लेता है अर्थात् वृत्तियों के शान्त हो जाने पर तो उस योनि में वह जैसा अभ्यास कर लेता है, वैसी ही उसकी उन्नति एवम् आध्यात्मिक विकास हो जाता है। श्री महाराज कहते हैं कि मनुष्य अगर अपनी प्रकृति कुत्ते के समान बना ले अर्थात् बदल ले जिस प्रकार कि कुत्ते ने टुकड़े ही पर निर्भर रहकर ईश्वर पर विश्वास करके शान्ति प्राप्त कर ली, उसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि मानसिक

चंचलता छोड़कर, जिह्वा के स्वाद को त्याग दे और भोजन की तृष्णा से मुक्त हो जाय। फिर जो टुकड़ा उसे मिल जाय उसी से आत्मा की संतुष्टि कर ले तो संसार में उसकी उन्नति हो जाती है और उसका रूप बदल जाता है। वह संसार का कुत्ता न रहकर हरि घर का कुत्ता बन जाता है और अगर तृष्णा बढ़ा लेगा तो वह संसार के जाल में ही फँस जावेगा, यह साक्षात्कारी है।

धनुष वाण

श्री बाबा रामस्नेही जी धनुष बाण के विषय में कहते हैं कि—जैसा धनुष बाण श्री रामचन्द्र जी के पास था वैसा ही एक ग्राम में एक भील धनुष बाण लेकर उस ग्राम पर छोड़ने लगा। ग्रामवासी भयभीत होकर अपने-अपने घर भागने लगे और उस ग्राम में हलचल मच गई, जब बाबा ने इस दृश्य को देखा तो बीच मार्ग में खड़े होकर विचार करने लगे कि मैं आत्मा का स्वरूप हूँ, मुझे इन बाणों से नहीं डरना चाहिए, ऐसा विचार कर साहस किया और जितने बाण भील छोड़ता था छाती के सामने आते ही उनको हाथ से पकड़-पकड़ कर तोड़ कर फेंक देते थे। भील ने यह जब देखा कि मेरा बाण काम नहीं देता है, तब वह क्रोधित हो गया और धनुष बाण फेंक कर चला गया। बाबा ने वह धनुष अपने पास लेकर रख लिया एवं उस धनुष बाण से बहुत प्रेम करने लगे।

बाबा सब जीव-जन्तु, पशु-पक्षियों को भगवान् का ही स्वरूप समझते थे, परन्तु एक दिन एक सियार पर दृष्टि पड़ने पर सियार को बाण से मारने का विचार किया और भगवान् की धारणा को भूल गये। एक बाण सियार के ऊपर छोड़ा और न लगने पर दूसरा फिर तीसरा छोड़ा, परन्तु सियार को कोई न लगा और उन बाणों ने बाबा के पैरो में थोड़ा-थोड़ा घाव कर दिया, बाबा को यह चिन्ता हुई कि यह बाण सियार को न लगकर और लौट कर उनको ही लग गया, विचार करने पर ऐसा मालूम हुआ कि इसको चलाने का कोई मन्त्र है। अब तक वे सब को भगवान् का स्वरूप समझते थे, परन्तु अब उन्होंने द्वैत भाव से बाण चलाया था। इस कारण बाबा को ही लग गया। फिर ऐसा समझकर आँख मूंद कर वाण छोड़ा तो वह जाकर सियार को लग गया।
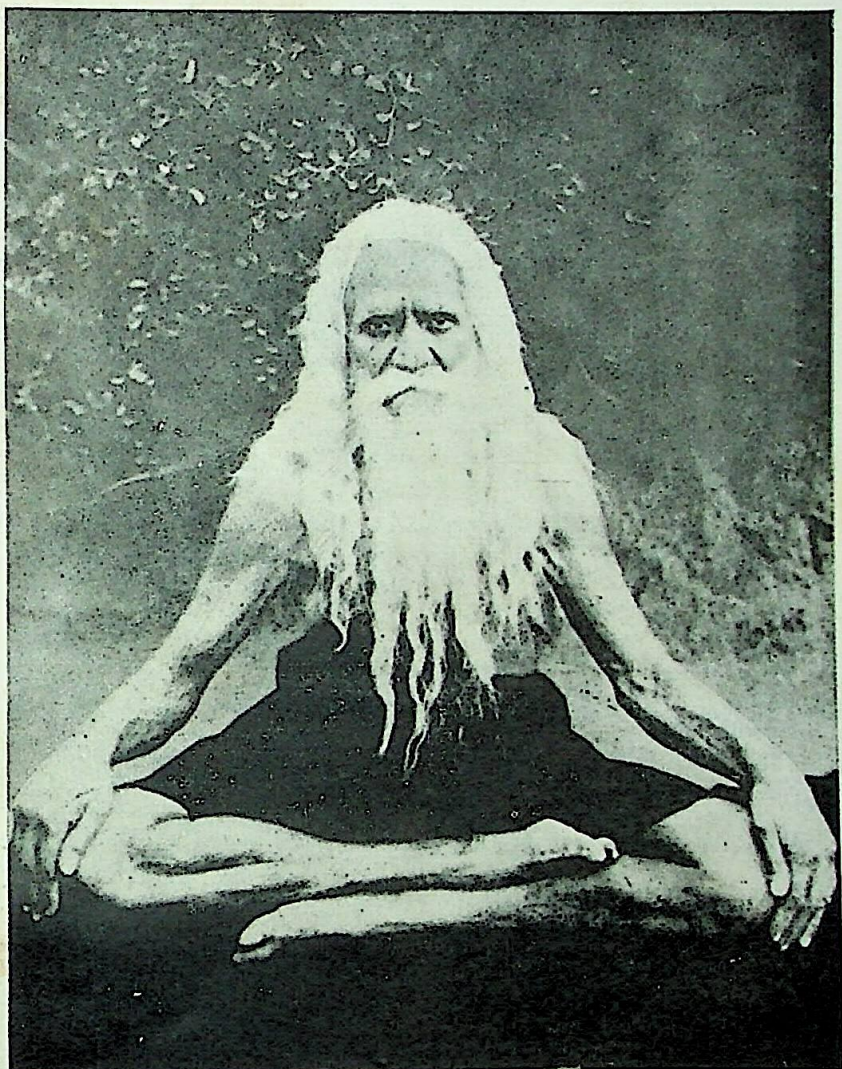
श्री १०८ जयशंकर महाराज, राजऋषि काली कमलीवाले

इस प्रकार बाबा को अनुभव हुआ कि संसारी मनुष्यों को ऐसा समझना चाहिये कि सभी ईश्वर रूप हैं और सब उसी की वस्तुएँ हैं, ऐसा समझ कर जो मारते हैं तो वह अपने को कभी नहीं लगेगा, दूसरे ही को लगेगा। और अगर द्वैत भाव से किसी जीव को मारते हैं तो वह मारने वाले को ही लगेगा। इसी तरह संसार के माँसाहारी मनुष्य ऐसा समझकर पशु को मारते हैं और खा जाते हैं। उनको यह ज्ञान नहीं है कि हम अपने आप को ही मार कर खा रहे हैं। इस प्रकार जो खाता है उसको भी कोई दूसरा समझकर मार देता है और खा जाता है।

बाबा कहते हैं कि सांसारिक मनुष्य ऐसे रहस्य को नहीं समझ सकते हैं, वे तो जिह्वा के स्वाद से ही आत्मा सन्तुष्ट करते रहते हैं। यह चीज इस कलियुग में साक्षात्कारी मिल रही है।

देवी-पूजन

श्री बाबा रामस्नेही जी अब इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि लोग संसार में देवी-पूजन किस प्रकार करते हैं? और शुद्ध पूजन किस प्रकार होता है? जो पुरुष अपने ही घर में अपनी स्त्री की नग्न रूप की पूजा आरती करके, उसके चरणों का ध्यान कर सके और कामासक्त न हो, वृत्ति शुद्ध रखे, भाव हृदय में सत् रखे तो उसकी आत्मा उसकी ही देवी का रूप बनाकर हर स्थान पर सहायता देगी और वह जान नहीं सकेगा कि हमको उसके द्वारा सहायता मिल रही है।

दूसरे प्रकार का देवी-पूजन श्री बाबा बताते हैं कि—किसी कन्या के नग्न रूप का ख्याल करके छोटे बालक का रूप बना करके मन के द्वारा उसकी जननेन्द्रिय में बैठने का ख्याल रखे। अगर इस प्रकार की देवी-पूजा वह कर सके तो सर्वोत्तम देवी-पूजा है। इसके द्वारा वह देवी को भी जीत सकेगा और भगवान् को भी जीत सकेगा।

एक तीसरे प्रकार की देवी-पूजा बाबा बतलाते हैं कि अगर रास्ते में कोई सुन्दरी स्त्री मिल जाय और उसके रूप के प्रति आकर्षण हो जाय तो अपने ध्यान को सत् रखें और उसके रूप को ऊपर से सत् भाव से भगवत् दृष्टि रखते हुए देखता हुआ नीचे चरणों पर ले जाय और उसके दोनों चरण खींच कर अपने हृदय में दोनों ओर रख ले ऐसा करने से भी उसकी शक्ति क्षीण नहीं होगी। भावना शुद्ध बनेगी और बलवान् बनेगा, अपनी शक्ति क्षीण नहीं होने देगा, दूसरे की शक्ति लेता रहेगा।

मृत्यु को वश में करने का उपाय

पूर्ववर्णित राजस्थान यात्रा के समय जयपुर में बाबा की सेवा में एक महापात्र रहता था। वह बाबा के लिये चाय वगैरह लाता था और बहुत श्रद्धा-प्रेम से बाबा की सेवा किया करता था। बाबा की दया से उसे कुछ मुखसिद्धि प्राप्त हो गई थी। वह जब कभी किसी को कुछ बता देता तो वह हो जाता था। उसने एक दिन किसी को सट्टे का नम्बर बताया, उसका वह नम्बर आ गया। यह जानकर बहुत से लोग उसके पास नम्बर लेने आने लगे। तब उसको घमण्ड हो गया। घमण्ड आने से उसकी वह सिद्धि जाती रही। अतः उसने जो नम्बर बताया वह गलत हो गया। गरीबों का बहुत नुक्सान हुआ। उन लोगों की आत्मा दुःखी हुई। बाबा को इस बात का पता पड़ा, परन्तु साथ साथ एक बात और थी बाबा ने उस महापात्र सेवक को आज्ञा दे रखी थी कि वह रोज चिड़ियों, चुनुगों, कीड़ों, मकोड़ों, पशुओं एवम् पक्षियों को दाना व चारा डालता रहे, उनके पीने के लिये कुण्डे में पानी रखा करे, यह वह नियम-पूर्वक करता था। वैसे जब वह घमण्ड में आता था तभी उसकी वाणी की शक्ति चली जाती थी। बाबा की कृपा से उसे घाट दरवाजे में काफी धन भी प्राप्त हो गया था। वह बहुत सुखी था, परन्तु इस सट्टे के धन्धे के कारण गरीबों को बहुत नुक्सान और तकलीफ उठानी पड़ी थी, इस कारण ईश्वर उससे नाराज हो गये थे। बाबा भी तो ईश्वर रूप ही थे, उन्हें भी इसका पूर्ण ज्ञान था।

एक दिन बाबा ने उससे कहा—तू ने बहुत गरीबों को सताया है, आज तू मर जायगा। रात में ८ बजे तेरे प्राण निकल जायँगे। परन्तु चूंकि उसकी सेवा भी थी, उसका कर्म भी था इस लिये बाबा को उसका भी ख्याल था। बाबा ने इस मृत्यु से बचने का उपाय उसको बताया कि जब तेरी मृत्यु आये, तू जब सब संसार को भूल कर कुटुम्ब, कवीले धन दौलत का ख्याल छोड़कर अन्तर में भगवान् का ख्याल रखेगा तभी वच सकता है'। नहीं तो कोई शक्ति तुम को मुत्यु से बचा नहीं सकती। बाबा तो अन्तर्यामी हैं, उनको तो सब स्थिति का पूर्व ज्ञान है, वे सब जानते थे कि क्या होने वाला है। यह तो उनकी एक लीला थी। उस दिन शाम होते होते उस सेवक को खूब जोरों का बुखार चढ़ा, और कुछ देर बाद उसकी बोली बन्द हो गई। बाबा ने जो समय मृत्यु का बताया था वह आया। बाबा ने दूत का रूप धारण करके एक

हाथ में एक नुकीला चिमटानुमा अस्त्र लिया और दूसरे हाथ में दण्ड लेकर उसके सामने जाकर उसको दिखा दिखा कर डराने लगे और वह सेवक उसको देखता रहा। बोली तो उसकी बन्द हो गई थी। वह सिर्फ देखता ही रहा। और दूत रूपी बाबा ने वह अस्त्र उसके हृदय में घोंप दिया। घोंपकर उसको थोड़ा हिलाया तो उस जगह बाबा ने पाया कि वहाँ सिर्फ ईश्वर का ही ख्याल है। कुटुम्ब-कबीला, धन-दौलत, दुनियाँ का कोई ख्याल नहीं है, सिर्फ ईश्वर का ही है। वह अस्त्र हिलाने से सिर्फ ईश्वर का ही ख्याल आया और यह विचार उसको हुआ कि— हे ईश्वर जैसे हैं तुम्हारे हैं, जैसा तुमने कराया वैसा किया। जैसी तुमने बुद्धि दी उसी प्रकार कर्म करते रहे। तुम्हारे सिवा कोई नहीं है। ऐसी भावना होने पर उसके आखों में पानी भर आया और वह पानी मोतीकी तरह चमकता आँख से बाहर निकला, उसमें मोती की चमक निकलती थी। बाबा उन मोतियों को देखकर समझ गये कि इसका आभ्यन्तर सच्चा है। इसके अन्दर में सच्चाई है, और वह मृत्यु से पार पा गया। सच्ची भावना से मृत्युञ्जय हो सकता है। यह सब बाबा की लीला है। है। संसारी आदमी इस प्रकार के आचरण से अपना जीवन बचा सकता है।

मृत्युञ्जय का दूसरा प्रयोग

विख्यात गुप्तेश्वर (जूनागढ़-सौराष्ट्र) स्थान में बाबा दिन-रात राम राम का भजन करते रहते थे। सोते नहीं थे। कहने का आशय २४ घण्टे राम राम में ही लगे रहते थे। क्योंकि रात दिन राम राम का ठोकर लगता रहता था। अन्तर (आभ्यन्तर) खुल जाने से ऐसा मालूम पड़ा कि शरीर छूट रहा है, ऊपर को जाने लगा और खींचने सा लगा और बाबा उसको नीचे से खींचकर रोकने लगे। ऐसा विचार आया कि अब शरीर छूट जायगा और घबड़ाने लगे कि इसको कैसे बचाया जाय। अब जिन्दा ही समाधि लेनी पड़ेगी। इतने में ही वहाँ जब एक भक्त आया तो बाबा ने उससे कहा कि हम गड्ढे में सो जाते हैं, तुम ऊपर से पत्थर (ढँगला दो=लुढ़का दो) गिरा दो। यह सुनकर वह भक्त भाग गया। फिर २, ३ सेवक आये जिनमें भास्कर नागर का लड़का भी था। उससे बाबा बोले कि हमारे शरीर पर कम्बल डाल कर तुम तीनों खूब दबाओ। उसने बाबा की आज्ञा का पालन किया और बाबा को खूब जोर से कम्बल ओढ़ाकर दबाया। बाबा ने नाम तो

छोड़ दिया था परन्तु ख्याल था। बाबा साँस बन्द करने लगे तथा नीचे रोकने लगे, धीरे धीरे थोड़ी थोड़ी साँस लेते रहे और फिर साँस रोक लिया। थोड़ी देर इसी प्रकार रहे। इससे जो अन्तर खुल गया था वह बन्द हो गया। ऐसी क्रिया से बाबा ने अपना शरीर बचाया और तब से यह जाना कि जिन्दा समाधि जो सुनी जाती है इसका यही भेद है। साधु-सन्त जो जिन्दा समाधि लेते हैं, वह इसी प्रकार की समाधि होती है। नाम खुल जाने के कारण ही कहीं बचने (रुकने) की जगह नहीं रहती है, विवश होकर जिन्दा समाधि लेनी पड़ती है।

प्राण बचने का यौगिक उपाय

तालावाला (जूनागढ़) गाँव के हरन नदी के तट पर एक वट के पेड़ के नीचे बाबा भजन-ध्यान कर रहे थे। एक दिन ध्यान करते करते तबियत खराब हो गई और बड़े जोर का बुखार चढ़ गया। वहाँ पर बहुत से भक्त दर्शन करने को इकठ्ठे थे। उन भक्तों से बाबा बोले कि अब हमारी मृत्यु होनेवाली है। यह शरीर (छूटेगा) बचेगा नहीं आप लोग चुप-चाप बैठे रहना, यह आदेश देकर बाबा वहीं सो गये और उन्हें कल्पना होने लगी कि अब हमारा शरीर छूट जायगा एवम् अब दुनियाँ नहीं देखेंगे और न गाड़ी में बैठेंगे। एक किनारे पर शरीर छूट रहा है, कहीं मध्य-भाग में छूटता तो ठीक था। (किनारे से बाबा का आशय हिन्दुस्तान के एक कोने से था।) ऐसा विचार बाबा के अन्तर में हो रहा था। बखार का जो ताप है उस पर ईश्वर का ख्याल तो है, और यह भी ख्याल है कि अब देखें यह जीवन कैसे जाता है। यही सब विचार करते करते बाबा क्या देखते हैं कि—दोनों आखों के बगल से पानी निकल कर नाक के ऊपर एक बुलका निकला और फूट गया, इस बीच बराबर यह ख्याल बना है कि यह जीवन जा रहा है। इसी प्रकार दूसरा और तीसरा बुलका निकला और टूट गया। टूटने से आवाज आयी कि बच गया। यही मनुष्यों का प्राण है जो आँखो से निकलता है। आँख से खून निकल कर जाता है, इसी विधि से प्राण जाता है। ख्याल (भावना) इसी प्रकार रखने से ही प्राण बच सकता है, अन्यथा कोई शक्ति प्राण बचा नहीं सकती। केवल इसी विधि से प्राण बच सकता है।

जल तत्त्व की अर्चना

जल का पूजन भी बाबा बहुत प्रेम से करते हैं। जल को राम नाम से जागृत करते हैं, आत्मज्योति का प्रकाश फैलाते हैं, ईश्वर का स्वरूप

जताते (बतलाते) हैं और स्तुति करने में लग जाते हैं। बाबा के अनुभवों से जो दूसरे प्रकरण में व्यक्त किये गये हैं, उनसे यह स्पष्ट होता है कि कितनी जगह कई बार उनको जल ने रास्ता दिया है, कई बार धूनी के लिये लकड़ी जल से मिली है। कई बार अथाह बाढ़ आयी लेकिन बाबा जहाँ अपनी साधना में रत रहते थे उस जगह का संरक्षण किया। वे जलतत्त्व से इतने घुले मिले हैं कि एक बार यहाँ तक देखा गया कि उन्होंने बुझती हुई अग्नि को जल से जागृत और प्रज्वलित किया, यह घटना हमारी अपनी आँखों से देखी हुई है।

पृथ्वी-तत्त्व की जानकारी

श्री बाबा को पृथ्वी तत्त्व का भी विशेष ज्ञान है, पृथ्वी पर उनकी बड़ी आस्था है। वे जहाँ जाते हैं पृथ्वी को चूमते-चाटते हैं, दण्डवत कर उसकी आराधना करते हैं, धूल उठाकर ललाट, आँख, नाक, कान और हृदय में लगाते हैं और जीभ से उसका सत्त्व खींचते हैं। उनका कहना है कि—पृथ्वी सत्य है, माँ है, ईश्वर है, व्यापक है और अनादि काल से सारे के सारे (सम्पूर्ण) महान् पुरुषों की राख इसी में पड़ी हुई है। रामावतार एवं कृष्णावतार में जो लीलाएँ हुईं, जो यात्राएँ हुईं, उनमें भगवान् के ही नहीं भक्तों के भी चरणरज इसी पृथ्वी में पड़ी हुई है। बज्र, अंकुश आदि जो रेखाएँ है उनकी छाप आज भी पृथ्वी में लगी हुई है। पृथ्वी से समस्त संसार के जीव, जन्तु एवं वनस्पति का पालन पोषण हुआ है। यही एकमात्र साधनभूमि है जहाँ से मानव जन्म जन्मांतर के फेर से बच सकता है। देवता लोग भी इस भूमि के लिये लालायित रहते हैं। पुराणों में कहा गया है—

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

अर्थात्-देवगण बराबर यह स्तुति करते हैं कि—धन्य हैं वे लोग जो यहाँ भारत में जन्म लेते हैं। देवता लोग भी देवत्व से स्वर्गतुल्य भूमि पर उतरना चाहते हैं। पुण्य क्षीण (हीन) होने पर देवता लोगों को भी इसी पृथ्वी तल पर गिरना पड़ता है---

"क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके विशन्ति"

इस लिये पृथ्वी-तत्त्व का भी बहुत महत्त्व है। किसी को कोई रोग हो, यह सब भावना है। और भावना से ही रोग निर्मूल होता है। सत्त्व

मिट्टी है, इससे 'सत्' काम होता है, 'सत्' भावना से बना है, 'सत्' काम में प्रयोग किया जाता है। ऐसी दृढ़ता रखकर किसी रोगी को औषध रूप में दिया जाय तो अच्छा हो सकता है। अधीनता और दीनता से पृथ्वी को अपनाने पर ऐसी कोई बात नहीं रह जाती जो न हो सकती हो।

वायु-तत्त्व का ज्ञान

बाबा श्वास-प्रश्वास के भजन को ही विशेष महत्त्व देते हैं, उनको नाड़ी,कुण्डली इत्यादि का पूर्ण ज्ञान और अनुभव है। एक तो वे जब हवन करने लगते हैं तब उनके सारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। रोम रोम से राम-ध्वनि निकलती है। पहले तो रबड़ की नली अपने शरीर के किसी भी अंग में लगा कर श्रोता के कानों से जोड़ देते थे और राम-नाम स्पष्ट सुनाई देता था। अब तो उस नली की भी जरूरत नहीं है। कोई अपना कान उनके किसी भी अंग में लगा दे और श्रवणेन्द्रिय को केन्द्रित करे तो स्पष्ट राम नाम सुनाई देने लगेगा। उनका कहना है कि 'राम नाम' के निरंतर अभ्यास और अथक परिश्रम से इसतरह श्वास-प्रश्वास में शब्द समा जाता है, कि वह शब्द बाहर निकलता हुआ और भीतर जाता हुआ श्वास के तन्तु उसमें प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते हैं।

दाहिने नासिका से एक सफेद प्रकाशमय सूत-सी लकीर भीतर जायगी, जब वह बाहर निकलेगी तब वह श्यामवर्ण की हो जायगी। श्वास रूपी निराकार ईश्वर श्यामवर्ण में रँगकर साकर रूप ले निकलता है और वह निकलता हुआ तंतु सिर के ऊपरी भाग में छतरी की तरह बन कर रहता है और उसी से जीव का संरक्षण होता है। वही छतरी फिर नील गगन में मिलकर लय हो जाती है और सर्वत्र फैल जाती है। ऐसा अद्भुत उनका अनुभव है। इसे उनके मुखारविन्द से सुनने में ही उसका विशेष अनुभव होता है। फिर उनका कहना है कि—जहाँ रहो जैसे भी रहो, जब हवा चलने लगती है और वायु के झोंके आने लगते हैं तो ऐसा समझो कि भगवान् आ रहे हैं। वायु तत्त्व रूप में भगवान् ही हैं, क्योंकि देखो, इसके अभाव में कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता। प्राण का संचालन इसी से होता है। इतना ही नहीं इसके ज्ञान हो जाने से संसार का सब कुछ भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ पता लग जाता है, क्योंकि श्वास की गति से सब कुछ बतलाया जा सकता है, पीछे शरीर के रोम-रोम में नाड़ी-नाड़ी

में और प्रति धड़कन में राम राम का अनुभव होने लगेगा और वही राम नाम सब काम देने लगेगा।

आकाशतत्त्व का परिज्ञान

वैसे तो पाँचों तत्त्वों के एक तरह से अपने अपने महत्त्व के स्थान हैं किन्तु आकाश-तत्त्व में खास बात यह रहती है कि वह शब्द से भरा रहता है, 'शब्दगुणकमाकाशं' कहा गया है। प्रत्येक प्राणी के सिर पर आकाश से आकर एक तन्तु लगी रहती है, जब तक शरीर है तब तक वही तंतु उसको प्रकाश देती रहती है और शरीर छूटने पर फिर वह जाकर आकाश में लय हो जाती है।

इस तत्त्व के ज्ञान के विना इसका अनुभव नहीं होगा कि सिर पर कोई तंतु लगी है, किन्तु तन्तु का ज्ञान होने पर शब्द सुनायी देने लगेगा वह शब्द सुनने का जब अभ्यास हो जायगा तब अनाहत की ध्वनि निकलने लगेगी, कभी तो ढोल बजेगा, कभी बंशी बजेगी, कभी हवा की साँय-साँय आवाज आयेगी, कभी पानी गिरने की सी आवाज आयेगी, कभी ऐसा मालूम होगा कि कहीं बहुत से लोग बातें कर रहे हैं। इस प्रकार देवताओं की बातें होती हैं, जिसे शब्द तत्त्व को जाननेवाले ज्ञानी लोग जान लेते हैं। इस शब्द तत्त्व का ज्ञान राम-नाम से ही होता है और प्रत्येक राम-नाम शरीर के अन्दर की धड़कन से प्रस्फुटित होता है। राम-नाम से ही शब्द तत्त्व का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और संसार भर की बातें दुनियाँ के किसी भी कोने में बैठकर सुनी जा सकतीं हैं, कही जा सकती हैं। परन्तु यह सब होने के लिए भी तो तत्त्व के पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता है। वह ज्ञान बिना साधन मिलता नहीं, साधन तभी होता है जब ईश्वर-स्वरूप संतों की कृपा होती है। अकाश-तत्त्व की स्तुति भी आवश्यक है, उनसे विनम्रतापूर्वक आधीनता से कहा जा सकता है कि—आप का स्वरूप व्यापक है, आप से ही मेरा अस्तित्व है, आप प्रतिक्षण जो कुछ शब्द हमारे मुँह से निकालते हैं, संसार भर में फैला देते हैं, आप हम से राम-नाम बुलवाइये और उसका संचार करवाइये। इस विषय में बाबा का कहना है कि—अखंड कीर्तन भजन आदि जो कुछ होता है उसके प्रभाव से सारा वातावरण ईश्वरमय बन जाता है, ५०० मील तक ऊपर की ओर कीर्तन की आवाज व्याप्त रहती है। चराचर जगत् को उससे बहुत लाभ होता है। तत्त्वों का

साधन अखंड कीर्तन से भी हो सकता है यदि अच्छी तरह समझ कर किया जाय।

बाबा का जीवन देखते हुए और उनके विषय में सुनते हुए यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वे प्रकृति से मिले-जुले ही नहीं बल्कि उसमें घुले-मिले हुए हैं। पाँचों-तत्त्वों के ज्ञान के विषय में तो लिखा ही गया है, किन्तु उसी प्रकार झाड़, वृक्ष, और लता आदि फल फूलों के साथ भी वे मिले जुले रहते हैं और इन सबका उनको ज्ञान है। वे कहते हैं कि किसी वृक्ष को ही देखो, न मालूम वह कितने वर्षों से खड़ा है, कितने कोटि जीवों को उसने आश्रय दिया है, कितने कीड़े-मकोड़े पक्षी-गण उसके आश्रय में रहे होंगे, कितने लोगों को उसने अपनी डाल, पत्ती, फल, छाल इत्यादि से सेवा की होगी, कितने थके हुए पथिकों ने उसकी शीतल छाया में बैठकर आश्रय लिया होगा, विश्राम पाया होगा। कितनों का पोषण इसने अपने फल फूल से किया होगा, कितनी ही दवाइयों का इससे निर्माण हुआ होगा, न जाने कितने ही मनुष्यों ने इससे आरोग्य प्राप्त किया होगा। कितने सन्तों की धूनी में उसकी लकड़ियाँ जली होंगी और कितनी ही खाद्य वस्तु उससे पकी होगी। आज कितने ही वर्षों से वह खड़ा है, न मालूम उसने इस परिवर्तनशील संसार के कितने रूप देखे होंगे। कितनी उलट-पलट का अनुभव उसे हुआ होगा, कितनों को वासस्थान (घर) बनाने में अपनी मदद की होगी। अपनी सुगन्धि से कितनों को प्रस्फुटित (प्रफुल्लित) किया होगा। इसकी सहनशीलता को देखो। उस पर कितना भी प्रहार होता है, और इतना प्रहार होते हुए भी उसने कभी अपनी सेवा बन्द नहीं की। सब के ऊपर समभाव रखा, हर हमेशा स्थिरप्रज्ञ रहा, अधीनता से उसकी स्तुति करने से वह प्रसन्न हो जाता है। उसकी पसंदगी से जो आशीर्वाद मिलता है, वह बहुत काम देता है। बाबा वृक्षों को देखते ही उसकी भूत और वर्तमान अवस्था को जान जाते हैं, अच्छी से अच्छी चीज मिलाते हैं और सब को खुश रखते हैं। आम के पेड़ों से तो बाबा को विशेष प्रेम है, आम का फल हवन करने में वे बहुत आनन्द का अनुभव करते हैं। कितनी बार ऐसा देखा गया है कि जब आम का मौसम ही नहीं रहता तब भी यदि उनको हवन करने की इच्छा हुई तो आम कहीं न कहीं से आ ही जाता है। इस प्रकार का अनुभव कितने ही लोगों को हो चुका है।

ऐसा ही प्रसंग एक समय का है। जाड़ों के दिनों में बाबा ने ध्यान में आम की एक पेटी देखी। आज्ञा हुई कि—आम का फल आना चाहिये, सेवक शहर में आम लेने गये, उन्होंने देखा कि सिर्फ एक ही पेटी आमों की आयी हुई है। वहाँ से सेवक आम के फल लेकर आये और उनका हवन हुआ। एक बार होली के अवसर पर बाबा की आज्ञा हुई कि होली यहीं चौरस्ते में ही खेलो, बाबा जब धूनी के पास आये तो उनके सामने गुलाल रखा गया, बाबा ने अग्नि को कुछ गुलाल हवन करके और धूना के चारों ओर बिखेर कर यह आज्ञा दी कि जाओ उन बृक्षों के साथ होली खेलो, वे सब होली खेलने के लिये उत्सुक हैं, हम ने ध्यान में देखा है आज उन लोगों के साथ होली खेलने से बहुत कल्याण होगा। बस, हम सब लोग गुलाल लेकर वृक्षों पर छिड़कने और पेड़ों से गुलाल लेकर माथे पर लगाने लगे। वे झाड़-पौधे आदि बगिया में लगाते रहते हैं और उनके कुदरती हिमाकतों का वर्णन करते रहते हैं। नेपाल से कुछ पौधे लाये गये थे उनको इतनी प्रसन्नता हुई कि बारंबार उनकी सराहना की और अपने हाथों से वे पौधे उन्होंने लगाये। वे कहते है सारा जीवन जंगलों में बीत गया, कभी कभी तो तप करते करते काँटों के बीच में ही बैठे रह गये, ऐसी स्थिति में शरीर में काँटे चुभते रहे। उनके शरीर पर काटों के जो चिन्ह हैं उन्हें अभी भी कभी कभी दिखाते हैं।

श्री बाबा का कहना है कि मनुष्यों ने तो कभी धोखा दिया हो यह सम्भव है लेकिन इन वृक्षों से तो हमेशा संरक्षण और सेवा ही मिली। उनकी (बाबा की) दृष्टि में जिनको हम जड़ समझते हैं वे सब चैतन्य स्वरूप हैं और सब की अन्दरूनी बातें वे जानते हैं। उनको जड़ी-बूटियों का भी बहुत ज्ञान है। और उनको ख्याल आने पर उनका प्रयोग भी करते हैं।

श्री बाबा का कहना यह है कि सत् कर्म करो, कुदरत का काम करो, वह देखता रहता है और करता रहता है। चौरस्ता में दो धूनी हैं। एक कुटी के अन्दर और दूसरी बाहर वृक्ष के नीचे। बाबा बाहर वाले को निराकार धूनी तथा अन्दर वाले को साकार धूनी कहते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि हम लोग बहुत आदमी उनके दर्शनों को गये हुए थे, सब लोग उस समय मौजूद थे। शाम का समय था, बाबा निराकार धूनी में हवन कर रहे थे। जब हवन करते हैं उस वक्त 'जय जगदीश हरे' की आरती भी होती है। एक दिन की बात है, हवन हो रहा था, आरती

करनी थी—आरती भी हो गई, हवन की समाप्ति नहीं हुई थी कि बूँदा बाँदी शुरू हो गई। हम लोग जो धूनी से कुछ दूरी पर खड़े थे वे भींग गये पर धूनी के कुण्ड में अग्नि जल रही थी, बाबा हवन कर रहे थे, वहाँ एक बूँद भी पानी दिखाई नहीं पड़ा, सब को बड़ा आश्चर्य लगा। उस दिन तो इस पर कोई कुछ नहीं बोला, परन्तु दूसरे दिन भी ठीक उसी समय और जोरों से बूँदा बाँदी हुई पर वहाँ बिलकुल पानी नहीं बरसा तब तो लोगों से रहा नहीं गया। उनसे पूछा तो उन्होंने कहा—अरे ये तेरा मेरा काम नहीं है। यह उसी का काम है, वह जानता है कि अपना काम किस तरह कराना होता है। दूसरी बार यह भेड़ाघाट की बात है, शिवरात्रि का दिन था, उस दिन बदरी थी और बारिस भी बीच बीच में होती थी। बाबा ने ध्यान से उठकर कहा - आज तो शिव जी की पूजा नहीं हैं, आज शक्ति की पूजा है और शिवलिंग के नीचे जो योनि होती है उसी की पूजा आज के दिन होती है। तीन कोने वाले पान के पत्ते मँगाओ और झूलाशंकर के जलधरी के चारों ओर वे पत्ते रखो। उसी में जो कुछ चढ़ाना हो चढ़ाओ, शक्ति की पूजा करो।

लोगों का एक हजार बेलपात (विल्वपत्र) चढ़ाने का विचार था तदनुसार लोगों ने उसका संग्रह भी कर लिया था। झूलाशंकर को झाड़-पत्ते एवं तोरणों से सजाया भी था। जिस तरह बाबा ने कहा उसी तरह पूजा हुई, भोग लगा और आरती हुई। आरती दो तरह की हुई, साकार की और निराकार की। आरती समाप्त होते ही इतनी जोरों की वर्षा प्रारम्भ हुई कि रुकी ही नहीं। पूजा के पहले भी बारिश हुई थी और पूजा के बाद भी हुई। पश्चात् बाबा ने कहा—-कि—-'आज का प्रसाद अनमोल है और शक्ति का प्रसाद है। गोकुल भैया को बुखार चढ़ा था, बाबा ने उसी बेलपत्र से उसको ठीक किया। ऐसा लगता था कि तत्त्वों से बाबा का इतना घनिष्ट सम्पर्क है, कुदरत से इतना संबंध है कि वे जो चाहें करते हैं तथा कराते रहते हैं।

बाबा के ध्यान का (एक संस्मरण) चमत्कार

श्री बाबा के ध्यान और उसके तरीके अजीब और अलौकिक हैं। एक दिन हमलोग काशी से बड़ा गुरु माँ, हमारा परिवार जिसमें माधव, शारदा एवम् तीन चार व्यक्ति और बच्चे भी थे चले। पहले ही बाबा को पत्र लिखा था कि अमुक दिन हम लोग आवेंगे, पर उस दिन पहुँच नहीं सके। दो दिन बाद काशी एक्सप्रेस गाड़ी से गये, रात को एक बजे

जबलपुर पहुँचे। बच्चे और स्त्रियाँ साथ में थीं इसलिये रात में प्लेटफार्म पर ही रहने का विचार था। रास्ते भर बाबा की ही बात हुई। जब पहुँचे तो देखते हैं पण्डित जी और सत्यनारायण लेने के लिये आये हैं। यह पूछने पर कि उन लोगों को कैसे मालूम हुआ? दोनों ने कहा कि बाबा के ध्यान में आया कि आप लोग बच्चों को लेकर आ रहे हैं, रात के वक्त तकलीफ होगी, लिवा लाओ। वे अपने साथ मोटर कारखाने वाले की जीप भी लाये थे उससे और दो टेपों को और करके हम लोग करीब दो बजे आश्रम पहुँचे। देखा, बाबा इन्तजारी (प्रतीक्षा) में बैठे हैं, सोये नहीं हैं। जाते ही दर्शन और दण्डवत् किया। बाबा बहुत प्रसन्न थे। रास्ते भर गाड़ी में जो जो बातें हुई थी, उनमें से जो बातें हमारी समझ में नहीं आयीं थीं, उन्हीं पर उन्होंने प्रकाश डाला। पश्चात् चार बजे हम लोगों को विश्राम करने के लिये आज्ञा दी।

हाँ उसी वर्ष एक लड़की को मुँह भर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलतीं थीं, और कई बड़ी होकर कुरूप हो जाती थीं। यह सब बाबा के ख्याल में उसकी माँ ने किया था। एक दिन बाबा ध्यान में से निकले और हम से कहा कि—पाण्डेय! ध्यान में एक पिचकारी देखा है। पिचकारी के स्वरूप का उन्होंने वर्णन किया, और उस पिचकारी को लाने के लिये जबलपुर भेजा। जब हम पिचकारी ले आये, बाबा ने कहा—बाल्टी लाओ, बाल्टी में फिनाइल डालो और माधव उस बाल्टी को उठावे, तुम पिचकारी लो, जहाँ मैं निपटता हूँ उस संडास (पैखाना) में जाओ और खूब फिनाईल से साफ करो। आज्ञानुसार हमलोगों ने वैसा ही किया। उस वक्त तक हवन का समय आ गया था और वे हवन में लग गये थे। हवन समाप्ति के बाद श्री की माँ की तरफ देखकर बाबा ने कुछ भभूति (विभूति) उठा ली और उसके हाथ में थम्हा कर कहा—देखो! यही ध्यान है। पाण्डेय पिचकारी लाया, बाल्टी में फिनाइल भरा, माधव ने बाल्टी उठायी, दोनों मेरे संडास में गये, वहाँ फिनाइल से खूब साफ किया,। यह ध्यान करके ऊपर की तरफ देख कर और सद्गुरु का ख्याल करके भभूति लगावे तो उसका रोग धीरे धीरे ठीक हो जायेगा और वह ठीक हो जायगी। लड़की को यही सब कहा गया, और सचमुच औषधि फायदा देने लगी, कुछ समय बाद वह ठीक हो गयी, इस ध्यान के सम्बन्ध में कोई क्या विचार करे!!

—: ❀ :—

पूज्य बाबा की नेपाल-यात्रा

तीर्थराज प्रयाग में बड़े कुम्भ के अवसर पर पूज्य बाबा भार्गव धर्मशाला, (दारागंज) के बाहर एक कुटिया में तथा पूज्य गोपाल बाबा और अन्य भक्त लोग धर्मशाला में ठहरे हुए थे, धूना कुटिया में ही लगा था। माघ का महीना था, ठण्डी खूब पड़ रही थी। वहाँ उस समय एक ऐतिहासिक घटना के अतिरिक्त अन्य जो भी घटनाएँ घटीं वे बहुत ही अद्‌भुत तथा चमत्कारी हैं।

प्रयाग से प्रस्थान कर पूज्य बाबा बनारस में कुछ दिनों तक ठहर कर फिर रेल से रक्सौल के रास्ते बीरगंज पहुँचे। श्री गोपाल बाबा उनकी यात्रा का प्रवंध प्रथम श्रेणी (फर्स्ट क्लास) में करते थे, वैसे श्री बाबा हमेशा तीसरे दर्जे में ही यात्रा करने के अभ्यासी थे। वीरगंज से हवाई जहाज द्वारा बाबा काठमाण्डू पहुँचे।

वहाँ पूज्य बाबा के निवास के लिये प्यूखा में रामकुटी के सामने मैदान में एक कुटी बनवाने का विचार था। किन्तु संयोगवश नहीं हो सका। अतः विवश होकर बाबा के ठहरने का प्रबन्ध रामकुटी में ही किया गया। वहाँ एक कमरे में बाबा ठहरे और दूसरे में गोपाल बाबा। उसी से सटा हुआ एक बड़ा कमरा था उसमें कीर्तन-भजन होते थे। इस कमरे का उपयोग विशेष अवसरों पर होता था। दैनिक कीर्तन गोपाल बाबा के ही कमरे में होता था। पूज्य बाबा तो अपने कमरे में धूनी पर ही रहते थे। गोपाल बाबा जिसको आज्ञा देते थे उसी को श्री बाबा का दर्शन-लाभ होता था। दोनों महात्माओं में इतना ऐक्य (घनिष्ट) था कि बाबा गोपाल बाबा के साथ ही प्रसाद एक ही थाली में खाते थे। गोपाल बाबा श्री बाबा का बहुत ही आदर और मर्यादा रखते थे।

एक दिन बाबा ने ध्यान में बैंगन (भण्टा) देखा। बस क्या था उन्होंने पाण्डेय से कहा कि—पांडेय ! बैंगन खाने की मेरी इच्छा है—यहीं पास में ही कहीं देखा है। उस समय बैंगन का मौसम नहीं था। तराई से जो बैंगन आते थे वे भी मौसम न होने से बाजार में नहीं आ रहे थे। बाबा का आदेश (हुक्म) हुआ तो होना अवश्य चाहिए। आसपास में चारों ओर खोज करायी गयी परन्तु बैंगन का कहीं पता नहीं मिला। यह बात जब

बाबा को कही गयी कि—बैगन कहीं नहीं मिला, तो बाबा ने कहा कि—पास में ही मैंने बैगन देखा है। खिड़की से झाँक कर देखा तो सड़क पर एक पड़ोसी जा रहा था। वह कुछ दिनों पूर्व ही तराई से आया था। उससे जब पूछा तो उसने कहा कि—नहीं है, आज-कल कहाँ मिलता है? इतना कहते ही एकाएक उसको याद आया और बोला कि–शायद घर में एकाध पड़ा हो, देखने दीजिए, थोड़ी देर के बाद वह दो बैगन लेकर आया। यह देखकर बाबा ने कहा कि—हाँ यही बैगन है जो हमने देखा था। ऐसे चमत्कार तो प्रायः रोज ही होते रहते थे, परन्तु वे सब जब तक गोपाल बाबा थे, उन्हीं के द्वारा कराते रहते थे। अपने तईं कुछ नहीं करते थे। बाबा बराबर ध्यान में ही मग्न रहते थे, अपनी धुन में ही मस्त रहते थे। उनके दर्शनों के लिये बहुत लोग आते थे। उनमें से किसी किसी को श्वास द्वारा भजन सुनाते थे तथा किसी को राम राम की धुनी सुनने को मिलती थी। कुछ लोग जो बाबा को घेरे रहते थे उनके साथ बाबा सत्संग भी करते थे। ऐसे लोगों में थे–खास व्यक्ति नेपाल के चीफ जस्टिस श्री हरिप्रसाद प्रधान, साहु रत्नलाल और जेनरल यदुनाथ सिंह (नेपालस्थित भारतीय सेना के मुख्य अधिकारी बाद में राष्ट्रपति के ए०डी०सी० भी हुए)। साहु रत्नलाल तो ज्यादा नहीं परन्तु हरिप्रसाद जी तथा यदुनाथ सिंह तो कभी कभी रात-रात भर ठहर जाते थे।

इसी बीच अखण्ड-कीर्तन का भी आयोजन हुआ जो एक महीना तक अखण्ड रूप में चला। बड़े जोरों का कीर्तन हुआ। वहाँ रात-दिन लोगों की भीड़ लगी रहती थी। वहाँ कोई कार्यक्रम न होने पर भी कभी वहाँ लोगों की या वाद्य बजानेवालों की कमी नहीं पड़ी। कीर्तन की समाप्ति बड़े धूम-धाम से हुई।

कुछ दिनों के बाद चैत्र के नवरात्र के अवसर पर अखण्ड रामायण पाठ का कार्यक्रम रक्खा गया। यह कार्यक्रम प्रतिपदा से रामनवमी तक ९ दिनों तक चला। गोपाल बाबा प्रतिदिन शाम को भगवान् श्रीकृष्ण की छबि के सामने दीप जलाते थे। साथ ही दो तीन स्थानों पर उन्होंने गोपालसहस्रनाम का पुरश्चरण भी कराया। एक दिन शाम को वे गुरु जी के यहाँ गये थे, वहाँ से जब लौटे और देखा कि दीप बुझ गया है तो वे बहुत घबड़ाये। दूसरे दिन किसी तरह पाठ चलता रहा। तीसरे दिन बड़े गुरु महाराज जब हवन कर रहे थे, हवन करने के बाद जो

जल लेके ऊपर छिड़का जाता है वह छिड़कने पर वे चौंक गये, उन्होंने कहा कि-अरे यह क्या होने जा रहा है, जल से आग निकली है। अहो! हम लोगों के यहाँ रहते काठमाण्डू में उपद्रव हो यह कैसे हो सकता है? परन्तु जरूर कुछ होके रहेगा--यह कहते समय वे बड़े आवेश में थे। जहाँ रामायण पाठ हो रहा था वे उस कमरे में पहुँचे, वहाँ प्रोफेसर खड्गमानमल्ल की पारी थी, बाबा के साथ उनकी चार आँखें हुईं, अब प्रोफेसर की आँखें नीचे हो गईं। वहाँ बाबा ने कहा कि 'यह क्या खटखट कर रहा है, समझ में तो कुछ आता नहीं, बड़-बड़ कर रहा है। उन्होंने आगे कहा----"पाठ-वाठ बन्द करो"। इसी बीच में रतनलाल साहु आया उसने भी बाबा को बड़े गुस्से में देखा और डर गया। तत्पश्चात् बाबा ऊपर भोजन करने के स्थान पर चले गये, वहाँ फिर कोई नयी बात नहीं हुई। दोनों ने जैसे पहले खाते थे उसी तरह बड़े प्रेम से भोजन किया। मूकभाषा में उन लोगों (दोनों) में क्या बात हुई यह हम लोग समझ नहीं सके। अन्य दिनों की अपेक्षा उस दिन उन दोनों ने प्रसाद ज्यादा (अधिक) पाया। इसके बाद वे दोनों अपनी २ जगह आराम करने चले गये। कार्यालय से जब मैं आया तो गोपाल बाबा को उनके कमरे में बैठे हुए देखा। उन्होंने उस समय इतना ही कहा कि मेरे पेट में कुछ दर्द है। वायु हो गया है। पर कोई तड़पन नहीं है और न कोई बेचैनी ही। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर याज्ञिक तथा वहीं के वनस्पति शास्त्र के प्रोफेसर ये दोनों मिलने आये थे। उन प्रोफेसर द्वय से बड़ी अच्छी तरह मुलाकात की और बाबा के दर्शन के लिये मिले। जब उन्होंने कहा कि—पेट में दर्द है, तो मैंने कहा कि—डाक्टर को बुलाने जाता हूँ।

उस समय डाक्टर त्रिवेणीप्रसाद प्रधान जो नेपाली काँग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे, राम कुटी में ही रहते थे। बाबा ने कहा कि--डाक्टर की कोई आवश्यकता नहीं है। त्रिवेणी आयगा उसी को दिखला देंगे। उस दिन उपस्थित भक्तों ने बाबा से कीर्तन नहीं करने तथा आराम करने का अनुरोध किया। उपस्थित भक्तों में कई वैद्य—कविराज भी थे, उन्होंने तत्काल लवणभास्कर आदि पाचक बाबा को खिलाया तथा वे वहीं रह गये, अपने घर नहीं गये। बाद में जब बेनु बाबा वहाँ गये और उन्होंने देखा कि बाबा (श्री गोपाल बाबा) के शरीर में कोई हलचल नहीं है इस तरह बिलकुल शान्ति से तो वे नहीं सोते? ऐसा

विचार कर बेनु बाबा ने उनका पैर पकड़ा तो देखा कि—सारा शरीर ठंढा हो गया है, तत्काल वैद्य कविराजों ने नाड़ी देखी। एक वैद्यराज घबड़ाये हुए बाबा के पास गये और डाक्टर को तत्काल बुलाने के लिये कहा। यह सुनकर बड़े बाबा उसी समय उधर गये और उन्होंने भी उपचार किया। इसी बीच डाक्टर रघुवर वैद्य आये। उन्होंने देख-सुन और परीक्षण कर कहा कि---(Dead) मृत !!

बड़े बाबा ने सब को सम्हाला। उनके मुँह से इतना ही निकला कि गोपाल ने हम को धोखा दिया। बिना कुछ खबर दिये ही चला गया। वे बड़े कठिन असमंजस में पड़ गये थे। श्री गुरु महाराज ने पानी छिड़-कते वक्त जो कहा था वह अवश्यमेव होता, फिर यह भी कहा था कि हमारे होते उपद्रव कैसे हो। उनकी भक्ति इतनी जबर्दस्त थी कि उन्होंने गुरु की मर्यादा रखने के लिये अपना प्राणोत्सर्ग कर समस्त बोझ अपने सिर ले लिया---उसके ऊपर गोपाल बाबा के मुख से बराबर यही वाणी निकलती थी कि जहाँ पर उनका पहले पहल आसन लगा था और जिस जगह को स्थायी रूप से उनका स्थान बना दिया था, उस स्थान के बारे में वे कहते थे कि—इसको अजर-अमर बनायँगे, उसी वाणी को उन्होंने सत्य (चरितार्थ) करके दिखाया। और तीसरी बात यह थी कि—प्रयाग में ही अर्जुन शमशेर जनरल और उनकी रानी ने बाबा से फोटो लेने की इच्छा व्यक्त की थी, परन्तु फोटो का सामान पीछे ही रह गया था, अतः जनरल ने कहा—बाबा ! काठमाण्डू में ले लेंगे। यह सुनकर बाबा ने कहा कि—अरे अभी ले लो, शरीर की गति पीछे क्या होगी कह नहीं सकते। तीन चार रोज पहले प्रधान न्यायाधीश के लड़के अरुनचन्द्र प्रधान ने स्वप्न में देखा था कि पशुपति के इलाके के अन्दर रामचन्द्र जी के मन्दिर के पास गोपाल बाबा के लिये समाधि-स्थल तैय्यार हो रहा है। उन्होंने स्वप्न में यह कहा था कि हम यहीं पर रहेंगे' वे सर्वदा यही कहा करते थे कि—मृत्यु राण (राँड़) 'हमारे सामने खड़ी है, भजन का इतना प्रताप है कि जब चाहेंगे और कहेंगे—राण ! आजा, तुरन्त चले जायँगे। उनकी ख्याति इतनी थी और बड़े बाबा का प्रभाव इतना ज्यादा था कि दूसरे दिन सबेरे रामकुटी में हजारों आदमी उनके दर्शन के लिये आ पहुँचे। भीड़ इतनी बढ़ी कि आने जाने के लिये मार्ग की व्यवस्था करनी पड़ी। उनकी ऐसी भव्य यात्रा निकली कि हजारों नर-नारियों के साथ कमाण्डर इन चीफ और

बहुत से प्रतिष्ठित नागरिक और राज्याधिकारी, साधु-संत-महात्मा, सेठ साहूकार सभी वर्ग के लोग सम्मिलित थे। उन सबके केन्द्रबिन्दु बाबा ही थे जो पीछे पीछे चल रहे थे। उस समय—

'भजो राधे गोविन्दा, गोपाल तेरा प्यारा नाम हैं'

यही धुन चल रही थी, सभी नर-नारी विह्वल हो इसी को भज रहे थे। शव को कन्धा देने में सभी बड़े लोगों में होड़-सी लगी थी और सभी इस महाप्रयाण में कन्धा देने को उत्सुक थे।

श्री रामचन्द्रजी के मन्दिर के ठीक वगल में उस तपोभूमि में विधि पूर्वक गोपाल बाबा की समाधि स्थापित की गयी। श्री बाबा ने कीर्तन करते हुए समाधि की तीन बार परिक्रमा की। तब से १२ दिनों तक पूज्य बाबा बराबर उस स्थान पर जाते थे। भक्त गण साथ होते थे। सब लोगों के साथ-कीर्तन करते हुए परिक्रमा होती थी एवं समाधि में फूलों का हार और गुलदस्ते चढ़ाये जाते थे, सिपाहियों का वहाँ पहरा लगा रहता था। श्री गोपाल बाबा की तेरहवीं पर रामकुटी में बड़े जोरों का भण्डारा हुआ, वहाँ हजारों आदमियों के लिये भोजन की व्यवस्था की गयी थी। बड़े बाबा का ऐसा चमत्कारी प्रभाव था कि भण्डारे में पर्दा लगाकर भोजनसामग्री रखी हुई थी, उस पर बाबा ने अपनी भभूती (विभूति) छिड़क दी थी। भोजन-सामग्री निकालने वाले को अन्दर देखने की मनाही थी। उस भण्डारे में तीन हजार व्यक्तियों ने प्रसाद पाया तथा साथ ही काठमाण्डू के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के यहाँ प्रसाद भेजा भी गया।

गोपाल बाबा के महाप्रयाण के पहले बड़े बाबा लोगों से बहुत कम मिलते थे, किन्तु अब उन्होंने गोपाल बाबा का स्थान ले लिया और वे अब ठीक गोपाल बाबा की तरह मिलते तथा सत्संग करते थे। जिससे लोगों के हृदय में गोपाल बाबा की कमी का अनुभव तथा दुःख न हो। वहीं तेरहवें रोज में नेपाल के महाराजाधिराज महेन्द्र वीर विक्रम शाह और उनकी महारानी जो उस समय युवराज और युवराज्ञी थे, दर्शन के लिये रामकुटी पधारे और बड़े नम्र होकर बाबा का दर्शन किया— बाबा ने उनको शिक्षा दी और 'संतवाणी'' पुस्तक दी, उनकी विनम्रता देखकर बाबा बहुत प्रभावित हुए और अपने हृदय में उनको स्थान दिया।

पूज्य बाबा लोगों के साथ एक भक्त मंडली भी आयी थी जिसमें भाटिण्डा के एक पण्डित भी थे, वे कर्मकाण्ड करवाते थे। साथ ही जयपुर के वृन्दावन में रहनेवाले लढ्ढा जी भी थे जो एक नंबर के श्रृंगारी थे, एवं बड़े बाबा का पुराना सेवक मुरली जयपुरवाला भी साथ था जो बड़े बाबा की सेवा करता था। दूसरे सेवक दीवान थे, भण्डारे के दिन भंड़ार-गृह में उन्हीं को रखा था। एक त्यागी नाम के महात्मा प्रयाग से साथ आ गये थे, वे पहले दिगम्बर थे पीछे लँगोटी धारण करने लगे, कीर्तन में वे बहुत ही मधुर ढोलक बजाते थे। विस्वान के कल्लू भी थे जो एक अच्छे कीर्तनकार थे। गोपाल बाबा के साथ एक मौनी बाबा भी आये थे, वे बड़े सरल और सहनशील थे— हमेशा हँसते रहते थे। गोपाल बाबा अपना शरीर त्यागने के लिये अपने साथ इतने लोगों को लाये थे, और अपने गुरु महाराज के चरणों में अन्त में ये अनन्य शरण को प्राप्त हुए।

गोपाल बाबा के महाप्रयाण के विषय में बहुत-सी अफवाहें लोगों ने उड़ाईं, संसार ऐसा ही है। यहाँ मिथ्यावाद का प्रचार होता ही है। एक अघोरी महात्मा थे, वे आया जाया करते थे, उनको बहुत जलन हुई, कारण यह था कि उनको बाबा ने कभी आदर नहीं दिया, वे अपने आप को बहुत अपमानित अनुभव करते थे, और ईर्ष्याभाव रखते थे। अब एक बार ऐसी बात हुई कि बड़े बाबा के पाँव की हड्डी में भयानक दर्द हुआ। डा० त्रिवेणीप्रसाद प्रधान तो घर में ही रहते थे, उन्होंने स्वयम् दवाई की तथा औरों को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। रात भयंकर वेदना में कटती थी और नींद नहीं आती थी। बाबा जान गये कि यह किसी तान्त्रिक का ही प्रयोग है। फिर बाबा ने रामकुटी से चले जाने का निश्चय किया।

तब महाराजाधिराज से अनुमति लेकर नागार्जुन में बाबा के रहने के लिये प्रबन्ध किया गया।

बाबा के लिये जरा नीचे वृक्ष की छाया में कुटी बनायी गयी, वहीं पर धूनी भी लगायी गयी। बाबा भोजन ऊपर बंगले में ही करते थे, शेष समय बाबा कुटी में ही रहते थे। वहाँ पर बड़े-छोटे सब लोग बाबा की सेवा में आते रहते थे। उनमें सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद प्रधान और उनका परिवार, नायब बड़ा गुरुजी भोगेन्द्रराज, उनकी गुरु माँ और बहन, जनरल लक्ष्मण शमशेर और

उनकी रानी, जनरल ध्रुव शमशेर और उनकी रानी, जनरल मोहन विक्रम और उनकी रानी, जनरल केन्द्र शमशेर और उनकी रानी, कर्नल चन्द्र जंग थापा, उनकी श्रीमती और बड़ा लड़का जनरल शोभा जंग, डाक्टर त्रिवेणीप्रसाद प्रधान, ठाकुर प्रकाशचन्द्र (ये दोनों कितने ही दिनों तक वहीं ठहरे थे), कालू. गोविन्द, जनरल ब्रह्म शमशेर, जनरल भक्त नरसिंह और उनकी रानी, साहू रत्नलाल, च० चन्द्रराज एवम् उनकी पत्नी, नित्यप्रसाद, तथा वेणु बाबा बस ये ही लोग थे जिनकी स्मृति अब भी वनी हुई है। और भी बहुत से लोग आते जाते थे। रामकुटी परिवार के तो प्रायः सभी लोग आते ही थे और समय-समय पर सेवा करते ही थे।

जनरल केन्द्र शमशेर ने बाबा की खूब सेवा की। बाबा पैर में दर्द होने के कारण कुछ दिनों तक चल नहीं पाते थे, उस समय जनरल केन्द्र शमशेर ही बाबा को अपने कंधे पर बैठा कर ऊपर बंगले में भोजन के लिये ले जाते थे।

भोजन की व्यवस्था में ज्यादातर ऐसा होता था कि सबेरे आठ बजे से रात १० बजे तक चूल्हा जलता ही रहता था, क्रमशः लोग आते रहते थे और प्रसाद पाते रहते थे।

उक्त पैर के घाव के आरोग्यार्थ बावा ने स्वयम् भी कुछ प्रयोग किया और नेत्रप्रसाद उर्फ माहिला बाजे नामक तान्त्रिक ने भी कुछ प्रयास किया, तत्पश्चात् बाबा बिलकुल अच्छे हो गये, ये तो सब उनकी लीला थी। अपने भक्तों को सेवा करने का अवसर वे इसी प्रकार दिया करते थे और उनकी प्रसिद्धि करा देते थे।

नागार्जुन में अनेक प्रकार की अद्भुत-अद्भुत घटनाएँ घटीं, जिनमें से थोड़ी बहुत जो स्मृति पटल पर हैं उन्हीं घटनाओं का संकलन हुआ है। बाबा का नैत्यिक नियम यह था कि वे सबेरे ७-८ बजे ध्यान से उठते थे, नित्यकर्म से निपट कर चाय पीते थे, फिर अपना हवन करते थे, हवन समाप्ति के बाद कुटी से वाहर निकल कर कभी थोड़ा टहलते भी थे। नहीं तो हरे मैदान में बैठकर जो लोग मिलने आते थे उनसे बातचीत करते थे अथवा ज्यादातर कुटी के अन्दर ही सत्संग चलता रहता था।

(१) एक दिन की बात है, सबेरे बाबा पाण्डेय को बुलाकर कहने लगे, पाण्डेय ! इस पहाड़ के नीचे एक स्थान पर एक गुफा देखने में आयी है, यह किसी सिद्ध की गुफा थी, यहाँ उन्होंने तपस्या की थी। आस-पास के जितने भी कृषक हैं उन सब को दिन में जलपान वहीं मिलता था। नित्य सबेरे ये कृषक वहाँ जाकर नाश्ते के लिये अनुरोध करते थे, जलपान उन्हें प्रचुर मात्रा में मिलता था। एक तरह से वर्षों तक उन लोगों की इच्छा पूर्ति हुआ करती थी, उनसे कहा गया था कि कोई अन्दर नहीं घुसे, बल्कि यह निषेध वे लोग जानते थे। एक दिन एक मूर्ख अन्दर घुस गया, देखा तो कुछ भी नहीं है---तब से वहाँ के लोगों को कुछ भी मिलना बन्द हो गया है। माहिला बाजे उधर के ही रहनेवाले थे। उनको ये बातें कही गईं तो उन्होंने पूछ-ताछ की। गाँव के वृद्ध लोगों ने पूछताछ करने पर उक्त बातका अनुमोदन किया।

(२) एक बार बाबा ने कहा 'पाण्डेय ! यह नागार्जुन तपोभूमि है। यहाँ बड़े-बड़े सिद्ध-महात्मा, वाममार्गी, बौद्धमार्गी, शैव मार्गी एवं अद्वैत-वादी आदि सभी लोगों ने बड़ा कठिन तप किया है। मैं भी यहाँ कुदरत का काम कर रहा हूँ, हवन हो रहा है, पूजन हो रहा है। कभी-कभी ऋषि लोग यहाँ दिखाई पड़ते हैं, उनसे बातें भी होती हैं। ऐसा कहने के कुछ दिनों के बाद बाबा ने यह भी कहा कि —पाण्डेय, आज ईश्वर बहुत खुश थे, देखते हो मेवा, मिष्टान्न, फल-फूल और सब सुगन्धियों की यहाँ भरमार रहा करती है, इन सबों से हवन हुआ करता है, तत्त्वों का पूजन हुआ करता है। अन्न के हवन से ईश्वर प्रसन्न नहीं रहते, उनको अच्छी से अच्छी चीज चाहिये, आत्मा की पसन्दगी चाहिये। वे इतने खुश हुए कि आज मुझे 'ब्रह्मर्षि' की पदवी मिल गई है। ऊपर से आकाशवाणी हुई है।

(३) एक दिन की बात है, उस समय मई का महीना था, बाबा कुटिया से बाहर शौच के लिये निकले थे, सुबह का समय था। उन्होंने लौटकर कहा--'पाण्डेय, आज वह बहुत तड़क रहा है, उसको बहुत प्यास लगी है, पीने के लिये व्याकुल है।'' मैं इस बात को समझ नहीं सका क्योंकि वहाँ कोई खड़ा नहीं था। फिर बाबा कुटिया से बाहर निकले और एक बड़े वृक्ष की ओर अंगुली दिखाकर संकेत करते हुए कहा— देखो, पिछले जन्म में यह एक तपस्वी था, कुछ अपराध के कारण उसे उद्भिज् योनि में वृक्ष के रूप में जन्म लेना पड़ा, अब सन्त का दर्शन कर

उसे बड़ी प्रसन्नता हुई है, कहता है बहुत प्यास लगी है। पाण्डेय ने कहा--बाबा पानी पिला दूँ। बाबा ने कहा पानी से उसकी प्यास नहीं बुझेगी, इतना कहकर फिर कुटी में घुस गये। दिन में जब ध्यान से उठे तब करनल चन्द्रजंग एवम् उनकी पत्नी और उनका लड़का कुछ फल और थर्मस में बेल का शर्बत लेकर आये थे। बाबा का दर्शन किया। बाबा ने थर्मस को उठाया और ले जाकर सब उसी वृक्ष में उड़ेल दिया। पाण्डे की ओर देखकर बाबा ने कहा--देखा, उस बेचारे की माँग पूरी हुई, अच्छी चीज जो वह पीना चाहता था वह उसे मिल गई। इस दृश्य को करनल परिवार देख रहे थे किन्तु वे इस रहस्य को समझे नहीं। सन्त के लिए इतने प्रेम से पेय लाये किन्तु उन्होंने ग्रहण नहीं किया! इस भावना से वे आशंकित होने लगे तथा उसके परिणाम के बारे सोचकर डर रहे थे। बाबा इस बात को समझ गये और कहा 'आज तुमको बहुत पुण्य प्राप्त हुआ' एक तड़फड़ाते हुए प्राणी को तुमने शर्बत पिलाया। पीछे सारी बातें उनको समझा दी गयी। बाबा को दिव्य चक्षु से सर्वत्र ईश्वर ही दिखता था।

(४) एक दिन की बात है—जंगल में जितने भी पशु, पक्षी एवम् कीड़े, मकोड़े, जीव-जन्तु थे सब पर बाबा की दृष्टि जाती थी। उन सब पर बाबा की असीम कृपा थी। बन्दर तो कुटी के पास चारों ओर रहते थे। परन्तु कभी भी कुटी पर आकर उत्पात नहीं करते थे। कीड़ों मकोड़ों के लिये शक्कर, चीनी और अनार के दाने भक्त लोग आकर बिखेरते थे। बाबा कभी कभी कुत्तों और बन्दरों को मिष्टान्न भी खिलाते थे। अपने आप का आधार तो बहुत ही न्यून था, बाबा कभी कभी खाते भी नहीं थे। जितनी भी चीजें आती थीं वे सब औरों को बाँटकर खिला देते थे, सेवकों को नहीं देते थे। क्योंकि वे समझते थे कि "बाबा के वजह (कारण) से सेवक लोग खूब मौज कर रहे हैं" ऐसी धारणा लोगों की न हो। उन लोगों को भी कभी लालच नहीं हुई। उनकी सेवा में ही बहुत आनन्द प्राप्त होता था।

जब भी कोई बाबा के लिये कुछ चीजें लावें तो वे बन्दरों, कीड़ों और मकोड़ों के लिये भी लाते थे।

(५) एक दिन की बात है, श्री चन्द्रजंग और उनकी पत्नी ने बाबा के लिये मेवे के अच्छे लड्डू और बन्दरों के लिये कुछ काले काले देखने में भी बदसूरत लड्डू लाये थे। बाबा ने पूछा—'क्या लाये' और किसके

लिये लाये। उन्होंने जवाब दिया—'ये बाबा के लिये' और ये बंदरों के लिये। यह सुनकर बाबा खिलखिलाकर हँसे और कहने लगे—'इतना बड़ा भेद भाव।' और आगे उन्होंने कहा कि—देख, जा बन्दर को बुला, तेरे लड्डू एक भी नहीं खायँगे। हम लोग सब बाहर निकले, बंदर आये, चन्द्रजंग ने लड्डू बंदरों के सामने रख दिया। बंदर आते थे, लड्डू को उठाते थे, सूँघते थे और मुँह बिचकाकर लड्डू को फेंक देते थे। इस प्रकार किसी भी बंदर ने लड्डू नहीं खाया। यह देखकर सब लोग चकित हो गये। किसी ने सोचा कि बाबा के यहाँ इन लोगों को खाने को मिलता है इसलिये इनका पेट भरा है और ये नहीं खा रहे हैं। इसी बीच ध्रुवशमशेर आये, वे बंदरों के लिये मकई लाये थे, उन्होंने बंदरों को बुलाया और मकई बिखेर दी। बंदरों ने मकई खूब खाया, तब उन लोगों को विश्वास हो गया कि बाबा की आज्ञा को पशु-पक्षी भी मानते हैं और वे सर्वव्यापी हैं।

(६) एक दिन की बात है—'बाबा ने ध्यान से उठकर कहा—एक बहुत भयंकर काला बिच्छू देखने में आया है, बेचारे ने उस जन्म में तप तो किया था परन्तु क्रोध के वशीभूत होकर ऐसा विघ्न हुआ कि उसको बिच्छू होकर जन्म लेना पड़ा। लोगों ने कहा—बाबा, उपत्यका (पहाड़ के नीचे की भूमि) में तो कहीं भी बिच्छू होता ही नहीं। अभी तक किसी ने देखा ही नहीं, और खासकर इस पहाड़ में तो ऐसे जीव का दर्शन तो कभी किसी ने किया ही नहीं है। बाबा ने कहा—'नहीं रे' मैंने ध्यान में देखा है, उक्त बिच्छू पूर्व जन्म में तपस्वी था इसलिये तपोभूमि में जन्म लिया है, आज वह धूनी से निकलेगा, उसका उद्धार करना है, यह बात सुबह की थी।

शाम को भक्त मण्डली धूनी पर जुटती थी, उस दिन लक्ष्मण शमशेर और उनकी रानी, मोहनविक्रम की रानी, गुरु जी, और गुरु माँ ये लोग आये थे। उस दिन कुछ बदली थी, ध्यान की बात उन सबों को बतलायी गयी। किसी ने भी विश्वास नहीं किया, क्योंकि वहाँ बिच्छू होता ही नहीं था। शाम को ७॥ बजे सभी लोग धूनी के सामने बैठे थे, धूनी के बगल में एक कोई जीव उछलता हुआ आया, रोशनी में उसे देखा तो वह काला भयंकर बिच्छू ही था। जब सुना बिच्छू है तो सभी लोग बाहर भाग खड़े हुए, फिर बाबा उठे और धूने से भभूति (विभूति) लेकर उस पर छिड़क दी, फिर उससे कहा "बाहर चलो"। सब लोगों ने देखा कि वह

बाहर चला गया है। पश्चात् बाबा ने एक सेवक को देखकर कहा– 'देखो' मैंने तो कहा ही था। उसी सिलसिले में बाबा ने आगे कहा कि– आज कल एक बाघ भी आने लगा है और बहुत शोर करता है। किन्तु डरने की बात नहीं है, सन्तों के पास ये सब आते ही रहते हैं। ये बातें फैल गईं। रात को बाघ का गर्जन सुनने में आया। आस-पास के घरों की स्त्रियाँ तो बहुत ही डर गईं। दो-तीन दिनों के बाद बाघ कहाँ चला गया, कुछ भी पता नहीं चला।

(७) **एक दिन की बात है**--ठाकुर प्रकाशचन्द्र जो आजकल जापान में नेपाली राजदूत हैं, बाबा की सेवा के लिए नागार्जुन में ही ठहरे थे। बाबा ने उनसे कहा—देखो! हमने पास में ही—अमुक (स्थान) जगह में (जिसकी बाबा ने हुलिया दी) एक संत को देखा है। बड़े अच्छे संत हैं, उन्होंने हमसे वहुत प्रेम किया है। फल-मिष्टान्न ले जाओ। ठाकुर उसको ले गए। वे संत के पास पहुँचे, सब उनके सामने रक्खा वे बहुत प्रसन्न हुए। 'ठीक है' 'प्रसादी मिल गया' ऐसा कहकर उन्होंने फल मिष्टान्न ग्रहण किया और प्रसाद स्वरूप ठाकुर को भी दिया। ये संत 'लक्ष्मण' के नाम से प्रसिद्ध थे। लोगों के देखने में पागल थे पर वे बहुत पहुँचे हुए संत थे। काठमाण्डू में पहले भोटाहिटी में एक पट्टी पर रहते थे। पीछे भेड़ासिंह में रहने लगे। एकबार दो स्त्रियाँ आकर उनसे चिपट गईं और कहने लगीं कि—वे उनकी (संत की) स्त्रियाँ हैं, हम दोनों के पालन पोषण की की जिम्मेदारी उन्हीं की (आप की) है। संत जी ने उन्हें माता की भावना से उनको अपने पास रख लिया। पश्चात् जिन दुष्टों ने उन्हें उनके पास भेजा था वे पराजित हो गये और वे स्त्रियाँ भी वापस चलीं गयीं।

(८) जनरल ध्रुव शमशेर नागार्जुन में नित्य आते थे और वहाँ रात में १० बजे तक रहते थे। एक दिन की बात है तुलसीराज भी नागार्जुन आया था। भवानीराज और माधवराज एवम् कृष्णराज सभी नागार्जुन में ही थे। उस दिन माहिला भाई ने नागार्जुन में रहने की बहुत इच्छा की और उस रात हमलोग सब शहर के मकान में जाने लगे। ध्रुव शमशेर का स्टेशन वैगन था। उसमें मैं, माधव, मेरे भाई तोत्रराज, भवानीराज, और ध्रुव शमशेर इतने लोग सवार हुए थे। गाड़ी चली, ध्रुव शमशेर ने ड्राइवर को डाँटकर कहा--अच्छी तरह चलाओ, गाड़ी पहाड़ से नीचे उतर रही थी, ड्राइवर ने हैन्डिल क्या

घुमाया कि ब्रेक टूट गया और गाड़ी इधर-उधर चलने लगी तथा नियंत्रण (कन्ट्रोल) से बाहर हो गई। हमारा छोटा भाई तो गाड़ी से कूद ही पड़ा, और माधव बड़े जोर से चिल्लाया "ओम् सद्‌गुरु" इतना कहते ही गाड़ी खट् से वहाँ रुक गयी। उस समय बाबा ऊपर कुटी में ही थे, यह पुकार उन तक पहुँची, वे उठ खड़े हुए। शीघ्रता के कारण थोड़ी सी चोट उनके सिर में लगी, उन्होंने कहा कि किसी एक को थोड़ी सी चोट लगेगी और सब लोग बच जायँगे उसी क्षण लालटेन लेकर श्री बाबा और हमारे घर की स्त्रियाँ उस जगह पर आये जहाँ हम लोग दुर्घटना में पड़े थे। उस समय अँधेरी रात थी, लालटेन की रोशनी में देखने पर ज्ञात हुआ कि यदि एक हाथ भी गाड़ी आगे बढ़ी होती तो गाड़ी हम लोगों के सहित हजारों फीट नीचे खड्ढे में गिर गई होती। इस प्रकार पूज्य बाबा ने अपनी लीला दिखायी और हम लोगों को बचाया। यह है अद्भुत चमत्कारिक शक्ति श्री बाबा की।

(९) एक दिन की बात है—गुरु जी बाबा के लिये कुछ मिष्टान्न और एक बड़ा भारी तरबूजा ले आये। गर्मियों का दिन था, तरबूजा बाबा के सामने रखा हुआ था बाबा ने छूरी मँगाई, तरबूज को बीच से काटकर दो टुकड़े कर, आधा गुरु जी और गुरु मां को वापस दिया और कहा कि यह तुमलोग ले जाओ, और अपने लड़कों को खिला दो। आधा वहीं टुकड़ा करके सब लोगों को बाँट दिया। गुरु जी गुरु मां की तरफ देखने लगे तथा गुरु मां गुरु की तरफ। पीछे मालूम हुआ कि—जब वे तरबूज ला रहे थे तब उनके एक लड़के ने कहा था कि--इतना बड़ा तरबूज़ क्या करोगे, आधा यहीं रख दो, हम लोग खायँगे। इसी भेद को ध्यान में रख कर बाबाने आधा तरबूज वापस कर दिया था।

(१०) डाक्टर त्रिवेणीप्रसाद ने भी नागार्जुन में बाबा की बहुत सेवा की। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि काँग्रेस के नेता होने के कारण मन्त्रिपद उन्हें मिले। वे बाबासे पूछते रहते थे कि कोइराला प्रधानमंत्री बनेंगे कि नहीं ? तथा नेपाली काँग्रेस का मन्त्रिमण्डल बनेगा कि नहीं ? इन प्रश्नों के उत्तार के लिये बाबा ने एक दिन ध्यान में देखा कि काँग्रेस का मन्त्रिमण्डल बनने का समय नहीं आया है, परन्तु एक दिन जरूर बनेगा, चुनाव में भी यह पार्टी विजयी होगी। परन्तु सत्ता बहुत दिनों तक नहीं रहेगी। इसका कारण यह है कि नेताओं में आपसी विवाद और कलह होगा। कुछ मंत्री ऐसे घुसेगें जो केवल अपना

ही स्वार्थ देखेंगे। प्रधान साहब को भी कहा कि—तू भी मंत्री बनेगा लेकिन ज्यादा दिन नहीं रहेगा।

(११) नागार्जुन में रहने के लिये श्री बाबा को सात दिनों की अवधि तक ही राजकीय अनुमति थी। उक्त समय बीत जाने के पश्चात् वहाँ के अफसर ने उनको नोटिस दिया, उस वक्त मैं वहाँ उपस्थित नहीं था। इस कार्य से बाबा को बहुत नापसंदगी हुई। जब मेरे पास खबर आयी, उस समय महाराजाधिराज त्रिभुवन दिल्ली में थे, इस काम में उनकी अनुमति की आवश्यकता थी जो आकाशवाणी द्वारा मिल गई।

एक दिन नेपाल के धर्माधिकारी बड़े गुरु जी हेरंबराज जी बाबा के दर्शन के लिये आये, गोपाल बाबा ने उनको बाबा के दर्शन के लिये भेज दिया। उनकी उम्र करीब ८० वर्ष की थी, बहरे थे। बाबा का उन्होंने दर्शन किया। बाबा ने पूछा क्या है? क्यों आये हो? तब उन्होंने प्रश्न किया कि मेरे पिता, दादा सब को काशीवास हुआ है, मेरा होगा कि नहीं? बावा ने फौरन उत्तर दिया कि—नहीं, तू यहीं मरेगा, इस उत्तर से उनको बड़ा रंज हुआ वे बिना दूसरा प्रश्न किये ही चल दिये। ४-५ वर्ष के बाद जब वे सख्त बीमार हुए, थोड़ा सा चल फिर सकते थे तभी (तब) काशी जाने के लिये सब तैय्यारियाँ प्रारंभ हुईं। शुभ मुहूर्त में गणेश-पूजन करके अपने आप (स्वयम्) घर से निकल रहे थे, एक सीढ़ी उतर भी गये थे, दूसरी सीढ़ी उतरना अभी शेष (बाकी) था, न मालूम उनके मन में क्या भावना आयी बस कह ही तो दिया कि – "नहीं जायँगें" ऐसा कह वे ऊपर वापस चले गये। सामान सब जो कि हवाई अड्डे पर पहुँच चुका था वह सब वापस लाया गया। इस घटना के ठीक छह महीने के बाद उनका काठमाण्डू में ही देहान्त हो गया। श्री बाबा की भविष्यवाणी यथार्थ सत्य निकली।

(१२) एक दिन की बात है, उस समय बाबा नागार्जुन में थे, उनकी सेवा के लिये माधवराज पाण्डे (प्रो. त्रि. वि. वि.) था। बाबा ध्यान से उठे और माधव को अपने पास बुलाया। तत्काल महाराजाधिराज त्रिभुवन के नाम पर एक पत्र लिखाया। उस पत्र में बाबा ने यह लिखवाया कि उनके ध्यान में यह बात आयी है कि

'त्रिभुवन' के बहुत बुरे दिन आ रहे हैं। विकट समय अब जल्दी ही उपस्थित होने की संभावना है। सन्तों का कार्य सब का कल्याण करना है, विशेष रूप से तब जब की वह उन्हीं के राज्य एवं उपवन में रह रहा हो, उनका कल्याण करना नितान्त आवश्यक है अतः महाराजाधिराज जल्दी ही नागार्जुन में ७ दिनों का अखण्ड कीर्तन जिसमें हनुमान्-चालीसा १०८ आवृत्ति, वेद-पाठ, हवन पूजन सब अच्छे कर्मकाण्डियों द्वारा करावें। फिर ब्रह्म-भोजन हो। साथ ही पत्र में यह भी लिखाया कि—महाराजाधिराज ! वेदपाठो काशी से मगाये जायँ। अच्छे नैष्ठिक विद्वान् ब्राह्मणों द्वारा वेदपाठ आदि शीघ्र कराया जाय।

जब यह मार्मिक पत्र महाराजाधिराज त्रिभुवन के पास पहुँचा तुरन्त बाद उनके मिलिट्री सेक्रेटरी योगविक्रम राणा मेरे पास आये। आते ही उन्होंने पूछा कि—इस कल्याणकारक अनुष्ठान में कितना खर्चा लगेगा ?

खर्च के बारे में जब बाबा से पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैं खर्च के बारे में क्या जानूँ, काम अच्छी तरह करो परन्तु वह नहीं हो सका और चार पाँच दिनों के बाद महाराजाधिराज त्रिभुवन भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के निमंत्रण पर दिल्ली गये। वहाँ एक सप्ताह ठहरने के पश्चात् जब काठमाण्डू वापस आये तो उनको एकाएक दिल का दौरा हुआ। यह बड़े जोरों का आक्रमण था। सर्वत्र हाहाकार मच गया। मिलिट्री सेक्रेटरी बाबा के पास फिर दौड़े आए। बाबा ने कहा—अब वह समय कहाँ ? अवसर बीत गया। अब तो भुगतना ही पड़ेगा, हम कुछ नहीं कर सकते।

(१३) नागार्जुन बाबा को बहुत अच्छा लगा क्योंकि वह एक तपोभूमि थी और बाबा अपने तपस्या काल में प्रकृत्ति से घुले मिले रहते थे। नागार्जुन के बाद बाबा ज़नरल केन्द्र शमशेर के मकान में ठहरे। केन्द्र को बाबा कमल कहते थे और उनकी सेवा से बहुत प्रसन्न रहते थे। उनके यहाँ भी हवन, पूजन, कीर्तन और भजन का आयोजन था और उनके सब परिवार बाबा की श्रद्धा से सेवा करते थे। इसी के फलस्वरूप बाद में हर तरह से कल्याण हुआ।

श्री भोगेन्द्रराज गुरुजी प्रतिदिन बाबा का दर्शन करते थे। उनकी भी इच्छा हुई कि बाबा कुछ दिन उनके मकान में ठहरें और उसे पावन

बनावें। उनके विशेष अनुरोध पर उनके मकान में भी जा ठहरे। वहाँ उन लोगों ने बाबा की बड़ी सेवा की। हवन-पूजन, कीर्तन-भजन और सत्सङ्ग नित्य होता था और श्रीमद्भागवत का सप्ताह-यज्ञ भी कराया। बाबा बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया। बाद में गुरु जी शाही परामर्शदातृ-मण्डल के सदस्य हुये, मंत्री का कार्यभार योग्यता के साथ संभाला। महाराजाधिराज महेन्द्र के राज्याभिषेक में सिरपेंच पहनाने का काम जो सबसे बड़े गुरुजी को करना पड़ता था और जिस पद पर उनके चचेरे भाई थे बीमारी के कारण चल-फिर न सके तो इन्हीं को करना पड़ा। पीछे उनकी मृत्यु के बाद ये बड़े गुरुजी हुए और सब तरह से इनका कल्याण हुआ। इन लोगों के ऊपर बाबा की बड़ी कृपा है और इनकी सेवा की बारम्बार सराहना करते हैं।

(१४) पाण्डेय जी की बहिन, जो एक बड़ी भक्तिन थीं, उनका सब से बहुत स्नेह था। श्री बाबा की उन्होंने बहुत सेवा की थी। उनको केवल इसी बात का रंज था कि उनका लड़का जिन्होंने राजनीति में सक्रिय भाग लिया था और एक होनहार युवक थे। तब तक उनकी कदर नहीं हुई थी।

इसलिये वह बाबा की सेवा करती थीं। बाबा ने एक बार कहा था—'सेवा का फल कभी भी निष्फल नहीं होगा, तेरे लड़के को एक दिन अच्छी जगह मिलेगी ही।" उनके पति भी बहुत बीमार रहते थे, उसकी भी उनको बहुत चिन्ता थी, बाबा उधर से चले आये और वह बहुत जल्दी गुजर गई, पर उनके पति की तबियत बिलकुल सुधर गई। तब से वे भले चंगे हैं और उनका लड़का जो एक योग्य व्यक्ति है, आखिर मन्त्री बन ही गये। यह है सेवा का फल।

(१५) तीसरा व्यक्ति जो बाबा को अनन्य सेवा करता था ध्रुव शमशेर थे, वे और उनकी देवी करीब करीब नित्य ही बाबा के दर्शनार्थ आते थे। साथ ही कीर्तन वगैरह के भंडारे में भी द्रव्य लगाते रहते थे। सोने से मढ़ा हुआ रुद्राक्ष का कण्ठा जो बहुत कीमती था वह बाबा को चढ़ाया था। जो बाबा ने तोड़ताड़ कर एक एक करके बाँट दिया था। पीछे गृहस्थी (घरेलू) कलह हो जाने से उनको बहुत कष्ट उठाना पड़ा। तब भी बाबा की कृपा से पचासों लाख का मुकदमा जीत गये।

नेपाल में एक थानेश्वर महाप्रभु नाम के युवक महात्मा निकले हैं वे कहते थे कि बाबा के बराबर परम योगी और तपस्वी संसार में नहीं है। इन लोगों से उनका बहुत संपर्क था, सन् १९६९ ई० में कृष्ण-प्रसाद भेड़ाघाट में बाबा के दर्शन के लिये उनको (युवक महात्मा को) लाये थे। कृष्णप्रसाद ने बाबा से यह भी कहा था कि "गुरु महाराज कहते थे कि वे लोग बहुत एहसानमन्द हैं।"

सुब्बा ऋद्धिबहादुर मल्ल बाबा के परम भक्त थे और वे बहुत ही सरस व मधुर कीर्तन करते थे। इलाहाबाद के कुंभ में इन्हीं को बड़े बाबाने त्रिवेणी का जल पीलाकर बहुमूत्र रोग से बरी (मुक्त) कर दिया था। सात दिनों तक तो उनको खूब चावल और मिठाई खिलाई, उसके बाद एक रोज कहा कि संगम में नीला जल जितना पी सको पीयो, वे डेकची (डेकची = बर्तन) खरीद कर संगम गये और करीब १ एक गैलन पानी पी गये। इस प्रकार उनकी इस बीमारी से मुक्ति हुई। उनको भी वीसों झंझटें फँसाती थी, पचासों वर्षों से भाई-भाइयों में संपत्ति का मुकदमा चल रहा था, प्रेस व्यवसाय में भी उन्नति नहीं हो पा रही थी। बाबा की कृपा से ही अब लाखों रुपये का कारबार हो गया है।

मरने के पहले बाबा को कुछ भेंट भेजा था। आज वे स्वयम् नहीं रहे, परन्तु उनके पुत्र-पौत्रों की अच्छी उन्नति हो रही है।

ऐसे ही अनेक लोग हैं जिनके केवल नाम दिये गये हैं और जिन्होंने बाबा के आशीर्वाद से बहुत लाभ उठाया है।

दिनचर्या

काठमाण्डू में बाबा जितने दिन रहे उनका हवन नियमपूर्वक प्रातः व सायं चलता रहा। हवन की सामग्री वहाँ बहुत जुट जाती थी और हवन बहुत अच्छी तरह होता था। बाबा जब रामकुटी में थे उनके शौच व स्नान के लिये अलग स्थान बनाया गया था। सबेरे ७–८ बजे उनका ध्यान टूटता था, तब वे शौच इत्यादि करके मंजन लगाते थे, इसके बाद वे कभी तो स्नान करते थे और कभी हाथ मुँह धो लेते थे, फिर ज्यादातर ध्यान की बातें होती थीं। इसके बाद वे चाय लेते थे, नाश्ता कभी लेते थे कभी नहीं लेते थे। सबेरे से दर्शन करने वालों की भीड़ लगी रहती थी। परन्तु गोपाल बाबा आदमियों को देख देखकर उनके दर्शनों के लिये भेजते थे। उनके दर्शन के लिये

सभी प्रकार के लोग आते थे, जैसे—बड़े बड़े ओहदेवाले राणा, उनके परिवार, राजकर्मचारी, राजगुरु, पण्डित, प्रोफेसर, साहु-महाजन, साधु-सन्त तथा भारत के सुविख्यात संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी, वृन्दावन के चक्रपाणि जी, भजनानन्द जी, खेपा बाबा और मौनी बाबा ऐसे लोग भी इनके सत्संग से आनन्द प्राप्त करते थे।

बाबा का बहुत कम लोगों से घनिष्ट संवंध था। वे बहुत ऊँची-ऊंची बातें करते थे विशेषतः कुदरत की, चैतन्यस्वरूप की, तपस्या के अनुभवों की, पत्तों के ज्ञान की, परब्रह्म परमात्मा के स्वरूप की, यही विषय रहते थे। लोगों का थोड़ा-सा भी दुःख सुनकर इनका हृदय द्रवित हो जाता था। उनकी बिगड़ी हुई परिस्थिति को बहुत सम्हालते थे।

एक बार बाबा को पूछा गया 'बाबा'! क्या बात है कि आप कुछ वस्तु खाते हैं और कुछ वस्तु नहीं खाते? इस पर बाबा ने कहा कि—ये सब वस्तुएं जो बनायीं जाती हैं और खाने के लिये लायी जाती हैं, वे बोलने लगती हैं कि वे क्या हैं, कहाँ से लायी गई हैं और किस भावना से उनको बनायी गयी हैं। बाबा ने एक बार यह भी कहा—खाने की चीजों को ऐसा देखा कि उनमें तो केवल कीटाणु हैं। ऐसा भी देखा गया है कि कोई वस्तु बाबा को अच्छी लगी और दूसरी बार ले जाने पर वे उसे छूते ही नहीं थे। किसी किसी की लायी हुई वस्तु तो खाते ही नहीं थे। वे कभी-कभी यह भी कह बैठते हैं कि अमुक (नामविशेष) की लायी हुई वस्तु आज खायी गई, उसके आग्रह पर उसे ग्रहण करना पड़ा, लेकिन आज मुझको तकलीफ हो गई।

दिन में बाबा ध्यान में बैठते थे, ३-४ बजे ध्यान से जब उठते थे तब दर्शन करने के लिये लोगों का आगमन शुरु हो जाता था। बहुत से लोग कुछ चीजें भी लाते थे। उनमें से कुछ धूनी में डालकर बाकी बाँट देते थे। सत्संग चलता रहता था।

सात आठ बजे तक बहुत से लोग चले जाते थे। कभी कभी किसी किसी से बाबा जब सत्सङ्ग करने बैठते थे, सारी रात बीत जाती थी पर किसी को पता नहीं चलता था। जनरल यदुनाथ सिंह जो राष्ट्रपति के अङ्गरक्षक रहे, नेपाल में थे, उनके साथ ऐसा ही हुआ। ऐसे ही प्रधान न्यायाधीश हरिप्रसाद भी रात में बहुत देर तक रहते थे। फिर बाबा भोजन करते थे। उनके भोजन का कोई नियम उस समय नहीं था न आज ही है। कभी खिचड़ी, कभी फुलका, कभी पूरी, कभी चाय

जैसी इच्छा होती है ग्रहण करते हैं। भोजन के पश्चात् थोड़ी देर तक कुछ अन्तरङ्ग लोगों से बैठकर बात करते थे फिर ध्यान में चले जाते थे।

बाबा का ध्यान अलौकिक है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थाएँ होती हैं, इनका ध्यान तीनों अवस्थाओं से परे है, क्योंकि स्वप्न तो उनको आता ही नहीं, कारण जो भी वे ध्यान में देखते हैं वह वास्तविक घटना का स्वरूप ले लेता है। सुषुप्ति की गाढ़ निद्रा में तो किसी चीज का भी ध्यान नहीं होता है, वहाँ तो केवल आनन्द ही आनन्द रह जाता है उस आनन्द का अनुभव भी जगने पर ही होता है। इसी लिये इसे तमोगुणजन्य आनन्द कहते हैं। शरीर का भान न रहते हुए भी जो आनन्द का अनुभव होता है वह अनुभव आत्मजन्य नहीं रहता है, क्योंकि वहाँ अज्ञान छा जाता है। इसलिये तुरीयावस्था में आत्मसाक्षात्कार होते हुए जो आनन्द मिलता है वही सच्चिदानंद (सत्+चित्+आनन्द) है। उसी में बाबा का ध्यान रहता है, अतः जो कुछ वे देखते हैं चैतन्यस्वरूप से देखते हैं और प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ होता है। उस समय उनको तीनों काल का ज्ञान भी होता है, क्योंकि वे प्रकृति में मिले हुए रहते हैं और उसी में समा जाते हैं। कभी कभी तो वे सब के सामने बैंठे हुए रहते हैं तब भी उनका विचार कहाँ कहाँ पहुँच जाता है, हाथ हिलाते हैं और न जाने किस भाषा में बात करने लगते हैं (जिसको कोई समझ नहीं सकता), परन्तु जिनके विषय में उनका चिंतन चलता है वह कभी कभी कह भी देते हैं। कभी कभी जब कोई प्रश्न कर बैठता है तो वे ज्यादातर ध्यानावस्था में पहुँच जाते हैं और फिर जब उसका वे उत्तर देते हैं तो वह सत्य सटीक और अकाट्य निकलता है।

बाबा एक महान् तपस्वी हैं, उनके प्रकाशमय स्वरूप से तेज-सा टपकता रहता है और वे कभी यह नहीं चाहते हैं कि उनकी कीर्ति बढ़े, लोग उनको जानें और वे संसारी झमेले में पड़ें। कितनी बार ऐसा देखा गया है कि वे लोगों को फटकारते रहते हैं, भगाते रहते हैं, उन्हें आकृष्ट नहीं करते, कितने ही लोगों को कितनी बार परीक्षण, निरीक्षण करने के बाद ही वे अपनाते हैं। और जब अपनाते हैं तब इस तरह उनकी दृष्टि उन पर पहुँचती है, उनका ख्याल करने पर बड़े बड़े संकट

से मुक्ति मिलती है, कठिन से कठिन कार्य में सफलता मिलती है और जीवन की विकट समस्या भी सरल हो जाती है।

यह तो अभी गोपाल बाबा के अन्तर्धान होने के बाद वे लोगों के सान्निध्य में आये। गोपाल बाबा के कथनानुसार पहले तो वे वर्षों उन्हीं को नहीं मिलते थे और दर्शन बड़ी मुश्किल से होता था। गोपाल बाबा जब दूसरी बार काठमाण्डू आये थे तो उन्होंने कहा था कि 'हम अपने गुरु महाराज का दर्शन अपने लोगों को करवायेंगे। वृन्दावन में जब गोपाल बाबा के साथ गुरु महाराज का दर्शन मिला था तो हँसते हुए गोपाल बाबा ने सब लोगों को यह कहा था कि 'हम बापू को अपनी दुकानों का निरीक्षण करवायेंगे और उनसे यह जानेंगे कि—यह ठीक प्रकार चल रहा है कि नहीं।

बड़े बाबा की गिरनार की तपस्या बहुत कठिन और कठोर थी, उस समय तक उनकी इतनी ख्याति हो चुकी थी कि तीन धाम की यात्रा में गिरनार पहुँचने पर एक साधु मिले। बाबा के आश्रम के विषय में उनसे पूछने पर बाबा का नाम 'रामसनेही' कहते ही वे चौंक गये और उन्होने कहा—रामसनेही बाबा !! हाँ उनकी कुटी जंगल में स्थित गुप्तेश्वर स्थान में गुफा के अन्दर दुर्गम स्थान में है। वहाँ जब वे रहते थे हमें भी कुछ दिनों तक सहवास का सौभाग्य मिला था। उनके पास तो देवता लोग आते थे और उनकी बातचीत उनसे होती थी। ऐसे महापुरुष का आप को दर्शन मिला है धन्य हैं।

पीछे बाबा से जिक्र करने पर उन्होंने कहा—वे ठीक कहते थे। वे कहते हैं—जगत् की सारी सृष्टि पंचतत्त्व के आधार पर हुई है। पंचतत्त्व का पूर्ण ज्ञान होने से ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसका ज्ञान न हो। सारे विश्व ब्रह्माण्ड का चित्र तत्त्वज्ञ के सामने आ जाता है। और उस तत्त्व का ज्ञान राम-नाम द्वारा होता है। राम को निरंतर जपने से श्वास श्वास में राम-नाम लेने से राम-नाम की मणि निकलती है, और वह आत्मा के प्रकाश से मिलती है। शरीर में वह समा जाती है उसी प्रकाश में सब कुछ दिखाई देता है। लोग राम-नाम लेते हैं लेकिन नाम में आत्मा का प्रकाश नहीं डालते हैं। राम-नाम से ही जल, अग्नि, आकाश, वायु और थल का ज्ञान होता है। राम नाम के हवन करने से ही तत्त्व की पसंदगी होगी और पसंदगी होने पर सब कुछ बता देते हैं। जब गोपाल बाबा का नेपाल में देहान्त हुआ था उस समय तक

बाबा को सब तत्त्वों का ज्ञान नहीं था। बाबा कहते हैं "जिस वक्त गोपाल गया हमने उस समय उस तत्त्व का प्रयोग नहीं किया," 'नहीं तो वह बच जाता"। "वह शक्ति मुझ में थी लेकिन उसका ज्ञान मुझे नहीं था"।

अब तो बाबा जहाँ कहीं भी गये सर्वत्र तत्त्वों का अध्ययन किया, और जब अयोध्या पहुँचे तो यह भी देखा गया कि एक तत्त्व का प्रयोग करके चींटी को मारते हैं तो दूसरे तत्त्व का प्रयोग करके उसको जिला देते हैं। एक बार तो उनको यहाँ तक सूझा था कि "गोपाल की समाधि में अभी गोपाल का सिर जैसा का तैसा है"। यह तो गोपाल बाबा भी कहते थे कि भजन के प्रताप से शरीर जैसे का तैसा रह जाता है। अरविन्द घोष और महाप्रभु आदि योगियों का शरीर समाधि की मरम्मत करते समय जैसे का तैसा देखा गया था। उस शरीर को निकाल कर जीवित करने की बाबा की इच्छा थी। उन्होंने यह विचार छोड़ दिया क्योंकि इससे प्रचार होता, प्रकाशन होता है, जिससे बाबा को कष्ट हो जाता है। शरीर छूटने पर महात्माओं का अन्त नहीं होता, उनकी शक्ति हमेशा विद्यमान रहती है।

बाबा को धूनी अवश्य चाहिये। जहाँ धूनी की सुविधा होती थी वहीं रहते थे। कहीं कहीं निर्जन स्थानों में जहाँ मनुष्यों का अभाव रहता था वहाँ गंगा जी, नर्मदा जी और अन्य देवताओं ने धूनी का सामान पहुँचाया। वे जहाँ कहीं भी जाते थे धूनी की लकड़ी ही माँगते थे और उसके मिलने पर वे बहुत खुश हो जाते थे। अग्निदेव उनके विशेष इष्टदेव हैं।

श्री बाबा के हवन में अग्नि विभिन्न स्वरूप में दिखाई देते हैं। हवन करानेवाले को फल कैसा मिलेगा यह ज्यादातर हवन काल के अग्नि-स्वरूप से ही अनुमान किया जा सकता है, फिर बाबा का हवन तो अलौकिक है—एक तो अन्न का हवन होता ही नहीं। बाबा कहते हैं अन्न अन्नपूर्णा है, उसके द्वारा प्राणीमात्र का पालन-पोषण होता है और अन्न से तत्त्वों को सन्तुष्टि भी नहीं होती है। उनको तो मेवा, फल, घी और उत्तम पदार्थ तथा सुगन्धित वस्तुओं से ही प्रसन्नता होती है। इस प्रकार हवन करने से तत्त्वों को सन्तुष्ट रखने से जो चाहो सो मिल जाता है। बाबा ने अग्निदेव की बहुत सेवा की इसलिये कहते हैं कि जब कभी

कोई बात हो जाती है, अथवा किसी के लिये कुछ करना होता है तो यही हवन कर देते हैं, अग्निदेव को जैसा चाहते हैं वैसा कह देते हैं और वे इसको पूर्ण करते हैं। बहुत बार बाबा को अग्निदेव का साक्षात्कार हुआ है और बड़े-बड़े संकटों में अग्नि से परित्राण मिला है। अभी अभी की बात है भेड़ाघाट (जबलपुर-नर्मदा तट) में बाबा ने एक नेपाली आश्रम का निर्माण कराया। वहाँ पर सतह में पानी नहीं था, नीचे घाटी में नर्मदा बहती है वहीं से पानी लाया जाता है। वर्षा ऋतु में बाढ़ के कारण पानी निर्मल नहीं रहता है और उस मटमैले पानी को पीना पड़ता है। बाबा ने सोचा कि ऊपर ही एक कुँआ खोदा जाय। वहाँ पर पहले सरकार की तरफ से कुआँ खोदने के लिये काफी अन्वेषण और प्रयास किया गया जिसमें सरकार असफल रही। निष्कर्ष यही निकला कि इस परिधि में कहीं भी कुआँ खोदा नहीं जा सकता। कहीं भी जल नहीं है। पहले कुछ सन्तों ने कुआँ खोदवाया था पर किसी को सफलता नहीं मिली। स्वभावतः जब बाबा कुआँ खोदवाने लगे तब वहाँ के लोगों ने ये सब बातें बाबा के सामने प्रस्तुत कीं। पर बाबा अपने धुन के पक्के हैं, बाबा की यही धुन थी कि, पानी वहाँ अवश्य लाया जाय। संयोगवश कुछ फीट नीचे खुदाई करने पर भी पानी नहीं निकला, लोग भला बुरा कहने लगे। बाबा कहते हैं—उन्होंने अग्निदेव से पुकार की और कहा कि लाज तुम्हारे ही हाथों में है। हवन हुआ, उस दिन जब और खुदाई होने लगी तब पत्थर की जगह पीली, लाल और हरी मिट्टी निकलने लगी, इसके बाद निर्मल पानी निकलने लगा। जल तत्त्व का भी बाबा पूजन हवन करते हैं—इसीलिये वे भी निकले। बाबा बहुत प्रसन्न हुए। भेड़ाघाट में चारों तरफ खबर फैल गई, लोग देखने आये और सब के सब चकित हो गये। अब बाबा ने और बोरिंग करवाई है। काफी पानी मिला। अब उस कुएँ में बहुत पानी है, उसमें पम्प बैठाया गया जिससे पानी ऊपर आ गया है।

श्री बाबा का नेपाल से भारत-आगमन

बहुत दिनों तक रहने के पश्चात् बाबा नेपाल से भारत पधारे। काठमाण्डू से पटना तक वे हवाई जहाज से आये थे। वहाँ बी० एम० के० सिन्हा (B. M. K. Sinha) जो पी० एस० सी० में थे और जो कि मेरे मित्र थे, उनको मैंने बाबा का स्वागत करने को लिखा था। मेरा लड़का कृष्ण भी उस समय पटना में ही पढ़ता था। सिन्हा साहब ने

(जो पीछे पी० एस० सी० के चेयरमेन और मगध यूनिवर्सिटी के वाइस-चान्सलर हुए थे) बाबा की अगवानी की, वे बाबा से बहुत प्रभावित हुए थे। बाबा वहाँ से आजमगढ़ जाने वाले थे, अतः उनके लिये प्रथम श्रेणी का टिकट लेकर और आवश्यक प्रबन्ध कर उन्होंने बाबा को भेज दिया था। आजमगढ़ मैं जा नहीं सका, सुना जरूर था कि बाबा डा० सुन्दरलाल शाही के यहाँ ठहरे थे जो कि सिविलसर्जन थे।

दुर्वासा ऋषि की तपस्या का पृथ्वी पर प्रभाव

आजमगढ़ में डाक्टर शाही ने बाबा को बड़े प्रेम से अपने यहाँ ठहराया और बाबा की सेवा में लग गये। उनकी सेवा से प्रभावित और प्रसन्न होकर बाबा वहीं पर धूना बनाकर पृथ्वी का पूजन करने लगे। राम राम भजन करते थे। अधीनता से पूजन करते चूमते-चाटते, माथा लगाते, सत रूप से पूजा करने लगे। १५-२० दिन रोज इसी प्रकार पूजा-ध्यान उस स्थान पर बाबा करते रहे। पश्चात् एक दिन पृथ्वी से राम राम की आवाज आयी, बाबा ने ध्यान किया तो पता लगा कि— इस स्थान पर दुर्वासा ऋषि ने जप-तप किया है, उनके भजन का कितना प्रभाव है कि पृथ्वी बोलती है। 'कितना बड़ा कर्म है! इतना भजन किया पर उसका परिणाम क्या हुआ!' इस प्रकार का विचार बाबा के मन में उठा। ऐसा विचार करते ही बाबा देखते हैं कि—उनका प्राण निकल गया है और चार आदमी उनके शरीर को उठाकर जलाने को ले चले। वे लोग बाबा के शरीर को उठाकर एक स्थान पर पहुँचे जहां एक नाला-सा था, वहाँ पानी रुकता था, चारों तरफ की गन्दगी उसमें जमा होती थी और बदबू निकलती थी। वे चारों आदमी वहां पहुँच कर सोचने लगे कि लकड़ी तो है नहीं क्या करें, यह विचार करते हुए उन लोगों ने बाबा के शरीर को उतार कर जमीन पर रखा और लकड़ी की व्यवस्था के लिये चले, रास्ते में उनको यह विचार आया कि लकड़ी तो मिल नहीं रही है क्यों न गड्ढा खोदकर शरीर को गाड़ दिया जाय, ऐसा सोचते वे लोग वापस आ गये। इधर उस गन्दी जगह से बड़े जोर की बदबू निकल रही थी। एक बदबू की जोरदार लहर बिजली सी निकली और बाबा के नाक में बदबू घुस गई। नाक में बदबू घुसते ही बाबा को ज्ञान आया, आँख खोलकर देखते हैं कि वे एक ऐसी गन्दी जगह पर हैं।

सूक्ष्म दृष्टि से ख्याल करने पर उन्हें ज्ञान हुआ कि वे लोग उनको यहां पर गड्ढा खोदकर गाड़ने को लाये हैं। 'हम ऐसी गन्दी जगह नहीं गड़ेंगे, ऐसा विचार कर बाबा वहां से आगे बढ़े तो वही चारों आदमी फरसा लेकर आते मिले। बाबा ने उन लोगों को देखकर कहा कि—आप ऐसी गन्दी जगह गाड़ने को लाये हैं! गाड़ना है तो कहीं अच्छी जगह गाड़ो। उन लोगों ने पूछा कि—कहां गाड़ें तो, बाबा ने एक आम के पेड़ की छाया में जगह बताया। उन लोगों ने वहां एक गड्ढा खोदा। तब बाबा को विचार आया कि--हम को तो ज्ञान है, हम बोलते हैं, जिन्दा हैं, कैसे गड़ेंगे? ऐसा विचार करते ही भूमि के अन्दर से 'ट ट' की आवाज आई और बाबा की बोली बन्द हो गई, और भरोसा हुआ कि अब गड़ना ही पड़ेगा। बाबा ने इशारे से उन आदमियों को बताया कि--हम को गड्ढे में रखकर ऊपर से मिट्टी डालना और पत्थर मत रखना।

यह सब ज्ञान बाबा को था ही सिर्फ बोली बन्द हो गई थी। इतने में अन्दर से फिर 'ट ट' की आवाज हुई और बाबा की आँखें बन्द हो गईं, परन्तु ज्ञान तो अभी भी विद्यमान ही था। तीसरी बार फिर अन्दर से 'ट ट' की आवाज हुई, बाबा अज्ञानावस्था में हो गये।

ऐसा ध्यान करके बाबा ने अनुभव किया कि दुर्वासा ऋषि की स्थिति भी ऐसी ही हुई होगी और यही कारण है कि पृथ्वी बोलती है। यह कर्म ही बताता है।

सेवा का फल मेवा

बिस्वान के रामकल्ली और कल्लू बाबा के बड़े भक्त थे। उनकी ठेकेदारी थी, कारबार में मंदी आ रही थी, उनकी एक पत्नी जो बहुत सुन्दरी थी मर गई थी। रामकल्ली भी अपने लड़के का यह हाल समाचार देखकर बहुत दुखी थी। कल्लू तो बाबा के साथ नेपाल भी गये थे, और रामकल्ली ने प्रयाग कुम्भ के अवसर पर बाबा लोगों की सेवा की थी। बाबा ने अपने आशीर्वाद से उन लोगों के लिये विस्वान में मकान बनवा दिया। बाबा के आशीर्वाद से वे अब काफी सम्पन्न और आनन्द में हैं।

बाबा बिस्वान से सरयू के किनारे किनारे चलते हुए टाँडा पहुँचे। टाँडा अकबरपुर के पास एक छोटा सा कस्बा है, परन्तु व्यापारिक मण्डी

है। वहाँ पर बाबा एक वकील के मकान में ठहरे थे। जब मैं वहाँ पहुँचा बाबा का कार्यक्रम चल रहा था। धुनी-हवन तो चलता ही था साथ साथ तत्त्वों का अध्ययन व अनुसन्धान बाबा अपने तौर-तरीके से कर रहे थे। काठमाण्डू में जब गोपाल बाबा का देहावसान हुआ, और उस समय बाबा ने तत्त्वों का जो प्रयोग किया उससे वे गोपाल बाबा को जीवित नहीं कर सके, फिर भी उनको आशातीत सफलता कुछ ही मात्रा में सही मिलती जाती थी।

अयोध्या में बाबा का आगमन, वहाँ प्राणदान का प्रयोग

अयोध्या में बाबा सरयू किनारे ऐसी जगह बैठे हुए थे जो एक तरह से खंडहर था किन्तु वह भगवान् रामचन्द्र के काल का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। बाबा कहते थे—वहाँ के पत्थर जो भग्नावशेष में से निकले थे, (बाबा को) अपनी सब कहानी बतला रहे थे। यद्यपि खास अयोध्या से तो वह स्थान दूर ही था तथापि वहीं पर बाबा का तत्त्वज्ञान सफल हुआ था। वहीं पर बाबा ने चींटियों को धूनी के भभूति में रखकर प्राणहीन करवा दिया और फिर तत्त्वों का प्रयोग कर जिला दिया था। यह क्रम बहुत दिनों तक चलता रहा जिसे देखकर लोग बहुत ही आश्चर्यचकित हुआ करते थे। बाबा तो यह भी कहते थे कि हम गोपाल को भी नेपाल जाकर समाधि-भूमि से निकालकर जीवित कर देंगे।

कानपुर में श्रीकृष्ण जन्म की अनुभूति

कानपुर में बाबा राधेश्याम टंडन के घर में ठहरे हुए थे, ये भी प्रयाग कुम्भ के अवसर पर बाबा के साथ बहुत दिनों तक ठहरे थे। ये बाबा के बहुत बड़े भक्त थे। इन्होंने बाबा के प्रति अपनी श्रद्धा-भावना व्यक्त करने के लिये एक पुस्तक ही छपवा दी है। इनके देखा-देखी वहाँ पर बहुत से खत्री परिवार भी बाबा के भक्त हो गये थे, और बहुतों ने तो लाभ भी उठाया। श्री राधेश्याम भी उन दिनों बहुत दुःखी थे। बाबा के आशीर्वाद से उन्हें एकाएक जी० इ० सी० (G. E. C) में ५००) पाँच सौ रु० पर एक नौकरी मिल गई। श्री इकबालनारायण कपूर (जो उन दिनों में गवर्नमेन्ट एडवोकेट थे) के घर जन्माष्टमी के अवसर पर कीर्तन चल रहा था। वह कीर्तन बहुत जोर-शोर से चल रहा था, सभी भाव-विभोर थे। ठीक १२ बजे रात्रि में श्रीकृष्ण जन्म हुआ, उस

समय ऐसा मालूम हुआ कि मानों गोपाल जी की मूर्ति की जगह साक्षात् श्री कृष्ण ही विराजमान हैं। वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों ने यह कहा और महसूस किया कि ऐसा आनन्द और चमत्कार तो कभी भी नहीं हुआ था।

बाबा की चमत्कारिक साधनाएँ

एक बार रेवाशंकर जी, रुक्मिणी माता, भाभी और हम सब लोग एक साथ बाबा के चौरस्ता आश्रम में पहुँचे थे। श्री की माँ भी थी और कुछ बच्चे भी थे। श्री रेवाशंकर जी का यह पहली बार का दर्शन था। वे लोग अपना अनुभव तो स्वतन्त्र रूप से लिखेंगे ही परन्तु यहां इतना ही लिखना है कि माँ ने इस प्रकार प्रेम से हवन कराया कि उसमें अग्निदेव के प्रत्यक्ष दर्शन हुए थे। और भाभी को भी बाबा ने ऐसी ऐसी बातें बतला दी थीं जो वह एक तरह से भूली बैठी थीं, जिसके याद करने पर उसको बहुत आनन्द हुआ था। वे सब आध्यात्मिक अनुभव थे। बाबा यह सब अनुभव सभी को तो कहते नहीं थे पर अपने खास खास श्रद्धालु भक्तों को कहे बिना भी नहीं रह सकते थे। श्री की मां ने बद्री यू० के० (U. K.) से लौटा नहीं, इसकी चर्चा की किन्तु, बाबा कुछ बोले नहीं। परन्तु जिस वर्ष बद्री को लौटना था उस वर्ष बाबा ने स्वयम् कहा कि वह (बद्री) इस वर्ष आ जायगा। बद्री उनका दर्शन करने जा नहीं सका, परन्तु बाबा ही बार बार याद करते थे और उसे देखने की इच्छा प्रगट करते थे, क्योंकि बद्री को बाबा ने ही डाक्टर बनाया था। अनहोनी बात हुई थी। उसका मेडिकल कालेज में एडमीशन (प्रवेश) होना प्रायः असम्भव ही था। परन्तु नेपाली दूतावास दिल्ली के सचिव ने इस तरह प्रबन्ध करा दिया कि सब को बहुत आश्चर्य हुआ। यह सब बाबा की ही लीला थी।

एक दिन धूनी के सामने बाबा, बद्री और बद्री की मां को कह रहे थे कि पिछले जन्म में भी तुम लोग मेरे साथ थे। एक बच्चन ब्राह्मण था उसके स्त्री और तीन लड़के थे। बच्चन मर गये थे, उसकी स्त्री ने बच्चों की देखभाल की। वह स्त्री तुम्हीं थी, और उन तीनों लड़कों में बद्री भी तुम्हारा लड़का था। तुम लोगों का माँ बेटे का सम्बन्ध पिछले जन्मों से है। मैं उस वक्त एक गरीब परिवार में था, मेरी माँ दुखिया थी, कुछ खाद्य वस्तु के लिये तेरे पास गई थी, तू ने दिया या नहीं मुझे

याद नहीं है परन्तु इतना तो मुझे जरूर अभी तक स्मरण है कि मैं माँ की अवस्था देखकर वहुत दुःखित हुआ और तपस्या के लिये जंगल में प्रवेश कर गया। वावा ने वद्री से स्वास्थ्य परीक्षा भी करा ली, उसकी दी हुई दवाई भी ली, यह सव उनका अनुग्रह ही था। वद्री की शादी नहीं हुई थी; वह एक लड़की का चित्र लाया था जो वावा को दिखालाने पर वावा को विलकुल पसन्द नहीं आयी। वावा ने कहा कि यदि इसके साथ शादी करोगे तो तुम लोगों का जीवन वहुत दुःखी हो जायगा। वावा को वद्री इतना मानता है कि वावा की आज्ञा का उल्लंघन वह कैसे कर सकता था।

एक वार भेड़ाघाट में सबेरे से ही वावा का देवी पर ध्यान जा रहा था, उन्होंने ध्यान में शक्ति देवी और धूनी पर गुलाल तथा रोरी से शक्ति की पूजा की। शाम को सूर्यास्त के समय जव पश्चिम दिशा में आकाश लाल हो गया था, उनको देवी का दर्शन मिला और हम लोगों से भी दण्डवत् करवाया। उस दिन उन्होंने जो भभूति (विभूति) दी थी, उस सफेद भस्म में लाली मिलायी हुई थी और वे कहते थे कि ऊपर देवी का ध्यान करके भभूति (विभूति) लगाने से निर्भय होगा। इसका तजुर्वा (अनुभव) भी किया गया और वावा जो कहते हैं वह सही कैसे न निकले ? वह भभूति सचमुच कीमती भभूति है।

एक वार वावा ने कहा 'हम राजा महेन्द्र को कुछ संकट में पड़ा देखते हैं। ऐसा ध्यान हमको आया है।' वावा महाराजाधिराज महेन्द्र और उनकी महारानी पर वहुत कृपा रखते हैं। और खास वात तो यह थी कि जव वावा नेपाल में थे वे लोग युवराज और युवराज्ञी थे, रामकुटी में दर्शन करने आये थे और वड़ी श्रद्धा से वावा के प्रति भक्ति दिखाये थे। उसका वावा पर वहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था। उसके साथ साथ एकमात्र हिन्दू देश का हिन्दू राजा, जो हिन्दू धर्म में पूर्ण विश्वास रखते हैं और जिसने हिन्दुत्व के संरक्षण में समयानुकूल वहुत से कदम उठाये हैं, जिसने नेपाल के संविधान में ही नेपाल को हिन्दू राज्य माना है, जो पहले कभी नहीं हुआ था।

इन सव कारणों से भी उन पर साधु-सन्तों की ममता होनी स्वाभाविक ही थी। वावा ने उनके लिये विशेष हवन किया और वह हवन भी निराला ही था। चौरस्ता के वगिया में पहले पृथ्वी माता का पूजन करके जल-तत्त्व का पूजन किया। पश्चात् अग्नि में तेल का हवन हुआ

जो कभी देखा नहीं गया था। वावा का कहना था कि—जान तो वचेगा पर वड़ा भारी संकट होगा यह वात वेणु वावा को भी वावा ने कह दी थी। इन्होंने काठमाण्डू में घटना होने के पहले वहुतों को सुना दिया था। उस वर्ष हुग्रा भी ऐसा ही। जव वे चैत्र के महीने में 'वाघशिकार' में कंचनपुर गये थे, सूर्यास्त के कुछ पहले मचान में ही वाघ को गोली छोड़ने के वाद उनको दिल का दौरा हो गया और रात भर बेहोश से रहे। उसी रात विशेषज्ञों को बुला-बुला कर उनकी चिकित्सा करायी गयी और वड़े मुश्किल से वे वचे।

वावा ने उस समय यह कहा था कि—महाराजाधिराज के जन्म-दिन पर ऐसा हवन करने से उनकी वीमारी दूर हो जायगी। महाराजा ने जन्म-दिन पर वावा से वैसा ही हवन कराया और उनकी यह वीमारी विलकुल दूर हो गई। इतना ही नहीं वावा ने साफ-साफ कह दिया था कि लोग कहते हैं कि दिल का दौरा निर्मूल नहीं होता कभी न कभी धोखा होता ही है। पर अव यह उनको विलकुल नहीं होगा। अगर वे भविष्य में शिकार खेलना वन्द कर देंगे तो।

जव महाराजा महेन्द्र यू० के (U.K.) गये और उन्होंने डाक्टरी परीक्षा करवाई तो अपने को विलकुल ठीक पाया और रोग का कोई चिह्न भी नहीं था। यह ८ महीने वाद की वात है। इससे यह कहा जा सकता है कि—महाराजाधिराज का वावा पर अगाध-श्रद्धा, एवं विश्वास है।

एक वार हम वी० सी० कान्फ्रेन्स (वाइसचान्सलर्स कान्फ्रेन्स) में जयपुर गये थे। उसके वाद वृन्दावन जाने का विचार था। किन्तु वृन्दावन जाने का कार्यक्रम ठीक नहीं हो सका। इसके वाद मन में कुछ ऐसी प्रेरणा हुई कि वावा के दर्शनों के लिये जवलपुर चलूं, राजाज्ञा तो थी ही। जव मैं जवलपुर पहुँचा तो उस वक्त भूलाशंकर, लक्ष्मी और विद्या चारों वहाँ थे।

माघ पूर्णिमा का दिन था, दिल्ली विश्वविद्यालय के असिस्टेण्ट रजिस्ट्रार जो काठमाण्डू (नेपाल) में डिप्टी रजिस्ट्रार थे, वे भी मेरे साथ थे। प्रतापशंकर, भूलाशंकर तो वाजार गये थे, परन्तु लक्ष्मी और विद्या वहीं वाहर खड़ी थीं, चेहरा मुर्झाया हुआ था, मूरत रोनी-सी थी। जव मैंने गोपाल गोपाल कहा तव उन लोगों को वहुत आश्चर्य हुआ।

उन्होंने कहा कि बाबा बीमार हैं और नीचे उतरे ही नहीं हैं। हम सीधे ऊपर गये देखते हैं कि वे सचमुख बहुत कमजोर अवस्था में हैं। उनकी आवाज बहुत धीमी थी, हमें पहचान भी नहीं सके। बहुत आस्ते चश्मा उठाया, लगाकर देखा, तव बोले—'पाण्डे, तू कैसे आया।' मैंने झट से कहा कि—राजा ने भेजा है। बोलने के समय बाबा का साँस फूलने लगता था, फिर भी उन्होंने कहा—'पाण्डेय, आज हमारे लिये बहुत खराब दिन है, शरीर भी बहुत जीर्ण हो गया है। शारीरिक शक्ति भी बिलकुल नहीं है, अब इसको छोड़ रहे हैं"। हम ने राजा की तरफ से और अपनी ओर से अनुनय विनय की और कहा कि--आपने तो कहा था कि बिना कुदरत से पूछे और बिना उसकी आज्ञा लिये हम शरीर नहीं त्यागेंगे" अब आपको आज्ञा मिल गई क्या, इस पर बाबा चौकन्ने हो गये, फिर मैंने कहा--जब तक कुदरत की आज्ञा नहीं मिलेगी आप कैसे जा सकते हैं? इसी लिये राजा ने हमको भेजा होगा' नहीं तो अभी हमारे आने का कोई कार्यक्रम ही नहीं था और हम वहाँ (काठमाण्डू में) विश्वविद्यालय में बहुत व्यस्त थे। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि राजा महेन्द्र पर बाबा का बहुत अनुग्रह है, इसलिये वे बहुत कठिनता से मान गये। इसके बाद बाबा ने कहा---अच्छा तो ठीक है, अब हम नहीं जायँगें। थोड़ी देर के बाद उन्होंने कहा कि--सब लोगों को नर्मदा स्नान करा लाओ। मैंने कहा--आप बचन दें कि--अब नहीं जायंगें, तभी हम यहाँ से जायंगे अन्यथा नहीं। तब उन्होंने बचन के द्वारा आश्वासन दिया कि--हम शरीर नहीं छोड़ेंगे। माघ-पूर्णिमा है इसलिये सबको ले जाओ। विश्वविद्यालय में बहुत जरूरी काम था इस लिये मुझे जल्दी ही वापस जाना था। अतः आज्ञानुसार तत्काल भेड़ाघाट गये और स्नान कर शीघ्र वापस आ गये। मीरा ने भोजन कराया, फिर बाबा के दर्शन के लिये ऊपर गये। अब उनका चेहरा दूसरा ही मालूम होने लगा और धीरे-धीरे वे कुछ बोलने भी लगे। फिर शाम को ७ बजे हवन करने के लिये नीचे उतरे, थोड़ा-सा हवन किया। दूसरे दिन सबेरे जब उठे तो कहने लगे कि आज रात भर रामायण सुनता रहा। मीरा कह रही थीं कि मेरा बहुत सुन्दर दिन था, इसलिये सोयी नहीं, तुम लोगों को वचन भी दे दिया था इसलिये चौकन्ना भी रही। तब मैंने उनसे कहा अब मुझे आज ही नेपाल जाना है, हम वहाँ से आप को दवाई भेजेंगे। 'सुवर्णमालती' 'वसंत' खाइयेगा तो बुखार भी ठीक हो जायेगा और कमजोरी भी ठीक हो

जायगी। बाबा ने हम को आश्वासन दिया। जाने के समय मैं यह कह गया कि—आप के स्वास्थ्य के बारे में हमको प्रत्येक सप्ताह में पत्र मिलना चाहिए। हम जब काठमाण्डू पहुँचे महाराजाधिराज को भी संवाद सुना दिया और दवाई भी भेज दी। परन्तु बाबा के यहाँ से पत्र ही नहीं आया, मुझे बहुत घबड़ाहट हुई। पत्र लिखने पर भी उत्तर नहीं मिलता था। उस समय जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति मेरे मित्र डा० धीरेन्द्र वर्मा थे–उनको पत्र लिखा, वहाँ से भी कोई उत्तर नहीं आया। तब डाक्टर राजबली पाण्डेय जो उस समय उक्त विश्वविद्यालय में इतिहास विभागाध्यक्ष थे, उनको तार दिया। वे तत्काल बाबा के पास चले गये और उनको देखा तथा तार से ही खबर दी कि स्वास्थ्य ठीक है। कुछ दिनों बाद उनका और बाबा का पत्र मिला। उन्होंने लिखा कि—बाबा ने आशीर्वाद दिया है कि–तेरी अच्छी तरक्की होगी, और मुझे बाबा ने लिखा कि--राजबली को चार महीने में उपकुलपति बना देंगे। फिर हम तीन महीने बाद जबलपुर गये, मेरे साथ डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा भी बाबा के दर्शन के लिए गये। उस समय उपकुलपति की नियुक्ति की चर्चा चल रही थी।

डा० धीरेन्द्र जी ने बताया कि उक्त पद के लिए तीन नाम हैं। उनमें डा० राजबली जी का चाँस जरा कम ही है।' बाबा ने फौरन कह दिया कि 'मैंने उसे उपकुलपति होने का वचन दे दिया है, और उपकुलपति वही होगा, अन्ततोगत्वा वही उपकुलपति हो गये। मैं जब कभी पूज्य बाबा के दर्शनों के लिये जबलपुर जाता था, वे भी आते थे और बाबा के पास अपनी कृतकृत्यता प्रकट करते थे। साथ ही गुरुपूर्णिमा के अवसर पर भी बाबा का दर्शन करते थे।

क्या आपने दिव्य तेज को निकलते देखा है !

अद्‌भुत यह घटना उस समय की है जब सन् १९७० के जुलाई महीने में हम लोग सब पाण्डेय जी के साथ चौरस्ते में थे। वहाँ रोज ही कोई न कोई अद्‌भुत बात होती ही रहती थी। रथयात्रा (आषाढ़ शुक्ल द्वितीया) के एक दिन पहले यह विचार हुआ कि २४ घण्टे का अखण्ड नाम संकीर्तन हो। पहले बाबा से आज्ञा ली गयी, बाबा ने १२ घण्टे मात्र नाम-संकीर्तन की आज्ञा दी। कीर्तन का आयोजन किया गया। दूसरे दिन नर्मदा जी के सामने दिन भर खूब आनन्द पूर्वक कीर्तन हुआ। कीर्तन समाप्ति के समय हम लोगों ने बाबा से मन्दिर

में चलने की प्रार्थना की। पूज्य बाबा उस समय धूनी पर बैठे हुए थे। बाबा ने कहा-तुम लोग चलो वहाँ आरती करो हम यहीं बैठे हैं। श्री पाण्डेय जी ने आरती शुरु की, घड़ी-घण्टा बजने लगा। इतने में बाबा भी धूना से उठकर मन्दिर के ठीक सामने चबूतरे के नीचे खड़े थे। हम लोगों ने घूरकर देखा कि बाबा खड़े हुए थे। कुछ ही देर के बाद जब आरती समाप्त हुई, एक बड़ा ही विचित्र दृश्य वहाँ दृष्टिगोचर हुआ। लोगों ने प्रत्यक्ष देखा कि बाबा के पार्थिव शरीर से एक अद्भुत दीप्तिमय प्रकाशपुंज नर्मदा जी की मूर्ति की ओर जा रहा है। उसको देखने से मालूम ऐसा होता था कि मूर्ति अब बोलने ही जा रही है। यह दिव्य शक्ति है पूज्य बाबा की। सद्गुरु की जय हो।

पूज्य बाबा की सूक्ष्म देह से यात्रा

बात बहुत पुरानी नहीं है, विगत वर्ष अगहन के महीने में श्री गुरुदेव के आश्रम पर सात दिन के (सप्ताह) अखण्ड कीर्तन का आयोजनथा। इस अवसर पर भाग लेने के लिये नेपाल, वाराणसी के बाबा के शिष्य गण आये हुए थे। उसी समय महाराज की लक्ष्मीबाई नाम की एक शिष्या वाराणसी जाने के लिये उद्यत हुई। श्री गुरुदेव से आज्ञा लेकर लक्ष्मीवाई चली और वह सुबह जब इलाहाबाद पहुँची। इधर प्रातः काल गुरुदेव ध्यान से वाहर आये, मैंने प्रणाम किया। श्री गुरुदेव ने कहा-बेटा ! मैं अभी वाराणसी से इलाहाबाद तक कार से आया हूँ, कार को इलाहाबाद में ही छोड़ दिया हूँ। यहाँ से शाम को 'लक्ष्मी' गयी है वह इस कार से वाराणसी चली जायगी। बेटा, इस गाड़ी को वाराणसी से इलाहाबाद तक लक्ष्मी के लिये लाया था।"

तीसरे दिन श्री लक्ष्मी बाई का पत्र आया कि--गुरुदेव ! मैं इलाहाबाद स्टेशन पर गाड़ी से उत्तरने के पश्चात् बाहर आते ही कार पर बैठकर वाराणसी आ गयी।

श्री लक्ष्मीबाई के इस पत्र को पढ़कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कब गुरुदेव वाराणसी गये और कब वाराणसी से इलाहाबाद आये !! और फिर कब यहाँ पहुँच गये। इससे यह सिद्ध है कि गुरुदेव की यह यात्रा सूक्ष्म देह से हुई है।

गंगाजी के द्वारा बाबा का सत्कार

नर्मदा तट की यात्रा के पूर्व एक समय बाबा गङ्गा जी के किनारे ध्यानमग्न बैठे हुए थे। बाबा को भगवती गङ्गा मैया बहुत प्यार करती

थी। बाबा ने ध्यान में देखा कि—गङ्गा जी हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना कर रही है कि—आप हमारे किनारे किनारे भ्रमण कीजिये, बाबा ने इस पर प्रश्न किया कि—माई, हम तुम्हारे किनारे भ्रमण करेंगे तो तुम हमको क्या दोगी ? गङ्गा जी बोली कि—मैं आपको लकड़ी ला दूंगी। बाबा ने कहा—ठीक है। तब से वह बाबा को रोज उस पार से स्वयम् लकड़ी लाकर देने लगी, वह लकड़ी लाकर इस पार रख देती थी। बाबा के पास जब कोई आता तो उससे जहाँ लकड़ी रक्खी होती वहाँ से लाने के लिये कहते थे। परन्तु पहली बार में वह कभी भी लकड़ी नहीं ला पाता था, दूसरी बार जब बाबा उसको दृष्टिसम्पन्न करके भेजते और कहते कि—जा, वहाँ लकड़ी रखी है, नीचे देखकर ला, दूसरी बार में उसको लकड़ी मिलती और वह लाता था।

बाबा का ब्रह्ममाया से साक्षात्कार

[जगन्नाथ यात्रा के प्रकरण का यह उपयोगी अंश यहाँ दिया जा रहा है]

श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में स्थित सभी देवताओं के दर्शन के बाद बाबा वहीं एक कोने में बैठ गये। तब बाबा के मन में एकाएक यह विचार उठा कि उनको दो केले, दो पेड़े और दही की मटकी वहीं मिलनी चाहिये। थोड़ी ही देर में बाबा देखते हैं कि एक दम्पती खूब सफेद वस्त्र पहन कर एक पण्डे के साथ आ रहे हैं, बाबा के पास आकर बाबा को दो केला, दो पेड़ा और दही का मटका उसने अर्पण किया। बाबा अपने मन में विचार करने लगे कि, भाई इनको पता कैसे चल गया—जरूर ये ब्रह्ममाया हैं, जाँच करना चाहिये। ऐसा सोचकर खाना रखवा कर बाबा ने उन लोगों से कहा कि—आप लोगों का काम हो गया, आप लोग जाइये, परन्तु उन लोगों ने बाबा से निवेदन किया कि—आप जब तक खायँगें नहीं तब तक हम लोग जायँगे नहीं। यह जानकर बाबा ने थोड़ा पेड़ा, केला और दही को खा लिया। इसके बाद वे दम्पती अन्तर्धान हो गये। बाबा वहीं बैठे बैठे अब यह विचार करने लगे कि-- भाई रात का समय है, बहुत ठंढी पड़ रही है, बिना लकड़ी के रात कैसे कटेगी ? ऐसा विचार करके बाबा वहाँ बैठे थे इतने में एक ब्राह्मण आया और कहने लगा, चलिये आपको अच्छी जगह ले चलता हूँ। बाबा ने उससे प्रश्न किया, क्यों भाई तुम हमको लकड़ी दोगे कि नहीं। ब्राह्मण ने कहा—महाराज, आपको मैं एक लड़की दूंगा, तब बाबा ने कहा—चलो ठीक है,। वह ब्राह्मण बाबा को वहाँ से धर्मशाले

में ले आया। धर्मशाला में बहुत गन्दगी थी, जिसके कारण बहुत बदबू थी। बाबा ने कहा—अरे हम ऐसी गन्दी जगह पर नहीं बैठेंगे, बड़ी बदबू आती है। तब ब्राह्मण ने कहा—चलिये आपको समुद्र के किनारे ले चलता हूँ, वह बाबा को समुद्र के किनारे ले गया। वहाँ मन्दिरों के ध्वंसावशेष कुछ खण्डहर थे। इस स्थान को बाबा ने खूब पसंद किया। वह ब्राह्मण बाबा को दो लकड़ियाँ एक केला और एक बड़ा आम देकर अन्तर्धान हो गया। बाबा ने फिर मन में विचार किया कि—भाई, इतनी ठंडी है कम से कम दो मन लकड़ी चाहिये, इन दो लकड़ियों से क्या होगा? यह विचार करते ही बाबा ने देखा कि एक लड़का आ रहा है। उसने बाबा से पूछा क्या चाहिये। बाबा ने ऊँगली का इशारा करते हुए एक मन लकड़ी लाने को कहा। इसके बाद बाबा खूब भजन-कीर्तन करने लगे। फिर बाबा ने मृगछाले को आधा बिछाया और आधा पीठ पर डालकर कलेजे के आगे धूना की आग कर दाहिनी करवट सो गये और ध्यान में लग गये। ध्यान में बाबा ने अपने आपको मन्दिर के अन्दर पाया, और बाबा ने देखा कि वे अन्दर खूब फल खा रहे हैं, इसके बाद ही बाबा का ध्यान टूट गया।

ब्रह्म-माया का स्वरूप

एक समय पूज्य बाबा भ्रमण करते हुए पलामू के पास एक गाँव के बाहर ठहरे हुए थे। उस गाँव में उन दिनों एक भयंकर रोग का आक्रमण था। लोग उस रोग से बहुत पीड़ित थे। वहाँ कुछ लोगों ने बाबा के दिव्य रूप को देखा और श्रद्धा से नतमस्तक होकर आधीनतापूर्वक बाबा के शरण में आकर उनसे अपने दुःखों का वर्णन किया। बाबाने उन लोगों से कहा कि—धूनी के लिये लकड़ी लाओ, तब कुछ कहेंगे। वे लोग तुरन्त जाकर लकड़ियाँ ले आये और धूनी लगा दी। बाबा ने ध्यान किया। थोड़ी देर में बाबा क्या देखते हैं कि दो घोड़ों पर एक स्त्री और एक पुरुष कुछ दूर पर खड़े हैं। औरत ने मर्द से कहा चलो महाराज के पास, इस पर मर्द बोला कि तुम जाओ, हम यहीं हैं। पश्चात् वह स्त्री बाबा के पास आयी और बोली कि—हम जाते हैं। बाबा ने देखा कि स्त्री बहुत सुन्दर है, सांसारिक दृष्टि से तो ये लोग हैं, ये जो कह रहे हैं, इनकी जाँच करनी चाहिये, इनका अन्तर (भेद) क्या है। बाबा ने अन्तर्दृष्टि से देखा और पुरुष से पूछा कि—आप के

साथ स्त्री है ? आप लोग कैसे रहते हो ? इस पर वह पुरुष बोला कि ठीक रहते हैं। बाबा ने उनके अन्तर मन को जाँचा तो वहाँ भी वैसा ही पाया। तब बाबा ने पूछा-आप एक स्त्री के साथ रहते हो, आप का मन चलायमान नहीं होता ? तब वह पुरुष बोला कि नहीं। फिर बाबा ने पूछा कि अगर कभी मन चलायमान हो जाय तो क्या हो, इससे किसकी हानि होगी ? तब वह पुरुष बोला कि—अगर पुरुष का मन चलायमान होता है और स्त्री का नहीं तो हानि पुरुष की ही होती है और वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है, और अगर स्त्री का मन चलायमान होता है तो वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होती है। वह पुरुष ब्रह्म था और स्त्री माया थी। बाबा ने अनुभव किया कि--ब्रह्मरूप जो था वह खुद बाबा का ही रूप था और वह उनकी माया थी। माया को साथ रखकर भी बाबा माया से निर्लिप्त थे।

:*:

पूज्य बाबा का पावन आश्रम

(तपः स्थली)

पूज्य बाबा पहले पहल (सर्वप्रथम) जब जबलपुर चौरस्ते पर पहुँचे और वहाँ आश्रम की नींव डाली गयी, उस समय यह स्थान अत्यन्त उजाड़ एवम् दुर्गम था। वहाँ केवल एक दो दूकानें थीं। बाबा का वहाँ पहुँचना तथा उस जगह को पसन्द करना क्या था उसकी तरक्की होनी थी।

यह महान् पावन तपःस्थल (साधना-भूमि) जबलपुर रोड, शाहपुरा रोड, भेड़ाघाट व स्टेशन भेड़ाघाट के चौरस्ते पर अवस्थित है। बाबा के आश्रम का निर्माण कार्य जब होने लगा उस समय की एक घटना इस प्रकार की हैं—

बेणू बाबा जो नेपाल के रहनेवाले एक सन्त थे। वे बाबा के प्रिय शिष्यों में एक थे। वे ही कहते थे कि, वहाँ पर जब कुआँ बन रहा था, एक ठेकेदार आया, बाबा की बड़ी सेवा की, उसके बाल-बच्चे कोई नहीं थे। बाबा के निकट जाकर वह गिड़गिड़ाया। बाबा ने कहा "पुन्य करो लड़का हो जायगा।" इधर उधर की बातें उसने कहीं और आश्रम के निर्माण कार्य में बहुत कुछ करने का वादा किया। पीछे लड़का होने के बाद वह अपने वचन को भूल गया। कुछ समय बाद लड़का अचानक बीमार हुआ और मरणतुल्य हो गया। चिकित्सा करने के बाद जब डाक्टरों ने जबाब दे दिया, वह दौड़ा हुआ लड़के को साथ लेकर बाबा के पास आया और फिर बहुत गिड़गिड़ाया। तब बाबा ने कहा कि देखो ! सन्त को दिये हुए वचन का परिपालन होना चाहिए। मैंने तो तुमसे कुछ नहीं कहा था, तुम्हीं ने बचन दिया था। खैर ! मनुष्य को अपना कर्त्तव्य करना चाहिये। मसान से यदि तुम खोपड़ी ले आओ तो इसकी दवाई हो सकती है। रात का समय था, उसकी हिम्मत नहीं हुई। बेणू बाबा के पास जाकर रोने लगा। वे भी एक भक्त होने के कारण द्रवित हो गये। मसान गये, संयोग से किसी एक मुर्दे को जलती हुई आग में छोड़कर लोग चले गये थे, वही खोपड़ी मिल गई, उसे लेकर आये, उसकी दवाई हुई और वह अच्छा हो गया।

इसी तरह का एक दूसरा वाकया भी है। नेपाल का एक धनवान् आदमी जिसने बाबा से बहुत लाभ उठाया था, कीर्तन-भवन-निर्माण के लिये १५०००) पंद्रह हजार रुपया समर्पण करने के लिये वचन दिया। जब उससे उस बाबत कहा गया तो वह सब को तिरस्कृत करके ऐसा दुर्बचन बोला कि, हमें बहुत असह्य लगा परन्तु चुप रह गये। मन में मैंने सोचा कि इसका परिणाम तो यह भोगेगा ही। पश्चात् उसको ऐसी बीमारी लग गई कि पानी भी हजम नहीं होने लगा। इस बीमारी में उसके लाखों रुपये बिगड़ गये।

आध्यात्मिक पञ्चवटी भेड़ाघाट

मध्यप्रदेश के आकर्षक आध्यात्मिक स्थानों में भेड़ाघाट का अपना अद्वितीय स्थान है। सन्त ब्रह्मर्षि रामस्नेही जी महाराज का अधिकांश जीवन परम पवित्र नर्मदा के पावन तट पर ही बीता है। नर्मदा के प्रति उनकी बड़ी आस्था एवम् अगाध श्रद्धा है। चौरस्ते पर भी उन्होंने नर्मदा की मूर्ति स्थापित करायी है, जो उनके नर्मदा प्रेम का जीवन्त उदाहरण है। मूर्ति बहुत ही सुन्दर है और साक्षात् नर्मदा ही है। भक्तों को यहाँ बहुत ही अनुभव हुए हैं। चौरस्ता आनेवाले भक्तों को कभी कभी वे कहते हैं कि–नर्मदा यहीं है। इस कुएँ का जल नर्मदा का ही है। हमने उसे यहीं बुला लिया है। नर्मदा के किनारे कई जगहों में उन्होंने अपने आश्रम भी बनवाये हैं। जहाँ जहाँ वे तपस्या करने बैठते हैं वहाँ वहाँ एक आश्रम खड़ा हो जाता है। ग्वारीघाट, बाणगंगा, डिठोरी और भेड़ाघाट में प्रशस्त आश्रम हैं। इनमें भेड़ाघाट का आश्रम बहुत बड़ा है जिसका नाम उन्होंने नेपाली-आश्रम रखा है जो उनकी और उनके प्रमुख शिष्य गोपाल बाबा की स्मृति के लिये बनाया गया है। इसमें ज्यादातर नेपाल के ही भक्तों का विशेष प्रयास है।

भेड़ाघाट भृगु तीर्थ है और उसको पञ्चवटी भी कहते हैं। भृगु ऋषि ने यहीं पर तपस्या की थी। मध्यप्रदेश में एक रिवाज है कि चारों धामों की यात्रा सम्पन्न करने के बाद प्रत्येक यात्री वहाँ स्नान करते हैं। वहाँ पास ही के पहाड़ में एक महादेव जी हैं, जिनकी स्थापना सन्तों की तपस्या से हुई है, वहाँ जल बराबर लोग चढ़ाते हैं। शिवरात्रि में तो बहुत ही भीड़ रहती है, फिर संगमरमर के पहाड़ों के कारण और धुआँधार के होने से यह एक दर्शनीय स्थल भी है, जहाँ विश्व के विभिन्न स्थलों से इसका अवलोकन करने आते हैं।

पत्थर खोदकर पानी निकालना क्या बिना दैवी-शक्ति के संभव है ?

[ले०—श्री गोकुलप्रसाद जी भेड़ाघाट]

श्री गुरुदेव जब आमा हिनौता से भेड़ाघाट चौराहा पर आये तब वहाँ पर एक घास की झोपड़ी डालकर रहने लगे। मैं भी महीना दो महीना के अन्तर से दर्शनों को जाने लगा। मेरे ऊपर बहुत बड़ी-बड़ी उलझनें आयीं, यहाँ तक कि जान जाने की भी स्थिति उत्पन्न हो गयी किन्तु श्री गुरुदेव की कृपा से सारे संकटों से प्रसन्नतापूर्वक बचता ही गया। श्री गुरु महाराज की कृपा से उनके प्रति मेरी अपार श्रद्धा हो गयी।

श्री गुरुदेव ने भेड़ाघाट में एक आश्रम बनवाना प्रारम्भ किया। वहाँ से श्री नर्मदा जी दूर थीं, जल की कमी थी। श्री गुरुदेव ने आश्रम के बगल से एक पत्थर के नाले में जल ढूँढ़ा और मुझे बुलाकर कहा कि इस जगह कुआँ खुदवाओ, मैंने कहा कि गुरुदेव ! आज तक भेड़ाघाट में कोई कुआँ नहीं है, हजारों वर्षों से सुनने में आया है कि पत्थर के मारे यहाँ कोई कुँआ नहीं बन पाता है, फिर इस नाले के बीच में पत्थर की चट्टानों पर कुँआ खोदना और पानी निकालना तो बहुत मुश्किल है, इसलिये बस्ती के लोग या आने जाने वाले शिष्य गण मुझसे कहेंगे कि श्री गुरुदेव का पचीसों हजार रुपये मुफ्त लगवा दिये। इस डर से मैंने गुरुदेव को कुँआ खुदवाने से मना किया एवम् कहा कि वहाँ पानी नहीं निकलेगा। श्री गुरुदेव ने मुझे कुछ डाँटा और कहा कि ऐसा नहीं कहना चाहिये। यहाँ कल से काम लगाओ, मैंने कहा गुरुदेव की जैसी आज्ञा ! कल से काम शुरू कर दूँगा।

दूसरे ही दिन स्नान-पूजन से जब मुझे फुरसत मिली तो करीब ११ बजे एक नारियल, उदबत्ती और चिरौंजीदाना लेकर दो मजदूरों के साथ श्री गुरुदेव के बताये स्थान पर गया और गुरु महाराज़ का ध्यान कर, उदबत्ती जलाकर नारियल फोड़ा, चिरौंजीदाना चारों तरफ डाला और उस नाले की पत्थर की चट्टानों पर कुँआ खुदवाना प्रारम्भ किया। थोड़ी ही देर में वहाँ श्री गुरु महाराज आ गये और

एक कागज की पुड़िया खोलकर मजदूरों को कुछ हरा हरा दिया, थोड़ा-सा मुझको भी दिया और कहा कि बेटा ! इसको खा लो, मैंने इस पत्थर को मोम कर दिया है, कहने का मतलब यह है कि अब यह न पत्थर रहा और न मिट्टी, इस प्रकार कोमल हो गया है कि कुँआ खुद जायगा। पानी निकल आयगा। मुझे प्यास लगी थी, पानी ढूँढ़ने पर इसी जगह पानी मिला। बाबा ने मुझे आज्ञा दी कि अपने सच्चे ध्यान से काम कराते जाओ। मैंने गुरु महाराज का ध्यान करके कुँआ खुदवाया। कुँआ बहुत सरलता से खुदता गया, जो लोग कुंआ को देखते थे, बड़े बड़े इंजीनियरों तथा अन्य महान् लोगों ने यह मत व्यक्त किया कि कुआँ नहीं बन पायेगा। बीच नाले में पत्थरों पर नाला आने से ही कुआँ पुर (भर) जावेगा। कुआँ खुद ही न पायगा। यदि कुआँ खुद गया तो बाबा के एक बड़े अद्‌भुत चमत्कार को नमस्कार होगा। नर्मदा जी वहाँ से करीब अढ़ाई तीन सौ फुट नीचे बहतीं (वितरतीं) हैं। संभव है उसी गहरान पर मुश्किल से पानी होगा, मगर किसी बात का मैंने ध्यान नहीं दिया। बाबा की आज्ञा का पालन करता रहा। कुँवे में सिर्फ १७ फुट पर ही पानी पत्थर की चट्टानों पर झलकने लगा। सैंकड़ों आदमियों की भीड़ कुंआ देखने के लिये लगने लगी। पर मैं कुंए को और भी खुदवाता गया। बाबा ने कहा बेटा ! इसको पक्का बधा दो। फिर भी मैं कुंए को ५० फुट तक खुदाता गया किन्तु पानी जितना १७ फुट पर था उतना ही ५० फुट पर भी रहा। मैंने अपनी गलती की क्षमा माँग कर कुंआ को पक्का बंधवा दिया। अब कुंए में ४० फुट पानी रहता है। गाँव वालों एवं आने जाने वालों को जो कि दूर-दूर से आते हैं बरसात में जब नर्मदा जी का जल मैला हो जाता है तो इसी कुंए का जल काम आता है। वे इसी कुंए के जल से शान्ति प्राप्त करते हैं। यह अद्‌भुत चमत्कार श्री गुरुदेव का है।

प्रारम्भ से ही पूज्य बाबा का विचार था कि इस जगह के लोगों के पालन-पोषण के लिये एक बाजार लगवाना चाहिये तथा एक फैक्ट्री या कोई कल कारखाना किसी पार्टी से बनवाना चाहिये। जिससे यहाँ के लोग खुश हालत से खा कमा सकें। उस समय मेरे को या बाबा के शिष्यों को अथवा भेड़ाघाट के लोगों को यह बात एक आश्चर्य सी मालूम पड़ती थी। आज श्री गुरुदेव के कथनानुसार

सब वाक्य सिद्ध हो गये। अब भेड़ाघाट चौराहा एक सुन्दर स्थान के रूप में परिवर्तित हो गया है। वहाँ अब बाजार भरता है, फैक्ट्री बन गयी है, हजारों आदमी खाते-कमाते हैं।

श्री बाबा के दर्शनों के निमित्त आने वाले दर्शनार्थियों से आश्रम की शोभा बढ़ती रहती है। श्री १०११ बाबा रामस्नेही जी इस आश्रम की शोभा को बढ़ाते हुए जनहितकारी कल्याणकारी अभिलाषाएं पूर्ण करते हैं।

आज से पच्चीस वर्ष पूर्व जो भेड़ाघाट चौराहा जंगल के समान था और शाम होते ही जहाँ जंगल के जानवर शेर चीते तथा चोर-डाकू भी रास्ते में लूटमारी कर लेते थे, उस भेड़ाघाट नर्मदा तट पर जब गुरुदेव फल-वृक्ष के नीचे घास की झोपड़ी में रमे थे तब कहते थे कि भेड़ाघाट चौराहा पर एक सुन्दर स्थान बनवा कर वहां नर्मदा जी का मन्दिर एवम् एक सुन्दर बगीचा जिसमें हर प्रकार के तथा हर स्थान के सुन्दर स्वादिष्ट फलवाले वृक्ष नजर आयँगे। यह कहावत जो प्रसिद्ध है कि 'पत्थर पर दूभ जमाना' उसे श्री बाबा ने चरितार्थ करके दिखाया। यह सब आध्यात्मिक बल का चमत्कार है।

त्रिकालज्ञ पूज्य बाबा को भी मतदान करना पड़ा

श्री पूज्य गुरुदेव ने भेड़ाघाट पर एक वर्ष आठ महीनों की अल्प अवधि में ही एक बहुत सुन्दर स्थान जो चारमंजिला बीसों कमरों का है, तैयार कराया। तथा वहीं पर कुएँ में हेण्ड पम्प लगवा कर अत्यन्त सुन्दर बगीचा लगवाया जो सर्वदा हरे भरे फूलों से खिला रहता है। इन सब सुख-सुविधाओं को छोड़कर आप भेड़ाघाट-चौराहा आश्रम पर आ गये। मैंने श्री गुरुदेव से डरते डरते आज्ञा माँगी कि—आप कुछ दिन इस सुन्दर स्थान पर विश्राम करिये। गुरुदेव ने आज्ञा दी, बेटा यह सब तुम लोगों के लिये है, मेरे लिये तो सुन्दर ईश्वर का नाम ही है। इन आश्रमों से मुझे कहीं कभी न प्रेम रहा है और न रहेगा। इन आश्रमों को तो शिष्यों एवम् भक्तजनों में मेरी याद बनी रहे इसी लिये ईश्वर की दया से बनवाता रहता हूँ। मैंने गुरुदेव की आज्ञा ध्यान में रख ली।

श्री गुरुदेव भेड़ाघाट-चौराहा पर रम गये। गुरु-पूर्णिमा के पावन अवसर पर हम लोग प्रतिवर्ष गुरु-महोत्सव मनाया करते हैं। प्रायः प्रत्येक शिष्य गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुदेव के दर्शन की इच्छा रखता है।

इस वर्ष गुरुपूर्णिमा के दिन पूजा के समय इंगलेण्डरिटर्न इञ्जीनियर, डाक्टर भी आये थे। इस उत्सव में प्रायः काठमाण्डू (नेपाल) बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा, जयपुर, अजमेर, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, नागपुर, उज्जैन, सागर, दमोह और जबलपुर आदि के राजा, सेठ, साहूकार, आफिसर लोग आये थे। आश्रम भीड़ भाड़ से भरा हुआ था। उसी समय में करीब ८ बजे श्री गुरुदेव के आश्रम पर दर्शनार्थ आया। श्री गुरुदेव के चरणों के निकट धूनी के पास बैठ गया। श्री गुरुदेव ने आज्ञा दी कि आये हुए भक्तगण तथा शिष्य जो फल फूल, मेवा आदि चढ़ाते हैं, उनको रखते जाओ। गुरुदेव के आज्ञानुसार बगल में ही मैंने रखना प्रारंभ किया। करीब बारह बजे मेरा गला व मुँह सूख गया। मेरी इच्छा हुई कि पान खा लूँ, किन्तु वहाँ शिष्य लोग पूजन करने के लिये भरे हुए थे, धूनी के दरवाजे से निकलने की कोई गुंजायश नहीं पायी। पास में मेरा एक मित्र खड़ा था, मैंने मुँह दिखाते हुए कहा कि पान खिलाओ किन्तु वह भी भीड़ के मारे पान नहीं ला सका। अन्ततोगत्वा मैंने अपने एक नौकर से भी कहा जिससे श्री गुरुदेव सुन न सकें मगर गुरुदेव ने एक कागज की पुड़िया मेरे सामने अचानक फेंक दी, मैंने पुड़िया खोली तो बहुत स्वादिष्ट पान मिला। मेरी आत्मा ने श्री महाराज के चमत्कार को प्रणाम किया।

मैं गुरुदेव के दर्शनों को बराबर जाता रहता हूँ। गत वर्ष ग्राम पंचायतों के चुनाव हो रहे थे। ग्रामों में ग्राम पंचायतें बड़ा महत्त्व रखती हैं। गाँव के भले लोग पंचायत में वार्ड मेम्बर बनने की बहुत इच्छा रखते हैं। श्री गुरुदेव के चौराहा पर श्री सत्यनारायण पंडित चौराहा वार्ड से चुनाव में खड़े हुए। गुरुदेव के आश्रम के समस्त शिष्यों ने मतदान किया। श्री गुरुदेव ने कहा कि बस ठीक है मैं तो संसार से दूर ही रहता हूँ।

यह एलेक्सन (चुनाव) ता० १८-१०-७० को था। मैं भी चुनाव जीतने की इच्छा से, भेड़ाघाट वार्ड के मेम्बर बनने की इच्छा से चुनाव लड़ रहा था। ता० २०-१०-७० को मतदान हुआ। मुझे अपने लोगों की सद्भावना का इतना भरोसा था कि खिलाफ पार्टी से बहुत वोटों से मैं जीतूंगा ऐसी आशा थी। खिलाफ पार्टी अपने जन-धन के बल से मुझे हराने में लग गये। मगर अपने आप पर मुझे इतना भरोसा था कि खिलाफ पार्टी नहीं हरा सकेगी। संयोगवश १६-१०-७० को श्री गुरुदेव

के आश्रम में कई पंचायतों के पंच इकट्ठे थे, उस समय वोटों की चर्चा चल पड़ी। मैंने कहा—यद्यपि भेड़ाघाट के वोटर लिस्ट में शिष्यों के सहित पूज्य बाबा का भी नाम है, किन्तु मैं इस कार्य के लिये श्री गुरुदेव को कष्ट नहीं देना चाहता चाहे हमारी जीत हो या नहीं हो। निश्चिति तिथि पर भेड़ाघाट वार्ड में जब मतदान होने लगा तो लगभग डेढ़ बजे जब गुरुदेव ईश्वर के ध्यान में लीन रहते हैं और उस समय कभी किसी से मिलते नहीं, न दर्शन ही देते हैं, अचानक जीप से मतदान करने पहुँच गये। श्री गुरुदेव को देखकर मुझे मन में बड़ी घबड़ाहट हुई कि ये इस समय कैसे आ गये। श्री गुरुदेव ने कहा—ध्यान में तुम्हारी हार नजर आयी है इसलिये मैं भी अपना वोट डालना चाहता हूँ, क्योंकि मेरा हो मत निर्णायक मत होगा। बस, यह कर श्री गुरुदेव ने पोलिंग दफ्तर में जाकर अपना मतपत्र डाल दिया। वहीं पर श्री महंत ओङ्कारपुरी जो कि दूसरे वार्ड से उम्मीदवार थे उन्होंने भी दौड़कर श्री गुरुदेव को प्रणाम किया। श्री गुरुदेन कहा—तुम भी बच गये, जीतोगे यह कहकर जीप से चौराहा वापस आ गये।

शाम को चार बजे वोटों की गणना हुई, तो मैं सिर्फ एक वोट से ही जीता, इससे बहुत घबड़ाकर गुरुदेव के पास पहुँचा। वहाँ गुरुदेव के चरणों पर नतमस्तक हुआ तथा धूनी में भी शिर लगाया। श्री गुरुदेव ने कहा कि—महेश कह गये कि—भइया जीत-गया। मैंने कहा--गुरुदेव ! महेश तो अभी घर ही पर है। श्री गुरुदेव ने कहा कि महेश नाम का आदमी न घर छोड़ आये हो ! मुझसे तो महेश भगवान् ने कहा है। यह सुनकर मैं मन में बड़ा लज्जित हुआ और श्री गुरुदेव के चमत्कार को नमस्कार किया।

इधर श्री ओङ्कारपुरी भी बराबरी के वोट पाये। आफिसरों ने जब निर्णय के लिये ईश्वर नाम की पाती रख दी तो इस समस्या में भी बाबा के आशीर्वाद से श्री ओंकारपुरी ही विजयी घोषित किये गये।

सद्गुरु की कृपा से सब कुछ संभव है

(सेवक—श्री उमावल्लभ मिश्र, श्रीरामकुटी, भेड़ाघाट)

श्री ११०८ ब्रह्मर्षि बाबा रामस्नेही जी महाराज के दर्शन का प्रथम लाभ सन् १९६३ में फाल्गुन मास में मुझे हुआ था। मैं जयपुर में २-३ वर्षों से श्रीरामकुटी में जाया करता था। वहाँ पर भक्त जनों से श्री

सत् गुरु जी की महिमा सुना करता था। बाद में उनके दर्शनों की लालसा हुई। फलतः हम आठ व्यक्ति जयपुर से सन् १९६३ में आये थे। चौरस्ता भेड़ाघाट पर जब पहुँचे तो जो कमरा हम लोगों को ठहरने के लिये दिया गया था उसमें प्रवेश करने पर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कमरे के दीवारों पर राम राम लिखा हुआ है, वस्तुतः लिखा हुआ नहीं था। हम आठों व्यक्ति ६-७ दिन वहाँ ठहरे थे, फिर चलने की आज्ञा माँगी तो, श्री सत् गुरु जी ने फर्माया कि—जाओ, कुछ अड़चन आवेगी, मगर कोई बात नहीं है।" जब हम लोग कोटा स्टेशन पर पहुँचे तो सवाई माधोपुर जानेवाली गाड़ी थी, मगर गाड़ी में कहीं भी जगह नहीं मिली और ६-७ घण्टे कोटा स्टेशन पर ही पड़ा रहना पड़ा था।

दुबारा जब श्री सत् गुरु जी के दर्शनों की इच्छा हुई तो सन् १९६४ के चैत्र के महीने में दर्शन के लिये आया था। उसी अवसर पर मैंने श्री सत्गुरु जी से मन्त्र लेकर उन्हें गुरु बना लिया था। फिर जब जयपुर वापस गया तो ट्रेन से गिर गया और रेल के डिब्बे के नीचे पहिये से मेरे शरीर का कोई अंग अवश्य कट जाता किन्तु बाल बाल बच गया। यह घटना सवाई माधोपुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर उतरते समय हुई थी। गाड़ी में भीड़ बहुत थी, मैं खिड़की से कूदा था सो प्लेटफार्म और गाड़ी के बीच में गिर गया और सकुशल बच गया क्योंकि गाड़ी स्टेशन पर रुकने के बाद फिर २॥ डिब्बा और आगे बढ़ी थी' यह सूचना मैंने श्री सत् गुरु जी को जयपुर पहुँचकर भेज दी थी।

तीसरी बार फिर मैं गुरुपूर्णिमा पर चौरास्ता भेड़ाघाट आया तो श्री सत् गुरु जी ने फर्माया कि तू गौ (गाय) दे गया था, इसीसे तेरे प्राण बच गये, वरना तेरी मृत्यु थी। इस प्रकार मेरी प्राण-रक्षा श्री सत् गुरु जी महाराज ने की थी। फिर श्री सत् गुरु जी महाराज सन् १९६५ में जयपुर पधारे थे, वहाँ पर श्री राम कुटी में एक दिन श्री सत् गुरु जी हवन कर रहे थे, आरती करने के बाद मुझ में अजीब तरह की ताकत का अनुभव हुआ और मैंने उछल कूदकर करीब आधा घण्टा नृत्य किया। उसके बाद मुझे ध्यान आया और वहाँ पर उपस्थित करीब २०-२५ भक्तों के समक्ष कहा कि—अगर मैंने तन, मन, धन से श्री सत् गुरु जी महाराज को गुरु बनाया है तो अग्नि-परीक्षा देता हूँ। मैं तत्काल धूने की प्रज्वलित अग्नि पर लेट गया, और करीब २-३ मिनट

लेटा रहा, फिर उठने पर देखता हूँ कि मेरे कपड़े व शरीर का कोई भी अंग नहीं जला। यह प्रथम परीक्षा थी गुरु भक्ति की, दूसरी परीक्षा उसी समय कुएँ पर की है। कुएँ की गिरारी पर दैव योग से रस्सी दोहरी लटक रही थी, मैं भागकर कुएँ की रस्सी पकड़कर जल्दी से करीब २ गज कुएँ में उतर गया, इसके बाद भक्तजनों ने जो वहाँ उपस्थित थे दौड़कर मुझे कुएँ से निकाल लिया था।

इसके बाद प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा के पर्व पर श्री सत् गुरु जी के दर्शनों का सौभाग्य मिलता आ रहा है। सन् १९६७ में मेरा दोहिता (दौहित्र=लड़की का लड़का) प्रदीपकुमार उम्र करीब १५ साल की थी। घर में छोटी बहिन और भाई में लड़ाई हो गई तो वह नाराज होकर और यह कहकर कि मैं दोस्त से मिलने जा रहा हूँ, चला गया। सुवह करीव १० बजे का गया शाम तक नहीं आया तो मां को फिकर हुई, उसने मेरे घर पर जयपुर एक आदमी भेजा। वह आकर बोला कि—प्रदीप घर से सुवह का गया हुआ है, अभी तक नहीं आया है। मैं दफ्तर में बावू जी को भी सूचना दे आया हूँ। मै भी सूचना पाते ही अपने लड़के, दामाद तथा एक जानकार व्यक्ति के साथ प्रदीप को दूर-दूर तक ढूंढ़ा, नहीं मिला। इधर लड़की ने (प्रदीप की माँ ने) रो रोकर खाना पीना छोड़कर फिर सिर्फ रोना ही शुरू कर दिया। काफी ढूँढ़ने पर जब नहीं मिला तो मुझे ध्यान आया कि श्री सत् गुरु जी को याद करूं तो काम बन जायगा। जो उपाय श्री सत् गुरु जी ने बतलाया था कि कभी भी कष्ट पड़े तो इस प्रकार से तुम कहीं भी मुझे याद करना, मुझे उसकी सूचना मिल जायगी। यह स्मरण आते ही मैंने वैसा ही किया। प्रदीप स्टेशन पर छिपा बैठा रहा, और रात को आठ बजे दिल्ली जानेवाली गाड़ी से वगैर टिकट बैठकर चल दिया, घर से पैसा-टका कुछ भी नहीं ले गया था। दूसरे दिन जन्माष्टमी थी, सो वह दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म के ब्रेन्च पर बैठ गया उसी ब्रेन्च पर एक बुढ्ढे बाबा बैठे थे, बाबा से प्रदीप बात कर रहा था कि क्या करूँ, टिकट भी नहीं हैं, कोई पकड़ लेगा, वहाँ पर ही खड़ा एक गुण्डा यह सब बातें सुन रहा था उसने इसको डराया कि अभी पुलिस को सूचना देकर पकड़वाता हूँ, नहीं तो आओ मेरे साथ चलो। मेरी बहिन का घर दिल्ली में ही है, वहीं खायँगे और रहेंगे। यह उसकी बातों में आ गया और गुण्डे के साथ चलने लगा। बाबा भी उठकर

उन दोनों के साथ साथ चले और बोले कि तुम मेरे साथ चलोगे या इसके साथ । प्रदीप की बुद्धि वदल दी, वह बोला मैं आप के साथ चलूँगा, यह कहकर बाबा के साथ वापस लौट आया । फिर एक जगह बैठकर बाबा ने कहा कि ले कुछ खा ले मेरे पास दो टिक्कड़ हैं, उसमें से एक इसको खिलाकर कहा—ले २) दो रुपये ले और जयपुर वापस चला जा । प्रदीप घर चल दिया और जयपुर तीसरे दिन सुबह करीब ११ बजे घर पहुँच गया । उसकी कहानी सुनकर मैंने विचारा कि देखो, सत् गुरु जी को मैंने बहुत कष्ट दिया । यह बात मुझे यों सत्य मालूम हुई कि वाबा ने २)रुपये दिये, पिछली बार मैं सत् गुरु जी के दर्शनों को जब आया था तो मेरी लड़की ने २) रु० भेंट करने के लिए दिये थे कि गुरु जी को मेरी तरफ से भेंट कर देना, तदनुसार मैंने भेंट कर दिये थे । समय आने पर श्री सत् गुरु महाराज ने रूप बदल कर और कष्ट भी उठाकर जो २) दो रुपये तेरी मां के थे सो समय पर तू ले ले" यह कहकर दे दिया था ।

इधर १ सितम्बर सन् १९६८ ई० से मैं श्री सत् गुरु जी महाराज की सेवा में ही भेड़ाघाट पर श्री रामकुटी में रहता हूँ । एक समय श्री सत् गुरुजी धूने पर सायंकालीन हवन कर चुके थे और उस समय केवल मैं ही धूने पर श्री महाराज के पास मौजूद था । श्री महाराज ने आज्ञा दी कि—मेरे पास आ, मैं पास गया तो बोले और नजदीक आ, तब श्री महाराज ने फर्माया कि देख चन्द्रमा में क्या दीखता है ? मैंने देखकर कहा कि श्री महाराज जी ! आपको ही देख रहा हूँ । श्री महाराज बोले फिर देख, फिर देखा तो दाईं ओर दो व्यक्ति दिखे, मगर एक का चेहरा साफ नहीं दिखा तो श्री महाराज ने फर्माया कि एक मुँह इधर है और दूसरे का उधर है, ये दोनों जय और विजय हैं ।

इसके बाद मैं २॥ माह के लिये जयपुर चला गया । उस समय वहाँ कुएँ का काम चालू था और आधा बन चुका था, मैं जब वापस भेड़ाघाट आया तो आश्चर्यजनक दृश्य देखा । वह यह कि कुआँ पूरा तो बन गया है मगर जहाँ पर खुदवाया था वहाँ से करीब आठ फुट कुआँ आगे आ गया था । मैंने सोचा कि कहीं मुझे भ्रम तो नहीं हो रहा है । भक्तजनों से पूछने पर मालूम हुआ कि श्री सत् गुरुजी की आज्ञा से रात्रि में ही कुआँ आगे आ गया है ।

एक दिन एक व्यक्ति बालाघाट से मूर्ति लेने भेड़ाघाट आया था । उसने श्री महाराज से प्रार्थना की कि मुझे रात को आश्रम में विश्राम

करने की आज्ञा प्रदान करने की कृपा करें, मैं यहाँ दो-तीन दिन रहना चाहता हूँ। उसे आज्ञा मिल गयी, वह रहने लगा। इसी बीच एक दिन वह करीब ११ बजे दिन को मेरे कमरे में आया और बोला कि—आपने एक बात नहीं देखी ? मैंने कहा कौन सी बात ? तब उसने कहा कि—थोड़ी ही देर पहले श्री महाराज के पास एक व्यक्ति आया था, और बोला कि ईश्वर देखना चाहता हूँ। श्री महाराज ने आज्ञा दी कि—नर्मदा जी में चला जा, घुटने भर जल में खड़ा रहना, फिर तेरे को एक आवाज आयेगी, उसके बाद में तेरे बगल से एक आदमी निकलेगा, तब आ करके बतलाना कि क्या हुआ। उस व्यक्ति ने वापस आकर कहा कि मैं घुटने तक जल में खड़ा हुआ था कि आवाज आयी, मैं डर गया, बगल से एक आदमी निकल गया, तब श्री महाराज ने फर्माया कि अभी तेरी भावना भक्ति ठीक नहीं है जा फिर आना।

गर्मी के दिनों में श्री सत् गुरु जी महाराज तीसरी मंजिल पर बिराज रहे थे। मैं सुबह श्री सत् गुरु जी को चाय देने के लिये गया था, वहाँ पर बड़ी खुशबू आ रही थी जैसे हवा के साथ में बगीचों के अन्दर फूलों की आती है। मुझे आश्चर्य हुआ कि तीसरी मञ्जिल पर खुशबू कैसी ? श्री सत् गुरु जी से जब पूछा तो उन्होंने फर्माया कि–ईश्वर इच्छा है। कहा भी है—

'बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा'।

एक समय एक भक्त ने श्री महाराज को गाँजे की चिलम लाकर दिया, उसमें नारियल की जटा जलाकर रक्खी हुई थी। जब श्री महाराज ने उसको खैंचा तो फर्माया कि इसमें आग नहीं है। भक्त ने कहा कि श्री महाराज जी और जलाकर लाता हूँ। श्री महाराज ने फर्माया कि रहने दे, फिर उन्होंने चिलम को मुँह में लगाकर 'अलख निरञ्जन' कहा और चिलम से लौ निकलने लगी। यह है उनकी साधना का फल।

: ❀ :

पूज्य बाबा का वाद्य-प्रेम

श्री बाबा जब काठमाण्डू में थे उस समय उनको माउथ आर्गन (मुँह से बजनेवाला एक प्रकार का वाद्य) बजाने का बहुत शौक था। वे उसको अपनी वंशी कहते थे, और जिस किसी के सामने भी वे बजा ही लेते थे तथा कभी कभी तो उसके साथ भजन भी करते थे। एक बच्चे का किसी खिलौने के प्रति जितना प्रेम होता है बाबा का भी इस बाजे से उतना ही प्रेम था। वे जब नागार्जुन पहाड़ पर थे अर्जुन शमशेर ने बम्बई से अच्छा साजरा बड़ा-सा माउथ आर्गन भेज दिया, वे उसको देखते ही उछल पड़े जोरों से बजाने लगे और जो कोई भी वहाँ दर्शन करने आता उससे कहते कि, देखो—कितनी सुन्दर वस्तु अर्जुन शमशेर ने भेजी है। विषयी आदमी को एक हीरे का हार या अमूल्य वस्तु मिलने से जो खुशी होती है बाबा को उससे कहीं ज्यादा खुशी इस बाजे के मिलने पर हुई। बाबा को धनुष-बाण चलाने का भी बहुत शौक था और अभी तक उनकी धूनी के पास बाण आदि रखे रहते हैं। पक्षियों के घोंसले को भी बाबा बहुत महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं कि—जो इनको रक्खेगा, जिस जगह रक्खेगा, वह जगह अन्न से सदा परिपूर्ण होगा और वह भण्डार कभी खाली नहीं रहेगा।

— :❀: —

संस्मरण

महात्मा रामसनेही बाबा

--डा० धीरेन्द्र वर्मा,

(अवकाशप्राप्त उपकुलपति, जबलपुर विश्वविद्यालय)

अपने कालिज के दिनों के मित्र श्री रुद्रराज पाण्डे की कृपा से मुझे महात्मा रामसनेही बाबा के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और फिर धीरे धीरे उनकी विशेष कृपा का पात्र बन गया। उन दिनों मैं जबलपुर विश्वविद्यालय में उपकुलपति पद पर कार्य कर रहा था। मेरे मित्र पाण्डे जी नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। वे हर चार छः महीने में बाबा के दर्शनों को काठमाण्डू से जबलपुर जाते थे। मैं भी पाण्डे जी के साथ भेड़ाघाट बाबा के आश्रम "रामकुटी" उनके दर्शनों के लिये चला जाता था। मेरी स्वर्गीया पत्नी को बाबा के प्रति अत्यन्त श्रद्धा हो गई थी। बाद को हम दोनों अकेले भी अक्सर दर्शनार्थ रामकुटी पहुँच जाते थे।

बाबा के भक्त अनेक व्यक्ति देश के भिन्न भिन्न भागों से बाबा के दर्शनार्थ आते थे। इन सब का यह विश्वास और अनुभव था कि बाबा में-ऐसी दिव्यशक्ति है कि उनके मुख से जो भी निकल जाय वह अवश्य होकर रहता है। इसी विश्वास के कारण स्त्री-पुरुष उनके प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं और उनकी ओर इस प्रकार आकर्षित होते हैं।

बाबा का स्वभाव मैंने निश्छल, सच्चे साधु का पाया। उनका रहन सहन और खान-पान आडम्बरहीन है। वे केवल कौपीन और मृगचर्म धारण करते हैं। उन्होंने किसी भी व्यक्ति को गुरु के समान नहीं माना। केवल पंचतत्वों को वे गुरुवत् मानते हैं। आध्यात्मिक विषयों की चर्चा करते समय आत्मानुभूति की झलक निरन्तर दिखलाई पड़ती है। उनकी सहज बातचीत तथा बालकों की-सी मुस्कान में असाधारण आकर्षण है।

यद्यपि अपने मित्र पाण्डे जी के समान मुझे बाबा के अत्यन्त निकट संपर्क में आने का अवसर नहीं मिल सका किन्तु जितना भी उनसे मिल सका उसके कारण उनके प्रति मेरे मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना है। ऐसे ही साधु महात्मा अपने देश की आध्यात्मिक परम्परा के स्तम्भ हैं।

ब्रह्मनिष्ठ बाबा रामसनेही जी

(दर्शन और अनुभूति)

डा० राजबली पाण्डेय,

(भूतपूर्व उपकुलपति, जबलपुर विश्वविद्यालय)

भारतवर्ष इस बात में बड़ा भाग्यशाली रहा है कि इसमें निरन्तर साधु, सन्त और महात्माओं का प्रादुर्भाव होता रहा है। इन दिव्य-पुरुषों ने जनता को इस सत्य की ओर बराबर जाग्रत रखा है कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड में एक ही चेतन सत्ता का आवास है और सारा दृश्य जगत् उसी का चिद्-विलास है। इसलिये मनुष्य को इस सत्य का ध्यान रखते हुए सम्पूर्ण जगत् में अनासक्त होकर सब तत्त्वों और जीवों के साथ मैत्री-भाव से रहना चाहिये। पूज्य बाबा जी उन सन्तों में से हैं जो ऊपर कहे हुए सत्य के साक्षात्कार प्रतीक हैं। और इस परम सत्य का अपने रोम रोम और विश्वास से उद्घोष करते रहते हैं। उनके जीवन में बाल-सुलभ सरलता है। कृत्रिमता तो कहीं ढूँढ़े भी नहीं मिलती। बाबा जी ब्रह्मनिष्ठ होते हुए भी जीवों की मंगल कामना में सदा तत्पर रहते हैं। उनका उपदेश सहज भाव से निरन्तर चलता रहता है। उनके उपदेश का आधार उनका प्रकाण्ड ज्ञान और शास्त्र अध्ययन नहीं उनकी सहज और साक्षात् अनुभूति है, जो कुछ वे बोलते हैं, वह पढ़ी और सुनी नहीं साक्षात् देखी हुई। उनके अटपटे और रहस्य भरे शब्दों में परम सत्य भरा रहता है।

पूज्य बाबा जी तपस्वी और योगी दोनों हैं। विन्ध्य-अटवी और नर्मदा तट प्राचीन काल से तपस्या के लिये उपयुक्त क्षेत्र माने गये हैं। हमारे उत्तर भारत के मैदान, राजस्थान के मरु आदि अनेक क्षेत्रों का परिभ्रमण करते हुए और जनता को अपने उपदेशों से लाभान्वित करते हुए बाबा जी ने नर्मदा तट को ही अपनी तपस्या और साधना का केन्द्र बनाया है। बाबा जी की तपस्या का प्रतीक अग्नि की उपासना है, जो निरन्तर तप, आध्यात्मिक चिन्तन और अध्यवसाय का स्मरण कराती रहती है। इसमें भी बाबा जी वैदिक कर्मकाण्ड के बंधन को नहीं मानते। अग्नि तत्त्व से प्रेम ही उनके यज्ञ का माध्यम है और वे सहज भाव से तत्वों का ही उसमें हवन करते हैं।

पूज्य बाबा जी का महामंत्र 'राम' नाम है। वास्तव में यही उनका भी मंत्र है। अपने देश में बहुत प्राचीन काल से सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार के उपासकों ने रामनाम की महिमा गाई है और उसको अपना बीजमंत्र मानकर परम तत्त्व की प्राप्ति की है। 'बाबा जी' निरन्तर रामनाम की सुरति में लीन रहते हैं और दूसरों को भी इसी का उपदेश करते हैं। परन्तु बाबा जी के लिये केवल ऐतिहासिक, देशकाल में सीमित 'राम' ही चिरन्तन और परम सत्य हैं। जिसने राम नाम मणि को पहिचाना वह धन्य है और वह तर गया। यह भीतर और बाहर समान चराचर जगत् में प्रकाश करनेवाला है। गोस्वामी तुलसीदास जी के निम्नांकित दोहे को बाबा जी अनेक प्रकार से प्रकाशित करते रहते हैं:

राम नाम मणि दीप, धर जीह देहरि द्वार।
तुलसी भीतरि बाहरू, जो चाहत उजियार॥

बहुत से लोग बाबा जी के इस अटपटे वचन को सुनकर भौचक्के हो जाते हैं, जब वे कहते हैं, अपनी धूनी के पास बैठे बैठे सारे विश्व और लोक लोकान्तर को देख लेते हैं। ऐसे लोगों को रामनाम की महिमा मालूम नहीं। प्रकाश का केन्द्र तो रामनाम ही है। जिसके हृदय में वह बस गया, वह हृदय स्वयं प्रकाश का केन्द्र बन जाता है। इससे बाबा जी का कथन सहज और सत्य है। दूसरों को केवल अचम्भे में डालने और प्रभावित करने के लिये नहीं।

बाबा ज़ी संत, विरस और संसार से मुक्त रहते हुए भी अपने आशीर्वाद और रामनाम की उपासना और साधना से संसार के दुखी लोगों की पीड़ा और दुःख दर्द को दूर करते रहते हैं। यह उनका लोक संग्रही रूप है। उनके यहाँ संतों और दर्शकों भीड़ लगी रहती है। जिस भावना से जो वहाँ जाता उसी भावना से स्वीकार करते और आशीर्वाद देते हैं। जैसे वे कहते हैं, उनका पार्थिव शरीर तो तपस्या में तप्त होकर जल चुका है, जो भौतिक शरीर उनके पास है, वह सूक्ष्म और भगवद् भक्ति का कल्याण करते रहेंगे।

ऐसा सुना है कि पूज्य बाबा जी से साक्षात् सम्बन्ध रखनेवाले कुछ भक्तों ने उनका चरित्र लिखने का अनुष्ठान किया है। वास्तव में ज्ञानी और सर्व-साधारण जनता के लिये बहुत ही कल्याणकारी और रोचक हो गया होगा। मुझे भी बाबा जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला है। मैं उनके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

नर्मदा के सन्त

श्री बाबा रामसनेही जी महाराज

--डा० ईश्वरीप्रसाद--

श्री सरदार पण्डितप्रवर रुद्रराज पाण्डे, भूतपूर्व उपकुलपति, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल की कृपा से मुझे महात्मा रामसनेही जी के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम बार उनके दर्शन मुझे अपने भ्राता पं० ज्योतिप्रसाद एडवोकेट, आगरा के मकान पर हुए थे। वहाँ स्वामीजी ने उनके पुत्र राकेशचन्द्र के आग्रह से एक महीने से अधिक समय तक निवास किया था। सभी लोगों ने उनके चरण-स्पर्श कर आनन्द लाभ किया। कुछ समय के बाद जबलपुर के पास भेड़ाघाट में उनके आश्रम में निवास करने का मुझे अवसर मिला। यह सब श्री रुद्रराज पाण्डे की प्रेरणा से हुआ। रुद्रराज जी बाबा जी के परम भक्त हैं। उनकी बाबा के चरणों में असीम भक्ति है। उनका सब घर उनका सेवक है, और नेपाल में अनेक धनी प्रतिष्ठित पुरुष बाबा में श्रद्धा रखते हैं और उनके दर्शन के लिए लालायित रहते हैं। बाबा का चमत्कार उनके आश्रम में दिखाई देता है। ८-१० दिन ठहरने का अवसर मिला। आश्रम का वातावरण आध्यात्मिक है। स्वच्छ एवं पवित्र वायु में महात्मा जी के दर्शन बरावर होते रहे और उनके श्रीमुख से सुन्दर उपदेश भी सुने।

बाबा जी का जीवन प्राचीन ऋषियों का सा है। दोनों समय प्रातः तथा सायंकाल को अग्निहोत्र होता है, हवन होता है। वृक्षों के नीचे धूनी लगती है। वहीं लोग कम्बलों पर बैठ जाते हैं। बाबा अग्निहोत्र करते हुए सबकी बात सुनते हैं और उपदेश भी करते जाते हैं। आश्रम में मन पवित्र होता है। आत्मा प्रसन्न होती है। इर्ष्या-द्वेष, काम, मोह आदि बुरी भावनाएँ कुछ समय के लिए तो आवश्य ही दूर हो जाती हैं। बहुत-सी हवन की सामग्री बाबा को भेंट होती है। उस सबको वे अग्नि-देवता को भेंट कर देते हैं। आश्रम में कई लोग ऐसे मिले जिनका चित्त अव्यवस्थित था औंर जो चिन्ता से व्याकुल निराशा के समुद्र में गोते लगा रहे थे, और शान्ति के इच्छुक थे। बाबा जी ने उनके दर्द

को पहचाना, और शीघ्र उसका उपाय कर दिया। उन लोगों को शान्ति मिली और उन्होंने कहा, अब हमारी व्यथा दूर हो रही है। बाबा जी कभी-कभी हंसी में कहते हैं कि हम तो आखिरी अदालत में जो (ईश्वर) निर्णय देता है, उसके चपरासी हैं। उससे प्रार्थना कर देते हैं, हमारी अपनी शक्ति कुछ नहीं है।

स्वामी जी अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं। वे स्वयं कहते हैं कि हम कोई विद्वान् नहीं हैं। न हमने पुस्तकों का अध्ययन किया है। हमने तपस्या की है, ध्यान किया है। अनुभव हमने किया है। जो उनकी शरण में आता है उससे वे कहते हैं कि विश्वास किसी बात का मत करो। अनुभव करो। और फिर सत्य की परीक्षा करो, यहां कोई दूकानदारी नहीं है। न किसी प्रकार का मोल तोल है, यहां सच्चा व्यवहार है। स्वयं अनुभव करके देखो। भक्त जन महात्मा जी को चमत्कारी पुरुष मानते हैं और उनकी धारणा है कि महाराज जी की दया से सब कष्ट दूर हो सकते हैं और शुभ इच्छा पूर्ण हो सकती है। लोग अपना अनुभव सुनाते हैं और अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं।

आश्रम में जाकर निवास करने पर हमें अपनी प्राचीन ऋषि-परम्परा का और भारतीय संस्कृति का बोध होता है। प्राचीन काल में हमारे देश में अनेक सन्त, महात्मा आचार्य हुए जिनकी छाप हमारी सभ्यता पर अभी तक लगी हुई है। सन्त परम्परा में बड़े बड़े तपस्वी, योगी महात्मा हुए जिन्होंने समाज का उद्धार किया और मुक्ति मार्ग का दर्शन कराया। सर्वश्री शंकराचार्य, रामानुजाचार्य बल्लभाचार्य, रामानन्द, नानक, चैतन्य, तुलसीदास, सूरदास मीराबाई, तुकाराम, नामदेव प्रभृति अनेक सन्त हुए, जिन्होंने अपने उपदेश से जन साधारण को प्रभावित किया। उपदेश का प्रभाव अभी तक मौजूद है। उनके अनुयायी भगवान् की भक्ति से ओत-प्रोत थे। उनके यहाँ कोई जाति-पाँत का बन्धन नहीं था।

"हरि को भजे सो हरि का होई। जाति पांति जाने नहिं कोई।"

कबीर, नानक ने सरल शब्दों में जनता को धर्म तथा ज्ञान की प्रवृत्ति दी, और ईश्वर-भजन के महत्व का वर्णन किया।

हमारे देश में अनेक प्रकार के साधु-महात्मा हैं, जिनका राजसी ठाट-बाट देखकर आश्चर्य होता है। उनके पास हाथी घोड़े हैं। सुवर्ण

१३

के अम्बारियों में बैठते हैं। रेशमी वस्त्र धारण करते हैं। पाश्चात्य सभ्यता की चमक-दमक भी उनके आश्रम में दिखाई देती है। प्राइवेट सेक्रेटरियों द्वारा उनसे बात-चीत होती है। दर्शन मिलना भी कठिन होता है, दर्शन मिलने पर भी कुछ हाथ नहीं आता। चकाचौंध में अन्धे हो जाने का डर रहता है। जितना पहले दिखाई देता है वह भी आँख से ओझल हो जाता है। दृष्टि सम्यक् होने के बजाय मलिन हो जाती है। सहस्त्रों स्त्री-पुरुष भ्रम में पड़कर अज्ञानता के गर्त में डुबकी लगाते हैं।

बाबा रामसनेही जी के आश्रम में यह दृश्य नहीं दिखाई देता। बाबा कहते हैं कि उन्होंने बड़े बड़े निर्जन, भयंकर जंगलों में भ्रमण किया है। शेर, चीते, भालू तथा अन्य जंगली जानवर उनके रास्ते से हट जाते थे। घोर वनों में उन्होंने तप किया है और विश्वकल्याण के लिए ईश्वर की आराधना की है। आपने नर्मदा से अमरकंटक तक चारों ओर भ्रमण किया है। जिस कुटी में महाराज नर्मदा के तटपर निवास करते थे, उसके निशान अब भी मौजूद हैं। महाराज के अनुभवों का हाल पढ़कर आश्चर्य होता है। साधारण मनुष्य के लिए विश्वास करना कठिन होता है।

आश्रम में हरिभजन, कीर्तन यज्ञ आदि की व्यवस्था हो जाती है। जो आश्रम में ठहरना चाहते हैं उन्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती। महात्मा जी का ऐसा प्रताप है कि दुःखी मनुष्य के दुःख दूर हो जाते हैं। और उन्हें शान्ति मिलती है। यहाँ वह धक्का-मुक्की नहीं है जो मुख्य मन्त्रियों के प्रासादों में चपरासियों के करकमलों से सहनी पड़ती है। यहाँ राजा, रंक, सेठ—साहूकार सब समान रूप से आते हैं। धूनी के चारों ओर कम्बल पर बैठकर महाराज का उपदेश सुनते हैं।

स्वयं महात्मा जी को न बड़े अधिकारियों से मिलने की इच्छा रहती है, न उनसे कुछ प्राप्त करने की। उनका द्वार सबके लिए खुला हुआ है। सब को आशीर्वाद मिलता है। महाराज कहते हैं—यहाँ सब जगह से हारकर आदमी आता है। वे सान्त्वना देते हैं, दया करते हैं। और दुःखित जनों का कष्ट निवारण करते हैं। उनके यहाँ गरीब-अमीर का भेद नहीं है। सबको स्नेह की दृष्टि से देखते हैं। कहते हैं दुनिया का भला होना चाहिए। ऐसा कर्म करो जिससे जनता का भला हो। राज-नीति की बातें सुनते हैं। परन्तु चुनाव के पहलवानों को अधिक नहीं

लपकाते। रुपया कमाने की इच्छा पूरी करने के प्रयास में विवेक का आदेश करते हैं। दूषित पैसे को ग्रहण भी नहीं करते और न उसे काम में लाते हैं। जिस समय चुनाव हो रहा था, लेखक ने पूछा, महाराज इन्दिरा गांधी का अभियान कैसा रहेगा। उन्होंने उत्तर दिया सर्वत्र उसी की विजय होगी। फिर पूछा कि लोग अराजकता से भयभीत हो रहे हैं। उन्होंने उत्तर दिया, थोड़े दिन का वखेड़ा है। सब ठीक हो जायगा। कोई अव्यवस्था नहीं होगी। परन्तु उन्होंने कहा इन्दिरा गान्धी का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब समान दृष्टि होगी। समान दृष्टि के बिना समाजवाद कहाँ। केवल मृग-तृष्णा मात्र ही रह जायगा।

इस भ्रष्टाचार के युग में सन्त परम्परा को पुनर्जीवित करने से समाज का कल्याण हो सकता है। यदि हमारे संत जिनका अब भी जनता पर प्रभाव है उन्हें सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा करें तो मानव निर्माण हो सकता है। बड़ी-बड़ी मशीनें बन रही हैं। बांध बन रहे हैं। परन्तु इनसे कोई लाभ नहीं जब तक मनुष्य का निर्माण न होगा। आयोगों द्वारा यह कार्य नहीं हो सकता।

बाबा रामसनेही जैसे महात्मा इस अन्धकार में सूर्य की किरण के समान हैं। जो सम्पर्क में आता है वह विशुद्ध होकर समाज की सार्थक इकाई बन जाता है। ऐसे महात्माओं को हम नमस्कार करते हैं। और उनसे शिक्षा ग्रहण कर बुरी भावनाओं से बच सकते हैं। बेईमानी, दुराचार, असत्य, परिग्रह, स्तेय, उन्नति के साधन हो रहे हैं, प्राचीन धर्म की मर्यादाओं को छोड़ना श्रेयस्कर समझा जाता है। इसलिए ऐसे आश्रम में जाकर महात्माओं का उपदेश सुनना चाहिए।

— :※: —

श्री सद्‌गुरुदेव बाबा रामसनेही जी

ले० डा० भगवान् सिंह, पी० ए० उपकुलपति, जबलपुर विश्वविद्यालय

सन् १९६७-६८ की बात है त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमाण्डू (नेपाल) के उपकुलपति पं० रुद्रराज जी पाण्डेय पूज्य बाबा जी के दर्शनार्थ आकर 'रामकुटी' में ठहरे हुए थे। उन दिनों जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी कार देकर मुझ से कहा कि 'रामकुटी' में 'ठहरे हुए पं० रुद्रराज पाण्डेय जी को मेरे यहाँ ले आओ'। यह वहाँ जाने का पहला अवसर था। वहाँ पहुँचा तो देखा कि 'बाबा जी' ध्यानमग्न रूप में धूना पर बैठे हुए हैं, उनको तथा धूना को प्रणाम करके वहीं पास ही में ठहरे हुए पं० रुद्रराज जी पाण्डेय को डा० धीरेन्द्र वर्मा जी के यहाँ लेकर आया। यह प्रथम अवसर था जब कि बाबा जी के दर्शन हुए तथा इस प्रथम दर्शन से ही उनके पुनः दर्शन के लिये तीव्र आकांक्षा बनी रहती थी। क्योंकि इस घोर कलियुग में सन्त ही साक्षात् परमेश्वर के रूप में विराजमान हैं।

इसके बाद डा० राजबली पाण्डेय जी जब जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति हुए तो उनके साथ भी बाबा जी के दर्शन करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। फिर तो उनके दर्शनार्थ बराबर जाता ही रहता हूँ। वहाँ उनके श्रीमुख से अनेक बार सदुपदेश सुनने का अवसर मिला है। उनके उपदेश में विशेषतः ईश्वरीय तत्त्वों का सन्निवेश रहता है, वह सत्यस्वरूप एवं ब्रह्मवाणी होती है। संक्षेप में उनका उपदेश इस प्रकार है—

"ईश्वर में सही ख्याल होना चाहिये और उसके नाम में अपने को लय कर देना चाहिये तथा लय के बाद में अपने को फना (समर्पण) कर देना चाहिये। पाँच तत्त्वों को (पृथिवी जल आदि) गुरु बनाना चाहिए। नामस्मरण बराबर करते रहना चाहिये तथा जड़-चेतन सभी जीवों को ईश्वर का स्वरूप समझकर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये।"

श्री बाबा जी को सदा समाधि की अवस्था में रहते हुए सदैव ऊपर का ख्याल रहता है। वे निर्लिप्त एवं आत्मसन्तोषी हैं। वे कभी लोभ नहीं

करते और न उन्हें किसी चीज की इच्छा ही रहती है। वे इच्छारहित हैं। त्याग-वृत्ति उनका विशेष गुण है। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से जो कुछ देखा तथा अनुभूत किया वही बात उपदेश में कहते हैं। वे पाँचों तत्त्वों की अर्चना को विशेष महत्त्व देते हैं। प्रत्येक जीव की भलाई करना ही उनका लक्ष्य है। शरणागत दुःखियों की सेवा तथा उनके दुःखों, संकटों को दूर करते हैं एवं उनके हितार्थ परमात्मा से—पंच तत्त्वों से प्रार्थना करते हैं। वे योगबल से जीवों का कार्य सम्पादन करते हैं।

कठिन से कठिन कार्य को भी श्री बाबा भक्तों के कल्याणार्थ पूर्ण करते हैं। मेरा स्वयं का अनुभव है कि अनेक विपत्तियों से बाबा ने परित्राण किया है। मेरे एक पुत्र (श्री संदीप) को तो उन्होंने मंत्रबल से जीवनदान ही दिया है। कहने का आशय यह है कि सच्चे दिल से बाबा जी की शरण में अपने को समर्पित कर दे तो वे उसकी जान भी बचा लेते तथा जीवनदान भी देते हैं। विश्वास में ही, भाव में ही भगवान् हैं। 'विश्वासो फलदायकः'।

उनके (श्री पूजनीय बाबा) श्रीमुख से निकली हुई गुरुवाणी का एक संग्रह इससे पूर्व 'ब्रह्म सन्देश' नाम से एक भक्त श्री टण्डन जी ने प्रकाशित कराया है। इस ग्रन्थ में बाबा जी के साधना काल की समस्त अनुभूतियों का सजीव चित्रण किया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि मानव किस प्रकार मनुष्य से देवत्व की कोटि पर पहुँचकर परम सिद्धि को प्राप्त कर सकता है।

पूज्य श्री बाबा रामसनेही जी नर्मदा तट के रामकुटी में रहते हुए वृक्षों की ओट में अपने को छिपाये पंचतत्त्वों की आराधना में संलग्न प्राणीमात्र की सेवा में तत्पर रहते हैं। वे निर्विकार और निष्काम-व्रती हैं। सन्त तुलसीदास जी की यह उक्ति उनके प्रति यथार्थतः चरितार्थ है—

बिनु पद चले, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करे बिधि नाना।

संक्षेप में यह कहना ही उचित है कि वे एक महान् सन्त हैं। उनके प्रति श्रद्धामय यह वाक्सुमन अर्पित है।

— ❁ —

श्री पूज्य रामस्नेही बाबा

—श्री यादवप्रसाद पन्त—

यद्यपि पूज्य बाबा का प्रथम दर्शन मुझे लगभग १६ वर्ष पूर्व, काठमाण्डू स्थित रामकुटी में ही प्राप्त हुआ था किन्तु बाबा की विशेष कृपा का अनुभव जबलपुर भेड़ाघाट के आश्रम में विगत चार वर्षों के सत्संग के पश्चात् हुआ। साधारणतया आदरणीय बाबा में प्रथम वार के दर्शन में मुझे कोई विशेष आकर्षण नहीं मालूम हुआ, परन्तु जब उनके निकट सम्पर्क में आया तब उनकी अगाधता का वास्तविक ज्ञान हुआ। यह अनुभवगम्य विषय है।

पूज्य बाबा के अनेक बार के दर्शन और उपदेश से मुझको सबसे बड़ी उपलब्धि (वस्तु) मानसिक शान्ति मिली। सरकारी कार्यों में विभिन्न वाधाएं दाव-पेंच आदि से पहले मन बहुत विचलित होता था। लेकिन जब से उनकी कृपा प्राप्त होने लगी तब से अपना सारा कार्यभार एक तरह से उन्हीं को सौंप देने से नाना प्रकारकी बाधाएं होते हुए भी अपना कर्त्तव्य निभाने में और विशेष सफलता मिलने लगी।

आदरणीय बाबा के सत्संग प्राप्त होने से पूर्व छोटी-मोटी बातों में भी मेरा मन विचलित हो जाता था, पर अब उस तरह की अवस्था नहीं रह गयी है। अब मैं अपने ऊपर किसी संरक्षक के अस्तित्व का सदा-सर्वदा अनुभव करता हूँ। बड़ी-बड़ी बाधाएं आने पर भी मन पहले की तरह विचलित नहीं होता। उनका संरक्षकत्व बराबर बना रहता है।

वैसे तो इस व्यापक संसार में अनेक प्रकार के महात्मागण मिलते हैं, पर श्री १०११ रामस्नेही बाबा जैसे विलक्षण महात्मा मिलना अत्यन्त कठिन है। बाबा केवल महात्मा ही नहीं हैं अपि तु देवपुरुष भी हैं। अनेक दैवी शक्तियों का उनमें संगम है। इनके पावन उपदेशों का श्रवण, मनन और निदिध्यासन अत्यन्त कल्याणकारी है। वह मनुष्य इस नश्वर संसार के उलझनों से मुक्त करने में अवश्य सफल होगा। इस आशय के साथ बाबा के चरणों में मैं अपनी भावना व्यक्त करता हूँ।

सन्तों की वाणी ईश्वर-वाणी है

ले० श्री विन्दाप्रसाद मिश्र; भोपाल

बात आज कल की नहीं बहुत पुरानी है, उस समय गुरु-दीक्षा लिये हुए तीन वर्ष हो चुके थे, और मैं कटछौरा बिलासपुर की उच्चतर माध्यमिक शाला में प्राचार्य पद पर आसीन था।

यह स्थान जंगलों से आच्छादित है, और यहाँ की जलवायु ठीक न होने के कारण अनुकूल नहीं रहती थी। मुझे यहाँ इसी पद पर तीन वर्षों तक लगातार कार्यव्यस्त रहना पड़ा। अन्त में मेरे स्वास्थ्य ने मेरा साथ नहीं दिया और मैं बीमार पड़ गया। जब ग्रीष्म काल का अवकाश आया, मैं पूज्य बाबा के दर्शनों को जबलपुर आया, स्नेह के अथाह सागर स्वयम् ईश्वर स्वरूप परमदयालु बाबा मेरी अवस्था को देख द्रवित हो गये और उन्होंने आशिर्वाद दिया—'जा' ९ सप्ताह बाद तेरा तबादला बिलासपुर में हो जायगा' वहाँ तू कुछ दिन कार्य करेगा, इसके बाद तुझे बिलासपुर से उत्तर की ओर बाँसों के जंगल में भेज दूंगा''।

बाबा की वाणी ईश्वर वाणी है, निश्चित समय में मैं बिलासपुर भेज दिया गया तथा वहाँ ९ महीने तक कार्य करने के बाद मुझे मनेन्द्रगढ़ जो बिलासपुर से उत्तर की ओर 'बाँसों के जंगल' के नाम से प्रसिद्ध है मेरा तबादला हुआ।

दर्शन के अवसर पर पूज्य बाबा से अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर वार्तालाप चल रहा था, उसी बीच में बाबा ने कटछौरा का जो भौगोलिक वर्णन किया उसको सुनकर रोमांच हो जाता है, और स्तब्ध रह जाना पड़ता है।

महात्माओं को दिव्य ज्ञान रहता है, वे प्रत्यक्ष-परोक्ष विषयों के ज्ञाता होते हैं। अतः वे जो कुछ कहते हैं उसे ईश्वर की वाणी ही समझना चाहिये।

—: ❀ :—

श्री सद्गुरु द्वारा आत्मज्ञान का उपदेश

(आत्म-स्वरूप का दर्शन)

ले० श्री तिलक प्रधान, सिक्किम

[श्री प्रधान जी नेपाल के अवकाशप्राप्त प्रधान न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) श्री हरिप्रसाद जी के पुत्र हैं। आप दोनों के पत्राचार साहित्य से यह आत्मस्वरूप का संस्मरणात्मक अंश संकलित है जो कि भक्त जनों के लिये रुचिकर एवम् उपादेय होगा—संपादक]

जब मैं स्वामी पूर्णानन्द जी के साथ श्री रामकृष्ण परमहंस के तात्त्विक ज्ञान के विषय में बातें कर रहा था, उसी प्रसंग में मैंने उनसे कहा था कि 'इस प्रकार के महात्मा के दर्शन पाने का मैं इच्छुक हूँ'। स्वामी जी ने भी कहा कि अब आपकी ऐसी अवस्था आ गयी है कि जल्दी ही ऐसे महात्मा का आपको दर्शन होगा'। मुझे यह ज्ञात नहीं था कि इस प्रकार के भी महात्मा होते हैं।" इस बातचीत के एक महीने के अन्दर ही अपने पिता जी से मिलने मुझे काठमाण्डू जाना पड़ा। उस समय मेरे पिता जी नेपाल के प्रधान न्यायाधीश थे।

काठमाण्डू पहुँचते ही मुझे मालूम हुआ कि भारत से गोपाल बाबा पधारे हैं। उसी दिन संध्या को (अप्रैल १९५४ ई० में) सरदार रुद्रराज पाण्डे के मकान पर श्री गोपाल बाबा तथा उनके गुरु श्री १०११ रामस्नेही जी महाराज का दिव्य-दर्शन मिला। साथ ही मेरे मन में जो सन्देह था उसका उत्तर भी बिना पूछे ही सद्गुरु से मिल गया। मैं मुग्ध हो गया। जीवन भर ढूंढते रहने पर भी न मिल सकने वाली वस्तु मिलने पर जो खुशी होती है, उसी आनन्द का अनुभव मुझे हुआ। शास्त्राध्ययन के बाद बहुत-सी शंकाएं उपशंकाएं आ जाती हैं। इन्हीं शंकाओं का विचार मैं प्रातः सायं किया करता था और संध्या में सद्गुरु का दर्शन करता था। बिना पूछे ही मेरे सन्देह का समाधान हो जाता था। मेरा एक मास का काठमाण्डू-निवास इसी तरह बीता। गुरु के साथ ५-६ घण्टे का सत्संग एक क्षण की तरह बीत जाता था तथा परमशान्ति एवम् आनन्द का अनुभव होता था।

सद्गुरु जब काठमाण्डू के नागार्जुन पहाड़ी पर स्थित वन में विराजमान थे, मैं उनसे बिदा लेने के लिये वहाँ गया। उस समय मेरे मन

में एकमात्र यही प्रश्न था कि मैं विना आत्मा रूप का दर्शन कैसे मानूं।" सद्गुरु जी ने मुझसे कहा कि इस प्रश्न का समाधान मैं एक दिन समझा दूंगा। उन्होंने यह भी कहा कि मैं अदृश्य रूप से तुम्हारे साथ रहूँगा, यह कह कर विभूति देकर बिदा किया।

अक्टूबर सन् १९५४ को रात्रि में ९ बजे सो जाने के बाद अकस्मात् मेरे दिल में दर्द होने लगा। कमरे में मैं अकेला सोता था। इतनी ज्यादा तकलीफ हुई कि मैं बोलने-चालने में भी असमर्थ ही रहा। यही स्थिति घण्टों तक बनी रही। अर्धरात्रि में मुझे यह ज्ञात हुआ कि अब मैं मर रहा हूँ। मैंने भगवान् को पुकारा और तत्काल मुझे राहत मिली एवम् आनन्द मिला। परन्तु मैंने देखा कि शरीर पलंग पर ही सो रहा है। अतः मुझे ज्ञात हुआ कि मैं मर चुका हूँ। जब दूसरे कमरे में सोये हुए व्यक्ति की याद मुझे आथी तो मैं वहीं पहुँचा। बीच में सीमेंट की दीवाल थी। मैंने अपने को ही पूछा कि मैं वहाँ कंसे पहुँचा। दीवाल को देखा। उसको सिर्फ कल्पना की वस्तु समझा। एक दीवाल से दूसरी दीवाल तक जाते समय मुझे कुछ भी नहीं छूता था और न मुझे चोट लगती थी। तब मुझे याद आया कि मैं आत्मा रूप से चल रहा हूँ। जब मुझे माता-पिता का स्मरण हुआ तो मैं उनके निवासस्थान (काठमाण्डू) सत्यभवन के शयन-कक्ष में पहुँचा। मन को चिताने से कल्पना मात्र पहुँच सकती है, पर आत्मा के चिताने से जहाँ के लिये चिताया वहीं पहुँच सकता है। यह बात मुझे मालूम हुई और मुझे अन्तरिक्ष में (आकाश में) जाने का विचार हुआ, मैं चला, अकस्मात् मैंने धूनी जमाये एवं बैठे हुए सद्गुरु को देखा। मैं उनके ही तरफ गया, किन्तु कोशिश करने पर भी उतनी ऊंचाई पर नहीं पहुँच सका और दो हाथ नीचे से ही उनका दर्शन किया। उन्होंने प्रेम-पूर्वक आत्मज्ञान का उपदेश मुझे दिया जो अनुभव के बिना नहीं समझा जा सकता। मेरे अन्तिम प्रश्न का उनका यही उत्तर था।

—:❀:—

जीवन-दान प्राप्त होने का एक संस्मरण

[ले०—मुन्शी श्री कल्याणवक्स शर्मा, जयपुर]

श्री १०११ बाबा रामस्नेही जी महाराज सन् १९५० ई० में जयपुर (राजस्थान) स्थित श्री रामकुटी स्थान पर विराजते थे। उस समय मैं श्री महाराज के दर्शन करने निमित्त प्राय: रोज जाया करता था। जिस कुटिया में बाबा भजन ध्यान करते थे, उस कुटिया के पास बाहर पानी इकट्ठा होने के लिये हौदी बनी हुई थी। उस हौदी के अन्दर जल में हजारों की संख्या में चींटियाँ, कीड़े, मकोड़े मरे पड़े थे। श्री बाबा ने उनको देखा, और उन मरे हुए जीवों के ऊपर महाराज को दया आयी। श्री महाराज ने कहा देखो इस पानी के हौज में ये कीड़े मकोड़े मर गये हैं, इनको पुन: जीवन-दान देना चाहिये। यह अनहोनी बात मेरे समझ में नहीं आयी कि ये हजारों की संख्या में मरे हुए कीड़े-मकोड़े कैसे जीवित हो सकते हैं। श्री महाराज ने मुझे आज्ञा दी कि चलनी से इन सब कीड़ों मकोड़ों को जल के बाहर इकट्ठा करो, आज्ञानुसार मैंने वैसा ही किया और सब कीड़ों मकोड़ों को इकट्ठा करके ढेर लगा दिया।

श्री बाबा रामस्नेही जी महाराज धूने में से थोड़ी-सी विभूति लाकर उस ढेर के ऊपर डालकर 'चलो राम, चलो राम' कहने लगे। बस, फिर क्या था उन मरे हुए कीड़ों मकोड़ों के ढेर में से एक एक करके क्रमश: सब मृत जीव जीवित हो गये और पृथ्वी पर चलने लग गये। यहाँ तक कि जिन चींटियों का आधा अंग रह गया था वे भी आधे अंग सहित चल पड़े। यह सब अद्भुत लीला देखकर मैं अचम्भे में रह गया कि कहीं मैं स्वप्नलोक में स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ।

मैंने श्री महाराज की ओर जब देखा तो बाबा ने फरमाया कि ईश्वर ने हमको हुकुम (आदेश) दिया था, इस लिये इनको जीवन-दान दिया है।

श्री बाबा के चरणों में पड़कर मैंने कहा—सत् गुरु जी, आप की लीला का और आप के भेष का कोई पता नहीं चलता, आप किस रूप में विराज रहे हैं। मुझ जैसे अज्ञानी जीव का बड़ा भाग्य है कि आप के दर्शन का सत्संग-उपदेश सुनने का एवम् अवसर मुझे मिला।

इसके बाद ही श्री महाराज कुटिया में ध्यान करने चले गये। यह दृश्य मैंने स्वयम् अपनी आँखों से देखा है।

आध्यात्मिक सन्त पूज्य बापू श्री रामस्नेही जी महाराज

(जिनकी पादुका का पूजन अब भी करता हूं)

[ले०—श्री गुरुप्रसाद श्रीवास्तव, रिटायर्ड डिप्टी जेलर
इलाहाबाद संप्रति नई दिल्ली]

मुझे यह भलीभाँति स्मरण है कि सन् १९४६ ई० में डॉ० के० एल० साही के माध्यम से आगरा में पूज्य गुरुदेव श्री गोपाल बावा के प्रथम दर्शन हुए थे। उनके अपूर्व अनुग्रह से सन् १९५१ या सन् १९५२ में जयपुर में जब १०८ पण्डितों द्वारा एक भव्य यज्ञ का आयोजन हुआ था तब गुरुदेव ने आदेश दिया था कि यज्ञ हो रहा है, यदि अवसर मिले तो दर्शन कर जाओ, मैं पत्र पाते ही जयपुर पहुँचा। पूज्य गुरुदेव पण्डाल के बाहर ही जैसे प्रतीक्षा कर रहे हों, कहा तू आ गया मैंने शीघ्र ही चरण-स्पर्श किया तो कहा कि—चल, बापू के दर्शन करा दें। बापू जी (बाबा रामस्नेही जी महाराज) के समक्ष पहुँचते ही ज्योंही मैंने दण्डवत् करना चाहा तो गुरुदेव ने आदेश दिया कि साष्टांग प्रणाम करो, शायद जीवन का वह प्रथम अवसर रहा होगा जब कि मैंने साष्टांग प्रणाम किसी को किया हो। उस समय ही बापू जी मुझे बिल्कुल युवावस्था में दिखे, सो मैं बड़ा आश्चर्यचकित हुआ और ज्यों ही दर्शन कर बाहर निकला, मैंने गुरुदेव से प्रश्न किया कि बापू की क्या उम्र होगी, उन्होंने उत्तर में कहा कि जब से मैंने पाया ऐसा ही देखता हूँ। मेरे गुरुदेव की मुझपर सदैव कृपा दृष्टि बनी रही। अतः जहाँ जहाँ भी मेरा ट्रान्सफर हुआ वहाँ वहाँ ही पहुँचकर दर्शन दिया। समयानुसार जब गुरुदेव ने समाधि ले ली तो उसके कुछ समय बाद बड़े महाराज आजमगढ़ अस्पताल में नेपाल से आकर ठहरे, मैंने तब आजमगढ़ जाकर दर्शन किया, और जब जब नौकरी से अवकाश मिला तथा जहाँ जहां भी बापू जी रहे दर्शन करता रहा। फलस्वरूप मुझे अनुग्रहपूर्वक बाबा ने अपनी नयी पादुका पूजा हेतु प्रदान की, वही पादुका बराबर घिसती जा रही है, और चरण कमलों के चिन्ह अब उन पर अंकित हो गये हैं, समय समय पर भाँति भाँति की खुशबू का भी अनुभव होता है। पर यह मुझे ही होता है, बच्चों से जब अपने अनुभव की पुष्टि कराता हूँ तो वे मेरी बात का अनुमोदन नहीं करते हैं।

एक बार मैंने इलाहाबाद से आते ही भगवान् को दातून करते देखा और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया, पर जब प्रणाम करके उनकी ओर देखा तो मुझे प्रतीत हुआ कि साक्षात् गोपाल बाबा दातून कर रहे हैं, तब मैं बड़े अचम्भे में पड़ा, सोचने लगा रातभर रेल के सफर की बजह से दिमाग ठीक नहीं है तो शरीर की ओर ध्यान करने लगा तो सब शरीर बड़े महाराज का नजर आया पर मुख गोपाल बाबा का।

गुरुदेव तथा सद्‌गुरु की अनुपम दया से मेरे छोटे लड़के गिरिजा नाथ (आयु लगभग १२-१३ वर्ष) तथा लड़की सुधा (आयु ७-८ वर्ष) इन दोनों को ध्यान लगने लगा जिसके द्वारा भगवान् कृष्ण, बलराम, यशोदा, गणेश जी, भुशुण्डि जी नारद जी, नन्द बाबा, मसन्द बाबा, प्रेममुनि, सेनमुनि, प्रभूत राज, भविष्य, त्रिकुट जी और समाज मुनि आदि के प्रवचन सुनने को मिला करते थे। सन् १९६३ में जब लड़की का विवाह हो गया तब ध्यान लगना बन्द हो गया। लड़के का ध्यान सन् १९६६ से बन्द हो गया। यह सब बापू और गुरुदेव गोपाल बाबा की कृपा का ही फल था।

—:※:—

पूज्यपाद बाबा का पुण्य-स्मरण

(श्री उमाशंकर पण्डया, वाराणसी)

पूज्यपाद श्री महाराज के दिव्य रूप के विषय में वैसे तो बहुत दिनों से श्री पं० रुद्रराज जी पाण्डेय द्वारा सुनता रहा, जब कभी श्री पाण्डेय जी वाराणसी आते हम सबको एक बार श्री गुरु महाराज का दर्शन कर कृतकृत्य होने का आग्रह जरूर करते, किन्तु यह सब पुण्य कार्य संयोग एवं सुयोग से ही होता है। महान् विभूति ईश्वर रूप की उनकी इच्छा विना कोई कैसे दर्शन पा सकता है, अस्तु।

सन् १९६५ ई० की बात है, उस समय मैं काठमाण्डू गया हुआ था। वहाँ मैं श्री पाण्डेय जी के निवास स्थान पर उनके दर्शनार्थ गया तो श्री पाण्डेय जी ने मुझसे कहा कि—यहाँ यह समाचार मिला है कि जबलपुर में पूज्य बाबा का स्वास्थ्य कुछ खराब है, चूँकि बहुत दिनों से उनका कोई समाचार नहीं मिला है जिससे चित्त बहुत व्याकुल हो रहा है, तुम्हारा अगर कोई परिचित जबलपुर में हो तो उनको लिखो कि—वे जाकर श्री बाबा के कुशल का समाचार ज्ञात करें।

मेरे बहनोई श्रीकृष्ण सेलट जो उन दिनों जबलपुर इंजीनियरिंग कालेज में थे, वे गोकुलपुर में रहते थे, उनको मैंने पत्र लिखा और पूज्य महाराज का पता देकर उनसे आग्रह किया कि वे तुरन्त जाकर वहाँ की सम्पूर्ण परिस्थिति जानकर श्री पाण्डेय जी को अवगत करायें। यही कड़ी है जिसने हम सबको एक साथ जोड़ा।

संयोग और सुयोग की बात है और असल में हमलोगों के उद्धार होने का समय आ गया था। पत्र पहुँचते ही श्रीकृष्ण···जी (जिनका दर्शन-पूजा में कभी विश्वास ही नहीं था) तुरन्त भेड़ाघाट पहुँचे जो कि गोकुलपुर से करीब २५ मील पड़ता है। बाबा की ही तो माया थी। उन्होंने आश्रम में मीरा बहन से कहा कि दो आदमी आ रहे हैं, चाय वगैरह तैयार रखो। बस यहीं से हम लोगों को पूज्य बाबा के श्री चरणों में पहुँचने का सौभाग्य एवं सुअवसर प्राप्त हुआ।

कुछ दिनों के बाद मैं किसी कार्यवश जबलपुर गया था। वहाँ मैं पूज्य श्री के दर्शन के लिये गया परन्तु उन दिनों पूज्य बाबा आँखों की

इलाज के सिलसिले में नागपुर गये हुए थे। जब दूसरी बार मैं दर्शनों को गया तो पूज्य श्री के दर्शन करके उनके चरणों में सब कुछ अर्पण करने की ही इच्छा हुई, मन में भाव आया। वापसी में जब मैंने बाबा से आने की आज्ञा माँगी तब बाबा ने मुझे दो पुड़ियों में अलग अलग विभूति दी। एक पुड़िया विशेष रूप से (खास तौर से) देकर बोले कि—इसको सम्हाल कर रखना, बहुत कीमती चीज है। समय की चीज है, देवता लोग चुरा लेते हैं, बहुत हिफाजत से सम्हाल करना। मैंने दोनों पुड़ियों को लेकर भीतर जेब में रख लिया। जब मैं चलने लगा तो बाबा ने पूछा—बनारस कब पहुँचोगे। तब मैंने कहा—बाबा मेल तो रात में ही बनारस पहुँच जाती है १२ बजे रात तक घर पहुँच जाऊँगा। तब बाबा बोले कि—देखना हमें मालूम नहीं—जब कि वे सब कुछ जानते थे कि मेरे ऊपर क्या गुजरने वाली है। मैं भेड़ाघाट से खाना हुआ, स्टेशन पहुँचा तो गाड़ी खड़ी थी, परन्तु बहुत ही भीड़ होने के कारण कहीं भी स्थान नहीं था, किसी प्रकार एक डब्बे में बहुत मेहनत करके पहुँचा। सिर्फ खड़े होने भर को स्थान मिला, गाड़ी चल पड़ी। भीड़ इतनी अधिक थी कि पैर भी हिला-डुला नहीं सकते थे, कटनी तक पहुँचते-पहुँचते बहुत थक गया और वहाँ विचार किया कि किसी दूसरे डिब्बे में स्थान खोजा जाय, इस प्रकार मैं कटनी में उतर पड़ा, कहीं भी स्थान नहीं मिला, आखिरकार फिर उसी डिब्बे में चढ़ने आया किन्तु उसमें भी नहीं चढ़ सका। गाड़ी छोड़ देनी पड़ी। रात की पैसेन्जर से आना पड़ा और दूसरे दिन बनारस पहुँच पाया। इस बीच जेब में रखी हुई दो पुड़ियों में से एक गायब हो चुकी थी। मकान पर पहुँच कर जब जेब में हाथ डाला तो सिर्फ एक ड़ी पुड़िया थी। यह था बाबा की लीला का शुभारम्भ। उनको देवी शक्ति से पहले ही पता था विभूति को मैं रख नहीं सकूंगा और कल बनारस पहुंचूंगा। बनारस पहुँचने पर मैंने पत्र द्वारा बाबा को समाचार दिया, उसमें विभूति खो जाने का भी जिक्र किया। इस समाचार के पहुँचने के पूर्व ही बाबा ने वहाँ मेरी बहन को (जो दर्शनों को गयी थी) कहा था कि 'उसको अमूल्य चीज दी थी परन्तु वह रख नहीं सका। ऐसी है पूज्य बाबा की लीला।

बाबा के दिव्यरूप के दर्शन से ही चित्त को ऐसी अनुभूति (अनुभव) होती है कि, यह कोई दिव्य शक्ति है। बस यही इच्छा होती है कि सदैव चरणों में ही बने रहें।

एक बार गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पूज्य बाबा ने कृपापूर्वक अपने चरणों की पूजा हम लोगों से स्वीकार की थी। तब से अब तक का उल्लेख है कि—बाबा के यहाँ हमेशा कुछ न कुछ काम चलता ही रहता है। एक दिन शाम को राज मजदूर काम करके घर जा रहे थे। उनमें से एक मजदूर जाने के समय बाबा के पास आया और धूनी पर प्रणाम करके जाने की आज्ञा माँगो। बाबा ने उससे कहा कि— 'जा रहा है, काम हो गया, आज यहीं रह जाओ, यहीं खाकर सो जाना, सबेरे तो फिर आयेगा ही"। वह बाबा की आज्ञा को शिरोधार्य कर ठहर गया। तब बाबा बोले कि यह अगर धूनी पर जाने के समय नहीं आता तो आज यह घर जाकर मर जाता। इसको साँप काट लेता। धूनी पर आ गया तो इसको बचाना ही पड़ा। दूसरे दिन ज्ञात हुआ कि—उसके घर में साँप निकला था। ऐसी बाबा की लीला है।

बाबा जब पहले पहल भेड़ाघाट पधारे थे। चौरस्ते के पास वाले एक गाँव में उनके एक शिष्य श्री मुंशीराम थे। उनके यहाँ बाबा बहुत दिनों तक ठहरे थे। उन्होंने पूज्य बाबा की बड़ी सेवा की थी। उनका लड़का किसी कारण वश फौजदारी के केश में फँस गया था। खून का केश था। जिसका खून हुआ था वह भी पूज्य बाबा का शिष्य था। दोनों ओर ही बराबर का था। बाबा के पास दोनों ओर की फरियाद पहुँची। तब बाबा ने विचार किया कि जो मर गया तो मर गया। उसको पहले कई बार बाबा ने बुलाकर लड़ाई बन्द करने को कहा था, परन्तु उसने माना नहीं। मना करने पर भी वह लड़ता ही रहा, अन्त में वह मारा गया। दूसरे पक्ष को बाबा ने कहा था कि तू अदालत से निरपराध छूट जायगा। तदनुसार वह नीचे के कोर्ट से छूट गया। इस प्रकार कितनी ही अनहोनी घटनाएँ बाबा के चरणों में रोज ही होती रहती हैं। बाबा तो स्वयम् इस प्रकार ईश्वर-स्वरूप बनकर छिपे हुए हैं कि कोई संसारी उनकी लीला को समझ ही नहीं पाता है।

पूज्य पिता जी एक बार पूज्य बाबा के दर्शनों के लिये यहाँ से गये हुए थे। शहर से उन्होंने कुछ केले ले लिये। कुछ धूनी पर प्रसाद चढ़ाने के लिये और कुछ खाने के लिये। वहाँ पहुँचने पर विचार बदल गया, और यह निश्चय किया कि सभी केले चढ़ा दें। पिता जी ने सब केले चढ़ा दिये। तब बाबा ने कुछ केलों की ओर संकेत करते हुए कहा—ये ले जाओ, जिस भावना से जो लाये हो वही करना चाहिये। बाबा आन्तरिक भावना को इतनी जल्दी पहचानते हैं, जानते हैं कि, उसका उल्लेख करना ही असम्भव है।

पूज्य महात्मा जी का लोकोत्तर पावन-चरित्र
(आश्चर्यकारी संस्मरण)

(ले० ठाकुर जगदीशसिंह, वेलवा, रायपुर,)

श्री ११११ ब्रह्मर्षि स्वामी श्री रामसनेही जी महाराज, भेड़ाघाट (श्री रामकुटी) जबलपुर का प्रथम दर्शन बचपन में जब कि अन्दाजा मेरी उम्र लगभग ७-८ वर्ष की रही होगी, हुआ था। उस समय मैं अनुमानतः चौथी कक्षा में पढ़ता था, और निश्चित रूप से यह किस सन्—सम्बत् की बात है यह तो सही रूप में नहीं बता सकता लेकिन सन् १९४१-४२ की हो सकती है। इतना तो अवश्य सही रूप में स्मरण है कि उस समय राम-नामी झण्डा काफी मात्रा में (तादाद) में चले थे। लोग सुबह ४ बजे उठकर ढोलक, झेला तथा मजीरा लेकर राम नाम की पूरे गाँव एवम् शहर में घूमकर प्रार्थना किया करते थे। उसी समय इलाहाबाद की ओर से स्वामी जी का इलाहाबाद रोड होकर आगमन हुआं। स्वामी जी के आगमन की, रोड के आस-पास के गाँवों में सर्वत्र खबर फैलती जा रही थी और हजारो की संख्या में आवालवृद्ध नर-नारी प्रति दिन दर्शनार्थ आते थे और दर्शन प्राप्त कर अपने को कृतार्थ मानते हुए अपने अपने घरों को वापस चले जाया करते थे।

स्वामी जी महाराज एक दिन में अन्दाजा एक या दो मील से ज्यादा नहीं चला करते थे। जिस स्थान पर उक्त प्रकार की दूरी पूरी हो जाती थी वहीं आसन लगाकर बैठ जाया करते थे, उस समय यह भी स्वामी जी के मन में भाव नहीं उठते थे कि यह भूमि कैसी है, ऊबड़-खाबड़ है या कहीं काँटे तो नहीं है। यदि जमीन ऊबड़-खाबड़ या कांटो से भरी रहती थी तो ऐसा मालूम होता था कि जैसे किसी ने झाड़ू द्वारा सफाई की हो।

मुझे स्वामी जी के दर्शन मिलने का सौभाग्य मनगवाँ शहर से प्राप्त हुआ, और स्वामी जी के सभी चमत्कार अपने आँखों से देखा। स्वामी जी महराज जब मनगवाँ शहर में विराजमान हुए उस समय कीर्तन मण्डली तथा साथ में स्वामी जी के एक शिष्य थे। मनगवाँ के एक

ताम्रकार ने स्वामीजी को रुकने के लिये आग्रह किया। जिस पर स्वामी जी की आज्ञा हुई कि अगर ५०० ब्राह्मण भोजन कराओ तो मैं अपना आसन लगा सकता हूँ। वह पैसावाला व्यक्ति था, उसने ५०० ब्राह्मण-भोजन कराना स्वीकार किया। फलस्वरूप श्री स्वामी जी ने मनगवाँ में मलकपुर नामक तालाब की पश्चिमी मेड़ पर स्थित मस्जिद के उत्तर तरफ पेड़ के नीचे धूनी जमा दी, उस समय स्वामी जी के साथ एक चेला भी था। हजारों की संख्या में लोग दर्शनार्थ आने लगे और सामूहिक भजन-कीर्तन होने लगा। ताम्रकार सेठ की ओर से ब्राह्मण-भोजन की तैयारी शुरू कर दी गयी, लेकिन ५०० ब्राह्मण भोजन करनेवाले नजर नहीं आये, तब स्वामी जी से उसने विनती की, पश्चात् स्वामी जी की आज्ञा हुई की मैं तेरे दिल की खोज कर रहा था कि तेरा दिल शुद्ध है अथवा नहीं, जितने ब्राह्मण मिल सकें उतने ही को भोजन करा दो। उस समय मनगवाँ में रात्रि को भी कक्षा ४ से ऊपर के बच्चों की पढ़ाई हुआ करती थी। भोजन का समाचार सुनकर रात्रि में विद्याध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों ने भी जिनके पास वर्तन नहीं थे, चद्दर बिछाकर रात्रि-भोजन किया।

दर्शनार्थियों द्वारा जो भी चीज स्वामी जी को दी जाती थी वह पूरी धूनी में हवन कर दी जाती थी। मनगवाँ के निवासियों में से कुछ सौभाग्यवान् लोगों को दर्शन के अतिरिक्त टेढ़े मेढ़े डण्डे का प्रसाद भी प्राप्त हुआ तथा एक स्वर्णकार को जो बहुत ही गरीबी की दशा में था उसे एक रात में ही बहुत-सा धन प्राप्त हुआ। जिस दिन स्वामी जी महाराज ने मनगवाँ से प्रस्थान किया, उस समय हाथ में लिये हुए नारियल को मस्जिद के अन्दर फेंका। स्वामी जी महाराज सीधी रास्ता चलते थे। चाहे नदी हो या तालाव हो अथवा नाला हो या पेड़ हो। मनगवाँ से चलने पर आँवी गाँव में एक ब्राह्मण ने स्वामी महाराज को रोकने का भरसक प्रयत्न किया, इस स्थिति में स्वामी महाराज का प्रश्न यही हुआ कि यदि तुम्हें ५०० ब्राह्मण-भोजन कराना स्वीकार हो तो मैं रुक सकता हूँ। काफी सोच समझकर उस ब्राह्मण ने ५०० ब्राह्मण भोजन कराना स्वीकार किया तब श्री स्वामी महाराज बेलवा गाँव स्थित बंशीधर तालाव में पानी के ऊपर छप-छप की आवाज से अपने शिष्य तथा कीर्तन मण्डली के चार पाँच व्यक्तियों सहित तालाब

की दक्षिणी मेड़ पर आम के पेड़ के नीचे आसन लगा कर बैठ गये और वहाँ धूनी जम गयी। भजन-कीर्तन जारी हो गया। पण्डित जी द्वारा ब्राह्मण भोजन कराया गया। समय वसन्तपञ्चमी का था, उस समय सर्दी भी काफी मात्रा में पड़ रही थी।

वसन्तपञ्चमी के अवसर पर नवागाँव में स्थित शंकर जी के मन्दिर के पास काफी मेला लगता था, उसी मेले में घुरिहा नामक गाँव का एक भड़भूजा लाई बिक्री करने हेतु ले गया था लेकिन करीवन ४ सेर की लाई उसकी बिक्री को शेष रह गई थी। रात करीब ८ बजे जब वह शेष लाई को लेकर मेला से घर की ओर लौटा तो स्वामी जी की धूनी व वहाँ काफी तादाद में लोगों की भीड़ देखकर वह वहीं पर रुक गया और शेष लाई स्वामी जी को देने का ज्यों ही शब्द निकाला कि उसी समय स्वामी जी बोल उठे कि यह कुत्ते की जूँठी लाई तू मुझे दे रहा है। इस पर वहाँ बैठे लोगों ने भड़भूजा से इस विषय की सत्यता की जानकारी प्राप्त की कि क्या यह कुत्ते की जूँठी लाई सही है, इस पर उसने कुत्ते की जूँठी लाई होना स्वीकार किया। उसके यह स्वीकार करने पर उसे वहाँ के लोगों ने भगा दिया।

इसके बाद एक ब्राह्मण आया और स्वामी जी से अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। स्वामी जी द्वारा उन्हें काफी समझाया गया कि शिष्य बनना आसान नहीं होता। तुम गृहस्थ आश्रम में ही रहो, लेकिन वह अपने हठ में ही जमा रहा। रात १२ बजे वह अपने साथ में लिये शिष्य को अपने पास से दूर रहने हेतु आज्ञा प्रदान किए। स्वामी जी महाराज १२ बजे के ऊपर अपने धूनी के पास रात में किसी भी व्यक्ति को नहीं रहने देते थे। शिष्य के चले जाने पर स्वामी जी महाराज ने उस ब्राह्मण को जो शिष्य बनना चाहता था उसे आज्ञा प्रदान की कि तुम तालाब के उत्तरी तथा पश्चिमी कोने में गले तक पानी में यदि रात भर खड़े रहो तो मैं तुम्हें अपना शिष्य सहर्ष बना सकता हूँ। स्वामी जी के उक्त प्रकार की आज्ञा को स्वीकार करते हुए ब्राह्मण तालाब के अन्दर पानी में खड़ा हो गया। पानी में करीबन १ घंटा खड़ा रहने के बाद मेड़ पर आम के पेड़ से ऊपर की आवाजें आने लगीं तथा सारा पेड़ काफी तेजी के साथ हिलने लगा जिससे भयभीत होकर ब्राह्मण पानी से निकल कर धूनी के पास आकर खड़ा हुआ, तब स्वामी जी महाराज ने ब्राह्मण से पूछताछ की कि—तुम पानी से कैसे निकल

कर भाग आये। ब्राह्मण ने सब घटना बताई इस पर उसे रात में धूनी के लक्कड़ों से काफी मार हुई और वह गूंगा हो गया। जब दूसरे दिन स्वामी जी महाराज ने वहाँ से प्रस्थान किया तब वह अपने मुँह में ऊँगली डाल कर शब्द निकलने बाबत निवेदन करने लगा किन्तु स्वामी जी महाराज द्वारा उसके निवेदन पर कोई सुनवाई नहीं की गई।

स्वामी जी महाराज ने जब सुरसा ग्राम में तालाब की मेड़ पर रुकना चाहा तो तत्काल एकाएक शब्द (आकाशवाणी द्वारा) निकला कि यह गाँव पापी है, यहाँ नहीं रुकना है, यह सुनकर वहाँ से चले और जुगनहाई गाँव के अरिगन सिंह के बगीचा में आम के पेड़ के नीचे अपनी धूनी जमाई। यहाँ भी उक्त ब्राह्मण पीछा किए रहा, लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला। इस पर वह विवश होकर घर लौट गया। अरिगन सिंह द्वारा भोजन के प्रबन्ध के लिये निवेदन किया गया, जिस पर स्वामी जी की आज्ञा हुई कि ३ कुरई चावल तथा ६ पैला दाल दे देना इतने से काम चल जायेगा। स्वामी जी के आज्ञानुसार चावल दाल आयी और भोजन बना, उस बने हुए भोजन में करीबन ७५ व्यक्तियों ने भोजन किया। केवल एक व्यक्ति का भोजन शेष रह गया। इस पर स्वामी जी से निवेदन किया गया कि स्वामी जी! एक व्यक्ति का भोजन शेष रह गया है, क्या किया जाय। स्वामी जी की आज्ञा हुई कि ९ वें पेड़ के नीचे एक कुत्ता भूखा बैठा है, यह भोजन उसी का हिस्सा है, बुलाकर उसे दे दिया जावे। स्वामी जी के आज्ञानुसार कुत्ते की तलाश की गई, वह सही मिला, और उसे वह बचा हुआ भोजन दे दिया गया।

स्वामी जी महाराज को सीधे सामने खड़ा होकर यदि कोई प्रणाम करता था तो वे अपने हाथ में ली हुई फरसी उस पर चला देते थे, लेकिन उससे उसको कोई चोट नहीं आती थी। फरसी मारने के बाद स्वामी जी कहा करते थे कि तुम्हें नहीं मारा है, तेरे पाप को मारा है, लगा तो नहीं।

यदि रास्ते में कहीं चलने में सामने कोई पेड़ मिल जाता था तो उसे स्वामी जी द्वारा फरसी से ३ बार स्पर्श करा दिया जाता था तो पेड़ सामने से अलग मालूम पड़ता था। पश्चात् स्वामी जी का प्रसाद प्राप्त होने के बाद शाम को यहाँ से मैं घर वापस आ गया।

इसके बाद स्वामी जी महाराज रीवाँ की ओर चले गये। जिस समय स्वामी जी का दर्शन हुआ था उस समय से हमेशा हमारे मन में यही भाव उठा करे कि क्या स्वामी जी के दर्शन फिर कभी हो सकेंगे। मन में सन्तोष इस बात का करना पड़े कि वे महान् आत्मा हैं, उनका हमेशा दर्शन मिलना कठिन और असम्भव है।

स्वामी जी की यह संक्षिप्त जीवनी जो आज तक याद रही वह दर्शन की अभिलाषा एवं सदैव मन में दर्शन पाने की लालसा से ही।

इधर सन् १९६७ ई० से मैं गैस्टिक ट्रूबल की बीमारी से पीड़ित हो गया था और उसके कारण अस्वस्थ रहने लगा। मेरे उक्त प्रकार की बीमारी का पता श्री १०८ श्री राजमाता साहिबा रीवाँ को लगा और वह जब बाबा जी के दर्शनार्थ भेड़ाघाट स्थित कुटी में सन् १९६८ में आयीं तब उन्होंने मुझे भी बाबा जी के दर्शनार्थ अपने साथ ही लाने की कृपा की। जब मैं बाबा जी के पास पहुँचा और दर्शन प्राप्त हुए, उस समय मेरे मन में भाव उठा कि बाबा जी को मैं कहीं कभी देखा हूँ, और बाबा जी के पास बैठ गया। इतने में बाबा जी की आज्ञा होती है कि बच्चा! तुम्हें तो मैं तुम्हारी छोटी उम्र (अवस्था) में ही दर्शन दे चुका हूँ। तब बचपन में दर्शन होने वाली बात याद आयी। बाबा जी ने स्वयं बिना हमारे बताये ही उक्त सभी प्रकार की बातें बतायीं। बाबा जी की यह बात सुनकर मैं अपने को महान् कृतार्थ एवम् भाग्यशाली मानने लगा। यह घटना यथार्थ सत्य है, इसमें थोड़ा भी बढ़ाव-चढ़ाव नहीं है। अतिशयोक्ति नहीं है। महात्माओं के विमल चरित्र को पढ़ने एवं सुनने से आत्मसन्तोष प्राप्त होता है।

लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।

दुःखोद्धारक ब्रह्मर्षि रामसनेही बाबा

(लें०—श्री रेवाशंकर जी, वाराणसी)

परमपूज्य श्री ११०८ ब्रह्मर्षि रामसनेही बाबा अत्यन्त उदार हृदय के बड़े ही दयालु, ब्रह्मज्ञानी, तत्त्ववेत्ता महात्मा हैं। वे आबाल ब्रह्मचारी हैं, इन्होंने नर्मदा जी के किनारे रहकर घोर तपस्या की है। ये जड़ और चेतन सभी प्राणियों के स्वरूप को पहचानने वाले हैं एवम् उनके सुख-दुःख को समझने वाले हैं।

जब उनके निकट कोई अपना दुःख लेकर जाता है तो उसकी बात बड़ी सावधानी से सुनते हैं, पश्चात् उसे दूर करने का अचूक उपाय बताते हैं जिससे दुःखी व्यक्ति को राहत मिलती है और जब तक उसके दुःख का अन्त नहीं हो जाता तब तक उसकी सहायता वे करते ही रहते हैं, अन्ततः उसके कष्ट का निवारण करके ही रहते हैं।

सब जीवों के ऊपर वे समान दया करते हैं। परदुःख कातरता उनमें है। सबके सुख दुःख को वे भली-भाँति समझते हैं।

ब्रह्मज्ञानी होने के कारण उन्हें सब जीवों में ब्रह्म का ही दर्शन होता है, अतः उनके दुःख का तत्काल अनुभव हो जाता है, यहाँ तक कि वनस्पतियों के कष्टों का भी उन्हें अनुभव होता रहता है। संक्षेपतः यह कहना ही उचित होगा कि वे सब प्राणियों का उपकार करते हैं और उनके दुःखों को ध्यान से सुनकर दूर करते है।

यज्ञ में स्वतः अग्नि का आविर्भाव करनेवाले श्री गुरुदेव की लीलाएं असीम हैं

(ले० श्री रामप्रकाश खन्ना, दिल्ली ६)

[पूज्य बाबा द्वय ने जयपुर में या अन्यत्र जो महायज्ञ किये थे, उनमें बाबा ने अपने तपोबल से हवन के लिये कुण्ड में अग्निदेव का मन्त्रों द्वारा आविर्भाव तथा योग के चमत्कार किये, उन्हीं चमत्कारी घटनाओं का विवरण प्रत्यक्षदर्शी श्री खन्ना जी ने प्रस्तुत किया है जो कि मननीय है—संपादक]

इस आश्चर्यमयी घटना को घटित हुए लगभग २० वर्ष हुए जब कि पूज्य गुरु महाराज (बड़े बाबा) जी और गोपाल बाबा जी ने जयपुर (राजस्थान) में एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था। उस यज्ञ में बड़े-बड़े विद्वान्, संत, महात्मा, भक्त उपस्थित हुए थे। यह आयोजन एक महीना तक चला, जिसमें अखण्ड हरिकीर्तन, रामायण तथा दुर्गासप्तशती (चण्डी-पाठ) होते रहे। पाठ पूर्ण होने पर पूर्णाहुति के समय अद्भुत दृश्य देखने को मिला। उस समय यज्ञ के आचार्य ने पूज्य बाबा से निवेदन किया कि—हम चन्दन की लकड़ियों को रगड़कर वेद-मन्त्रों द्वारा अग्निदेव का आविर्भाव करेंगे। बाबा ने कहा—नहीं, हम तो सूर्य भगवान् से अग्नि लेंगे। यज्ञ के आचार्य जी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कैसे हो सकता है, इस प्रकार तो मैंने कहीं देखा-सुना नहीं है।

उसी समय पूज्य बाबा ने आचार्य जी को अलग सूर्य भगवान् के सामने धूप में पूजनोपचार के साथ बैठा दिया और स्वयं अपने हाथ में एक गुलाब का फूल लेकर मन्त्रोच्चारण के साथ उस फूल को हवन कुण्ड में डाल दिया। तत्काल ही सूर्य भगवान् की कृपा से साक्षात् अग्नि भगवान् ने अपना स्वरूप धारण कर लिया। इस आश्चर्यमयी घटना को देखकर आचार्य एवं अन्य पण्डित तथा भक्त गण बाबा की जय जयकार करने लगे। पूर्णाहुति के बाद भगवान् की सवारी नगर परिक्रमा के लिये बड़े सज-धज के साथ निकली जो कि ऐतिहासिक घटना कही जा सकती है। इसमें सभी वर्ग के हजारों भक्त जन सम्मिलित हुए, प्रबन्ध भी बड़ा व्यापक था। दोनों बाबा ऋषि तुल्य आसन पर विराजमान थे। उस समय ऐसा लगता था कि मानों सत्ययुग का पदार्पण हो गया हो।

वहाँ की (जयपुर की) एक दूसरी आश्चर्यमयी घटना यह है कि एक दिन रामकुटी के बाहर गुरु महाराज ने सूखे, मरे पड़े हुए कीड़ों मकोड़ों को एक बर्तन में रखकर सब को जिला दिया। ऐसी ही एक घटना और है कि जयपुर में एक दिन बहुत जोरों की वर्षा हुई, सर्वत्र जलमय हो गया, किन्तु रामकुटी में सूखा ही नजर आया। पूज्य बाबा ने कहा कि इस कुटी के बाहर एक गिलास में जलस्तम्भन कर दिया गया है। यह देखकर हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

ऐसे ही एक बार पूज्य बाबा और गोपाल बाबा भटिंडा में पधारे थे। वहाँ भी अखण्ड हरिकीर्तन तथा यज्ञ आदि का आयोजन था। बड़े व्यापक रूप में यह कार्य हुआ। सभी वर्ग के हजारों व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे, दिन-रात ब्रह्मभोज होता रहता था। उस यज्ञ में एक योगिराज महात्मा भी पधारे थे। उक्त योगी के साथ पूज्य बाबा का सत्संग-प्रवचन में ही शास्त्रीय (योगमार्गीय) प्रश्नोत्तर हुए जिसमें बाबा ने उनको परास्त कर दिया, वे (योगी) पूज्य बाबा के समक्ष नतमस्तक हो गये। ऐसा है बाबा का चमत्कार।

एक बार गुरु महाराज लगभग १५-१६ वर्ष पूर्व अमृतसर पधारे थे। मात्र १५-२० दिन वहाँ रहे। अनेक चमत्कारों के दर्शन हुए। उसके बाद प्रयाग के ऐतिहासिक महाकुम्भ के अवसर पर अद्भुत चमत्कार देखने को मिले जो विस्तारभय से यहाँ लिखना अनावश्यक है। सब का निचोड़ यह है कि पूज्य गुरु महाराज एक अन्तर्दृष्टि सम्पन्न सन्त हैं, उनके असाधारण चमत्कार है जिनका लिखना हम जैसे अल्पज्ञ के लिये सम्भव नहीं है।

घोर कष्ट से निवारण करनेवाले पूज्य बाबा

(एक भक्त द्वारा प्रेषित)

एक समय प्रारम्भ में जब श्री १०११ ब्रह्मर्षि बाबा रामसनेही जी महाराज सरस्वती घाट (भेड़ाघाट के पास) जबलपुर (मध्यप्रदेश) में अपनी रामकुटी में विराज रहे थे उस समय बाबा के पास उनके एक भक्त ठाकुर मुंशीसिंह जी भी बैठे थे। एक लड़का उधर से अपने गाँव ग्वारी की तरफ जा रहा था, बाबा ने उस लड़के से कहा कि घर से दूध ले आना, उसने उत्तर दिया कि हमारी गाय नहीं लगती है, (बच्चा उसका चूँखना चाहता है, किन्तु वह गाय चूँखने नहीं देती है) बाबा ने फर्माया कि घर जा, गाय लग जायगी। घर जाकर उस लड़के ने अपने पिता से कहा कि बाबा ने दूध मँगवाया है, लड़के के पिता ने कहा कि—ऐसे बहुत से बाबा देखे हैं! उसके कुछ समय बाद ही वह कुछ काम कर रहा था कि ऊँगली में काँटा लग गया, और कुछ ही देर में वह काँटा कलाई तक पहुँच गया। उसको असह्य वेदना होने लगी, फिर वह बाबा के पास रामकुटी पर आया और बोला—महाराज ! बाबा !! मेरी पीड़ा दूर करिये, मैं बहुत परेशान हूँ। बाबा ने फर्माया कि 'बहुत देखे ऐसे बाबा' इस प्रकार कई बार (३-४ बार) मुसकुराते हुए कहकर श्री नर्मदा जी में कूद कर सरस्वती घाट पर चले गये। वहाँ कहीं से एक मुर्दा जलाने के लिये कुछ आदमी आये हुए थे, उनसे बाबा ने फर्माया कि मुर्दा यहीं छोड़ दो, तुम लोग चले जाओ, हम इसको चेला बनावेंगे। बाबा ने पूछा—यह बुड्ढा है या जवान, उन आदमियों ने कहा कि—बुड्ढा है, बाबा ने कहा—कोई बात नहीं छोड़ दो। उन लोगों ने नहीं छोड़ा, बोले कि हम तो जलावेंगे, तब बाबा ने कहा—जैसी तुम्हारी इच्छा हो करो। फिर बाबा नर्मदा जी में कूदकर अपनी पुरानी कुटी पर आ गये। तब ठाकुर मुंशीसिंह जी ने कहा कि—बाबा माफ कर दीजिये, यह परेशान है, बाबा ने फर्माया कि तुम धूने में से इसके हाथ पर विभूति लगा दो, ठाकुर मुंशीसिंह जी ने कहा कि आप ही लगावें, फिर बाबा ने मुसकुराते हुए कहा कि 'बहुत देखे ऐसे बाबा' ऐसे २-३ बार कहकर

उसके हाथ पर धूने में से विभूति लगा दी, इधर विभूति के लगाते ही तुरन्त काँटा हाथ से स्वयं निकल गया ।

मिट्टी की हाँड़ी में मिठाई पहुंचाने वाला कौन ?

पूज्य बाबा का अद्भुत चमत्कार

(पूज्य बाबा के एक भक्त द्वारा प्रेषित)

एक दिन गुवारी घाट से मेरे बहनोई श्री फूलचन्द जी दुबे मेरे पास आये । मैंने उनसे कहा कि पूज्य बाबा जी के चमत्कार बताइये । उनसे ज्ञात हुआ कि श्री गुरुदेव के अनेक अद्भुत चमत्कार हैं ।

एक बार श्री गुरुदेव मुझे साथ लेकर एक बहुत बड़े जंगल में सुबह से चार बजे दिन तक चलते ही रह गये । मुझे बहुत तेज भूख लग गयी क्योंकि मैं उस समय केवल १७ साल का ही था । भूख को सहन करने की क्षमता मुझ में नहीं रह गयी थी । मैं एक झाड़ के नीचे बैठ गया । श्री गुरुदेव ने मेरी तरफ देखा और उसी जगह रुक गये, तथा मुझको कहा कि चले आओ, मैं गुरुदेव की तरफ चला, मन में यह सोचने लगा कि इस बड़े भयानक जंगल में भोजन कहाँ प्राप्त होगा ? उस समय मैं बहुत ही व्याकुल था । जब गुरुदेव के पास पहुँचा तो मेरे पीछे से एक आदमी एक मिट्टी की हाँड़ी में बंगाली मिठाई और नमकीन श्री गुरुदेव के चरणों के पास रखकर मेरे देखते-देखते लापता हो गया । श्री गुरुदेव ने मुझसे कहा—बेटा ! भूख लगी है तो इसको खा लो । पश्चात् मैं खूब मिठाई नमकीन खाकर और श्री गुरुदेव के इस चमत्कार को देखकर चकित रह गया । श्री गुरुदेव ने कहा कि—बेटा, इस सामने की पहाड़ी पर एक सिद्ध कुण्ड है, उस जगह तुमको कुछ देने की इच्छा थी मगर अब मौज करो, ऐसा कहने पर मैं घर वापस आ गया और श्री गुरुदेव अपनी कुटी को चले गये ।

श्री गुरुदेव एक पक्की कुटी बनाकर एवम् मुझे दीक्षा देकर तथा मेरे पिता जी को कई आपत्तियों से बचाकर डिडोरी चले गये ।

श्रद्धाञ्जलि

(ज० अर्जुन शमशेर ज० ब० राणा)

श्री बड़े गुरु महाराज रामसनेही जी महाराज का दर्शन बड़े
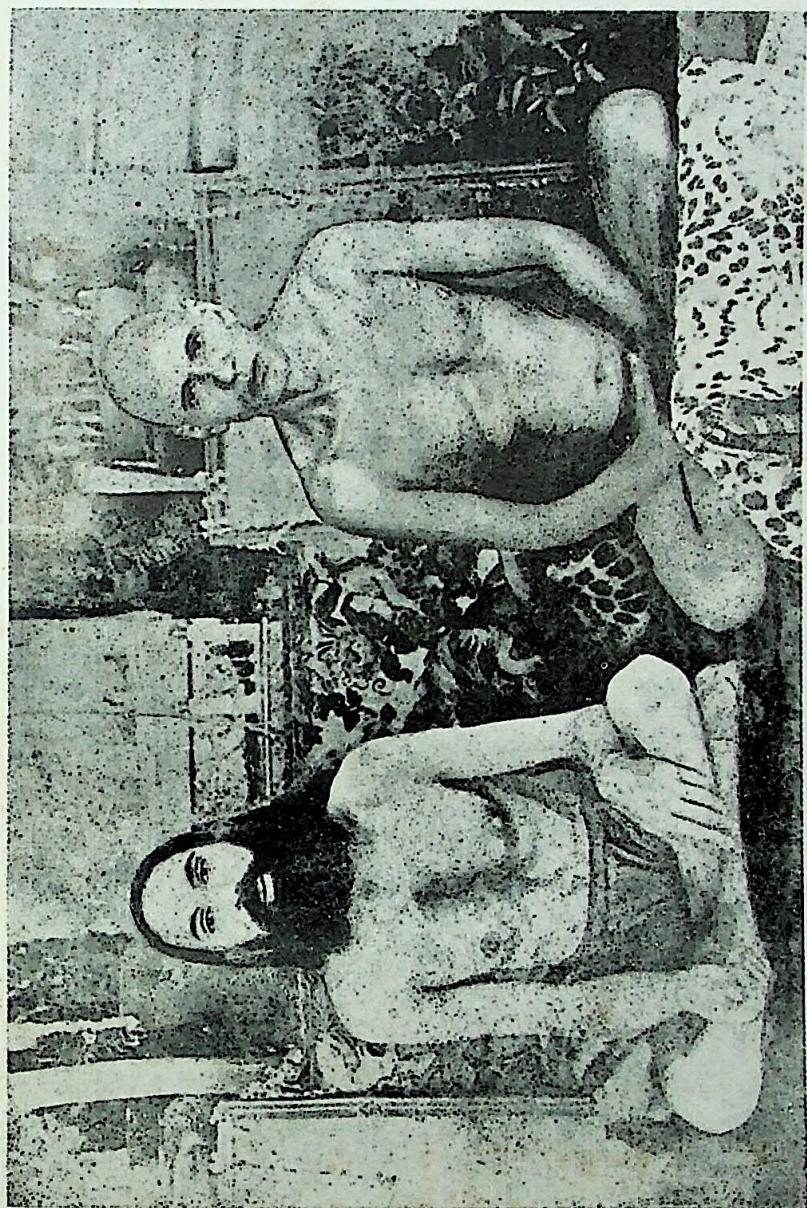
जयपुर में श्री गोपाल बाबा के साथ
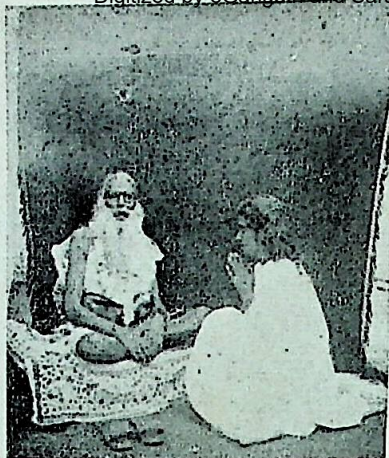
शिष्या मीरा बहन के साथ

नर्मदा मंदिर में कीर्तन
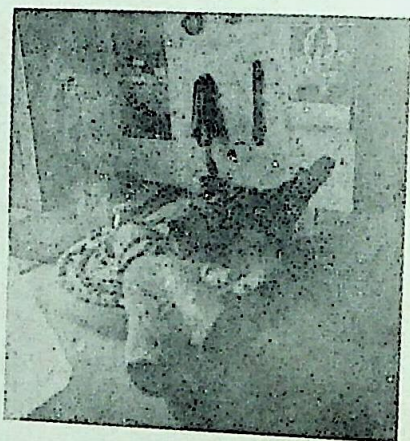
'धूना' चौरस्ता, भेड़ाघाट
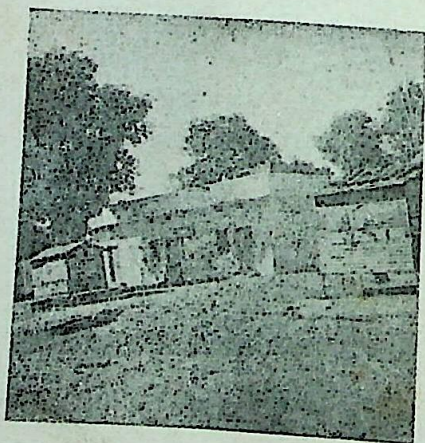
चौरस्ता, भेड़ाघाट में कुटी
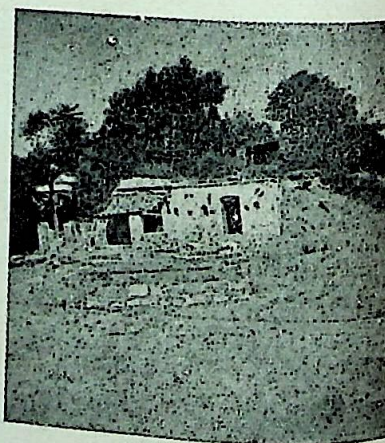
भेड़ाघाट कुटी

सौभाग्य से ही प्राप्त कर सके हैं। उनके अनुभव युक्त वाणी का मूल्य तो वही समझ सकता है जो उनके चरण कमल की छाया में रह चुका है। श्री सत्गुरु वावा का दर्शन गुरु महाराज श्री गोपाल वावा ने कराया था—तव से अव तक पूज्य वावा की आध्यात्मिक एवं चमत्कारकि रूप का आनन्द ले रहा हूँ। वावा जव रोम रोम, नाड़ी नाड़ी में राम राम वसता" मगन होकर गाने लगते हैं और आनन्द मग्न हो जाते हैं वह अवर्णनीय है। वावा के रोम रोम से राम राम की सत् आवाज निकलती है। निरंतर नाम जप से ही वावा ने इस शक्ति को प्राप्त किया है। जिसने वावा के दर्शनों का लाभ उठाया है वही जान सकता है कि मात्र दर्शनों से ही कितना कल्याण होता है—मेरा यह प्रत्यक्ष अनुभव है।

वाबा का अद्भुत चमत्कार तथा उनके अमृतमय उपदेश

(धर्मपत्नी—मुन्शी ठाकुरसिंह के सौजन्य से प्राप्त)

आज से करीव ३५ साल पहले वावा रामसनेही महाराज का सर्व प्रथम दर्शन हुआ था। उस समय काशी महाराज ने वावा को जगह देने से मना कर दिया था। वाद में मेरे पति मुंशी ठाकुरसिंह ने वावा को भोजन के लिये निमंत्रित किया। वावा ने दाल रोटी कुछ खायी और कुछ मछलियों को दिया। उसी अवसर पर जुगतरैया की देवी अमावस के दिन वहाँ आयी। उसने वावा का दर्शन किया। उनकी वहू को कोई बच्चा नहीं हुआ था। वावा गाँव में नहीं जाते थे। पेड़ के नीचे विलकुल नंगे रहते थे। उनके पास एकमात्र फर्शा (कुल्हाड़ी) भर था। उसके वाद वे नौतरैया चले गये। पेड़ के नीचे ध्यान-मग्न रहते थे। वे उस समय मौन रहते थे, उनके पास कोई वस्त्र नहीं था। धूनी वरावर जलती थी और वही सहारा था। कोई यदि उन्हें ओढ़ना देता भी था तो वे मना कर देते थे। वे विल्कुल वीतराग थे। उसी समय देवी की वहू मासिक धर्म से शुद्ध हुई थी, वावा को वहू की सास उसके घर में ले गयी। वावा ने वहू को भभूत (विभूति)

दिया। साथ ही यह आशीर्वाद दिया कि 'तुम्हें कन्या होगी'। नौ महीने के बाद कन्या का जन्म हुआ। बाबा ने उसका नाम आरतीबाई रक्खा सन्ध्या को मेरे पतिदेव घर आए और कहने लगे कि 'ऐसे महात्मा के दर्शन बहुत बड़ी तकदीर से (भाग्य से) होते हैं। तीसरे दिन बाबा हमारे स्थान में आकर बैठने लगे। खभरिया के एक तिवारी ने पूजा सामग्री भेजी थी। उस समय सामग्री आदि किसी को छूने नहीं देते थे। मेरे पति विचार में पड़ गये। बाबा ने अपना आसन उठाकर उनको दिया। आधे घण्टे के बाद ध्यान में चले गये। पश्चात् पति जी ने हाथ जोड़ा और बाबा भी उनके साथ गाड़ी में बैठ कर चले गये बिना बोले हुए। बाबा ने धीरे स्वर में कहा—तिवारी से कह देना कि वह अपना सामान वापस ले जाए। फिर एक बार हमारे मकान में आये उस समय मैं पानी लेने गई थी। यह देखकर बाबा खूब जोर से हँसे और कहने लगे—

काम करते रहो, नाम जपते रहो।
अपनी मुक्ति का मार्ग बनाते रहो॥

सुख में सोना नहीं दुःख में रोना नहीं।
प्रेम भक्ति की आँसू गिराते रहो॥

मन में गोविन्द गोपाल गाते रहो।

ऐसा उपदेश बाबा ने मुझे दिया। तीन दिन बाबा वहाँ ठहरे। बहुत अनुनय विनय करने पर बाबा थोड़ा-सा भोजन लेते थे। वे केवल मेरे हाथ का बना ही खाते थे। तीसरे दिन बाबा प्रातः ८ बजे वहाँ से चले गये। उसके बाद सात वर्ष बाद ही आए। सात वर्ष के बाद मेरा बच्चा दो साल का हो गया था। इस समय मेरे घर में सात रोज रहे, फिर चले गये। जोगतलैया में २३ दिन रहने के बाद फिर आये। तत्पश्चात् भेड़ाघाट में लँगोट लगाए १५ दिन तक ठहरे, भेड़ाघाट में मालगुजार के बगीचे में आये, एक दिन सन्ध्या को

तबियत खराब हो गई। जब मेरे पति बाबा को देखने गये तो उन्होंने उन्हें डाँटा और कहा कि 'अपनी देवी को क्यों नहीं आने दिया'। उस समय बाबा के लिये दो लँगोट बनाया। बाबा कहने लगे कि भोजन बना के रखना मैं अभी आता हूँ' बाबा जब मेरे घर आये तो थोड़ी सी मूंग की खिचड़ी खायी और शेष मेरे लिये छोड़ दिया। बाबा कहने लगे कि 'तुमको घृणा लगेगी, नहीं खा पाओगी, फिर कहने लगे कि 'अच्छो खाकर जल्दी आ जाना'। दूसरे दिन मैं चार बजे उठी और बाबा के लिये भोजन की तैयारी करने लगी। बाबा मालगुजार का घर छोड़कर किसी को बिना पता दिये फिर हमारे घर आ गये, कुछ दिनों के बाद बाबा फिर चले गये। अब की बार मेरा बच्चा भी बाबा के साथ चला गया। साथ ही सैकड़ों आदमी बाबा के साथ चले गए। बाबा मीरगंज में रहने लगे थे।

इधर जोगतलैया वाली की कन्या मर गई थी। दूसरी बार लड़का हुआ था। देवी करैया (कढ़हिया) करने लगी थी। बाबा कुत्ते के भेष (वेष) में नर्मदा किनारे भण्डारे में सम्मिलित होने चले गये थे। देवी ने कुतिया को मारा जिससे बाबा को चोट लगी। कुतिया वहाँ से भग गयी, बाबा कहने लगे कि चोट लगी है, फिर मालगुजार गाड़ी लेकर आये। बाबा अपनी चोट दिखाते हुए कहने लगे कि 'देख, तू ने कहाँ मारा, मुझे चोट लगी है, मैं कुतिया के भेष में आया था। उसने माफी माँगते हुए कहा—हम संसारी जीव हैं, हमें यह रहस्य क्या मालूम बाबा! बाबा ने उसे क्षमा कर दिया। बाबा वहाँ से चले गये, चलते समय कह गये कि—तुमको चोट लगेगी, खून बहेगा, विपत्ति आयगी, मेरा नाम लेना, सब ठोक हो जायगा।" बाद में झगड़ा भी हुआ, मेरा शिर भी फूटा, मैंने कोई दवाई नहीं की, बाबा का नाम लिया—झगड़ा और चोट ठीक हो गया। मारने पीटनेवाले सब निराश हो गये, अभी भी सब जायदाद मेरी ही है।

फिर करीब सात आठ वर्ष बाद बाबा चौरस्ते में आए। मेरे पतिदेव का नाम उन्हें मालूम नहीं था। बाबा ने कहा—गाड़ा पत्थर के मुंशी के घर जाऊँगा" उस समय हमारा मकान बन गया था, वहाँ आये, धूनी बनाई। बाबा ने कहा कि 'तुम धूनी कभी मत बुझने देना' तुम्हारा भला होगा"। अभी तक मेरे घर पर धूनी जलती रहती है। सब बाबा का ही सहारा है। सभी कष्टों में उनका ही नाम लेती हूँ, सब ठीक

हो जाता है। बाबा १५ दिन बाद डिंडोरी चले गये, डिंडोरी से गोदावरी वहाँ से फिर डिंडोरी, बाद में जयपुर चले गए। जयपुर से फिर हमारे पतिदेव बुलाकर लाये। उस समय हमारा बड़ा बच्चा कैन्सर की बीमारी में गुजर गया था, वह २३ साल का ही था। उसकी मृत्यु के बाद मेरी बहू को बच्चा हुआ, बाबा ने उसको फल दिया और कहा कि—देवि ! तू खा ले तेरा पति मरने के बाद तुझे सहारा देनेवाला पैदा होगा। बच्चा के पिता के मरने के ११ महीने बाद उसे बच्चा हुआ। (कार्तिक में गुजरा था और कुँवार में हुआ)। बाबा भेड़ाघाट में फूस की कुटी बनाकर रहने लगे। पश्चात् कुटी बनाकर जयपुर चले गए थे। फिर कई बार आए गए, पश्चात् तीन साल के बाद यहाँ आए। बाबा की अद्भुत शक्ति से सबका कल्याण होता रहता है।

पूज्य बाबा की भविष्यवाणी

ले० श्री पूरनगिरि गोस्वामी, धौलपुर, छिन्दवाड़ा

ज्योतिपुञ्ज श्री ११०१ ब्रह्मर्षि बाबा रामस्नेही महाराज की दिव्य दृष्टि ने अप्रैल १९६५ ई० में मेरे जीवन एवं विचारधारा के अन्धकार को रवि की किरणों के समान प्रकाश देकर दूर किया। पूर्व में मैं नास्तिक था। पूज्य बाबा के दर्शन से मुझे जो सन्तों और महात्माओं के प्रति अविश्वास था वह दूर हो गया। अविश्वास का बाँध ऐसा टूटा कि पुनः जीवन में कभी प्रवेश नहीं कर सकता। हाँ बाबा की दया दृष्टि बनी रहे।

एक आश्चर्यमयी घटना जो उस समय घटित हुई वह थी अप्रैल सन् १९६६ की। दर्शन हेतु मैं बाबा के पास पहुँचा था। मेरे साथ में मेरी धर्मपत्नी और दूसरे २-३ आदमी थे। मेरी पत्नी गर्भावस्था में थी। आपने कहा कि बाई को बच्चा पंगु होगा। इतना सुनने के बाद हम सभी को अत्यधिक चिन्ता-सी हुई। मन की बात को जाननेवाले बाबा जी ने कहा कि चिन्ता अधिक करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि यहाँ का ध्यान कर लेना साथ में संजीवनी रूपी राख (विभूति) उठा कर दे दिया और कहा कि हाथ पैर में लगा लेना, ठीक हो जायगा। ढाई माह के बाद आप की भविष्यवाणी सत्य हुई ९ जुलाई सन् १९६६ को बच्चे का जन्म हुआ। जिस प्रकार बाबा ने कहा था हाथ-पैर ऐसे मालूम पड़ते थे कि वे धड़ से जुड़े हों। दृश्य

सामने आने से चिन्ता में आपकी वाणी याद न आई। तीसरे-चौथे दिन आपकी प्रेरणा हुई फिर याद आया तो आपके द्वारा दी गयी संजीवनी रूपी विभूति हाथ पैर में प्रयोग किया गया। एक माह बाद जबलपुर शहर के कुछ प्रमुख ज्योतिषियों ने कहा कि जन्मकुण्डली बच्चे की बहुत खराब है, कैसे वह जीवित है। पश्चात् मैं पत्नी को साथ लेकर एक वर्ष बाद आपके पास गया और आप से बताया। ज्योतिषियों का मत, जानकर बाबा ने कहा कि यह बच्चा बिलकुल स्वस्थ रहेगा। बाबा के कथनानुसार आज चार वर्ष कुछ दिनों का हो चुका है स्वस्थ और उसकी तन्दुरुस्ती काफी अच्छी है।

बाबा की भविष्य-वाणी और दर्शन के फल का वर्णन मैं अधम नहीं कर सकता हूँ न जाने किस जन्म का पुण्य था कि बाबा के दर्शन का लाभ हो रहा है।

पूज्य बाबा की महिमा अपार है

(ले० श्री राजकृष्ण पण्ड्या, सूत टोला, वाराणसी)

परम पूज्य बाबा का मैं भी एक शिष्य हूँ। मुझे भी गत ५ वर्षों से पूज्य बाबा के चरणों में रहने का अवसर मिला हुआ है। मैं बराबर उनके दर्शन को जाता रहता हूँ। मेरे पिता जी की तबियत बहुत दिनों से गड़बड़ चल रही थी। उनको बराबर ज्वर आता रहता था। वे सूख कर अत्यन्त कृश हो गये थे। डाक्टर की दवा होती रहती थी। लेकिन कोई फायदा नहीं था, इसी बीच मुझे पूज्य बाबा के यहाँ जाने का सुअवसर मिला। चूँकि श्री बाबा जबलपुर में रहते थे और मैं बनारस में। इसलिये वहाँ जाने का बहुत कम अवसर मिल पाता था। लेकिन उनका ध्यान हमेशा मेरे मन में बना रहता था। मैं जब वहाँ गया। तो मैंने अपने पिता जी के बारे में उनसे सब हाल कहा और उनसे विनती की कि, आप हमारे पिता जी को एक बार उठाकर खड़ा कर दीजिये। पूज्य बाबा ने हमारी विनती सुन ली और उसके एक महीने के अन्दर पिता जी को अच्छा कर दिया। वे उठकर थोड़ी दूर टहलने भी लगे। हम सब की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मेरे पिता जी को भी श्री बाबा पर पूर्ण विश्वास हो गया। उन्होंने एक बार उनके दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की। लेकिन वे उनका दर्शन नहीं प्राप्त कर सके। वहाँ जाने का अवसर ही नहीं मिल सका। इसी बीच वे फिर बीमार पड़ गये। वे

बराबर बाबा का ध्यान करते रहते थे। पूज्य बाबा का एक चित्र उनके सिरहाने लगा रहता था। बस, उन्हीं से वे अपना दुःख कहा करते थे और श्री बाबा ने उनका दुःख भी सुना।

जिस समय मेरे पिता जी की मृत्यु हुई उस समय (सितम्बर १९७१) गंगा जी में बाढ़ आयी हुई थी। श्मशान घाट (मणिकर्णिका) पर पानी भरा हुआ था। वहाँ तिल रखने की भी जगह नहीं थी। जितने भी शव जलाने को आते थे वे सब हरिश्चन्द्रघाट ले जाये जाते थे।

हम सब बहुत परेशान हुए कि अब क्या होगा। इतनी दूर ले जाना होगा। जो लोग ले जायँगे, वे मन में मेरे पिता जी को न जाने क्या-क्या कहेंगे। इसी बीच मैंने अपने एक आदमी को फिर से पास में श्मशान घाट पर भेजा कि जाकर पता लगाओ कि, अब क्या स्थिति है हमारे कहने से वह गया। निरीक्षण करके १० मिनट में लौटकर वह आया और उसने कहा कि वहाँ पानी बिलकुल घट गया है। अभी एक घंटा हुआ है पानी घट गया है। वहाँ ले चलो। इस बात को सुनकर वहाँ जितने भी आदमी थे सब आश्चर्य में आ गये कि यह कैसे हो गया और फिर आराम से पिता जी का अग्निसंस्कार हुआ। ऐसी है पूज्य बाबा की अद्‌भुत लीला। मैं उनके प्रति विनत भाव से यह श्रद्धा-सुमन अर्पण करता हूँ।

पूज्य बाबा की महिमा

अभी अभी दिनाङ्क १-१२-७१ को मैं पूज्य बाबा के यहाँ दर्शनार्थ गया था। पूज्य बाबा प्रतिदिन सुबह और शाम को पूजा किया करते हैं। उस दिन भी शाम को पूजा पर बैठे थे। पूजा करते करते उन्होंने मुझ से कहा कि देखो बाहर सड़क पर कुछ लोग खड़े हैं। वे भेड़ाघाट जाना चाहते हैं। लेकिन रात हो जाने से उधर के लिए सवारी अब कोई नहीं आने वाली है। इस बात की पुष्टि के लिये मैंने जाकर इसका पता लगाया और सही पाया। फिर उन्होंने कहा कि मैंने उन लोगों का इन्तजाम कर दिया है। देखो अभी भेड़ाघाट के लिये एक टैम्पों आयेगी। इतना कह कर पूज्य बाबा पूजा में ध्यान मग्न हो गये। मैंने देखा कि उस के पाँच मिनट बाद ही एक टैम्पों आयी और उन सवारियों को लेकर भेड़ाघाट चली गयी।

इस प्रकार की अलौकिक महिमा पूज्य बाबा की है। सद्‌गुरु की जय हो।

सर्प को भगवत्स्वरूप समझने से वह नहीं काटता है

मेरे घर में एक बार चार फुट लम्बा और काफी मोटा गेहुँअन साँप निकला था। वह भी भंडार घर में जहाँ हर समय सामान निकालने व रखने के लिये जाना होता है। उसको एक सँपेरे की सहायता से पकड़वा लिया गया। उस सँपेरे ने हमारे सामने बिना किसी सामान के सिर्फ अपने हाथ से आसानी से पकड़ लिया। उसके कुछ दिन बाद जब मैं पूज्य बाबा के यहाँ गया तो इसका जिक्र किया और उनसे प्रश्न किया किया कि बाबा साँप को पकड़ने के लिए कौन सा मन्त्र पढ़ा जाता है? जिस से वह आसानी से पकड़ में आ जाता है। पूज्य बाबा ने कहा कि साँप ईश्वर का रूप होता है। वह बिना कारण के किसी को भी नही काटता है। अगर कभी साँप का सामना हो जाय तो उससे डर कर उसको मारना नहीं चाहिये, बल्कि उसके सामने दीन होकर हाथ जोड कर उनको ईश्वर समझकर प्रणाम करना चाहिये। वह चुपचाप चला जायगा।

उन्होंने अपना एक अनुभव बताया कि एक बार मैं ध्यान में बैठा था। बहुत से साँप मेरे शरीर पर चढ़ गये, इधर उधर रेंगते रहे। जब मेरा ध्यान टूटा तो उनको देखकर मैं डर गया। मैंने भगवान् से कहा कि हे भगवन् मुझको साँप से बहुत डर लगता है तब भगवान् ने कहा कि साँप से मत डरो। वह और कुछ नहीं मैं ही हूँ। लेकिन मैंने कहा कि मुझे साँप से डर लगता है तो भगवान् ने कहा कि अच्छा देखो तो मैंने देखा कि बहुत से साँपों की २-३ ढेरी लगी हुई है। उन सब में भगवान की ही सूरत है। तब से मेरा भय दूर हो गया। फिर उन्होंने कहा कि अगर साँप को पकड़ना हो तो सिर्फ यही कहकर पकड़ सकते हो कि हे भगवन् आप ही ईश्वर रूप हो, आप हमारे मालिक हो, आप हमारी रक्षा करो। (निर्मल भाव से) तो अगर साँप को उठा भी लोगे तो कभी नहीं काटेगा। अगर किसी वक्त काट लेता हो तो उनसे निर्मल व शुद्ध मन से प्रार्थना करो कि "हे भगवन् आप ने काट लिया है आप ही ठीक कीजिये। इस प्रकार के शब्दों का उच्चारण करते जाओ और जहाँ काटा है वहाँ बराबर हाथ फेरते रहने से साँप का जहर भी नहीं चढ़ता और आदमी अच्छा हो जाता है।

बस शुद्ध व निर्मल मन से साँप को भगवान का अवतार समझकर छूने से साँप प्रसन्न हो जाता है। वह कभी भी नहीं काटता और

आदमी आसानी से पकड़ सकता है। यही साँप को पकड़ने का यहाँ मन्त्र है। ऐसा हमारे पूज्य बाबा का अनुभव है।

श्रद्धेय पूज्य बाबा

(ले० श्री मीरा बहन)

श्री रामसनेही महाराज का दर्शन मैंने पहली बार काठमाण्डू में किया था। दूसरी बार नर्मदा के किनारे पुरानी कुटी में जो अब नष्ट हो गई है, में बाबा के दर्शन हुए उसमें दो ही कमरे थे, बाबा मृगछाला पहने हुए थे, बहुत कम बोलते थे। ग्वारीघाट का सीताराम और उसकी देवी आश्रम में रहते थे। साथ ही सुन्दर तुलसी बाबा भी वहीं रहते थे। सुबह हम लोग ८ बजे उठते थे। मेरे आने के दो तीन दिन बाद बाबा ने कहा कि आज से तीसरे दिन शेर आएगा, शेर आया, वह बहुत बड़ी आवाज से गरजता था। बाबा ने शेर से कहा तुम यहाँ किसी को डराओ मत, शेर चला गया। कुछ दिनों के बाद एक स्टेशन मास्टर आया उसका लड़का बहुत बीमार था बाबा ने उसको कहा 'मुर्दा जल रहा है उसकी खोपड़ी निकाल के ले आओ' वेणू बाबा उसको साथ में ले गए और बाबा के पास उसकी खोपड़ी ले आए, बाबा ने कुछ खोपड़ी में डाला और कहा कि 'लड़के के ऊपर उस खोपड़ी का स्पर्श करा देना स्पर्श कराया और वह लड़का ठीक हो गया।

रामनरेश मिश्र की एक लड़की थी वह हर समय रोती थी महाराज जी ने कहा कि रेत में फेंक दो, कुछ रोना कम हुआ परन्तु फिर भी रोती ही थी, महाराज जी ने मुसलाधार पानी में बीस मिनट तक रक्खा और अपने योग बल से उसे ठीक कर दिया।

बाबूलाल नाम का एक व्यक्ति जब यहाँ आया था, पागल था, उसकी देवी बाबा के पास ले आयी वह कभी ऊपर ही ऊपर देखता कभी नीचे बहुत समय तक देखता था, खाने की थाली सामने रक्खा ही रहता था। महाराज जी ने दो डण्डे मारे, उसके पहले महाराज जी ने उसको राम-राम कहने की आज्ञा दी, धूनी की विभूति भी दी उसका दिमाग एकदम ठीक हो गया। उस समय से महाराज जी की सेवा में है।

श्रीवास्तव जी जो पुलिस में मेजर थे, आप भी लड़की की शादी के बारे में बहुत परेशान रहते थे, बाबा के पास आकर दोनों दम्पति ने अपनी चिन्ता व्यक्त की, बाबा ने छः माह का समय दिया था, साढ़े

पांच महीने बीत गये थे उन लोगों की परेशानी बढ़ती गई, फिर बाबा के पास आये, बाबा ने कहा कि छः महीने से पहले हो जायगा और बहुत खर्च भी नहीं होगा, छः महीने में ११ दिन बाकी ही थे, शादी तय हो गई और कोई खास खर्च भी नहीं हुआ।

जीवों का रहस्य और लोक-कल्याण की भावना

दिनांक १२-२-७१ को सन्ध्याकालीन पूजन के पश्चात् बाबा ने जीव के बारे में कुछ गहन और सूक्ष्म व्याख्या की। गेहूँ का एक पौधा धूनी के सामने दिखाई दिया, पाण्डे जी ने उत्सुकतावश बाबा से पूछा— 'इसको इस योनि में क्यों आना पड़ा और इसका पूर्वरूप क्या था' बाबा ने उत्तर में कहा कि 'यह कनखजूर का ही एक स्वरूप है; मानव को विभिन्न योनियों में जन्म लेना पड़ता है। अपने पूर्वजन्म के कर्मों के फल-स्वरूप कोई कनखजूर होते हैं तो कोई मेढक। जीव के अनेक रूप होते हैं, इस योनि में आने के लिए बहुत से भयानक कष्टदायक योनियों से मनुष्य को गुजरना पड़ा है। भगवान् सभी वस्तुओं में विद्यमान हैं। भोजन को जीव से पहले भगवान् ने पैदा किया है। एक जीव का अस्तित्व दूसरे जीव के विनाश के बिना नहीं होता। चावल में मैंने एक बार ध्यान से सूक्ष्म कीटाणु देखा था। चावल पकने के बाद सामूहिक रूप में असंख्य सूक्ष्म कीटाणुओं का झुण्ड दिखाई देता था। यहाँ तक कि कोई जीव, योनि परिवर्तन के क्रम में भयंकर रोग जैसे चेचक आदि का रूप भी ले लेते हैं। कोई जीव अन्य जीवों के कल्याण के लिए होते हैं तो कोई विनाश के लिये। अन्त में सभी प्राणियों का गन्तव्य आत्म-उद्धार ही है। लोक कल्याण (चाहे किसी भी रूप में हो) के द्वारा ही आत्मकल्याण हो सकता है, इस ओर बाबा ने संकेत किया।

———

॥ ॐ श्रीराम ॥

श्री बाबा रामसनेही जी महाराज

(ले० श्री महेन्द्रप्रताप, उपकुलपति, पटना विश्वविद्यालय, पटना)

ज्ञात नहीं कितनी सदियों से और न जाने कितने साधु, सन्त भारतवर्ष की असली संपदा के रूप में रहते आये हैं। इन लोगों ने तपस्या की, साधना की और जगत् का कल्याण किया। इसमें सन्देह का लेश नहीं है। भारतवर्ष सर्वदा संसार का आध्यात्मिक पथप्रदर्शक रहा। इन योगियों ने अपने अनुभव के बाद सत्य का साक्षात्कार किया। ये लोग इस संसार में केवल इसीलिए रहते हैं कि अपने असीम सहृदय स्वभाव के अनुकूल भूले भटके मनुष्यों को सत्य का मार्ग दिखा सकें।

ऐसे कुछ गौरवपूर्ण महामानवों से किसी तरह मिल पाना मेरे जीवन का सब से बड़ा सौभाग्य रहा है।

श्री रामसनेही बाबा ऐसे ही महायोगी हैं, जिनके व्यक्तित्व और उपदेश में दैवी प्रज्ञा और करुणा का अद्भुत समन्वय उपलब्ध है। वर्तमान में वे नर्मदा नदी के किनारे छोटी-सी कुटिया में रहते हैं। संसार के न जानें कितने श्रद्धालु लोगों के लिए वह आश्रम प्रकाश-स्तम्भ है। यह तो वही जानते हैं कि कितने लोगों को उन्होंने लोक एवम् परलोक के उलझनों से मुक्त किया है तथा उन्हें भक्ति और आत्मज्ञान के मार्ग में अग्रसर होने के लिए प्रेरित्त किया है।

मैं विगत वर्षों की ओर दृष्टिपात करता हूँ तो अनेक स्मृतियाँ और संस्मरण मेरे कृतज्ञ मानस पटल में उभरते हैं। वे अनुभव, जो बाबा के श्रद्धेय एवम् स्नेहपूर्ण चरण कमल के समीप प्राप्त हुए, पवित्र हैं, बल्कि प्रत्येक अनुभव एक दूसरे से पवित्रतर हैं।

मुझे बाबा का दर्शन सर्वप्रथम वाराणसी में मिला।

महाकुम्भ के अवसर की बात है। कुम्भ मेला के समान सन्तों और महर्षियों का अद्भुत जमघट अन्यत्र कहाँ सम्भव है। मेरे आदरणीय मार्गदर्शक एवम् मित्र सरदार पं० रुद्रराज पाण्डे, जिनका मेरे ऊपर का स्नेह एक पहाड़ी झरने के समान प्यारा और करुण है, मुझे बाबा के पास ले गये। गंगा के किनारे के ऊपर एक कमरे में वे बैठे थे। उन दिनों

गंगा शान्त, निष्पन्द और बल्कि रोमाञ्चक थी। बाबा के चरणस्पर्श करने के बाद मैं उनके शब्दों की प्रतीक्षा में बैठा रहा। मैं कुछ समय तक तो उनके दुबले लम्बे मगर मजबूत काया को देखता रहा। वे धीरे-धीरे बोलते थे और बोलने की उनकी खास शैली थी। वे भावना के ऊपर बोल रहे थे, 'भावना ही सब कुछ है एवम् भावना ही कर्मों में व्यक्त होती है'।

इसके बाद बाबा कुछ चमत्कारिक बातें कहने लगे। आदमी कुछ सोचे, भाव उत्पन्न करे, फिर तो तुरन्त ही कर्म प्रारम्भ होता है। ज्यों ही शरीर शुरू होता है, यह शरीर एक आदमी के अन्दर से पैदा होकर क्षण भर में बम्बई पहुँच कर दवा खरीद कर ले आयेगा। पता नहीं क्यों ऐसा प्रतीत हुआ, वे आन्तरिक अनुभव के साथ बोल रहे थे।

इसके कुछ समय बाद हम लोग वहाँ से बिदा हो गये।

× × × ×

थोड़े ही समय बाद मैं रेलवे स्टेशन आया, यहाँ मुझे श्री पाण्डेय जी, श्री गोपाल बाबा, और बड़े बाबा को नेपाल जाने के लिये बिदा करना था। बाबा वहीं स्टेशन में एक डब्बे में अपने एक भक्त के साथ बैठे थे। साथ ही वे उस समय भोजन ग्रहण कर रहे थे।

मुझे उस समय सचमुच बड़ा ताज्जुब हुआ जब बाबा केवल मेरी आकृति से मेरे मन की बातों को समझ गये। मेरे मन का सन्देह, जो खाने के पदार्थ के साथ सम्बन्धित था वे भाँप गये। फिर उन्होंने मेरे लिए कुछ तात्कालिक भविष्यवाणियाँ कीं जो समय आने पर शत-प्रतिशत सिद्ध हुईं। फिर इन बातों से एकाएक अपना ध्यान हटा, मानो कुछ हुआ ही नहीं हो। बाबा यह कह बैठे कि 'मुझे अपनी उम्र का पूरा ज्ञान नहीं है' कायाकल्प के सहारे उन्होंने कम-से-कम ३ बार अपने शरीर को बदला था। यह सुनकर मैं अवाक् था।

किन्तु मेरी सब से सजीव स्मृति नर्मदा के उस आश्रम के साथ बँधी है, जहाँ मैंने पूरे ४ दिन बिताये।

बाबा के साथ मेरी पहली भेंट का मेरे दिमाग में गहरा असर था। एक निर्लिप्त और महान् योगी का-व्यक्तित्व जो अपनी निर्लिप्तता के चलते रहस्य बन गया था मेरे मन पर छाया हुआ था। इस बार जैसा कि

रुद्रराज जी के सुपुत्र और मेरे मित्र माधवराज जी ने मुझे पहले ही बताया था कि बाबा के स्वभाव में उत्साहवर्धक अन्तर था। अब वे ज्यादा नम्र, कम कठोर थे एवम् सभी प्रश्नों का जबाब भी दे रहे थे, प्रत्येक दिन एक नया विषय छिड़ता था। नई नई कहानी बतायी जाती थी एवम् जीवन के आधारभूत समस्याओं पर, किसी न किसी जिज्ञासु के प्रश्नों के उत्तर में, प्रकाश दिया जाता था।

वार्ता के प्रसङ्ग में एक बार श्री बाबा से मैंने पूछा कि संप्रति नेतृ-वर्ग में बड़ा संघर्ष चल रहा है, चुनाव सन्निकट है, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की कैसी स्थिति रहेगी। ध्यान करके उन्होंने तुरन्त कहा कि—इन्दिरा जी की सर्वत्र विजय होगी। इसमें सन्देह न करो।

धन्य है उन महात्माओं का जीवन जिनका एकमात्र उद्देश्य दूसरों का कल्याण करना होता है। इस निवेदन के साथ पूज्य बाबा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता हूँ।

—-—
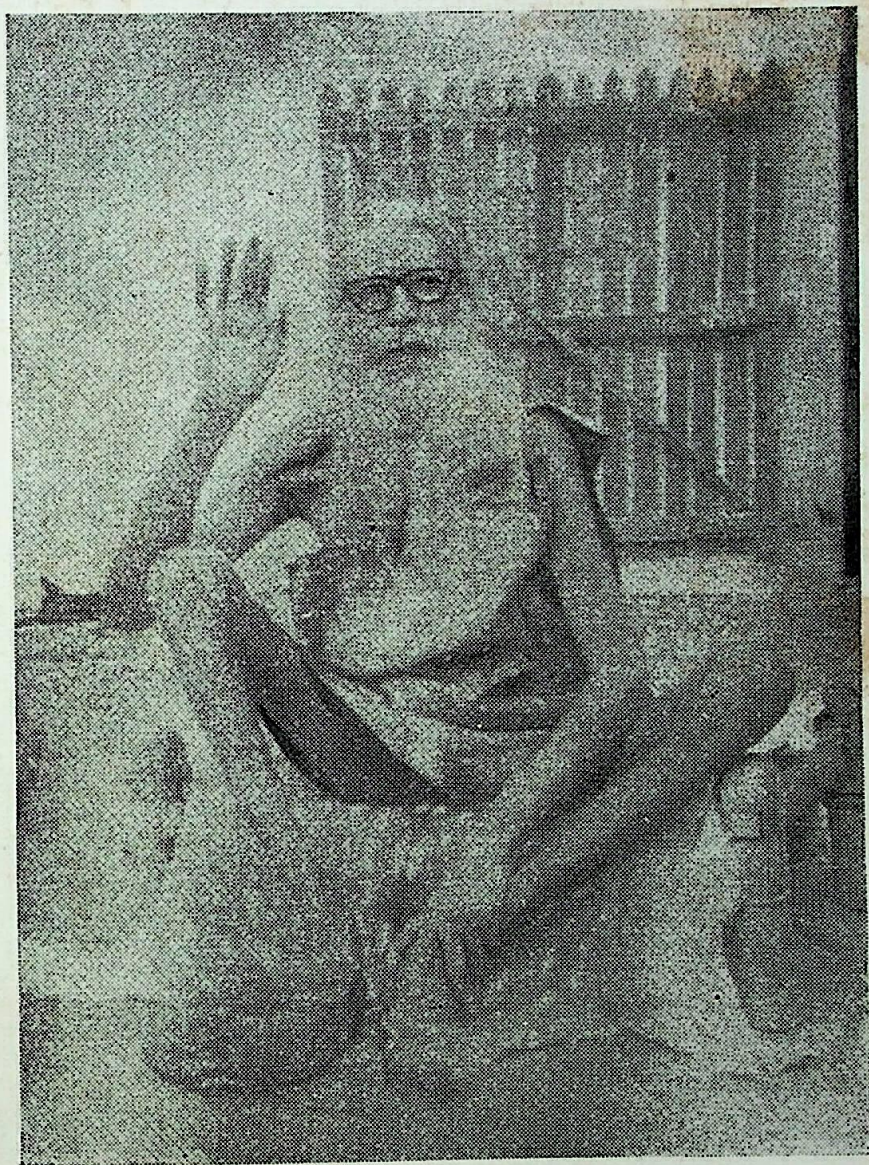
बाबा के प्रिय भजन

(१)

एक तो वे जो अन्दर के त्यागी और बाहर के त्यागी।
दूसरे वे जो अन्दर के त्यागी और बाहर के रागी॥
तीसरे वे जो अन्दर के रागी और बाहर के त्यागी।
चौथे वे जो अन्दर के रागी और बाहर के भी रागी॥

भक्ति दर्शन

(२)

राम ही के नाम को अनेक जन पुकार रहे।
मसजिद में मंदिर में गिरजा में टेर टेर॥
राम ही के रूप को अनेक जन निहार रहे।
दृगन में हृदय में त्रिकुटी में हेर हेर॥
राम ही के भाव को अनेक जन विचार रहे।
वाणी या अंतःकरण बीच घेर घेर॥
राम ही है सर्व ठौर; दूसरा न कोई और।
निश्चय कर मानों कछु या में नहीं हेर फेर॥
जैसी जाकी भावना हो तैसे वाको देख पड़े।
जमी हरै तभी कमु नैक न लावे देर देर॥
निर्भय राम राम को ऐकवार हेरो तो राम।
को हेरत हैं आरत जन बेर बेर॥
कोटि कोटि उपायन से छूटे न जन्म मरण।
ऐक राम नाम सुमर बंधन नर टारे हैं॥
कोटि कोटि मंत्रन से अंतस न शुद्ध होय।
राम ही को नाम एक सगरो मल जारे हैं॥
कोटि कोटि वस्तु पाय तृष्णा न दूर होय।
केवल राम नाम ही तृष्णा विडारे हैं॥
कोटि कोटि देव धाये राम नहीं दरसत हैं।
राम ही के धाये निर्भय राम को निहारे हैं॥
लोक में अविद्या के अनेक बकवाद भरे।
राम सुमर खींच मन सब ही की ओर सों॥

वेद में भाँति भाँति विद्या के विवाद हैं।
राम नाम पकड़ भाग वृथा और शोर सों ॥
नाना पंथ नाना भेष नाना ग्रन्थ नाना लेख।
राम नहीं दर्सत हैं काहू के जोर से ॥
निर्भय राम राम की सौगन्ध राम दर्शत हैं।
राम ध्वनि लागे जब अनुभव झकोर सो ॥

भक्तजन अपनी अपनी भावना अनुसार ही।
न्यारो न्यारो रूप धाम राम को संभारे हैं ॥
मुनि जन सच्चिदानन्द रूप राम को।
उत्पत्ति और लय चिंतनि का हृदय में बिचारे हैं ॥
योगी जन प्राणन को स्थित कर कपाल में।
राम को प्रकाश रूप त्रिकुटी में निहारे हैं ॥
परमहंस राम ही को रूप लखें सर्व ठौर।
नाना नाम रूप और कल्पना विडारे हैं ॥
ऊख में मधुराई जैसे, सेंधे में है नमकपन।
तिलन में है तेल और शीतलता ओले में ॥
नीम में है कड़वापन जैसे मिर्च में है तीक्ष्णता।
दूध में है घृत और सुगन्ध है बेले में ॥
आम में खटाई जैसे अग्नि में है उष्णता।
शोरे में है खारापन रूई है बिनौले में ॥
काष्ठ में अग्नि जैसे बीज में है वृक्ष छिपा।
ऐसे ही राम छिपा प्राणी के चोले में ॥

बुदबुदे तरङ्ग जल में जलते न भिन्न कछु।
जल ही ने प्रत्यक्ष न्यारो न्यारो रूप धारा है ॥
सोरण के भूषण जैसे सोरण ही नित्य रहैं।
दीपक से पृथक् नहीं दीपक का उजारा है ॥
काठ की कठौती जैसे काठ ही मानी जाय।
माटी के बरतन सब माटी का पसारा है ॥
निर्भय राम जीव जेते राम ही का रूप जान।
राम से अभिन्न ईश और विश्व सारा है ॥

अपने हर एक स्वांस पर तू राम ही को ध्यान रख।
जहां स्वांस ठैरे वहां राम ही को पहिचान तू ॥

स्वांस ही में आठों याम वास रहे राम को।
अन्तर और बाहर दोनों ठौर सत्य जान तू॥
स्वांस ही के ज्ञान से हो जाय ज्ञान राम को।
स्वांस ही को पकड़ रहे यही सीख मान तू॥
ज्ञानन में वाला है योगन में आला है।
निर्भय राम निश्चय कर राम को चिन्त आन तू॥

(३)

चामड़े की पूतली भजन कर री, ओ भजन कर०।
चामड़े की पूतली और चाबे नागर पान।
झीना झीना कपड़ा पहने करत गुमान॥ भजन कर०॥
चामड़े की बछिया और चामड़े की गाय।
चामड़े का दोहन (वाला) दारा चाम ही पी जाय॥ भजन कर०॥
चामड़े के हाथी घोड़े चामड़े के ऊँट।
चामड़े के बाजा बाजे चारों खूँट॥ भजन कर०॥
चामड़े के राजा रानी चाम के वजीर।
चामड़े की सारी दुनियाँ कह गये दास कबीर॥ भजन कर०॥

(४)

राम नाम से बाहर भीतर का भजन

जब बोलो तब राम ही राम।

तन से बोलो राम ही राम, मन से बोलो राम ही राम।

आसन बोले··· ··· ··· ···राम ही राम।
आते जाते ··· ··· ··· ···राम ही राम।
बाहर भीतर··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरा डमरू ··· ··· ··· ···राम ही राम।
जब बोलो तब ··· ··· ···राम ही राम।
माल खजाना··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरा भोजन··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरा पानी ··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरी पूजा ··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरा खाना ··· ··· ··· ···राम ही राम।
मेरा पीना ··· ··· ··· ···राम ही राम।

मेरा सोना ··· ··· ··· ···राम ही राम ।
अन्दर बाहर··· ··· ··· ···राम ही राम ।

राम ही राम, राम ही राम, राम ही राम, राम ही राम, राम ही राम।
बोल शंकर भगवान् की जै ।

(यह भजन पूज्य बाबा घन्टों करते रहते हैं—)

(५)

राम किया सोइ हुआ,
राम करे सो होय ।
राम करे सो होइगा,
काहे कल्पे कोय ।।
राम नाम अनमोल है,
बिना दाम मिल जाय ।।
तुलसी ऐसे नाम को
गाहक नहि ठहराय ।।

सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिन्धु बिना जलयान ।।

(६)

सांस कमण्डल अमृत टपके ।
उनको पीके प्यास बुझाता था ।।
नाम ब्रह्म गुफा में जाके, बिराजे ।
जगमग जोत जगाता था ।
अरे निरंजन बिरले यह कोई साधू पाता था ।।

(७)

नाम राम, राम का नाम जपे, उसी का ध्यान लगाता था ।
प्रेम सहित ध्यान करता था ।
आपही रूप बनाता था ।।
अपने सिवाय कोई नहीं दिखाता था ।
अरे निरंजन बिरले पद को कोई गाता था ।।

(८)

राम-राम अधारा जगत् में राम राम गुण गावे ।
नाम-बोध और नाम सहारा हाथ सांती पद पावे ।
नाम आसरा और शरीर सारा जलावे, न ओढ़े व पहने ।

नाम शक्ति का अनुभव

भजन

जो तू यम के त्रास से क्या चाहे है हरदम ।
श्रीराम राम श्रीराम जपा कर हरदम ।। टेक ।।

(१)

इस राम नाम ने बालमीकि को तारा ।
इस राम नाम ने अजामिल निसतारा ।।
इस नाम के बल पर शिव शंकर कैलाशी ।
देते हैं भक्त को मुक्ति सदा अविनाशी ।
इस नाम की महिमा क्या कोई नर गावे ।
जहाँ शेष शारदा वेद पार नहीं पावें ।
महिमा है अपरम्पार वेद गाते हैं ।
शिव ब्रह्मादिक जिसका पार नहीं पाते हैं ।
सब आशा तृष्णा छोड़के हो जा बे गम ।
श्रीराम राम श्रीराम जपा कर हरदम ।।

(२)

क्या वायदा करके आया था तू प्राणी ।
जरा सोच तो दिल में ऐ मूरख अज्ञानी ।
तू जहाँ से आया वहीं तुझे फिर जाना ।
जाने से पहिले कर ले अपना ठिकाना ।
क्यों जोर जवानी के मद में है फूला ।
दो दिन की जिन्दगी पर है इतना भूला ।
क्यों मांझ मांझ कर के काया को है तू धोता ।
क्यों वृथा तू अपना जन्म अकारण खोता ।
सामान सफर का कर ले कहते हैं हम ।
श्रीराम राम श्रीराम जपा कर हरदम ।।

आश्रम के नियमित भजन

ॐ जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे,
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का,
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका ।। ॐ जै जगदीश हरे ।।
मात पिता प्रभु तुम मेरे,शरण गहूँ किसकी, स्वामी शरण गहूँ किसकी।।
तुम प्रभु बिन और न दूजा आस करूँ किसकी ।। ॐ जै जगदीश० ।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी । स्वामी तुम अन्तरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ।। ॐ जै जगदीश हरे ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जै जगदीश हरे ।।
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति, स्वामी सब के प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति । ॐ जै जगदीश हरे ।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे, स्वामी तुम रक्षक मेरे० ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ॐजै जगदीश हरे ।।
विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ावो संतन की सेवा ।। ॐ जै जगदीश हरे ।।

श्री राम-स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभयदारुणम् ।
नवकंज-लोचन कंज मुख, कर कंज, पद कंजारुणम् ।
कन्दर्प (गन्धर्व) अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशलचन्द्र दशरथनन्दनम् ।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंगविभूषणम् ।
आजानुभुज शरचापधर, संग्राम-जित-खरदूषणम् ।।
इति बदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास करु, कामादि खल दल गंजनम् ।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो ।
करुनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
सो० जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सियावर रामचन्द्र की जय ।

गुरु-वन्दना

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

आचमन

प्रभु (गुरु) महाराज अचमन कीजै,
श्री महाराज अचमन कीजै ॥
सोने की थाली में भोजन परोसे,
मधु मेवा पकवान । अचमन कीजै ॥ प्रभु—
ब्रह्मा आये महेश्वर आये,
नारद वेणु बजाये ॥ अचमन कीजै ॥ प्रभु—
भर-भर झारी गंगाजल लाई,
गणिका इन्द्रसुजान ॥ अचमन कीजै ॥ प्रभु—
एक सखी आई चँवर डुलाई,
एक सखी मुख भरी पान ॥ अचमन कीजै ॥ प्रभु—
सूरदास प्रभु अचमन गावे, हरि के चरण चित लाये,
अचमन कीजै ॥ प्रभु—

सत्गुरु महाराज की जै, साँचे दरबार की जै, सब भक्तों की जै ॥
नर्मदे हर, मातु गंगे हर, हर हर महादेव, गोपाल, गोपाल—

सद्गुरु-महत्त्व

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

ध्यानमूलं गुरोः मूर्तिः । पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरो र्वाक्यम् । मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥
श्री गुरु चरण सरोज रज, शीश आपने धार ।
वरणौ कुछ महिमा अमित, जिसका वार न पार ॥
महिमा अपरम्पार है, पार न पावै कोय ।
जिस पर हो सत्गुरु कृपा, वे ही पावन होय ॥

आरती

आरती श्री हरि घट-घट वासी, श्री सच्चिदानन्द सुख रासी ॥
पुरुषोत्तम नारायण स्वामी, करुणानिधि उर अन्तरयामी ॥
कमलापति श्री विष्णु नमामि, मंगलमय बैकुण्ठनिवासी ॥ आरती०॥
आरती तारा राम जानकी लखन भरत श्री हनुमान की ।
लंकापति कपिपति सुजान की, रिपुसूदन अंगद बलरासी॥ आरती०॥
आरती राधा कृष्ण मुरारी नन्दनन्दन भक्तन हितकारी ।
केशव वासुदेव वनकारी आरती कृष्णचन्द्र अविनाशी ॥ आरती०॥
आरती गिरिजा शंकर प्यारे गणपति दुर्गा रवि शशि तारे ।
सकल देव सब सन्त हमारे सत गुरु एकरस आनन्द राशी ॥ आरती०॥
आरती शारद नारद स्वामी काकभुसुन्डी भजन सुख धामी ।
व्यास आदि सुकदेव नमामि मंजुल तुलसी मंगल रासी ॥ आरती०॥

(२)

आरती श्री गुरुदेव की कीजै । तन मन धन न्यौछावर कीजै ॥
अक्षत धूप कपूर की बाती । कंठ धरौ तुलसी की पाती ॥
प्रेम सहित मूरत हिय दीजै । आरती श्री गुरुदेव की कीजै ॥
जो गुरुचरण भक्ति उर लावै । अन्त परमपद ते नर पावै ॥
चरनन को चरणामृत लीजै । आरती श्री गुरुदेव की कीजै ॥
जीवनमुक्ति परमपद दैनी । भक्तन को वैकुंठ नैसनी ॥
करु अनुराग प्रेम रस पीजै । आरती श्री गुरुदेव की कीजै ॥
भई परतीत मोर मन माही । आनि उपाय मोर हित नाही ॥
गुरुपद मीत हो, प्रभु मीत दीजै । आरती श्री गुरुदेव की कीजै ॥

भजन

"मैं तो समझा था कहीं पर, कुछ पता तेरा नहीं ।
आज सतगुरु तू मिला, फिर पता मेरा नहीं ॥